बॉलीवुड ड्रीम

अशोक कुमार

बॉलीवुड ड्रीम
अशोक कुमार



बॉलीवुड ड्रीम

बॉलीवुड ड्रीम

(उपन्यास)

अशोक कुमार

नमन प्रकाशन

नई दिल्ली-110002

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN : 978-93-95356-96-1


आवरण चित्रः लेखक के बडे भाई डा. नैनी कुमार
के सौजन्य से। स्वर्गीय डा. कुमार लन्दन मे ऑर्थापीडिक सर्जन थे तथा
अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्टिस्ट थे। इनकी पेन्टिगॎस की एक्सीबीशन लन्दन,
गुड़गाव तथा न्यूयार्क में लगती रही हैं।

नमन प्रकाशन
4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
8750551515, 9350551515

श्री नितिन गर्ग द्वारा नमन प्रकाशन के लिए प्रकाशित तथा
एशियन ऑफसेट प्रिंटर्स, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

Bollywood Dream By Ashok Kumar

भूमिका

सपने सभी देखते हैं और हर एक के सपने उसके अपने प्रकार के अनूठे होते हैं। पिछले कुछ दशकों से जिस तरह 'विकास' हुआ है उससे अब देश में या तो राजनीति बची है या फिर फ़िल्में। तो ज़ाहिर है लोग उन्हीं दो के सपने देखेंगे और क्योंकि फ़िल्मों की छवि राजनीति जैसी नहीं है और उसमें 'सेल्फ़' का भरपूर परितोषण होता है इसलिए ज़्यादातर नौजवान फ़िल्मों में काम करने के सपने देखते हैं।

फ़िल्मों में कुछ कर पाने के सिलसिले का अनुपात कुछ ऐसा है कि हर एक सफलता के पीछे हज़ारों असफलताएं हैं। लेकिन क्योंकि असफलताएं इतिहास या कहानी नहीं बनातीं, सिर्फ सफलताएं ही बनाती हैं इसलिए लोगों को केवल सफल लोग ही दिखते हैं और इसलिए सफल होने के लिए लोग शिद्दत से प्रयास करते हैं।

यह उपन्यास-''बॉलीवुड ड्रीम''- उपन्यास रूपमें एक तरह से भारत में टी वी चैनलों के जन्म और प्रसार तथा सिनेमा के बदलते रूप का इतिहास है। यह एक ऐसे नौजवान की कहानी कहता है जिसने घर वालों की इच्छानुसार प्रोफ़ेशनल डिग्री तो हासिल कर ली है लेकिन फ़िल्मों की ओर उसकी लालसा बरक़रार है और किस किस जतन से वह अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा कर पाता है। उसके इसी सफ़र के साथ साथ चलती जाती हैं उन तमाम लोगों/चीजों की बातें जो बॉलीवुड को बॉलीवुड बनाती हैं। इसमें हर किरदार का अपना महत्व है, अपनी कहानी है, उसकी अपनी मुस्कुराहटें और आंसू हैं।... इन्हीं तमाम भावनाओं, वास्तविकताओं, विडम्बनाओं और अनिश्चितताओं के बीच डूबता उतराता हुआ आने वाले कल की उम्मीद में जीता हुआ - ''बॉलीवुड ड्रीम'' ! ..एक ऐसा काल्पनिक ड्रीम जो क़ाग़ज़ का फूल भी है और सच्चे गुलाब की खुशबू भी है !

- अशोक कुमार

पहली बात

फ़िल्म इंडस्ट्री की पृष्टभूमि पर लिखा गया मेरा पहला उपन्यास ''दुनिया फ़िल्मों की ''हिंदी फ़िल्म इंडस्ट्री की सत्तर के दशक के आस पास की कहानी थी। उस उपन्यास के शुरू में मैं ने लिखा था कि यदि वह उपन्यास पाठकों को पसंद आया तो मैं अस्सी से अब तक की हिंदी फ़िल्म/टी वी इंडस्ट्री के बारे में भी लिखूंगा। यह उपन्यास उसी क्रम में है।

हिंदी या बम्बई फ़िल्म इंडस्ट्री-(जिसे किसी गुलाम मानसिकता ने ''बॉलीवुड'' का नाम दे दिया है और अब यह इसी नाम से जाना जाता है) एक अन ऑरगेनाइज्ड़ सेक्टर माना भले ही जाये लेकिन है यह बहुत ऑरगेनाइज्ड़ और बहुत प्रोफ़ेशनल। पहले इसमें लिहाज़, दोस्ताना और अदब के रिश्ते हुआ करते थे जो समय के साथ साथ अब सिर्फ़ और सिर्फ़ मतलब और धंधा हो गए हैं। तकनीकी फ़िनिश बढ़ गयी है, नई-नई ईजाद की समझ, पकड़ और इस्तेमाल बढ़ गए हैं लेकिन भावनाएं, भंगिमाएं, और सामाजिक परम्पराएं समाप्त हो गयीं हैं। भाषा की गरिमा भी उसी हिसाब से बदल गयी है।

नए नौजवान फ़िल्म वाले पाश्चात्य संस्कृति में पढ़े लिखे वो आलिम लोग हैं जो ये तो जानते हैं कि ''बिज़नेस'' के लिए क्या ठीक है लेकिन यह नहीं समझ पाते कि परदे पर दिखाई जाने वाली बात/चीज किस हद तक दर्शक को प्रभावित करेगी और क्या वह आने वाली पीढ़ी के लिए सही होगी!

पिछला उपन्यास एक एक्टर की नज़र से लिखा गया था, यह उपन्यास एक डायरेक्टर की नज़र से लिखा गया है। वह भी एक शख़्स की कहानी को लेकर गुना गया था यह भी एक ही पात्र की कहानी को लेकर गुना गया है। हालाँकि इसमें कहानी भले ही एक की हो आसपास का फैलाव, भाषा, व्यवहार, रिश्ते, चाल चलन, डेवलपमेंट्स, बदलाव, तौर तरीके सभी हिंदी फ़िल्म/टी वी इंडस्ट्री के इस क़दर भरपूर हैं कि मुझे उम्मीद है मेरे पिछले उपन्यासों की तरह यह भी पाठकों को पसंद आएगा।

- अशोक कुमार

1

-“कब तक तू बेकार लड़कों की तरह सांप पकड़ता घूमता रहेगा?”

-“तो क्या करूँ...?

-“क्या करूँ मतलब?”

-“मतलब गर्मियों की छुट्टियां हैं, रिज़ल्ट आया नहीं है तो क्या करूँ?”

-“तो सांप पकड़ेगा?”

-“अरे कितने सांप निकलते हैं कॉलोनी में माँ! किसी को काट कूट ले तो इससे तो अच्छा है मैं पकड़ लूँ...”

-“बेटा....इंजीनिरिंग कर लिया है ...”

-“कर नहीं लिया...एक साल बैलेंस है...दूसरे का रिज़ल्ट नहीं आया है...”

-“अरे आ जायेगा..इंजीनिरिंग हो गया है अब कोई नौकरी ढूंढने का सोच पिताजी दो साल में रिटायर हो जायेंगे...तब तक तुझे नौकरी मिल गयी तो सहारा हो जायेगा...ये छोटा भाई है न...इसका ख़र्चा देखता है...!” माँ की आँखें भीग गयीं।

बेटे ने क़रीब आते हुए माँ की पीठ पर अपना हाथ रखा और उसकी गर्दन पर अपना मुंह, “तू क्या समझती है...मुझे यह सब दिखाई नहीं देता?...तू चिंता मत किया कर।”

तपन सेन और उसकी माँ के बीच की यह बातचीत बहुत पुरानी है। तपन, उसके माता-पिता और उसका छोटा भाई नेवल डॉकयार्ड के सिविलियन स्टाफ़ क्वार्टर्स की छटी बिल्डिंग की चौथी मंजिल पर कांजुर मार्ग में रहते थे। कांजुर उस ज़माने में एक बेहद मामूली और बम्बई का वो सबर्ब था जिसे कम ही लोग जानते थे। यहाँ कोई लोकल स्टेशन भी नहीं था। आने वाले को भांडुप या विक्रोली उतरना पड़ता था और फिर सड़क - एल.बी.एस. मार्ग - से यहाँ आना पड़ता था। यह कॉलोनी मेन सड़क पर थी इसलिए यहाँ पहुँचाना इतना मुश्किल नहीं था। कॉलोनी उस पहाड़ी वाले रास्ते से लगकर थी जो ऊपर पवई झील की तरफ़ जाता था और

पहाड़ चढ़े नहीं कि वहीं था बम्बई का आई.आई.टी.- इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी! तपन और उसके साथी अक्सर समय आई.आई.टी. की कैंटीन में गुज़ारते थे। इससे यहाँ वहां के लड़के लड़कियों से दोस्ती भी हो गयी थी और गहरा गयी थी। तपन इंजीनिरिंग कर रहा है यह तो सब जानते थे और यह भी जानते थे कि यह इंजीनिरिंग वह अपने पिता के कहने पर कर रहा है लेकिन उसका उद्देश्य इंजीनियर बनना क़तई नहीं है।

-''तू साले नाचता है, गाता है, सांप पकड़ता है, झांसा देने में मास्टर है .. ..तू करना क्या चाहता है यार !?'' आई.आई.टी. के एक दोस्त ने एक दिन पूछ ही लिया.

-''तुझे मालूम है तू क्या करना चाहता है ?''

-''ऑफ़ कोर्स !...मैं अपना कोर्स ख़त्म करूंगा, मास्टर्स के लिए यू.एस. जाऊँगा..फिर देखा जायेगा!''

-''देखा जायेगा?''

-'' और क्या !''

-''तेरा तब देखा जायेगा..मेरा अब देखा जायेगा...बात तो एक ही है न..'' और तपन ने हाथ उठाकर दोस्त के हाथ पर धाड़ से ताली मारी। दोनों हंस दिए।

-''तू नाचेगा?'' कैंटीन में बैठे दूसरे दोस्त ने अपना चश्मा ठीक करते हुए पूछा।

-''मैं नचाऊँगा....'' तपन ने अपना ऊपर का बदन हिला कर कहा।

-''आई सी.....'' लड़का सीरियस हो गया। उसने अपना चश्मा फिर ठीक किया और नाक उचका कर आँखें मिचमिचाईं फिर एक मिनट गहरी नज़र से तपन को देखा और बोला, ''तू एक काम कर...मेरा एक पोयम है...उस पर मैं सॉन्ग बनाया है ....पांच लोग का डांस के साथ स्टेज होने वाला है...तू वो आइटम कोरिओग्राफ़ कर देगा...?''

तपन कुर्सी से खड़ा हो गया। उसने अपना लम्बा चौड़ा हाथ उस चश्मे वाले दोस्त की तरफ़ बढ़ा कर मिलाया, ''एनी टाइम बॉस !...ये तो मेरे दिल की मुराद है ....डान्स इस माय फर्स्ट लव !''

इस तरह आई.आई.टी के सालाना कल्चरल फेस्ट 'मूड इंडिगो' में तपन ने अपनी इंजीनियरिंग के दूसरे साल में पहली बार कोरिओग्राफ़ी की। गाना अच्छा बना था। डांसर्स के कपड़े चुस्त और चमकदार थे। नाचने वाले रिथम में रहे, विद्यार्थियों

ने बेतहाशा तालियां गड़गड़ा दीं। डान्स नंबर के साथ तपन सेन भी स्टूडेंट में हिट हो गया।

-''व्हाई डिड यू नॉट एंटर आई.आई. टी....इंजीनियरिंग तो यहाँ भी है।''

-''यहाँ पढ़ना बहुत पड़ता है यार..पहले एंटेरन्स के लिए पढ़ो फिर पास होने के लिए पढ़ो फिर जो नौकरी मिलेगी उसके लिए नई नई रिसर्च पढ़ो...इतना कौन पढ़ेगा यार !''

-''अरे तपन सेन कौन है ?'' दूर से एक हयूमैनिटीज़ के स्टूडेंट ने पास आते हुए पूछा।

तपन ख़ामोश हो गया। मेज़ पर साथ बैठे लड़कों ने आते हुए लड़के की तरफ़ सवालिया निगाहों से देखा। लड़का पास आया तो एक ने पूछा, ''क्या हुआ.... हयूमैनिटीज़ वालों को किसी ह्यूमन की ज़रुरत क्यों पड़ने लगी...?''

-''गायज़ ! हैव यू हर्ड ऑफ़ नीलम ताहिलियानी?'' लड़का पास आकर खड़ा हो गया । तपन का चेहरा बदन समेत उस लड़के की तरफ़ मुड़ गया।

-''वो कौन है?'' पास बैठे एक ने पूछा।

तपन ने उसे हाथ दिखाकर चुप रहने को कहा। फिर वो लड़के से बोला, ''नीलम ताहिलियानी !....सो?''

-''शी इज़ माई कज़िन।''

तपन उठकर खड़ा हो गया । सीधे उस लड़के के सामने। ''टैल मी! आई एम तपन !''

-''नीलम वांट्स टु सी यू।''

तपन को यक़ीन नहीं आया। उसने इधर उधर देखा, अपने आपको आश्वस्त किया। फिर पूछा, ''शी वांट्स टु सी मी!...व्हाई?''

-''वो मूड इंडिगो में कोरिओग्राफ़ी तुमने की थी न !...शी इज़ वैरी इम्प्रैस्सड विद यू।''

तपन की तबियत अंदर से बल्लियों उछल रही थी लेकिन उसने अपना सारा एक्ससाइटमेंट छुपाते हुए चेहरा सपाट रखते हुए कहा, ''ओ. के. टैल हर टु कॉन्टैक्ट मी।''

-''कॉन्टैक्ट 'मी'!.....बेबी, यू कांटेक्ट 'हर'..!'' लड़के ने यू और हर पर ज़ोर देते हुए कहा।'' शी इज़ ए स्टार फ़ैशन डिज़ाइनर...नॉट सम अप कमिंग बिम्बो !''

-''ठीक है .....तुम फ़ोन करो....मैं बात कर लूँगा।''

-''चलो.... गेट पर चलो..... वहां पब्लिक फ़ोन है।''

सन अस्सी के ज़रा बाद का ज़माना था। फ़ोन अपनी मर्ज़ी से चलते और डैड होते थे। गेट का फ़ोन भी दो दिनों से बंद था।

-''एक काम कर...मैं एड्रेस देता हूं...यू गो एंड मीट हर...दो दिन के अंदर कर ले..परसों शी इज़ फ्लाइंग टू डेल्ही।''

-''कभी जाऊं? घर पर कब मिलेंगीं?'' तपन की तबियत उतावली हो रही थी लेकिन शक्ल और शरीर एकदम संयत- ऐसे जैसे कि नीलम ताहिलियानी- होगी कोई, मुझे क्या ! जबकि उसने नीलम का नाम और फ़ैशन के क्षेत्र में उसकी ख्याति के बारे में काफ़ी सुन रखा था। लड़के ने पता और टेलीफ़ोन नम्बर लिख कर दिया।

-''यू आर?'' तपन ने पूछा।

-''आई एम राजेश...'' लड़के ने हाथ बढ़ाते हुए कहा।

-''थैंक यू राजेश...'' तपन ने हाथ मिलाकर बहुत सपाट सा कहा।

-''आई एम् हियर'' राजेश ने अपने हॉस्टल की तरफ़ इशारा किया, ''कीप इन टच।''

दोनों बाई बाई में हाथ हिलाकर अपनी अपनी तरफ़ मुड़े और चल दिए। राजेश तो सीधा चला गया। तपन ने हवा में उछाल लगाई और अपने ऊपर उठे हुए दाएं हाथ को नीचे खींचते हुए ज़ोर से चिल्लाया- ''येस !''

कांजुर मार्ग में पले 'भिडू' लोगों के साथ बड़े हुए सरकारी स्कूल में इंजीनियरिंग पढ़ने वाले छोकरे ने 'शहर' का रुख़ कम ही किया था। बाहर से रिश्तेदार भी जब बम्बई घूमने आते थे तो मरीन ड्राइव, चौपाटी, जुहू, गेटवे - बस इन्हीं जगहों तक घूमना होता था। यही तो थी वो बम्बई जिसके आकर्षण में देश के हर छोर से लोग खिंचे चले आते थे। लोकल ट्रेन, भीड़ की रगड़, पसीने की बदबू और आपाधापी में गुम हुआ इंसान - इसकी परवाह कौन करता है ! किसी भी शहर में ज़िन्दगी जीना और बात है और उसकी तस्वीरों से मोहब्बत कर बैठना और !

तपन को बताया गया था भांडुप से लोकल पकड़ कर दादर उतरना, वहां से वैस्टर्न लाइन पर जाकर चर्च गेट वाली दूसरी लोकल पकड़कर ग्रांट रोड स्टेशन उतरना, वहां से ज़रा पैदल चलकर पेद्दररोड तक जाना, वही कैम्पस कॉर्नर पर एक नई नई बनी ऊंची ईमारत ओमकार चौम्बर्स - की छठीं मंजिल पर चौथे फ़्लैट में नीलम ताहिलियानी का घर है। बताया गया था कि नीलम घर पर क़रीब ग्यारह तक ही होती हैं इसलिए तपन को ग्यारह तक पहुँच जाना चाहिए। तपन ने हिसाब लगाया कि सफ़र में कम से कम दो घंटे तो लगेंगे ही। इस लिए उसने सुबह आठ बजे से ही तैयार होना शुरू कर दिया। जूते, जो शायद ख़रीदने के बाद चमकाए

ही नहीं गए थे, उन पर पॉलिश की। सर धोया। क़मीज पर इस्त्री की और नहा धोकर फ़्लैट के एक कोने में माँ के बनाये हुए मंदिरनुमा में रखे ठाकुरजी को प्रणाम किया।

-''आहा !'' माँ ने उसे प्रणाम करते देखकर कहा, ''आज कोई बड़े काम से जाया जा रहा है!''

-''बहुत बड़े काम से'' तपन ने प्रणाम करने के बाद मुड़कर बेफ़िक्री से माँ को बग़ैर उसकी तरफ़ देखे समझाया।

-''इंटरव्यू है?'' माँ ने पूछा।

-''यही समझ लो!''

-''सीधे सीधे बात नहीं कर सकता?''

-''एक बहुत बड़ी फ़ैशन डिज़ाइनर ने बुलाया है।''

बात पिताजी ने भी बाथरूम से निकलते निकलते सुन ली। पिताजी- शुबीरसेन - एक मिनट के लिए वहीं अपने गीले तौलिये में ठिठक गए- ''क्या?. ..फ़ैशन डिज़ाइनर!?''

तपन ने मुंह फेर लिया और चुप हो गया।

-''इंजीनियरिंग पढ़ने में जो पैसा खर्च हो रहा है वो व्यर्थ है?''

-''आज इंटरव्यू है....अभी जाने दो....शाम को पूरी बात कर लेना।'' माँ ने बात टालना चाहा।

-''शाम को पूछो तो दोस्तों के साथ नीचे लाइट लटका कर कैरम खेलता है। सुबह पूछो तो इंटरव्यू होता है। दिन में सांप पकड़ता है। छुट्टी के दिन लुच्चे लफ़ंगों के साथ सड़क पर क्रिकेट खेलता है। बात कब करो इससे?''

तपन चुपचाप पैरों में मोज़े पहनता रहा।

-''महीने भर में एग्ज़ाम है। फ़ाइनल ईयर है.... पास हो जाना!...मैंने एडमिरल साहबसे बात की है वो भी कोशिश करेंगे कि तुम्हें नेवी में लगवा दें... लेकिन तुम्हारे ये लच्छन....छहः...'' शुबीर सेन अपने सूखते हुए गीले बालों में उंगलियां फेरते कपड़े बदलने चले गए।

तब तक नौ बजा था और तपन पूरी तरह तैयार हो चुका था।

-''ओमी जाच्छी !'' कहकर वह बग़ैर किसी के जवाब का इंतज़ार किये फ़्लैट के बाहर होकर सीढ़ियां उतर गया ।

सुबह का वक़्त था। ट्रेनों में दफ़्तर जाने वालों की भीड़ थी और क्योंकि भांडुप बीच का स्टेशन था इस लिए ट्रेनें भरी हुई आती थीं। फिर ये तो 'फ़ास्ट' लोकल थी - याने कम स्टेशनों पर रुकने वाली - इसमें चढ़ना भी मुश्किल था और अंदर

खड़े रहना और भी मुश्किल था। किसी तरह जब दादर उतरा तो तपन की इस्त्री की हुई क़मीज पसीने से लथपथ भी थी और भीड़ में दबने के कारण चुरमुराई हुई भी। दादर से ग्रंटरोड वाली ट्रेन में हालाँकि भीड़ कम थी लेकिन हालत वैसी ही थी।

ग्रांटरोड से पेद्दररोड का रास्ता पैदल भले ही हो लेकिन काफ़ी लम्बा था। जब चैम्बर्स के गेट तक वह पहुंचा तो उसे लगा कि उसकी जो धजा बन गयी है उसमें तो उसे ताहिलियानी जैसी शख़्सियत से क़तई नहीं मिलना चाहिए। उसने पिताजी की दी हुई पुरानी हाथ में बंधी एच. एम. टी. घड़ी पर नज़र डाली। अभी ग्यारह बजने में बीस मिनट थे। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई। शीशे के दरवाज़ों वाला एक शोरूम सड़क के उस तरफ़ खुला हुआ था। तपन ने सड़क पार की, क़मीज़ का कॉलर ऊपर किया और उस शोरूम के अंदर घुस गया । अंदर ए.सी. चल रहा था और अच्छी ख़ासी ठंडक थी।

-''यस?'' सेल्स मैन तपन के पास आया।

-''मुझे खिड़कियों के लिए कर्टेन्स बनवाने हैं। आप कर्टेन क्लॉथ रखते हैं?'' बाहर तो वह देख ही चुका था कि ये दुकान लिनेन, चद्दरें और परदे बेचती है।

-''आइये, ...इधर आ जाइये!'' सेल्समैन उसे एक शेल्फ़ की तरफ़ ले गया।

पंद्रह मिनट तक तपन ने अलग-अलग रंगों डिज़ाइनों और क़ीमतों के कर्टेन क्लॉथ देखे। सैंपल लिए और जब उसका पसीना सूख गया और घड़ी में ग्यारह बजने में पांच मिनट रह गए तब वह सेल्स मेन को धन्यवाद देकर उस दुकान से बाहर आ गया और फिर सड़क क्रॉस करके आ गया चैम्बर्स के अंदर। वहां वॉचमन ने तपन से 'विज़िटर्स बुक' में नाम दर्ज करवाया और फिर उसे अंदर जाने दिया। छटीं मंज़िल पर जब लिफ़्ट का दरवाज़ा खुला तो वहां चार नम्बर का फ़्लैट सामने ही था।

-''मैडम चला गिया!'' चार बार घंटी बजाने के बाद नेपाली नौकर ने दरवाज़ा आधा खोलकर सपाट सा कहा।

-''चला गया.....मुझे बुलाया है.....'' तपन थोड़ा परेशान सा हो गया।

-''तो किया कोरूं.....?''

-''कहाँ मिलेगा मैडम?''

-''ताज में गिया हाय.....''

-''वापस कब आयेंगीं?''

-''रात में इगारा का बाद !'' नौकर दरवाजा बंद करने लगा तो तपन ने उसे रोककर कहा, ''मुझे आज ही मिलना है.....अर्जेंट काम है,''

-''तो में किया कोरूं?''

-''बताओ न यार'' तपन ने अपनी मुस्कराहट के साथ आवाज़ में शहद घोलते हुए पूछा–ऐसे के नौकर तक के मुस्कराहट छूट गयी, ''बताओ न यार''!

-''तुम ताज में जाओ.....मैडम मिलेगा.....ओ उन्हीं शब्को मिलता हाय!''

इतने में फ़्लैट के अंदर फ़ोन की घंटी बजी और नौकर हड़बड़ी में दरवाज़ा बंद करके अंदर चला गया।

-''ताज माने?'' तपन का सवाल मंज़िल के ख़ाली वरांडे में घूम गया। उसने एक डिस्गस्ट की लम्बी सांस भरी और फिर ख़्याल किया कि ताज माने ताजमहल- आगरे वाला नहीं, बम्बई वाला- ताजमहल होटल! जो उसने कई बार गेट वे ऑफ इंडिया से उस तरफ़ नज़र घुमा कर देखा है लेकिन कभी उसका सोचा है न कभी वहां कदम बढ़ाने की जुर्रत की है। पहले तो उसने सोचा मारो गोली, वापस चलते हैं, कौन ताज-वाज जाये और जाये भी तो वहां नीलम को कहाँ और कैसे ढूंढें, लेकिन फिर उसकी महत्वाकांक्षा भारी पड़ गयी और वह चैम्बर्स से बाहर आ गया, बहुत पूछताछ और बेमतलब जवाबों के बाद एक ट्रैफ़िक पुलिस वाले ने बताया कि रीगल सिनेमा तक बस में चला जाये, वहां से ताज होटल मुश्किल से पाँच-सात मिनट पैदल दूरी पर है ।

ताज के पोर्टिको में बड़ी-बड़ी गाड़ियों से विदेशी और विदेशी लगती देसी मेमों को उतरते देख तपन की हिम्मत आगे बढ़ने की ही नहीं हुई। लेकिन उस पर एक अजीब सी बेख़ुदी तारी थी, वो पोर्टिको से एंट्री की पाँचों सीढ़ियां चढ़ गया और जब कांच के बड़े बड़े ऊंचे दरवाज़ों पर खड़े लाल पट्टा और साफा बांधे डोरमैन ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा तब उसे अदेंशा लगा कि ये उसे अंदर नहीं जाने देगा। तपन के अंदर धुकपुकी थी लेकिन वो डोरमैन को देखकर हल्के से मुस्कुराया। डोरमैन तो उसके बारे में अनुमान लगा ही चुका था, लेकिन मुस्कराहट के सामने कुछ कह नहीं पाया, उसने बग़ैर किसी 'इमोशन' के दरवाज़ा खोल दिया और सर हिलाकर रिसेप्शन की ओर इशारा कर दिया।

अंदर जिस भव्यता के दर्शन उसे हुए, जिस ठंडक और जिस आलीशान माहौल को उसने ज़िन्दगी में पहली बार देखा वह उससे सम्भला नहीं और वह फ़र्श से कालीन पर पाओं रखते-रखते तक़रीबन गिर ही तो पड़ा।

-''मे आई हैल्प यू सर?!'' एक लड़की की आवाज़ दायीं तरफ़ से उसके कानों में आयी। तपन सम्भला। उसने देखा लाल ड्रेस में एक बेहद ख़ूबसूरत लड़की जो शायद अट्ठाइस-तीस साल की रही होगी अपने निहायत शाइस्ता अंदाज़ में झुककर तपन से पूछ रही थी, ''मे आई हेल्प यू सर?''

-''मी?.....नो नो.....थैंक यू.....'' तपन की समझ में नहीं आया की क्या जवाब दे।

-''यू आर लुकिंग फ़ॉर समवन?'' लड़की की मुस्कराहट ग़ायब हो गयी और उसने सपाट स्वर में पूछा।

-''यस.....नीलम.....नीलम ताहिलियानी.....''

-''वन मिनट.....'' लड़की रिसेप्शन की तरफ़ मुड़ने लगी, फिर ठहर कर उसने पूछा, ''योर नेम?''

-''तपन.....तपन सेन !''

लड़की ने तपन को वहीं ठहरने का इशारा किया। दो मिनट बाद जब वह लड़की तपन के पास वापस आयी तो उसने कहा, ''शी इज़ बिजी इन ऐ मीटिंग. ....कांट सी यू !''

तपन एक मिनट के लिए स्तब्ध खड़ा रह गया । लड़की के जवाब को भेजे में उतरने में वक़्त लगा और अचानक तपन को खुद अपने पसीने से दुर्गन्ध आने लगी। वो वापस लौटा। प्यास बेतरह लगी थी। उसने गेटवे के पास खड़े ठेले पर पांच पैसे ग्लास बेचने वाले से ठंडा पानी लेकर पिया और वापस चल दिया - घर!

- ''व्हाई डिडन्ट यू कॉल बिफ़ोर गोइंग? ''रमेश ने 'कॉल' पर ज़ोर देकर पूछा।

-''तुमने फ़ोन करने को थोड़े ही कहा था.....तुमने कहा था चले जाना !''

-'' अरे यार.....उसने कहा भेज दो मैने कहा चले जाओ.....पर हैव कॉमन सेंस मैन.....बॉम्बे में कब किसको क्या काम निकल आए यू नेवर नो.....''

-''अब कब जाऊं.....फ़ोन करके पूछ न.....''

-''नाउ शी इज़ गॉन फ़ॉर हर शो.....अब तो दो महीने बाद.....''

-''यार राजेश.....'' तपन ने अपना दिखावे का सारा अभिमान छोड़कर राजेश का हाथ अपने दोनों हाथों में पकड़कर कहा, ''मुझे उससे मिलवा दे.....''

राजेश ने अपना हाथ छुड़ाते हुए तपन का उतरा चेहरा देखकर कहा, ''इज़ इट सच ए बिग थिंग फॉर यू?''

-''यस.....मै फ़ैशन इंडस्ट्री में जाना चाहता हूँ !''

-'' लेकिन तुम तो इंजिनीयरिंग कर रहे हो !''

-''वो तो ऐसे ही.....''

-''ओके आई विल टॉक टु हर.....लेकिन वापस आ जाने दे उसे !''

-''चाय?'' तपन को शायद लगा राजेश को खुश करके रखना चाहिए।

-''ओ के'' राजेश ने सर हिलाया।

चाय पीते-पीते तपन ने पूछा, ''तुम क्या करना चाहते हो?''

-''मैं?.....मैं ये कोर्स ख़त्म करके यू. एस. जाऊंगा, मैंने एम.आई.टी. में अप्लाई कर रखा है , वहां नहीं हुआ तो एमोरी यूनिवर्सिटी में तो मेरा हुआ ही रखा है समझो!''

-''तुम यू.एस. चले जाओगे?''

-'' और क्या.....यहाँ क्या रखा है? क्या करूंगा यहाँ?''

-'' भारत सरकार ने तुम्हारे ऊपर इतना पैसा ख़र्च किया, इतना समय लगाया और तुम सेवा किसी और देश के लोगों की करोगे !?''

-''बुलशिट.....!.....बॉल्स, भारत सरकार ने मेरे ऊपर समय लगाया, पैसा लगाया! पैसा और समय तो भारत सरकारों ने उन सालों पर लगाया है जो तीस परसेंट में पास होकर भी हम नाइंटी परसेंट वालों के बॉस बनकर बैठते हैं। एंट्री में देख लो.....चालीस परसेंट के लिए सीटें रिजर्व हैं जबकि नाइंटी फाइव वाले भीख मांगते घूमते रहते हैं.....और ये एंट्री की बात है, प्लेसमेंट में इनको प्रेफरेंस है, प्रमोशन में इनको प्रेफरेंस है, इंक्रीमेंट में इनको प्रेफरेंस है.....आप इन से कुछ नहीं कह सकते, कह दो तो जेल जाओ, कोर्ट जाओ !..... यु आर सो अवे फ्रॉम रियलिटी!.....एनीवे.....आई एम डन विद इट.....मै तो चला !''

-''जो यू. एस. नहीं जा सकते वो तो सड़ गए !''

-''अब्सोल्युटली !''

दो मिनट की ख़ामोशी के बाद राजेश ने अपने प्याले से चाय की चुस्की ली और फिर अचानक उसे कुछ याद आया और उसने चाय बड़ी जल्दी में गुटककर कहा, ''अरे लिसेन.....''

तपन ने राजेश की तरफ़ ध्यान से देखा,''

-''तू ने कल का टाइम्स ऑफ़ इंडिया देखा है?''

तपन की त्यौरियों पर बल पड़ गए और वह नजर गड़ा कर राजेश की बात सुनने लगा।

-''सम गाय कॉल्ड डावर इज़ स्टार्टिंग क्लास्सेस इन मॉडर्न डांसिंग.....तू उसके क्लास ज्वाइन कर ले.....आई एम श्योर वहाँ से तेरे लिए रास्ते खुल जायेंगे.....'' फिर उसने अपने आपको पॉलिटकली करेक्ट करते हुए कहा, ''अनलेस ऑफ़ कोर्स तू आलरेडी ट्रेंड डांसर है!''

-''नो.....मैं ने डांस किसी स्कूल से नहीं सीखा बट आई कैन डांस एंड डांस वैल!''

-''ठीक है यार.....यु नो दी बेस्ट.....'' राजेश ने उठकर अपनी बुश्शर्ट के दाहिने बाज़ू से अपनी दाहिनी आँख और गाल साफ़ किये और बोला ''थैंक्स फ़ॉर दी टी! मैं चलता हूँ..... बाई !''

तपन ने वापस जाकर अपनी बिल्डिंग के दूसरे माले वाले फ़्लैट में से कल का टाइम्स ऑफ इंडिया मांग कर देखा। बहुत ढूंढने पर एक छोटी सी विज्ञापन नुमा इनफार्मेशन थी कि मॉडर्न डांस की क्लास्सेस अगले रविवार से सात 'वीकेंड' ऑपेरा हाउस के पास चलेंगी। फ़ोन नंबर दिया गया था। तपन ने फ़ोन किया।

-''मैं डावर साहेब से बात करना चाहता हूँ''

-''ही इज़ नॉट हिअर !''

-''कब मिलेंगे?''

-''कल शाम.....सिक्स ओ क्लॉक !''

-''ओ के !'' तपन ने फ़ोन काट दिया और अगले दिन शाम के छः बजे तक उसकी बेचैनी बरक़रार रही। दूसरे दिन डावर साहेब को फ़ोन दिया गया।

-''यस?''

-''माय नेम इज़ तपन सेन, आई टीच डांस.....तो अगर आपके इंस्टिट्यूट में सिखाने के लिए कोई चाहिए तो आई एम हियर !'' तीस सेकंड ख़ामोशी रही, फिर डावर ने कहा, ''यहाँ तो मैं खुद सिखाता हूँ.....जब बाहर होता हूँ तब मेरी असिस्टेंट सिखाती है..... आई डोंट नीड एनी टीचर!''

-''ओह.....आई जस्ट थॉट यू माइट।''

-''तुम करते क्या हो?''

-'' मैं कोरिओग्राफ़र हूँ.....डांसर हूँ.....और स्टेज मैनेजर हूँ !'' तपन ने बड़ी सफ़ाई और आत्मविश्वास से ये सब झूठ बोला।

-''आई सी.....''

-'' मूड इंडिगो.....! यु नो आई. आई. टी. का फ़ेस्ट.....''

-''यस''

-''मैं वहां मुद्दतों से कोरिओग्राफ़ी करता हूँ !''

-''ठीक है.....आप किसी दिन शाम को पांच के बाद मेरे ऑफ़िस में आइये तब देखेगे !''

बात की टोन से तपन को अंदाज़ा हो गया कि यहाँ दाल आसानी से गलने वाली नहीं है । इंजीनियरिंग के फ़ाइनल इम्तिहान क़रीब थे। पास होना ज़रूरी था

वरना एक तो पिताजी की नाराज़गी झेलनी पड़ती और दूसरी - सबसे बड़ी बात - इन्हीं विषयों को अगले साल दोबारा भी पढ़ना पड़ता।

माँ - कोयली सेन -लड़के को रात देर-देर तक पढ़ते देखकर प्रसन्न हो गयीं। उठ उठकर चाय/कॉफ़ी पूछ लेती थीं। प्रसन्न तो पिता- शुबीर सेन- की आत्मा भी होती थी लेकिन वे इसे जताते बिलकुल नहीं थे। कभी एक आध दिन रात में लड़के को पढ़ते देखकर कह देते थे -''थोड़ा ब्रेक लेलो !'' लड़के के दिमाग़ में कुछ और चल रहा था। वो था इम्तेहान होने के बाद का एजेंडा !

भांडुप - जहाँ से तपन लोकल पकड़ता था वहां से कुछ लोगों का ग्रुप भी ट्रेन पकड़ता था। असल में भांडुप पूर्व में सरकारी फ़्लैट्स जो थे वो गवर्नमेंट कॉलोनी थी और जो नए नए आई. आर. एस. (इंडियन रेवेन्यू सर्विस) के या और डिपार्टमेंट्स के अफ़सरान थे उन्हें यहाँ रहने के लिए जगह आलॉट की जाती थी। दफ़्तर का समय तो तक़रीबन सबका एक ही होता था इसलिए ये अफ़सरान भी उसी समय लोकल पकड़ते थे। अब कई एक साथ होते थे तो इनमें आपस में दोस्ती सी हो जाती थी और ग्रुप्स बन जाते थे। इन लोगों के साथ प्लेटफ़ॉर्म पर इंतज़ार करने और ट्रेन पकड़ने के दौरान तपन की भी इनमें से कुछ से दुआ सलाम होने लगी। हालांकि तपन इन सबसे उम्र में छोटा था लेकिन उसकी लम्बाई और चाल ढाल उसे अपनी उम्र से ज़्यादा ही दर्शाती थी। उस सरकारी ग्रुप में एक साहब थे जो दूरदर्शन स्टेशन वर्ली में रिकॉर्डिंग इंजीनियर थे - श्रीकांत गोरे। गोरे बहुत शालीन, शांत, और अपने में सीमित रहने वाले शख़्स थे। एक और बात ये थी कि जहाँ बाक़ी अफ़सरान फ़र्स्ट क्लास के डिब्बे में सफ़र करते थे वहीं गोरे सेकंड क्लास में सफ़र करते थे और क्योंकि तपन सेकंड क्लास का मुसाफ़िर था इसलिये गोरे से इसकी अच्छी ख़ासी मुलक़ात हो गयी। गोरे परेल उतरते थे, वहां से पैदल टी.वी. स्टेशन तक आते थे। तपन हालांकि घाटकोपर के आगे विद्या विहार उतरता था लेकिन तब तक भांडुप से बीस मिनट का समय तो हाय-हैलो के लिए मिल ही जाता था। गोरे ज़्यादातर चुप रहते थे। एक दिन तपन ने उनसे पूछा, ''सर, मुझे टी.वी. सेंटर दिखाइयेगा?''

-''कभी भी आ जाओ.....गेट से मुझे फ़ोन कर लो !''

-''टी.वी. में कोई डांस - गाने का प्रोग्राम हो तो में इनटरेस्टेड हूँ।''

-''तुम आओ, मैं तुम्हें प्रोड्यूसर से मिलवा दूंगा।''

और इसलिए तपन अपने इम्तेहान समाप्त होने का इंतज़ार बड़ी बेसब्री से कर रहा था।

-''आप मराठी जानते हैं?.....हमारे यहाँ मराठी नाटक का कार्यक्रम होता है. ....लेकिन वो ज़्यादातर मराठी नाटककार ही करते हैं। आप किसी मराठी नाटक ग्रुप में होते तो.....'' टी.वी. सेण्टर में एक प्रोड्यूसर ने कहा।

-''मैं तो दूरदर्शन पर हिंदी प्रोग्राम भी देखता हूँ।''

-''वो.....वो मैं नहीं करता.....वो दूसरे साहब करते हैं.....वो जो दूसरे कमरे में गंजे से बैठे हैं न.....वो.....'अपना शहर'.....वो ही करते हैं।''

दूसरे कमरे में ''अपना शहर'' वाला प्रोड्यूसर प्रोड्यूसर लग ही नहीं रहा था। वह कुर्सी में कम और मेज़ पर ज़्यादा था। सामने रक्खे काग़ज़ों के एक पुलंदे में आँखें कम सर ज़्यादा गड़ाए था और अपने दोनों हाथों को कोहनियों से लेकर उसने मेज़ के दोनों तरफ़ फैलाया हुआ था। हाथ के पंजे उसके खुले हुए थे और वह अपनी आज़ाद उँगलियों से मेज़ पर रह रहकर तबला सा बजा रहा था। तपन ने मेज़ के सामने जाकर जब ''एक्सक्यूज़ मी सर !'' कहा तो दूसरी बार में उसने सुनकर अपनी गर्दन हवा में यों उड़ाकर उठाई जैसे किसी ने उसे नींद से थप्पड़ मारकर जगाया हो।

-''हाँ?!'' प्रोड्यूसर ने तपन को देखकर चारो तरफ़ यों देखा जैसे पूछ रहा हो कि ''क्या ज़लज़ला है भाई !'' फिर उसने सम्भलते और सहज होते हुए तपन से सामने रखी कुर्सी पर बैठने के लिए इशारा किया। तपन ने अंग्रेजी में इम्प्रेस करने वाली शैली में बात शुरू की।

-''हिंदी जानते हो?'' प्रोड्यूसर ने पूछा।

-''जी सर !''

-''तो हिंदी में बोलो न यार.....हिंदुस्तान में हिंदी नहीं बोलोगे तो क्या अमरीका में बोलोगे?.....बताओ.....''

फिर बात प्रोग्राम और डांस प्रोग्रामों की चली। तपन ने अपना मुद्दा बयान किया।

-''मेरा प्रोग्राम होता है शहर की समस्याओं और शहर की अच्छाइयों को लेकर. ....सरकारी चैनल है.....सिस्टम के खिलाफ़ हम कुछ नहीं कर सकते। डांस प्रोग्राम भी कभी कभी होते हैं लेकिन वो भी क्लासिकल..... वेस्टर्न डांस या एक्सपेरिमेंटल डांस फ़ॉर्म्स पर कर दें तो क्या पता कौन नेता खड़ा हो जाये कि दूरदर्शन हमारा कल्चर बिगाड़ने पर तुला है.....समझे न.....इसलिए.....आप टच में रहिये..... कोई डांस का प्रोग्राम अगर हम करेंगे तो आपको ज़रूर बुलवाएंगे। आप चाहें तो अपना कांटेक्ट एड्रेस हमें लिखवा दें।''

तपन ने अपना पता लिखवाया और जब थैंक यू करके जाने लगा तो प्रोड्यूसर को तपन बहुत मायूस लगा। उसे अच्छा नहीं लगा।

-''देखो.....''

तपन मुड़ा, ''यस सर?''

-''देखो बाहर निकलोगे तो सड़क से उस पार सामने ही एक बड़ी ऊंची सी बिल्डिंग है, वहां एक सॅटॅलाइट चैनल का दफ़्तर खुला है। नया चैनल है। शुरू होने वाला है । देख लो वहाँ अगर वो लोग तुम्हारे मतलब का प्रोग्राम प्लान कर रहे हों तो.....'' तपन के चेहरे पर चमक आ गयी। उसने जोश से ''थैंक यू सर!'' कहा और बाहर आ गया ।

सड़क के उस पार एक गली सी थी। गली के किनारे एक ऊंची सी ईमारत थी जो किसी उद्योग पति का ऑफ़िस था। उसी उद्योगपति ने एक टी वी चैनल शुरू करने का आह्वान किया था इसलिए चैनल का ऑफ़िस भी इसी बिल्डिंग में था।

-''किस्से मिलना है?'' घुसते साथ मेज़ पर बैठे तीन सिक्योरिटी वालों ने रोका।

-जो भी इंचार्ज है !''

सिक्योरिटी वालों ने एक दूसरे से मशविरा किया और फिर एक गेट पास लिखकर तपन को थमा दिया, ''सीतारामैय्या जी से मिलिए.....दूसरा माला।''

आधे घंटे वरांडे में इंतज़ार करवाने के बाद जब सीतारामैय्याजी अपनी उतरती हुई पैंट सम्भालते, अपने मोटे गोल चश्मे से झांकते और परेशान हाल तेज़-तेज़ आये तो बहुत जल्दी में थे, ''क्या बात है ?''

तपन ने अपना शौक़ बयान किया ही था कि वे जैसे चिढ़ गए।

-''अभी चैनल स्टार्ट नई हुआ बाबा.....होने का है.....टाइम लगेगा.....कम आफ़्टर टू मंथ्स!.....ओ के.....'' और सीतारामैय्या जी जिस दरवाज़े से आये थे वहीं से वापस चले गए।

तपन जब बिल्डिंग के बाहर सड़क पर वापस आया तो 'ब्लैंक' था। क्या करना चाहिए, कहाँ जाना चाहिए उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसने एक लम्बी सांस ली। फिर उसकी नज़र यकायक आसमान पर गयी। मौसम पलट रहा था। धूप ग़ायब हो गयी थी। बादल आ गए थे और हवाएं चल रही थीं। जून महीने की शुरुआत थी। दो चार दिनों में ही बारिश शुरू होने के इमकान थे।

2

रिज़ल्ट आने में थोड़ा वक़्त था। नेवी में कमांडर साहेब से रिज़ल्ट आने तक बात करना बेकार था। जुलाई का महीना था और बारिश लगातार थी इसलिए नीचे क्रिकेट खेलना बंद था। बोरियत की भी इन्तहा थी और काम से लगने का भी टेंशन था। तपन बिल्डिंग के नीचे तो आ गया था लेकिन बेतहाशा बारिश के चलते बाहर नहीं जा पा रहा था। बिल्डिंग की दूसरी मंज़िल पर रहने वाले मिस्टर नायर अपना झोला लटकाये, अपना चश्मा ठीक करते हुए नीचे उतरे।

-''तुम भी खड़े हो?''

-''देखिए न अंकल कितने ज़ोर की बारिश है ।''

-''बम्बई है.....यहाँ बारिश और छोकरी दोनों का कोई भरोसा नहीं है।''

-''क्या अंकल !.....छोकरों का भी है क्या !''

-''तुम तो फ़ेमिनिस्ट निकला!''

-''बात सच है कि नहीं सर?''

-''वो जाने दो,.....आज संडे को में सोचा मछली ले के आऊँगा.....लेकिन देखो.....जायेगा कैसा,.....''

-''मैं ला देता हूँ.....''

-''भीग के जायेगा?''

-''भीगना तो पड़ेगा ''

-''नई बाबा.....तुम मत लाओ.....तुम सांप-माप ले के आएगा तो मेरा बीबी मुझे गाली देगा.....''

-''आप भी न अंकल,.....''

दो मिनट की ख़ामोशी के बाद नायर ने पूछा, ''रिज़ल्ट आ गया?''

-''आने वाला है।''

-''नौकरी देखा?''

-‘‘देखना है ।’’

-‘‘तेरा पिताजी बहुत टेंशन में है.....वो बोला मुझको उस दिन.....लेकिन मैंने कहा तेरा तो जॉब का कोई प्रॉब्लम ही नई हो सकता क्योंकि इस एरिया में चारों तरफ़ तो फ़ैक्ट्री/कंपनी भरा पड़ा है। इंडियन स्मेल्टिंग है, जी के डब्लू है, एशियन पेंट्स है.....इंजीनियरों का सब को जरुरत है.....एंड यू आर एन इंटेलिजेंट मैन !’’

इधर उधर की बातें करते करते बीस मिनट गुज़र गए और बारिश हल्की होने लगी।

-‘‘मैं चलता हूँ.....नई तो फिर शुरू हो गया तो मेरा मछली जायेगा।’’

नायर चले तो गए लेकिन तपन को नौकरी के लिए आईडिया दे गए। हालाँकि उसे आसपास की सारी कंपनियों का मालूम था लेकिन उसके दिमाग़ में पिताजी ने नेवी इतना भर दिया था कि उसे यहाँ आसपास नौकरी ढूंढने का ख़्याल ही नहीं आया।

बारिश अब तक़रीबन बिलकुल रुक गयी थी। हालाँकि बादल अभी भी घिरे थे मगर बरसने में लगता था शायद थोड़ा वक़्त लगे। तपन ने सोचा बाहर निकलकर थोड़ा घूम आये। ‘कहाँ जायेगा?’ फिर उसने सोचा कि जा कर राजन के कैफ़े से कॉफ़ी पी कर आएगा। राजन का कैफ़े भांडुप में था - क़रीब आधा मील दूर। सोचा अच्छा है थोड़ी चहल कदमी हो जाएगी, लेकिन मौसम को देखते हुए उसने बस ले ली।

भांडुप बस स्टॉप पर उतरते साथ जैसे ही उसने स्टेशन रोड की तरफ़ नज़र घुमाई तो देखा कि गोरे साहेब नुक्कड़ वाली किराने की दुकान से सामान खरीद रहे हैं।

-‘‘सर नमस्कार !’’

-‘‘अरे तपन.....कैसे हो.....उस दिन मिल लिए सबसे?’’

-‘‘आपको मिलकर धन्यवाद देना चाहता था लेकिन वो बोले आप रिकॉर्डिंग में बिज़ी हो गए हैं।’’

-‘‘हाँ.....कुछ हुआ क्या?’’

-‘‘ना.....मराठी वालों ने मना कर दिया। हिंदी वालों ने कहा मैगज़ीन प्रोग्राम है नाच गाने का तो कोई चांस नई।’’

-‘‘ये सब छोडो.....सीरियल आजकल बहुत बड़ा बिजनेस है.....’’

-‘‘सीरियल?,.....वो जो टी वी पर आते हैं?’’

-‘‘हाँ.....एक स्क्रिप्ट एप्रूव करवा लो और सीरियल प्रोड्यूस करो।’’

-"मैं इसमें कुछ जनता नई"

-"जानना उसमें कुछ नई है.....कितने तो पान बीड़ी वालों ने अप्रूवल ले रखे हैं, उनको कुछ आता है क्या!?.....एक बार स्क्रिप्ट एप्रूव हो गयी कि लोग तुम्हारे पीछे आएंगे....."

-"तो किससे मिलूं?"

-"टी वी सेण्टर जाओ वहां सीरियल प्रोड्यूसर से मिलो।"

-"आप मिलवा दो"

-"मेरा मिलवाना ठीक नहीं रहेगा.....वो समझेगा इनका कोई इंटरेस्ट होयेगा. ....तुम खुद जा के मिलो एक दिन"

-"मैं तो स्क्रिप्ट लिखना भी नई जानता....."

-"एक पेपर पर कहानी लिख के ले जाओ यार.....एक को तो एक किताब पर ही अप्रूवल मिल गया.....एक को एक पैराग्राफ़ की सिनोप्सिस पर अप्रूवल मिल गया....."

-"वंडरफुल.....मैं कल ही जाता हूँ"

दूसरे दिन तक का इंतज़ार बड़ा भारी था और उससे भारी था ये चुनना कि अप्रूवल के लिए आख़िर लिखकर कौन सी कहानी ले जाई जाये। अंग्रेज़ी के कितने ही उपन्यास पढ़े होंगे लेकिन सीरियल बनाने की नज़र से कौन पढ़ता है! पढ़ा और भूल गए ! बहरहाल कुछ तो ले ही जाना पड़ेगा ! फिर उसने सोचा कि अगर किसी को किताब पर ही अप्रूवल मिल सकता है तो उसे भी मिल सकता है। उसने जानी मानी और अपनी पसन्दीदा लेखिका अगाथा क्रिस्टी का एक उपन्यास अलमारी से निकाला, ऊपर से धूल साफ़ की और उसे अपने बैग में सम्भाल कर रख लिया।

-"नाम?" दूरदर्शन सेण्टर के ड्यूटी रूम वाले ने सर उठाकर सवालिया नज़र डाली।

-"दीपक चोपड़ा।"

-"किस से मिलना है ?"

-"सविता जी से।"

लाइन में दीपक चोपड़ा के बाद नंबर था तपनसेन का।

-"मुझे सीरियल प्रोड्यूसर से मिलना है।"

-"वो तो दोपहर तक आएंगे।"

-"और पहले आगए तो?"

ड्यूटी क्लर्क ने भंवें तरेर कर तपन को देखा। बात ठीक थी - 'जल्दी आगए

तो!' वह कुछ कह नहीं पाया।

-''नाम बोलो?''

-''तपन सेन।''

-''दूसरा माला!'' पास फाड़ते हुए क्लर्क ने कहा।

ये वो जमाना था जब दूरदर्शन (डी.डी.) पर सीरियल चलते थे। इन सीरियलों की पटकथा दूरदर्शन के अधिकारियो से एप्रूव करवानी पड़ती थी जिसकी अपनी प्रक्रिया थी और दुनिया में ख़बर थी कि इस एप्रूवल के लिए उनकी अपनी 'फ़ीस' भी थी। हर एक की दूरदर्शन अधिकारियों तक पहुँच भी नहीं थी। इस सब के पीछे डी. डी. के सीरियलों की डिमांड और इनसे पैसे की मोटी कमाई अहम् कारण था।

कहा जाता था कि इस कमाई में डी. डी. के अधिकारियों का भी हिस्सा होता था - न हो तो वे सीरियल एप्रूव ही नहीं करते थे और यदि कर भी देते थे तो बीच टेलीकास्ट में रोक भी देते थे। एप्रूव न हो तो चलो शुरू ही नहीं होता लेकिन जब कोई सीरियल बीच में रोक दिया जाता तो प्रोड्यूसर को बड़ा नुकसान होता क्योंकि जो एपिसोड बन के 'बैंक' में अगले टेलीकास्ट के लिए रखे होते थे उनमें लगा पैसा बर्बाद हो जाता था। इसलिए हर प्रोड्यूसर डी.डी. के अफ़सरों - ख़ासतौर से सीरियल के इंचार्ज अफ़सर - के सामने बड़ी तमीज़ से हाथ जोड़े खड़ा होता था - जी हुज़ूरी में!

दीपक चोपड़ा एक छोटा मोटा डॉक्यूमेंट्री बनाने वाला नौजवान था जो जालंधर से फ़िल्मों के शौक़ में बम्बई आ गया था। गुज़ारे के लिए उसने भारतीय फ़िल्म प्रभाग (फिल्म्स डिवीजन-एफ.डी.) में 'एडहॉक' डायरेक्टर की तरह दो डॉक्यूमेंट्री फ़िल्मों का निर्देशन किया था। वो भी इसलिए कि वह जालंधर से मासकॉम में ग्रेजुएट था और कहता था कि वह कॉलेज में एक दो स्क्रिप्ट लिख चुका है, और दूसरे उसने 'एड हॉक डायरेक्टरों के इंचार्ज प्रोड्यूसर मिस्टर जी.एस. धीर के पास रोज़ जा जाकर पंजाबी में उन्हें ख़ुश कर करके मना लिया था कि वे उसे चान्स दें! इस तरह उसने दो दस-दस मिनट की (वन रीलर) डाक्यूमेंट्री फ़िल्मों का निर्देशन कर लिया था - एक गाँव में जल संवर्धन पर और दूसरी परिवार नियोजन पर। लेकिन हर फ़िल्म का एक तो उसे दस हज़ार रूपया मिला था - वो भी फ़िल्म समाप्त करने के तीन-चार महीने बाद और दूसरे साल डेढ़ साल में सिर्फ बीस हजार रूपये कमाकर उसका गुजारा मुश्किल हो गया था। वह एंटोप हिल के सरकारी आवास में एक इनकम टैक्स के चपरासी के फ़्लैट में एक कमरे को किराये पर लेकर पी. जी. गुज़र कर रहा था। उसे बम्बई आने और फ़िल्मों का शौक़ पालने के लिए अपने ऊपर कई

बार बेतरह गुस्सा आया था लेकिन कल शाम जब वो ज़रा जल्दी 'घर' पहुंचा तो उसके फ़्लैट के मालिक ने टी. वी. पर चलता सीरियल दिखा कर कहा, ''हे बघा! तुम्हीं पण करा एकाध सीरियल'' (ये देखो, तुम भी करो एकाध सीरियल) और चोपड़ा के मन में बात बैठ गयी। फिर रात को 'आन्टी' के अड्डे पर दो पैग चढ़ाते हुए उसने अपने आपको ज़ोर से थप्पड़ मारा- ''दीपक चोपड़ा! साले, 'सीरियल बनाओ' बोलने के लिए तुम्हें वो चपरासी ही चाहिए था? तुम्हारी अपनी बुद्धि नहीं है?.....तुम खुद नहीं सोच सकते थे ये बात!'' और उसने सोचा दूसरे दिन सुबह ही सुबह वह सब से पहले टी. वी. सेण्टर जायेगा।

-''साहेब बाहर हाय ! ''चपरासी ने सीरियल इंचार्ज अफ़सर के केबिन के बाहर बैठे बैठे ही कहा।

-''कब आएंगे?''

-''येतील.....बसा.....'' (आएंगे, बैठो)

दीपक बग़ल में पड़ी एक बेंच की तरफ़ बढ़ा। वहां पहले से ही तीन और लोग बैठे हुए थे - एक महिला और दो पुरुष। उन तीनों ने दीपक को ऊपर से नीचे तक देखा और फिर बग़ल में थोड़ी ख़ाली पड़ी जगह पर उसे बैठते हुए देखा। जगह ज़रा कम पड़ती थी इसलिए दीपक ने बग़ल वाले को इशारा किया, बग़ल वाला कुछ ऐसे खिसका जैसे एहसान कर रहा हो। दीपक ने बैठते हुए हल्की सी सांस बाहर छोड़ी और टाँग पर टाँग रखते हुए अपनी कलाई घड़ी पर एक नज़र मारी। ग्यारह बजे थे। उसने आस पास वरांडे में सर घुमाकर देखा 'साहेब' का केबिन सामने ही था। उस पर पीतल की तख़्ती पर काले अक्षरों में गुदा हुआ था -''वाई. आई. शिंदे असिस्टेंट स्टेशन डायरेक्टर, दूरदर्शन''। दरवाज़े के बग़ल में एक लकड़ी की कुर्सी पर उनका चपरासी बैठा था जो कि तम्बाकू मल चुका था। उसने अपने मुंह में फक्की मारी और अपने बग़ल में खुसा हुआ 'सकाळ' अखबार उठाकर, झटका देकर उसमें कुछ पढ़ने लगा। इतने में जगह ढूंढता - ढाँढ़ता तपन वहां पहुंचा।

-''एक्सक्यूज़ मी !'' तपन ने बेंच वालों से अपने बैठने के लिए जगह बनाने की रिक्वेस्ट की। चारों बैठे लोगों ने नज़र उठाकर इस पांचवें को ऐसे देखा जैसे कह रहे हों 'ये कहाँ से टपक पड़ा !' दीपक चोपड़ा थोड़ा खिसका, ''सॉरी, जगह इतनी ही है ।''

-''नो प्रॉब्लम'' तपन ने कूल्हा तक़रीबन बेंच के किनारे टिकाते हुए कहा। क़रीब क़रीब वैसे ही जैस कि लोग लोकल ट्रेनों में सीट पर चौथी जगह बनाकर बैठ जाते हैं। दो मिनट की ख़ामोशी के बाद तपन ने दीपक की ओर देखकर पूछा, ''आप

तो सविता जी से मिलने वाले थे.....क्या वो ही सीरियल देखती हैं?''

-''नहीं जी.....वो तो अंदर आने की बात है .....इन महाशय का नाम लेकर मैं दो बार आ चुका हूँ। ड्यूटी अफ़सर हमेशा बोलता है कि दोपहर के बाद आओ. ....और दोपहर में ये मिलते नहीं। इसलिए आज मैं सविता जी के नाम से पास बनवाकर आकर डट गया हूँ। सविता जी यहाँ प्रोडक्शन असिस्टेंट हैं। उनसे मैं एक बार मिल चुका हूँ.....इसलिए .....!.....आज मैं शिंदे साहेब से मिलकर ही जाऊँगा।''

कोरिडोर में लोग आ जा रहे थे लेकिन शिंदे साहेब का अता पता नहीं था। घंटे भर के इंतज़ार के बाद बैठे हुए लोगों में से एक ने उठकर चपरासी से साहेब के बारे में पूछा।

-''येतील बाबा !'' (आएंगे बाबा !) चपरासी ने चिढ़कर जवाब दिया।

-''कदी?'' (कब?) पूछने वाला भी अड़ा रहा।

-''लंच चा नंतर ! (लंच के बाद).....''तुम लोग भी लंच करके आओ..... इदर बैठके कुछ फायदा नाइ।''

बैठे हुए पाँचों ने आहिस्ता आहिस्ता उठकर बदन तोड़ा, अंगड़ाई और जम्हाई ली फिर कैंटीन का पता पूछा।

कैंटीन तीसरी मंज़िल के एक किनारे पर थी। उस तरफ़ की पूरी दीवार पर खिड़कियां ही खिड़कियां थीं जो खुली थीं इसलिए भरपूर धूप और थोड़ी बहुत हवा अंदर आ रही थी। घुसते साथ दाहिनी तरफ़ कुछ मेज़ कुर्सियां पड़ी थीं जहाँ कुछ लोग बैठे ज़ोर ज़ोर से कुछ चर्चा कर रहे थे और बीच बीच में ठहाके लगाते जाते थे। उनके सामने खाली की गई चाय की प्यालियाँ पड़ी हुई थीं जिन पर मक्खियां भिनभिना रहीं थीं और जिन्हें उड़ानें-भगाने के लिए कोई कुछ नहीं कर रहा था। कैंटीन शेट्टी चला रहा था जो गोल्डन चेन, गोल्डन घड़ी में सफ़ेद आधी बांह वाली क़मीज पहने दीवार में लगे मंदिर की तरफ़ पीठ किये घुसते साथ काउंटर के इधर ही बैठा था। कैंटीन में पोहा, इडली, वड़ा, दाल-राइस, चाय और छाछ थे। सीढ़ियां चढ़कर कैंटीन तक चलकर आते आते पांचों 'साहेब' के इंतज़ार करने वालों में - जो अब तक चुप थे - थोड़ी थोड़ी बातचीत शुरू हो चुकी थी।

-''प्लीज़.....!'' दीपक ने महिला को कैंटीन में घुसते आगे करते हुए कहा।

-''अरे कोई बात नहीं.....थैंक यू.....वैसे मैं अनघा.....आप?''

-''मैं दीपक चोपड़ा !''

-“मैं सयाजी शिंदे !”

-“मैं दीपक त्रिपाठी !”

-“मैं तपन सेन !”

सबने सिलसिले वार एक दूसरे से अपना अपना परिचय देते हुए हाथ मिलाये।

-“आप एक्टर हैं?” अनघा ने दीपक की ओर देखकर पूछा।

-“मैं?.....नहीं नहीं.....मैं सीरियल डायरेक्ट करना चाहता हूँ।”

-“ओह.....” त्रिपाठी ने बात जोड़ी, “मैंने भी सोचा आप एक्टर हैं।”

-“कैसे कैसे?” दीपक को जिज्ञासा हुई।

-“अरे हैंडसम आदमी से कोई भी यही पूछेगा.....हंहंहं.....” सयाजी ने हंसी का माहौल बना दिया।

-“तो उस हिसाब से मेरे बारे में क्या अनुमान लगाया जा सकता है ?” तपन ने पूछा।

-“आप.....?” अनघा ने सोचा फिर कहा, “इंटेलेक्चुअल !”

और सब हंस पड़े।

पाँचों एक ख़ाली टेबल देखकर बैठ गए और मशविरा करने लगे की क्या खाया जाये। बातचीत का सिलसिला भी जारी रहा।

-“यार ये सीरियल बनाना इज़ वैरी डिफ़िकल्ट” त्रिपाठी ने भृकुटि पर ज़ोर देते हुए कहा।

-“टोटल करप्शन है” सयाजी बोला।

-“करप्शन क्या है .....धंधा है.....इनका भी और अपना भी.....ये भी कमाते हैं, इनके लोग भी कमाते हैं और प्रोड्यूसर भी कमाते हैं।”

अनघा ने ऐसे कहा जैसे वह यहाँ सबसे ज़्यादा तजुर्बेकार है ।

-“मैं तीन महीने से स्क्रिप्ट दे चुका हूँ.....अभी तक कोई जवाब नहीं।” सयाजी ने अपनी व्यथा कही।

-“आप प्रोड्यूसर हैं?”

-“नहीं जी मैं राइटर हूँ, “सयाजी कुर्सी में शिफ़्ट करते हुए बोला, “क्या है कि इनकी मोनोपोली है न सीरियल की और लोगों के पास विकल्प नहीं है इसलिए अब इनके भी दांत निकलने लगे हैं.....इनको अब नए आइडिआज़ नए लोग नहीं चाहिए, , इनको भी सेलिब्रिटी राइटर, सेलिब्रिटी एक्टर चाहिए।”

-“सब पब्लिक पर है.....और दूसरे मराठी भाषा में तो साहित्य इतना बढ़िया

और इतना सशक्त है कि पूछिए मत.....मराठी स्पीकिंग पब्लिक भी मराठी साहित्य की क़दर करती है.....शायद इसलिए .....''

-''अरे लेकिन पु. ला. देशपाण्डे के लिखे पर कब तक सीरियल बनाओगे यार?.....और जब तक ट्राई नहीं करोगे तब तक कैसे तय करोगे की नए राइटर का माल अच्छा है या नहीं.....क्लास्सिकल लोग भी तो कभी नए थे.....''

-''अच्छा !.....ये किताबों पर भी अप्रूवल देते हैं?'' तपन ने पूछा।

-''किताबों पर?.....ये आपके आईडिया भर पर भी अप्रूवल देते हैं.....बशर्ते कि आप इनकी शर्त पूरी करें।''

-''मतलब?''

-''साहेब आने दो.....समझ जाओगे।''

-''चलो, चलो.....कुछ खाते हैं.....एक बजने आया, शिंदे शायद दो तक आ जाये.....कोई और उससे मिलने आ गया तो हम फिर बाहर बैठे रह जायेंगे।''

पांचों जल्दी जल्दी खा-पीकर पौने दो तक वापस आकर बैंच पर बैठ गए। इस समय चपरासी भी अपनी कुर्सी पर नहीं था। सयाजी ने शिंदे साहब की केबिन का दरवाज़ा धकेल कर अंदर देखना चाहा। दरवाजा बंद था। टी. वी. सेंटर में अचानक बड़े ज़ोर से 'बज़र' की आवाज़ आयी। कोर्रिडोर में एक लड़की जो इधर से उधर जल्दी में भाग रही थी उसे देखकर तपन परेशान हो गया। उसने उस लड़की से पूछा, ''क्या हुआ? ये अलार्म कैसा?'' लड़की ने उड़ती सी नज़र से- जैसे बे मतलब- तपन की तरफ़ देखा और बग़ैर जवाब दिए भागती चली गयी। जवाब सयाजी ने दिया, ''बसा हो बसा.....(बैठो, बैठो).....लंच टाइम संपला (लंच का समय समाप्त हुआ) इसलिए बज़र है।''

-''ओह.....मैं समझा कोई आग वाग !'' तपन आराम से वापस बैठने लगा। सब चुपचाप फिर अपनी अपनी घड़ियाँ देखने लगे। ढाई बजे तक चपरासी वापस आकर अपनी लकड़ी वाली कुर्सी पर बैठ गया और पीछे टिककर आँखें बंद किये ध्यान मग्न हो गया। दस मिनट बाद उसने आँख खोली, कलाई मोड़कर उस पर बंधी घड़ी देखी और फिर रुमाल से अपना चेहरा साफ़ करके उठकर कुर्सी को अख़बार से फटकार कर पैन्ट की इस्त्री ठीक करते हुए सीधा बैठ गया। फिर सब बैठे लोगों की तरफ़ देखकर बोला, ''साहेब येतील आता'' (साहेब आएंगे अब)। तीन के आसपास शिंदे साहेब एक फ़ाइल बग़ल में दबाये धीरे धीरे चलते हुए वरांडे के उस छोर से आते दिखाई दिए। उनके साथ तीन और लोग थे जो उनके पीछे पीछे स्वमीभक्त की तरह चल रहे थे। साहेब को देखते ही चपरासी एकदम खड़ा हो गया।

उसने अपनी जेब से चाभी निकालकर साहब का केबिन खोल दिया और उनके अंदर जाने के लिए दरवाजा पकड़ कर खड़ा हो गया। साहब एक मिनट के लिए केबिन में घुसते घुसते रुके, बैठे हुए आगंतुकों की ओर अंदर आ जाने के लिए ऊँगली से इशारा करते हुए घुस गए। चपरासी वापस बैठ गया। बैठे हुए पाँचों फ़ौरन उठकर अंदर की ओर जाने लगे।

अंदर साहब ने बग़ल में खुसी फाइल मेज़ पर रखी, कुर्सी पर बैठे और पास की डस्ट बिन उठाकर उसमें अपने मुंह में भरी पान की पीक थूकी। साथ में आये तीन और लोग उनके सामने पड़ी कुर्सियों पर बग़ैर किसी लिहाज़ के बैठ गए। बाहर इंतज़ार करने वाले पाँचों उन तीनों के पीछे वाली कुर्सियों के पास खड़े हो गए।

-''बसा, बसा.....'' शिंदे साहब ने पीक के बाद एक नए सफ़ेद रुमाल से अपना मुंह दो-दो उँगलियों में सोने की अँगूठियाँ पहने हाथ से साफ़ करते हुए कहा। फिर उन्होंने सर उठा कर सवाल किया, ''हाँ !.....क्या?''

-''नहीं आप इनसे पहले बात समाप्त कर लीजिये.....'' त्रिपाठी ने पहले आए तीन लोगों की ओर इशारा करते हुए कहा।

-''वो छोड़ो.....इनको टाइम लगने वाला है .....तुम बोलो।''

-''मी साहब स्क्रिप्ट दीली होती'' (मैंने साहब स्क्रिप्ट दी थी), ''सयाजी ने कहा।

-''वो कमिटी के पास है .....जवाब आएगा तो तुम को लेटर आएगा'', फिर उन्होंने अनघा की ओर देखकर पूछा, ''तुम्हारा क्या?''

-''मेरा पायलट सबमिट हुआ है'' अनघा ने बिला समय बर्बाद किये सीधे कहा।

-''कुठला?''(कौन सा?)

-'' 'अगोबोलान'.....''

-''अगोबाईबोलान.....'' साहब ने सोचते हुए कुछ क़ाग़ज खंगाले, फिर मुस्कुराते हुए अनघा की तरफ़ देखते हुए बोले, ''हाँ.....हाँ.....अगोबाई आया है . ....आप बैठो.....बैठो।'' फिर दूसरों की तरफ़ देखकर बोले, ''हाँ? तुम्हारा क्या?''

-''मैं दीपक चोपड़ा !''

-''हाँ वो ठीक है .....काम बोलो !''

-''मैं सीरियल एप्रूव करवाना चाहता हूँ।''

-''बम्बई टी वी है .....महाराष्ट्र है .....सीरियल इदर मराठी में ही एप्रूव होता है .....हिंदी वाले सब दिल्ली में.....मराठी जानते हो?.....लिखते हो?''

-''नहीं।''

-''तो?''

-''चले आते हैं कहाँ कहाँ से'' साहब के साथ आए एक ने दीपक की ओर गन्दा सा मुंह बनाकर कहा, ''ये महाराष्ट्र में ही क्यों आते हैं?.....परमिट लगा देना मंगता है .....भैय्ये सगड़े इथेच येतात'' (भैय्ये सब इधर ही आते हैं)

-''मैं भैय्या नहीं हूँ'' दीपक की आवाज़ में तुर्शी आ गयी। अब तक वो बम्बई में 'भैय्या' की औक़ात समझ चुका था।

-''एक मिनट !'' शिंदे ने हाथ के इशारे से बोलने वाले को चुप कराते हुए तपन की तरफ़ देखकर पूछा, ''तुम्हारा हो गया?''

-''मैं अगाथा क्रिस्टी की किताब लाया हूँ,.....उस पर सीरियल बनाऊंगा... ..अप्रूवल चाहिए था।''

-''अगाथा.....कोण? (अगाथा कौन?).....चलो जो भी है.....किताब लाया?. ....स्क्रिप्ट लिखा क्या?''

-''लिखना है ।''

-''तो लिखो फिर सबमिट करो.....ठीक है .....चलो, चलो.....हो गया?''

साहेब के साथ एक मोटे से काली तोंद वाले ने हाथ हिलाकर साहेब के सामने मेज़ पर झुकते हुए कहा, ''मेरा तो अप्रूवल लेटर दे दो.....मैंने तो सब कर दिया।''

साहेब ने शराब का ज़बरदस्त भभका छोड़ते हुए अपने पान भरे मुंह से हाथ की उंगलयों से सिक्का उछालने का अभिनय करते हुए कहा, ''पैसा !.....पैसा देयो, माल लेयो''

-'' तेरह एपिसोड हैं सर, श्री राम लागू को लाने की गारंटी मेरी।''

-''बीस परसेंट दे दो.....कल लेटर ले जाओ।''

-''दस परसेंट की बात थी.....मैंने दे दिया।''

-''कब थी?.....कब?.....साल भर हो गया, महंगाई क्या से क्या हो गयी.. ...मालूम है ?--

-''मैं बैठूं सर?'' अनघा ने थोड़ा असहज होते हुए पूछा।

-''बैठो न.....तुम शाम को मिलो न मुझे.....अच्छे से, शान्ति से बात करेंगे। पायलट चांगला आहे तुमचा।'' (पायलट अच्छा है तुम्हारा)।

-''व्हाट ए ब्यूटीफ़ुल'', साहेब के साथ आये एक ने अनघा को देखकर कहा।

अनघा को थोड़ा ग़ुस्सा जैसा आया लेकिन वो कुर्सी में बैठी रही।

साहेब ने काग़ज की चिट पर एक नंबर लिखा और अनघा को दे दिया। ''ये

नंबर पर कभी भी मुझे फ़ोन कर लो.....शाम को मिलो.....मैं तुम्हारा अप्रूवल लेटर देता हूँ।''

-''मेरा पायलट एप्रूव हो गया?''

-''हाँ हाँ.....वोई.....पायलट भी एप्रूव कर देंगे और एक और स्क्रिप्ट भी एप्रूव कर देंगे.....एक सीरियल चलेगा, दूसरा पाइप लाइन में रहेगा।''

-''मैं क्या करूं सर?'' त्रिपाठी को मौक़ा मिला।

-''तुम्हारा क्या?''

-''मुझे मुकुट प्रोडक्शंस ने भेजा है.....''

-''हाँ हाँ.....तो शर्माता क्यों है.....दे दो, दे दो.....रख दो इधर.....!''

त्रिपाठी ने एक सफ़ेद लिफ़ाफ़ा साहेब की मेज़ पर रख दिया।

-''ठीक है .....तुम लोग जाओ.....हो गया न !?'' साहेब ने पूछा।

-''माझी स्क्रिप्ट चा काय?'' (मेरी स्क्रिप्ट का क्या?) सयाजी ने झल्ला कर पूछा।

-''तुम प्रोड्यूसर ढूंढो.....वो सबमिट करेगा तब आगे बढ़ेगा.....अब जाओ.....'' साहेब ने एक बार फिर बग़ल में नीचे रखी डस्टबिन उठाकर उसमें पीका और दोबारा अपने लाल होने लगे सफ़ेद रुमाल से मुंह पोंछ लिया।

सयाजी और दीपक अपना सा मुंह लिए केबिन के बाहर आ गए। त्रिपाठी ने संतुष्टि की डकार मारी और उसके पीछे तपन मुंह लटकाये हुए केबिन के बाहर आने लगा। चपरासी ने उन्हें देखकर पूछा, ''क्यों, हो गया पास?''

-'' कुछ भी नहीं !'' सयाजी ने जवाब दिया।

-''मेरी मानो'', चपरासी ने समझाते हुए कहा, ''दादर मालूम है.....प्रीतम होटल में शाम को साहेब को ले के जाओ और डील फाइनल कर दो.....मांगता है तो मैं मीटिंग अरेंज करा देता हूँ।''

दीपक चपरासी को देखता रह गया। त्रिपाठी ने मुस्कुराकर चपरासी के कंधे पर हाथ मारा और सयाजी ने हिक़ारत भरा मुंह बनाया।

जब ये लोग टी वी सेण्टर के नीचे आ गए तब तक अनघा या साहेब के साथ आए तीनों मेहमानो में से कोई भी बाहर नहीं आया था।

सयाजी का दर्द उभर आया, ''ऐसा करेगा तो साला प्राइवेट चैनल आनाच्छ मांगता है .....ये लोग का दादागिरी बहोत हो गया है।'' बग़ल में एक और दिल जला खड़ा था जिसने सयाजी की बात सुन ली। उससे रहा नहीं गया, बोला, ''वो युग अभी दूर है.....न जाने कब हम लोगों का नसीब चमकेगा.....वो साला स्टार

वाले का अभी तक टेस्टसिग्नल चल रयेला है । सुनता हूँ वो हिंदी चैनल लाने वाले हैं। कब लाएंगे पता नहीं।''

-''वहां कौन जायेगा?'' त्रिपाठी ने अपनी विद्वत्ता झाड़ी, ''जब नया चैनल आएगा तो टी वी के अनुभवी लोग चाहिए होंगे.....तो अनुभवी कौन मिलेगा.....ये ही साले यहाँ से नौकरी छोड़ के मोटी तन ख़्वाहों पर उन चैनलों में बैठ जायेंगे। सिस्टम तो बाबूजी यही रहने वाला है।''

-''सिस्टम भले ही रहे लेकिन उनको काम करना पड़ेगा। ये जो यहाँ लंच के बाद दारु पिए मन माने चले आना, दोस्ती करना.....ये सब वहां नहीं चलेगा क्योंकि वहां चैनल बोलेगी प्रॉफ़िट दिखाओ.....तो इन्हें वहां काम करना पड़ेगा और ये साले काम करने के तो आदि हैं नहीं। इसलिए या तो ये वहां नौकरी छोड़ जायेंगे या फिर सुधर जायेंगे और काम करेंगे।''

-''मैं एक प्राइवेट चैनल में भी हो के आया। वहां बोलते हैं कि दो महीने बाद आना। अभी शुरू नहीं हुआ है ।'' तपन ने कहा।

-''दो महीने में क्या देर है । दशहरे तक वो भी आ जायेंगे, तब देखना इन सालों को कुत्ता नहीं पूछेगा'' त्रिपाठी अपनी तोंद हिलाकर हंसा।

इतने में टी वी सेन्टर के फाटक पर एक मर्सेडीज़ गाड़ी आकर खड़ी हुई और द्वार पाल ने इन लोगों को रास्ते से हटने का इशारा किया।

-''ये देखा.....ये आया बड़ा प्रोड्यूसर, सीरियल इसे मिलेगा कि हमें मिलेगा. ....''

-''नहीं नहीं.....ये तो अपनी फ़ीचर फ़िल्म के रविवार को टेलीकास्ट लगवाने के लिए स्लॉट लेने आया है ।''

-''रविवार फ़ीचर फ़िल्म !.....वह तो सीरियल से भी बड़ा फ्रॉड है।''

-''चलो चलो,.....आगे बढ़ो.....'' एक द्वारपाल ने सख़्ती से कहा, ''इधर मजमा नई लगाने का।''

फिर सब लोग तितर बितर होने लगे।

-''आप डायरेक्टर हैं?'' तपन ने आगे चलते दीपक से पूछा।

दीपक पीछे मुड़ा, ''हाँ !''

-''कौन सी फ़िल्म?''

-''मैं डॉक्यूमेंट्री बनाता हूँ।''

-''आई सी.....मैं कोरेओग्राफ़र हूँ और डांस प्रोग्राम करने में इंटरेस्टेड हूँ.... .आपके पास अगर कोई डांस प्रोग्राम हो तो मैं इंटरेस्टेड होऊँगा।''

-''श्योर.....लेकिन अभी तो ऐसा कुछ है नहीं।

-''अपना नम्बर दे दीजिये में कॉल करके आऊँगा।''

दीपक के मुंह पर जैसे बड़े ज़ोर का तमाचा पड़ा। उसने सोचा 'क्या नम्बर दूँ इसे.....एंटॉप हिल के एक चपरासी के फ़्लैट के पीजी कमरे का!'.....फिर वो संभला और उसने आत्मविश्वास से कहा, ''नम्बर क्या, फ़िल्म्स डिवीज़न आ जाओ. ....वहीं मुलाक़ात हो जाया करेगी।''

-''फ़िल्म्स डिवीज़न?.....मैं नहीं जानता।''

-''पेड्डर रोड पे,.....लाओ मैं तुम्हें एड्रेस लिखकर देता हूँ।''

फिर दोनों थोड़ी दूर एक साथ पैदल चले और दोनों को एक दूसरे का साथ ठीक ठाक लगा। इधर उधर की बातें करते हुए बस स्टैंड तक आते आते दोनों अपने अंदर ही अंदर कुछ कुछ एक दूसरे को अपनी ही तरह का स्ट्रगलर समझ चुके थे. ....लेकिन यह बात बज़ाहिर कौन किससे कहता है ।

घर लौटते समय परेल से 'जैम पैक्ड' लोकल ट्रेन में खड़े खड़े भांडुप तक तपन को अच्छी तरह समझ में आ गया था कि अब उसे फ़िल्म/टी वी/फ़ैशन/डांस इत्यादि के ख़्वाब छोड़कर इंजीनियरिंग वाली कोई नौकरी ढूंढने पर ध्यान देना चाहिए।

3

उद्‌घाटन समारोह के मुख्य अतिथि मृणाल सेन थे। उनका भाषण चल रहा था - ''फ़िल्म की भाषा वो भाषा है जो सबकी है। दिखाई भी देती है, सुनाई भी देती है इसलिए ये सबके लिए समझना सहज होती है.....'' सेन साहेब अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बंगाली फ़िल्मों के बहुत बड़े फ़िल्म मेकर थे। पुणे के फ़िल्म तथा टी वी संस्थान के क्लास रूम थिएटर में उनके भाषण से आज ''फ़िल्म एप्रीसियेशन'' कोर्स शुरू हो रहा था। ''फ़िल्म एप्रीसियेशन'' याने फ़िल्मों की भाषा को सही तौर पर समझना। यह पांच सप्ताह का कोर्स हर वर्ष अलग अलग विधाओं से जुड़े लोगों के लिए फ़िल्म इन्टीट्यूट और फ़िल्म संग्रहालय के आपसी सहयोग से चलाया जाता था। इसमें आने वाले विद्यार्थी भी हो सकते थे, रिटायर्ड लोग भी हो सकते थे, फ़िल्म से सम्बंधित या गैर फ़िल्मी लोग भी हो सकते थे। इसमें बहुत से पत्रकार भी आते थे- ख़ासतौर से वे जो फ़िल्म क्रिटिक या रिव्यूअर होते थे। इस बार कोर्स में तक़रीबन चालीस लोग थे। इस बार इन लोगों में तपन भी था।

तपन ने अख़बारों में इश्तिहार देखा और यूँ ही - तक़रीबन शौक़िया - अप्लाई कर दिया। हालाँकि अब तक वह अपने घर से पंद्रह मिनट की दूरी पर जी. के. डब्लू. (गेस्ट कीन एंड विल्लियम्स) कम्पनी में ट्रेनी इंजीनियर की नौकरी पर लग चुका था और उसे इस कोर्स के लिए वहां से छुट्टी मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी। लेकिन इत्तेफ़ाक़ ये कि कोर्स के लिए सेलेक्ट भी कर लिया गया और सुपरवाइज़र ने उसे छुट्टी भी दे दी।

-''पांच हफ्ते का कोर्स है?.....हूँ .....!'' सुपरवाइज़र ने अपना हेलमेट उतार कर सर खुजाया, ''पांच हफ़्ते !.....तो पांच हफ्तों में तू क्या ख़ाक फ़िल्म बनाना सीखेगा?.....और अब तू फ़िल्म बनाएगा कि इंजीनियरिंग करेगा?''

-''सर, फ़िल्म बनाने का कोर्स थोड़े ही है.....ये तो फ़िल्म लैंग्वेज सीखने का

कोर्स है।''

-''तो क्यों जा रहा है ?''

-''शौक़ है सर,.....कुछ सीख लूँगा.....''

और सीखने का मौक़ा इस कोर्स में भरपूर था। तक़रीबन रोज़ाना कोई न कोई मशहूर फ़िल्मकार आकर यहाँ अपने तजुर्बे बयान करता था, दुनिया भर की चुनिंदा मशहूर क्लासिक फ़िल्में देखने को मिलती थीं और हर शाम/रात उन देखी हुई फ़िल्मों पर चर्चे होते थे।

कोर्स में हिस्सा लेने वालों के लिए हॉस्टल में रहने का और मैस में खाने का बंदोबस्त था। लाइब्रेरी हर एक के लिए खुली थी। गर्जे कि इन पांच हफ्तों में सोना, खाना, देखना, सुनना - सिर्फ फ़िल्म ! हालांकि यह कोर्स तब प्लान किया जाता था जब इंस्टिट्यूट के विद्यार्थियों की सलाना छुट्टी होती थी लेकिन कुछ विद्यार्थी जिनकी डिप्लोमा फ़िल्मों पर काम चल रहा होता था वे तो कैंपस में होते ही थे। फ़िल्म एप्रीसियेशन के लिए आये लोगों की इन विद्यार्थियों से अच्छी दोस्ती भी हो जाती थी और इनसे फ़िल्म तकनीक पर डिस्कशन भी होते थे।

-''खाने का क्या प्रोग्राम है ?'' तपन ने पूछा।

पूछा क्योंकि आज इतवार था और मैस आज के रोज़ शाम में बंद होता था। सभी को आज शाम बाहर ही जाकर खाना खाना पड़ता था।

-''पूना कॉफ़ी हाउस और क्या!'' सिद्धार्थ ने जवाब दिया।

सिद्धार्थ इंस्टिट्यूट के डायरेक्शन कोर्स के तीसरे और अंतिम वर्ष का विद्यार्थी था। कोर्स तो उसका समाप्त हो गया था लेकिन बस उसकी डिप्लोमा फ़िल्म की डबिंग रुकी हुई थी। रुकी इसलिए कि उसका एक 'आर्टिस्ट' कुछ दिनों के लिए बाहर गया हुआ था। जैसे ही उसकी फ़िल्म पूरी हुई वो सीधे बम्बई जाकर अपनी क़िस्मत आज़मायेगा।

-''पूना कॉफ़ी हाउस बहुत हो गया यार.....दो संडे से वोई.....नॉट टुडे !''

-''तो चल बेटे आज तुझे ले के चलता हूं रुचिरा.....बियर पियेगा?''

-''पीना वीना छोड़.....चल चलते हैं।''

-''अभी?.....नई रे,.....अभी तो बम्बई से एक फ़िल्म मेकर आया है उसकी फ़िल्म का मेन थिएटर में शो है फिर उसके साथ सवाल जवाब ! आठ से पहले नहीं चल सकते।''

मेन थिएटर भरा हुआ था। सीढ़ियों पर, दरवाज़ों के किनारों तक बहुत लोग बैठे हुए थे। जगह न होने से बहुत लोग खड़े हुए थे। फ़िल्म एक ऐसे डायरेक्टर

की थी जिसकी पिछली फ़िल्म ने दुनिया में बड़े झंडे गाड़े थे, बड़ा नाम कमाया था। लेकिन ये फ़िल्म जैसे जैसे आगे बढ़ती गयी वैसे वैसे थिएटर से भीड़ घटती गयी। बाहर जाकर लोगों ने जम्हाइयां लीं, सिगरेटें फूंकीं और 'विज़डम ट्री' के नीचे बैठकर चितले की चाय के घूँट भरे।

शो समाप्त हुआ तो क्लास रूम थिएटर में अब लोग फ़िल्म मेकर से सवाल-जवाब के लिए जमा हुए। तमाम तरह के सवाल पूछे गए। सिद्धार्थ ने पूछा, ''ये फ़िल्म आपने कलर में क्यों बनाई?'' उतरते सत्तर के दशक और एक सीरियस फ़िल्म मेकर- दोनों के लिहाज़ से यह सवाल निहायत अहम था। फ़िल्म मेकर विज्ञापन जगत से था। उसमें दिखावा ज़्यादा और ज्ञान कम था। उसने जवाब में कुछ ऐसा कहा कि, ''मुझे लगा 'इस' को 'ऑरेंज' और 'इस' को 'वायलेट' दिखाना अच्छा लगेगा।'' इस बेमतलब जवाब को सुनकर सिद्धार्थ थिएटर से उठकर बाहर आ गया।

तपन ने पूछा, ''क्यों, बाहर क्यों आया?''

-''अरे ये गधा है यार.....! मैंने पूछा कलर में फ़िल्म क्यों बनाई। ये बोलता है इस कलर में ये दिखाना था उस कलर में वो दिखाना था.....अरे, जब कलर में बनती ही नहीं तो तुम किस को किस कलर में दिखला लेते ! सीधे बोल न कि कमर्शियल रीज़न्स की वजह से मैंने फ़िल्म कलर में बनाई नहीं तो कोई देखता नहीं और इसलिए कोई डिस्ट्रीब्यूटर ख़रीदता नहीं !.....इंटेलेक्चुअल बनता है साला !''

थिएटर के बाहर शाम काफ़ी हो चुकी थी। बादल खासे छाये हुए थे और मौसम ख़ुशगवार था। तपन और सिद्धार्थ दोनों बस क्लास रूम थिएटर के बाहर की पुलिया तक पहुंचे ही थे कि मृणाल दा भी दो चार और विद्यार्थियों के साथ चाय की टपरिया के पास आ गए। बातचीत शुरू हो गई।

-''सर आपकी लेटेस्ट फ़िल्म खँडहर देखी.....ग़ज़ब की फ़िल्म बनाई है आपने।''

-''अच्छी लगी तुम्हें?'' दादा ने अपना चश्मा ठीक करते हुए पूछा।

-''अच्छी नहीं सर, बहुत अच्छी लगी।''

-''गुड.....क्योंकि बहुत लोगों को अच्छी नहीं लगी.....वीडियो लाइब्रेरी वालों ने तो मेरी इस फ़िल्म के कैसेट इरेस करके उन पर दूसरी फ़िल्में रिकॉर्ड कर दीं। बोले 'दादा कोई ये फ़िल्म देखता ही नहीं'।''

फिर इस फ़िल्म की बारीकियों पे चर्चा चली। शेख़ की टपरिया की चाय पर

चाय चली और फिर रात तक यही चलता रहा। सिद्धार्थ और तपन जैसे कुछ लोग खाना खाने बाहर गए, बाकी अपने अपने कमरों में 'कंट्री' पी कर सो गए।

दोस्ती जब गहरा गयी तो एक शाम सिद्धार्थ ने पूछा, ''तपन ! तूने कभी किसी लौंडिया की ली है?''

-''अभी बच्चा हूँ यार !''

-''तो चल साले आज तुझे मैं जवान बनाये देता हूँ।''

-''कहाँ?''

-''तू चल तो सही !''

रात को खाना खाने के बाद डेक्कन जिम खाना के लकी होटल से निकलते निकलते उस दिन रात के ग्यारह के आसपास होने आये थे। सिद्धार्थ ने ऑटोरिक्शा पकड़ा, ''लक्ष्मी रोड!'' वहां पहुँच कर किसी इमारत की चौथी मंजिल पर जाकर बड़े ठाठ से और अपनेपन से उसने 'रूबी' को आवाज़ लगाई।

-''ये कहाँ आ गए यार?'' तपन ने दबी ज़बान से पूछा तो सिद्धार्थ ने मुंह पर ऊँगली लगाकर उसे चुप रहने का इशारा किया। इतने में अंदर से एक छरछरे बदन वाली साड़ी पहने औरत बाहर आयी।

-''क्या रे,....., किदर था इतने दिन?''

-''वो छोड़.....मैं इसे लाया हूँ.....मेरा दोस्त है .....साला कोरा है....., इसे झटके मार मार के वो मज़ा दे के जब तक यहाँ रहे रोज़ तेरे पास आता रहे।''

रूबी ने तपन को ऊपर से नीचे तक देखा फिर बिला किसी भाव से कहा, ''चल.....आजा.....!'' फिर वो सिद्धार्थ की तरफ़ मुड़ी, ''तू भी आ न.....बैठेगा नई?''

-''नई आज तो तू इसी की नथ उतार.....बस !''

रात के एक के आसपास जब ये लोग फ़िल्म इंस्टिट्यूट के गेट पर वापस आये तब बारिश आ के चली गयी थी आकाश पर बादल और चाँद अठखेलियां कर रहे थे। कभी चाँद निकल आता था कभी बादल उसे छुपा लेते थे। गेट से अंदर घुसे ही होंगे कि कंधे पर झोला डाले एक नौजवान सिद्धार्थ के सामने आ गया।

-''किदर गया था यार,.....कितनी देर से बैठा हूँ तेरे लिए.....''सिद्धार्थ उसे देखकर बड़ी गर्म जोशी से गले मिला, ''कभी आया?''

-''दो घंटे हो गए।'' प्रसून माथुर ने कहा।

-''फ़िल्म एप्रीसियेशन कोर्स तो कब का शुरू हो गया.....तू अब आया है!''

-''नई.....मैं कोर्स के लिए नई आया.....कोर्स तो मैने दो साल पहले ही कर

लिया था.....आज तो मैं लोनी आया था.....राज कपूर के फ़ार्म के पास एक शूटिंग चल रही है .....उसी को कवर करने।''

-''ठहरा कहाँ है ?''

-''मतलब? तेरे यहाँ ठहरूंगा न !''

प्रसून माथुर बम्बई की एक हिंदी फ़िल्म पत्रिका में रिपोर्टर के पद पर कार्यरत था। रिपोर्टर लोगों को स्टार्स अपने साथ लोकेशन पर ले जाते थे, प्रोड्यूसर अपनी शूटिंग पर-रिकॉर्डिंग पर बुलाते थे ताकि उनकी न्यूज़ पत्रिका में छपे। आज पूना में राज फ़ार्म के पास एक मशहूर हीरोइन की शूटिंग थी जिसे कवर करने के लिए प्रसून आया था।

-''खाना खाया?'' सिद्धार्थ ने हॉस्टल के गेट की सीढ़ियां चढ़ते जेब से कमरे की चाभी निकालते हुए पूछा।

-''प्रोड्यूसर साले किस लिए होते हैं !.....हंहंहंहं.....''

-''बाई सिद्धार्थ'' तपन ने हॉस्टल में अपने कमरे की तरफ़ रुख़ किया।

-''बाई !.....नाहा धो के सोना बेटा !.....हंहंहं.....'' फिर उसने प्रसून से कहा, बेड एक ही है कमरे में.....गद्दा नीचे डालना पड़ेगा।''

-''नो प्रॉब्लम !''

जब सिद्धार्थ ने कमरे की बत्ती बंद की और सोने की कोशिश करने लगा तो कुछ अजीब सी गिरती उठती आवाज़ें सुनकर उसने पूछा, ''प्रसून ! एवरीथिंग ऑलराइट? तेरी तबियत ठीक है ?''

-''मेरी तबियत ठीक है ।''

-''फिर ये आवाज़ कैसी?

-''मैं मुठ्ठ मार रहा हूँ।''

-''क्यों बे? मेरा ही कमरा मिला तुझे इसके लिए?''

-''अरे साले तू देखता न उस हीरोइन को आज.....जिस तपाक तपाक से वो लव सीन के टेक पे टेक दे रही थी.....हाय.....अब उसकी तो ले नहीं सकते..... तो.....कहीं तो निकलेगा न.....''

सिद्धार्थ ने ज़्यादा बहस करने की ज़रूरत नहीं समझी। सिर्फ़ करवट बदलकर उसने प्रसून से कहा, ''चद्दर गन्दी मत करना बे।''

कैंपस में टी वी विंग के सामने वाले फ़व्वारे पर सेट लगा था। शतरंज के चौखाने- सीधे नहीं बल्कि आड़े - प्लाईवुड के फ़्लैट्स पर पेंट किये गए थे- तीन तरफ़। बीच में बनाई गयी थी एक सफ़ेद रंग की ग्रीक गॉडेस की नग्न प्रतिमा।

सिद्धार्थ को इसी सेट पर एक दिन की शूटिंग करके- जिसे पैच वर्क कहा जा रहा था- अपनी डिप्लोमा फ़िल्म में जोड़ना था।

-''कब कर रहे हो शूटिंग.....सैट पूरी तरह तैयार है।'' सैट डिपार्टमेंट के प्रोफेसर ने पूछा।

-''कर लेंगे सर !.....आज तो मूड नहीं है !''

-''कल कर लो।''

-''देखते हैं सर।''

-''बारिश का मौसम है .....भीग गया तो प्लाई सड़ जाएगी और रंग धुल जायेगा।''

-''दोबारा करवा दीजियेगा !''

प्रोफेसर से कुछ बोलते नहीं बना। वह सिद्धार्थ की शक्ल देखता रह गया। सोचने लगा कि जिस अय्याशी और लापरवाही से यहाँ के विद्यार्थी काम करते हैं. ....या काम न करने की युक्तियाँ सोचते हैं और आलस्य करते हैं.....ये इंडस्ट्री में जाकर क्या करेंगे !.....इस तरह के नुक़सान का अगर इन्हें हर्जाना देना पड़ता तो शायद ये अनुशासन में होते।

थोड़ी देर बाद टी वी विंग का एक स्टाफ़ भागा भागा क्लास रूम थिएटर की चढ़ाई पर जाता दिखा। प्रोफ़ेसर चन्द्रा - जो डायरेक्शन डिपार्टमेंट के प्रोफ़ेसर थे और वहीं अपने ऑफ़िस से निकल कर टॉयलेट जा रहे थे - उन्होंने पूछा, ''भाग क्यों रहे हो?''

-''एक लड़का सर'', स्टाफ़ वाले ने धीमी आवाज में कहा, ''हॉस्टल में लड़की लाया है ।''

-''ओह ! हॉस्टल में?.....नॉट अलाउड।''

-''इसीलिए तो''.....और स्टाफ़ वाला और तेज़ भागता चला गया। उसने नए हॉस्टल की तीसरी मंजिल पर जाकर बायीं तरफ़ वाले एक डबल रूम का दरवाज़ा खटखटाया। ज़रा देर बाद आँखें मलते हुए स्टूडेंट ने दरवाज़ा खोला, ''क्या है?''

-''अंदर कौन है ?''

-''देख ले।'' लड़के ने दरवाजा और खोल दिया, ''है कोई?''

स्टाफ़ ने इधर उधर देखा, बालकनी में नज़र मारी और कुछ न पाकर वापस चला गया। स्टूडेंट ने दरवाज़ा बंद कर दिया, फिर जाकर अलमारी का दरवाजा खोलकर अंदर बैठी नंगी लड़की को बाँहों में भरके उठाकर बिस्तर पर पटक दिया और दोनों हंस पड़े !

क्लास रूम थिएटर में दोपहर का सेशन शुरू हो चुका था।

-''आई एम नॉट गोइंग तो टॉक ओनली ऑफ़ वेस्टर्न सिनेमा.....हमें इंडियन फ़िल्म मेकर्स के कंट्रीब्यूशन पर भी ध्यान देना चाहिए।'' मद्रास फ़िल्म स्कूल के डायरेक्टर ने अपने लेक्चर की शुरुआत में कहा। फिर उन्होने वी. के. मूर्ति की फ़ोटो ग्राफी, वासन और जेमिनी की फ़िल्मों की चर्चा आरम्भ कर दी। किसी भी फ़िल्म एप्रीसियेशन कोर्स में शायद ऐसा पहली बार हो रहा था कि हिंदुस्तानी फ़िल्मों के कंट्रीब्यूशन पर चर्चा की जा रही हो। वरना यहां तो सिर्फ़ अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा पर ही बात होती थी। नए लोगों में शायद भारतीय जज़्बा हो !

बातचीत के दौरान सब तरह की फ़िल्मों पर चर्चा हुई। 'नोये' पर 'आवंतगार्ड' मूवमेंट पर 'मोर्डेनिज़्म' और 'पोस्ट मोर्डेनिज़्म' पर। फिर डिस्कशन चल निकला इंस्टिट्यूट के डिप्लोमा होल्डर्स पर - भारतीय भाषाओं की फ़िल्मों के क्षेत्र में किसने क्या झंडे गाड़े, पहले लोग यहाँ के पढ़े विद्यार्थियों को घास नहीं डालते थे और कैसे अब उन्हें सर पर बैठाते हैं, इनकी डिप्लोमा फ़िल्में दुनिया के कितने अहम फिल्म फ़ेस्टिवल्स में इनाम लेकर आयीं हैं- इत्यादि।

-''एक तो यहीं बैठे हैं'' लेक्चर देने वाले ने बैठे हुए लोगों में पिछली सीट पर इशारा करते हुए कहा, ''श्यामल चौधरी! इनकी डिप्लोमा फ़िल्म अब तक की बनी सारी डिप्लोमा फ़िल्मों में सबसे अला दर्जे की है। दस अवार्ड जीत चुकी है और हर बार कोई न कोई अवार्ड लेकर ही आती है।''

श्यामल ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की, न ही उसने नज़र उठाकर देखा। मद्रास (चेन्नई) स्कूल का डायरेक्टर श्यामल का दो साल जूनियर था और वह उसको अच्छी तरह जानता था। जब उसकी फ़िल्म और उसके नाम का चर्चा और होने लगा और आगे वाली सीटों से लोग मुड़ मुड़कर उसे देखने लगे तो श्यामल वहां से उठा और थिएटर से बाहर आने लगा। उसे देखकर इंस्टिट्यूट के दो और विद्यार्थी भी उठकर उसके साथ बाहर आने लगे। लेक्चर देने वाले ने आवाज़ दी, ''श्यामल !'' लेकिन श्यामल उसे अनसुना करके बाहर चला गया।

श्यामल रॉय चौधरी ! इंस्टिट्यूट के दस साल पहले का डायरेक्शन का फ़र्स्ट क्लास में पास आउट गोल्ड मैडेलिस्ट जो कलकत्ता के एक साभ्रांत परिवार से था। लम्बा, हड्डी-दार तगड़ा शरीर, सपाट लेकिन बुद्धिमान चेहरा, गहरी बींधती आँखें और बातचीत का लहजा ऐसा कि शाइस्ता से शाइस्ता लोग भी उससे कुछ सीख लें। पढ़ाई भी करता था और ख़ाली रास्तों में अकेले मीलों पैदल चलते हुए उस पढ़ाई और अपने

अंतर में उपजते ज्ञान की जुगाली भी करता था। उसी सबका नतीजा था कि उसकी डिप्लोमा फ़िल्म इतनी आला दर्जे की बनी थी कि अब तक लोगों को याद भी थी और 'फ़्रेश' भी थी।

वह पास हुआ नहीं कि उसे काम की तलाश बम्बई ले आयी। कलकत्ता 'बहुत लिसिर पिसिर है' - वह कहा करता था- 'टू इमोशनल फ़ॉर मी'। बम्बई में हिंदी फ़िल्मों में वह अस्सिटेंट नहीं बनना चाहता था और सीधे डायरेक्शन कोई उसे देने को तैयार नहीं था। ख़र्चे तो चलने थे। इसलिए उसने विज्ञापन जगत में नौकरी कर ली। एक बड़ी सी बहुराष्ट्रीय कंपनी में फ़िल्म एग्ज़ीक्यूटिव। विज्ञापन जगत में लड़कियां भी बहुत थीं और लड़कियां तो बचपन से ही इस 'बींधती आँखों वाले' शाइस्ता लड़के पर मरती आयीं थीं सो यहाँ क्या नई बात थी ! चार साल वह विज्ञापन जगत में रहा। जितनी विज्ञापन फ़िल्में बनीं उन सब में उसका योगदान रहा और जीवन रहा इश्क की चाशनी में सराबोर ! लेकिन फ़ीचर फ़िल्म उसे एक भी नहीं मिली और अब तो उसकी संभावनाएं भी समाप्त होने लगी थीं। लोग कहते थे ''ये तो साबुन तैल वाली फ़िल्मों का आदमी है, ये क्या फ़ीचर फ़िल्म बनाएगा!'' ये वो दौर था जब एडवरटाइज़िंग फ़िल्म वालों को साबुन तैल की फ़िल्म बनाने वाला कहा जाता था। श्यामल ने नौकरी में जो पैसा कमाया उससे दो गुना ख़र्चा किया- लड़कियों पर, शराब में और बड़े बड़े मकानों के किरायों में।

एक दिन न जाने क्या हुआ कि श्यामल सब छोड़ छाड़कर कलकत्ता चला गया। वहां उसका कोई भी नहीं था। एक माँ थी जो सिधार चुकी थी और पुश्तैनी घर रिश्तेदारों के क़ब्ज़े में था। कुछ दिन रहा लेकिन वहाँ उसका जी नहीं लगा। उसका जी तो कहीं भी नहीं लगता था ! जो उसे जानते थे उनका अंदाज़ा था कि अंदर ही अंदर श्यामल को कुछ था जो खाये जा रहा था और वो क्या है ये शायद वो खुद भी नहीं समझ पा रहा था। वह वापस इंस्टिट्यूट आ गया।

-''कमरा कैसे मिलेगा?.....आप तो एक्स-स्टूडेंट हैं !'' वार्डन ने कहा।

-''बॉस मैं अब आ गया हूँ.....यहीं रहूंगा।''

-''नॉट पॉसिबल !''

श्यामल को इंस्टिट्यूट के नए बैच के विद्यार्थी भी जानते थे। कुछ उसकी फ़िल्म देखने के बाद उसके मुरीद थे। शाम को श्यामल को शैख़ की टपरिया पर बैठे परेशान देखकर दो एक विद्यार्थी पास आये।

-''सर यू कैन स्टे इन माई रूम !.....मेरा डब्बल रूम है और मैं सिंगल रहता हूँ.....वैरी कम्फ़र्टेबल !''

उस दिन से श्यामल पिछले पांच सालों से कभी इस स्टूडेंट के कमरे में कभी उसके कमरे में रहता है । एक जाता है तो दूसरे से कहकर श्यामल के ठहरने का बंदोबस्त कर जाता है ।

-''क्यों,.....क्यों ठहराते हो उसे?.....न उसके पास पैसा है .....न उसके पास कपड़े हैं, न वो तुम्हें कुछ देता है.....'' एक दिन वार्डन ने स्टूडेंट से पूछा।

-''देता है सर ! वो हमें ज्ञान देता है ! फ़िल्म मेकिंग सीखते तो हम उसी से हैं! अपनी फ़िल्में डिसकस करते हैं, थेओरीज़ डिसकस करते हैं। ही हैज़ अमेज़िंग नौलेज। टीचर तो यहाँ के वैसे ही बकवास, यू नो.....इसलिए हमारे सीखने का सिर्फ़ श्यामल ही रास्ता है !''

कैंटीन सुबह आठ बजे खुलती थी। आठ बजे श्यामल कैंटीन के दरवाजे पर खड़ा होता था, चौखट से टिका हुआ। वहां कोई स्टूडेंट आकर उसके लिए चाय और एक बन खरीद के देता था- यही उसका नाश्ता था। दोपहर में खाने के वक्त वह सिर्फ एक छोटा गिलास चाय पीता था। रात को मेस वाले ने खिला दिया तो ठीक वरना कोई विद्यार्थी कुछ लाकर दे देता था। शराब पीना श्यामल ने बंद कर दिया था। इतवार को छोड़कर तक़रीबन हर रात देर तक डायरेक्शन के सारे स्टूडेंट्स उसे घेर कर बैठ जाते थे और फ़िल्मों के हर पहलू पर बड़े गहरे गहरे डिस्कशन चला करते थे। मजे की बात ये थी की जब तक श्यामल फ़िल्मों पर चर्चा करता रहता- नार्मल रहता, जहाँ चर्चा समाप्त होती वह डिप्रेस होने लगता।

मद्रास (चेन्नई) फ़िल्म स्कूल के डायरेक्टर ने जब अपना लेक्चर समाप्त किया तब तक चिराग़ जल चुके थे और उस दिन की तीसरी फ़िल्म दिखाई जाने में अभी आधे घंटे का वक्त था। कैंटीन बंद हो चुकी थी इसलिए सब शैख़ की टपरिया पर खड़े थे।

-''श्यामल दा ! तुम चले आये यार.....मैं पुकार रहा था.....यू कुड हैव कंट्रिब्यूटेड टू लेक्चर !'' लेक्चर देने वाले ने श्यामल के कंधे पर हाथ रख कर कहा।

-''आई एम ओ. के. बॉस !''

-''ये क्या हाल कर रखा है तुमने अपना दादा?''

-''आई एम क्लीनिंग माई सेल्फ.....''

-''गन्दगी कहाँ है जो सफ़ाई होगी?.....मेरे साथ चलो चेन्नई, मैं अपने इंस्टिट्यूट में प्रोफेसर लगवाता हूँ.....वहीं रहो।''

-''थैंकयू.....बट नो थैंकयू।''

श्यामल का- या किसी भी पास्ट स्टूडेंट का- इस तरह इंस्टिट्यूट में वापस

आकर फिजूल पड़े रहना ग़ैर क़ानूनी था और इसका इलाज श्यामल को सीधे-सीधे इंस्टिट्यूट से बाहर निकाल देना था। लेकिन वहां पढ़ने वाले विद्यार्थी श्यामल के इतने मुरीद थे कि फ़ैकल्टी और डायरेक्टर- किसी की भी ऐसा एक्शन लेने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। इस बारे में कई मीटिंगें लीं गयीं, बड़े बड़े चर्चे हुए, तमाम फ़ैकल्टी ने तेज़ तेज़ आवाज़ों में श्यामल को 'धक्के देकर' बाहर 'फेक' देने की तजवीजें दीं लेकिन बस मामला वहीं तक रहा। मीटिंग रूम से निकलकर सब अपने अपने काम से लग गए।

खाना पीना कम होने से और शायद अपने आप से संतुष्ट न होने के कारण श्यामल का स्वस्थ्य पिछले दो सालों में बड़ी तेज़ी से गिरा। दिन में एक छोटा गिलास चाय पीकर आदमी कितने दिन जिंदा रह सकता है! इसलिए कभी कभी उसे सर्दी ज़ुकाम या पैरों में दर्द हो जाता था-बरसात और ठण्ड के मौसम में ख़ासतौर पर। स्टूडेंट्स कभी कभी उसके लिए दवा ले आते थे लेकिन वह खुद अपने लिए डाक्टर के यहाँ कभी नहीं गया। हो सकता है यह उसका खुदकशी का इनडायरेक्ट तरीक़ा रहा हो !

एप्रीसियेशन कोर्स के दौरान तपन से भी कई बार श्यामल की बातचीत हुई, सलाह मशविरा हुआ। तपन ने पूछा, ''सर, मैं एडवर्टाइजिंग में जाऊं?''

-''क्या करोगे जाकर, ''श्यामल ने कहा, ''देयर यू हैव टू कीप योर आईज़ हाफ़ शट।''

पांच हफ़्ते कैसे और कहाँ चले गए पता ही नहीं चला। एप्रीसियेशन कोर्स समाप्त हुआ। सबको सर्टिफिकेट्स बाँटे गए। सबने एक दूसरे के पते/फ़ोन नम्बर नोट किये और हमेशा 'टच' में रहने के वादे किये।

-''तो फिर,.....तू जा रहा है!?'' सिद्धार्थ ने तपन से पूछा।

-''जी तो नहीं है.....इतनी ख़ूबसूरत जगह से जाने का.....लेकिन जाना पड़ेगा। कमरा भी ख़ाली करना है ।''

-''कमरे की छोड़ बे.....मेरे यहाँ आके सो जाना.....बस मुट्ठ मत मारना.... .साली चद्दर गन्दी हो जाती है और धोबी तीन दिन में एक बार आता है .....हंहंहंहं. ....चार पांच दिन में वेकेशन ख़त्म हो जायेगा, सारे स्टूडेंट्स आ जायेंगे उनसे भी मिल लेना।''

-''नौकरी है बॉस,.....जाना तो पड़ेगा!''

नए बैच की शुरुआत हो गयी और पुराने स्टूडेंट्स वापस आ गए। इंस्टिट्यूट

एक दम गुलज़ार हो गया। एक्टिंग सीखने वाले लड़के लड़कियां एक दूसरे के गले लग लग कर, कभी प्रसन्नता में रो रोकर चिल्ला चिल्ला कर माहौल गर्मा रहे थे।

फ़िल्म स्टूडेंट्स के लिए एक हॉस्टल था उसी के सामने नया बना हॉस्टल था टी.वी. स्टूडेंट्स के लिए। टी वी सीखने उन दिनों दूरदर्शन के सरकारी मुलाज़िम ही आते थे। रात के दो बजे होंगे। एक फ़िल्म स्टूडेंट को शायद 'कंट्री' ज़्यादा चढ़ गयी। उसने बालकनी में खड़े होकर टी. वी. हॉस्टल की तरफ़ टी.वी. को गाली देते हुए मूतना शुरू कर दिया।

-''साले इन्फीरियर बास्टर्ड्स !,.....हु वांट्स टी.वी.....फ़िल्म इज़ दी मीडियम. ....गेट आउट यू,.....''

ये वो जमाना था जब प्राइवेट टी. वी. चैनल इस देश में नहीं आये थे और टी.वी. को फ़िल्म से कहीं बदतर माना जाता था। फ़िल्म वाले टी.वी. में काम करने को अपनी शान के खिलाफ़ समझते थे।

दूसरे दिन ख़बर उड़ी। टी.वी. स्टडीज के डीन ने एतराज़ किया लेकिन स्टूडेंट्स डायरेक्टर की नहीं सुनते थे, डीन की क्या सुनते !

-''क्यों बम्बई वाले !.....प्राइवेट चैनल का क्या हाल है। आ रहे हैं?'' एक स्टूडेंट ने तपन से पूछा।

-''आ रहे हैं.....आये नहीं हैं.....एक ने कहा अक्टूबर में आ के पूछना.... .अक्टूबर में जाऊं तो क्या पता वो मुझे अगले अक्टूबर में बुलायें!''

-''टेस्ट सिग्नल्स आते हैं कभी कभी टी.वी. पर।''

-''छोड़ यार!.....चल.....'' तपन ने सब जान पहचान वालों से गर्म जोशी से हाथ मिलाकर विदाली, ''लर्नड ए लॉट,.....एंड गुड टु नो यू ऑल!.....बाई.....''

-''आ जा, कभी भी आ जा, , इंस्टिट्यूट इज़ ए ग्रेट प्लेस टू बी !''

-'' हे! लिसिन गाइस !'' पीछे से साउंड डिज़ाइन के तीसरे साल का एक स्टूडेंट भागता/हांफता हुआ आया, ''कॉल एंड गेट एन एम्बुलेंस.....!''

-''हुआ क्या?''

-'' आई डोंट नो यार.....समथिंग इज़ रॉंग विथ श्यामल दा !''

स्टूडेंट्स ने कर्वे रोड की एक क्लीनिक से डाक्टर बुलवाया, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी- श्यामल का दम निकल चुका था। उसे ज़बरदस्त कार्डियक अरेस्ट

हुआ था। डाक्टर सर्टिफ़िकेट दे गया। सारे इंस्टिट्यूट ने जमा होकर तय किया के अपने इस ''गुरु'' का अंतिम संस्कार वे स्वयं करेंगे। इसमें तपन भी शामिल हुआ और सिद्धार्थ भी, स्टाफ़ के वो लोग भी जो श्यामल को उसके स्टूडेंट डेज़ से जानते थे और वे भी शामिल हुए जो उसे 'धक्के मारकर' इंस्टिट्यूट से बाहर निकालना चाहते थे !

4

-''क्या यार लम्बू.....तू दिखता नई आजकल ! बहुत बड़ा इंजीनियर हो गया है!'' राजन ने शिकायत की।

-क्या बड़ा इंजीनियर यार.....सुपरवाइज़र तो हूँ.....साला मज़दूरी कर रहा हूँ. ....शिफ़्ट में काम करना पड़ता है। पिछले पंद्रह दिनों से जब मैं ख़ाली होता हूँ तेरा होटल बंद हो जाता है।'' तपन ने मजबूरी जताते हुए कहा।

-''पसंद नहीं तो काम छोड़ दे,.....आजा होटल में मेरे साथ.....''

-''हाँ .....! मेरा बाप मुझे मार डालेगा.....उसको मैं इंजीनियर ही चाहिए।''

-''अरे लेकिन तू तो फ़िल्म मेकर बनकर आ गया। फ़िल्म इंस्टिट्यूट पूना में लोग जाने के लिए तरसते हैं और तू वहां पांच हफ्ते का कोर्स करके आ गया।''

-''बहुत सीखने को मिलता है यार।.....क्या क्या फ़िल्में बनाते हैं लोग यार,. ....हम लोग तो साले कचरा देखते हैं कचरा.....!''

तपन आगरा रोड से बस में भांडुप आकर जी. के. डब्लू. कंपनी में काम पर जाता था। जहां वह उतरता था वहीं से दस क़दम दूर सड़क के उसी तरफ़ एक उड़िपी कैफे था जो राजन नटराजन चलाता था। राजन पढ़ा लिखा नौजवान था जो ख़ुद भी होटल चलाना नहीं बल्कि एम.बी.ए.करने एम.आई.टी. अमरीका जाना चाहता था लेकिन पिताजी की अचानक मृत्यु के बाद उसे अपने अरमान ताक़ में रखकर होटल पर बैठना पड़ा।

-''वो सब छोड़.....तेरी गर्लफ़्रेंड का क्या हाल है ?'' तपन ने पूछा।

-''उधर भी साला अपनी किस्मत का मेदू वड़ा हो गयेला है । बाहर से सब गोल गोल लेकिन बीच में गड्ढा !''

-''क्या हो गया?''

-''तुझे मालूम है कोई जापानी टी.वी. चैनल आने वाला है?''

-''किधर आने वाला है?.....टेस्ट सिग्नल चालू है, वो भी अंग्रेज़ी में.....चैनल किधर है?''

-''आने वाला है रे !''

-''तो उससे तेरा क्या सम्बन्ध है?''

-''तो जापान जो भी चैनल ला रहा है.....उन लोगों ने अपना ऑफ़िस अँधेरी में किधर तो भी लिया है। उसे सँभालने के लिए उन्हें लाइन के तजुर्बेकार कुछ हिन्दुस्तानियों की ज़रुरत थी.....अच्छा, तू जनता है कोई ऐड फ़िल्म मेकर है - मोहन अय्यर?''

-''नहीं, मैं नहीं जानता।''

-''तो मोहन अय्यर रहता है वार्डन रोड पर। उसकी दोस्ती हो गयी एक टपोरी हीरो से जो वहीं आसपास रहता है और क्योंकि टी.वी. का इन दोनों को कोई आइडिआ नहीं है इसलिए इन्होने पटा लिया एक वीडियो लायब्ररी वाले को- सो हो गए तीन। इन तीनों ने मिलकर चैनल वालों को समझा दिया कि भारत में तुम्हारा काम हम ही ठीक तरह बैठा सकते हैं.....''

-''तो उससे तुम्हें क्या तकलीफ़ है?''

-''तकलीफ़ ये है कि ये जो मोहन अय्यर है वो साला मेरी गर्लफ्रेंड के पीछे पड़ा हुआ है। और उस लड़की को वो साला मुझ होटल वाले से ज़्यादा स्टेटस वाला फ़िल्म मेकर दिखाई देता है।''

-''बात तो सई है बॉस! हंहंहंहं.....''

-''तू भी यार!.....यह लड़की ये नहीं समझती कि वो साला मोहन अय्यर इज़ ए फ़्लर्ट.....''

-''तू ने कभी होटल में बुलाकर गर्लफ्रेंड को इडली डोसा तो खिलाया नई.. ...रुइया कॉलेज की कैंटीन में ही वक़्त गुज़ारा है.....''

-''भांडुप!.....नाम सुन के ही उसे कुछ होने लगता है ।''

-''तो फिर?.....मैं कुछ मदद कर सकता हूँ?''

-''क्या मदद करेगा यार तू भी, अपनी लाइफ़ ही साली बासी उत्तप्पा हो गयी है .....न खाने का न रखने का !''

-''चल तीन दिन बाद मेरी शिफ्ट चेंज है.....उस दिन ऑफ़ आता है। मैं जा के आता हूँ उस अँधेरी ऑफ़िस में.....एड्रेस दे मुझे और मोहन अय्यर कैसा दिखता है उसका हुलिया वुलिया दे मुझे।''

-''वो बहुत बड़ा आदमी है उधर.....वो ऐसे नहीं मिलेगा''

-''तू दे तो यार !''

राजन के पता देने के तीन दिन बाद ऑफ़ आया, तपन सेन ने सुबह सुबह तैयार होना शुरू किया। घर के सामने से अँधेरी स्टेशन के लिए बसली। स्टेशन का पुल पार करके उस पते तक पहुंचा जहाँ टी.वी. चैनल वालों ने ऑफ़िस खोलाथा। कंपनी ने वहां दो बड़े-बड़े गाले लिए थे। सामने की खुली पड़ी आँगन नुमा जगह में कुर्सियां डालकर सिक्योरिटी वाले बैठे थे।

-''मोहन अय्यर?'' सिक्योरिटी वाला चौंका, ''तुमको अय्यर साब से मिलना है?''

-''हाँ !''

-''अपॉइंटमेंट है ?''

-''मैं आज ही पूना से आया हूँ, उन्हीं से मिलने और शाम को लौट जाऊँगा।''

-''सिक्योरिटी वालों ने अपना सर ज़्यादा खपाना ठीक नहीं समझा। उन्होंने तपन को रिसेप्शन पर भेज दिया। लड़की ने भी वही सवाल किया। फिर बोली, ''नो, नो,....., ही इज़ वैरी बिज़ी।''

हज़ार इल्तिजा के बाद तपन को यक़ीन होगया कि अब उसका मोहन अय्यर से मिलना नामुमकिन है। इतने में एक शख़्स अंदर से निकलकर रिसेप्शन पर आया और उसने वहां बैठी लड़की से कुछ काग़ज मांगे। तपन ने इसे पहचान लिया।

-''मिस्टर मोहन अय्यर?!''

-''यस !''

-''सर, आई हैव कम फ्रॉम फ़िल्म इंस्टिट्यूट पुणे टू मीट यू.....''

मोहन ने तपन को सर से पाओं तक बींधती नजरों से देखा। फिर रिसेप्शनिस्ट से कहा, ''सेंड हिम इन फ़ाइव मिनिट्स।'' रिसेप्शनिस्ट देखती रह गयी और जलन के मारे कुढ़ गयी। उसने ऊँगली से सामने रखे सोफ़े की तरफ़ इशारा कर दिया। तपन शान से जाकर वहां बैठ गया। घर से निकलने के बाद- दो घंटों से - सफ़र में और यहाँ पर - वह खड़ा ही तो रहा था ! पांच मिनट के पंद्रह हो गए, पंद्रह के पच्चीस हो गए और जब तक़रीबन घंटा भर हो गया तो तपन ने उठकर रिसेप्शनिस्ट से कहा, ''प्लीज़, उन्हें याद दिला दीजिये''। लड़की ने कुछ जवाब नहीं दिया, सिर्फ ज़रा सा सर हिला दिया।

डेढ़ घंटे बाद अंदर से एक चपरासी नुमा आदमी निकला, उसने रिसेप्शनिस्ट से पूछा, ''साब से मिलने कौन आया है ?'' लड़की ने तपन की ओर उड़ता सा इशारा कर दिया। चपरासी उसे लेकर अंदर चला गया। अंदर का माहौल एक दम शांत

था। लोग दो चार ही थे। केबिन में रंग कहीं कहीं होना बाक़ी था और फ़र्नीचर सिर्फ काम के लायक ही था।

-''यस?'' अय्यर ने सपाट पूछा।

-''सर, मैंने फ़िल्म इंस्टिट्यूट पूना से एप्रीसियेशन कोर्स किया है ।''

-''तो?'' बग़ैर उसकी तरफ़ देखे अय्यर ने अपने कुछ काग़ज़ समेटते हुए पूछा।

अब तपन की बुद्धि जड़ हो गयी, क्योंकि वह तो ये सोचकर आया था कि जहाँ उसने फ़िल्म इंस्टिट्यूट का नाम लिया सब लोग उसे हाथों हाथ लेंगे।

-''मैं आई.आई. टी. फेस्ट में भी डांसेज़ ऑर्गनाइज़ करता हूँ, कोरिओग्राफ़ी करता हूँ।''

-''डोंट वेस्ट माई टाइम.....तुमने कहा तुम इंस्टिट्यूट से मुझसे मिलने आए हो.....काम बोलो.....इंटरव्यू करने आए हो? लेक्चर ऑफ़र करने आए हो?..... व्हाट इज़ इट?''

-''आपका चैनल है.....मैं आपके यहाँ.....''

-''ऐसा करो.....'' अय्यर ने बात को समझते हुए तपन की बात काटकर कहा, ''कम नेक्स्ट ईयर..... अभी चैनल तो छोड़ो चैनल का ऑफ़िस भी शुरू नहीं हुआ है.....ओ के.....थैंक यू।''

तपन खड़ा रहा- न समझ पाते हुए कि अब वो क्या करे/कहे। अय्यर ने उसकी आँखों में देखकर कहा, ''बाई बाई.....!'' और उसने कुर्सी से उठकर मेज़ पर रखी चपरासी बुलाने की घंटी बजाई। तपन को बाहर चले आना पड़ा।

उस दफ्तर के बाहर आकर उसे अपने आप पर खीझ, अय्यर पर गुस्सा और शरीर पर बेतरह पसीना आ रहा था। उसने मन ही मन सोचा ''किसी साले ने एक गिलास पानी तक नहीं पूछा.....हिंदुस्तानी तहज़ीब तो हिंदुस्तान से उड़ गयी है ! सब फ़िरंगी रंग में रंग गए हैं..... चैनल शुरू नहीं हुआ तो ये आदमी ऐसा कौन सा बिज़ी है जो एक मिनट मुझ से सीधे बात नहीं कर सकता.....हुंह.....हो जाने दो सालों का चैनल शुरू मैं जब कुछ बन जाऊँगा और अगर इन्होने मुझे बुलाया तो भी मैं इनके यहाँ काम नहीं करूंगा''! सोचते सोचते सर झुकाये धीरे धीरे चलते हुए तपन को सड़क के कोने पर एक वड़ा पाव का ठेला दिखाई दिया। तब उसे ख़्याल आया कि सुबह से कुछ खाया नहीं है और भूख बेहद लग रही है । उसने ठेले वाले से एक वड़ा पाव लिया और फिर वापस अन्धेरी स्टेशन से लोकल लेकर दादर से गाड़ी बदलता हुआ भांडुप आ गया। उसने सोचा राजन अब तक होटल पर

आ चुका होगा लेकिन उसके पास जाने का इरादा छोड़कर तपन घर आकर लेट गया। कल से फिर लोहा काटने वाले शॉप फ़्लोर पर सुपरवाइज़र के काम पर जाना है !

लेटे लेटे उसे ख़्याल आया कि छुट्टी के दिन इस तरह ज़ाया करने की बजाये उसे फिर से आई.आई.टी. के चक्कर लगाने चाहिए, वहां नए नए दोस्त बनाने चाहिए ताकि अगर कहीं और नहीं तो कम से कम मूड इंडिगो में तो अपनी क्रिएटिविटी दिखाने का मौका मिलता रहे। स्टूडेंट्स की ऑर्गनाइज़िंग कमेटियां बदलती रहती हैं इसलिए नई कमेटियों के स्टूडेंट्स से सम्बन्ध बनाये रखना ज़रूरी है। अगली शिफ्ट चेंज की छुट्टी वाले दिन उसने तय किया कि वह आई.आई.टी. जायेगा।

पांच छह दिन गुज़रे होंगे, दूसरी शिफ्ट जब खत्म हुई तब रात के ग्यारह के ऊपर हो चुके थे। वर्दी बदलते, हाथ मुंह धोते गेट से बाहर निकलते पच्चीस मिनट और लग गए। सड़क पर बस स्टॉप की तरफ़ वह बस मुड़ा ही था कि पीछे से एक पद्मिनी प्रीमियर गाड़ी ने रौशनी तेज़ करके हॉर्न बजाया। तपन मुड़ा। राजन था।

-''इस समय तू?'' तपन ने कार की खिड़की के पास जाकर कहा।

-''अभी होटल बंद किया, सोचा तू फ़ैक्ट्री से निकल रहा होगा !.....आजा. ....गाड़ी में बैठ !''

-''दो स्टॉप की बात है, लेकिन अब बैठा लिया है तो घर तक भी छोड़ दे !''

-''नो प्रॉब्लम ! चल.....!.....अरे वो क्या हुआ, तू मोहन अय्यर से मिलने वाला था?''

-''मै गया था.....''

-''तूने बताया नहीं !''

-''अरे यार टाइम किधर था..... रात को छूटता हूँ, दोपहर तक सोता हूँ।''

-''हुआ क्या?''

-''अरे मैं गया था.....वहां अँधेरी में एक गली में जा के किसी खोपचे में एक इंडस्ट्रियलए स्टेट है उसमें उसका ऑफ़िस है .....वो ऑफ़िस लगताई नई है पहली बात.....''

-''दूसरी बात?''

-''तू सुन तो.....मै गया.....रिसेप्शन पर लड़की बोली बिज़ी है । मैं बोला मैं वेट कर लूँगा.....सुबह ग्यारह से लेकर तीन बजे तक बैठाया.....एक गिलास पानी तक किसी ने पूछा नई.....जब चार बज गया तो मैंने पूछा ''अभी भी बिज़ी है

क्या?''.....तो मालूम लड़की क्या बोली? ''साहेब तो चले गए!'' ।.....साला! मेरा तो अक्खा दिन बर्बाद हो गया रे!''

-''मैंने कहा था उससे मिलना मुश्किल है, लेकिन तू बोला नई मैं मिल के ही आऊंगा.....चल कोई बात नई.....ये ले तेरा घर आ गया, अब रात हो गयी, नेक्स्ट जब नाईट शिफ़्ट लग जाये तब आ जाना.....इडली और कॉफ़ी.....तेरा फेवरेट.... .हंहंहंहं !''

-''हंड्रेड पर्सेंट !.....चल ! गुड नाईट !'' तपन उतर गया।

राजन कार लेकर हिंदुस्तान कंस्ट्रक्शंस के पास वाली बिल्डिंग में अपने घर चला गया।

कुछ दिन यूँ ही गुज़र गए।

-''तू इतने दिन से किधर है यार?'' आई.आई.टी. के एक स्टूडेंट ने कैंटीन में अपनी नाश्ते की ट्रे रख कर अपना चश्मा ठीक करते हुए तपन को देखकर पूछा।

-''तुम लोग तो कभी याद ही नहीं करते।''

-''चिट्ठी भेजूं? तार भेजूं? लड्डू भेजूं?.....क्या करूँ तुम्हें बुलाने के लिए?... .. टेलीफ़ोन का हाल तो तुम से छुपा नहीं है ।''

-''मैंने नौकरी कर ली है..... जी. के. डब्लू. में शॉप फ्लोर सुपरवाइज़र।''

-''आईसी.....तो अब तो किसी और बात के लिए टाइम ही नहीं मिलेगा !''

तपन को लगा उसने नौकरी का बताकर खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली। ऐसा करेगा तो लोग उसे बिज़ी समझ कर कैसे किसी प्रोग्राम के लिए बुलाएँगे ! उसने फ़ौरन अपनी ग़लती सुधारी, ''कुछ आया तो छुट्टी ले लूँगा.....अभी मैं फ़िल्म इंस्टिट्यूट पूना में एप्रीसियेशन कोर्स करके आया.....''

-'' वाओ मैन! दैट्स ग्रेट! कैसा था? बहुत सुना है इसके बारे में !''

-''व्हाट एन एक्सपीरियंस यार! ओ माय गॉड! हर दिन तीन चार इंटरनेशनल सिनेमा, तमाम लेक्चर्स और डिसकशंस.....''

-''इंटरनेशनल सिनेमा!?.....उसमें सब क्लेअरेली दिखाते हैं न!.....आई मीन सेक्स एंड ऑल!''

-''अरे बिंदास ! किस करना, कपड़े उतारना, लेना देना.....लगे रहो.....उनके एक्टर्स भी क्या यार.....सॉलिड शॉट्स देते हैं.....ओह !''

-''मैं भी जाकर आऊँगा।''

-''अप्लाई कर दे.....नेक्स्ट ईयर हो के आ! और यहाँ का क्या हाल चाल है? कोई एक्टिविटी नहीं हो रही?''

-''नेक्स्ट वीक एक पॉपुलर बहुत बड़े फ़िल्म डायरेक्टर को इन्वाइट किया है .....लेक्चर सीरीज़ में.....''

-''मैं आ सकता हूँ?''

-''व्हाई नॉट.....इट्स ओपन फ़ॉर स्टूडेंट्स और तुम यहाँ के लिए कोई आउट साइडर थोड़े ही हो। मनचंदा इन्वाइट बाँट रहा है.....उससे जाकर ले लो।''

-''मैं चाय पियूँगा.....तुम्हारे लिए लाऊँ?''

-''नो थैंक्स, मैंने पीली.....मैं तो वैसे भी लाइब्रेरी जा रहा हूँ.....सी यू।''

-''बाई.....अरे सुन !''

-''हाँ?'' जाते जाते लड़का पीछे मुड़ा।

-''मनचंदा कहाँ मिलेगा?''

-''लाइब्रेरी में देख।''

-''योर आई डी?'' तपन को- एक नए चेहरे को देखकर - लाइब्रेरी के गार्ड ने रोका।

-''मैं एक स्टूडेंट मनचंदा को ढूंढ रहा हूँ।''

-''ये लो, '' गार्ड ने लाइब्रेरी से निकलते हुए एक ठिगने से विद्यार्थी की तरफ़ देखकर कहा, ''वो बाहर ही आ रहा है।''

तपन ने अपना परिचय दिया और मूड इंडिगो के प्रोग्राम का हवाला दिया।

-''या या या.....'' मनचंदा ने अपने बग़ल से गिरती हुई मोटी मोटी किताबें सँभालते और अपना गिरता पैंट सँभालते हुए प्रसन्न होकर कहा, ''क्या डान्स था यार! यू आर गुड !''

तपन की बांछें खिल गयीं लेकिन चेहरे पर उसने अपनी ख़ुशी का लेश मात्र भी भाव ज़ाहिर नहीं होने दिया। वही ठंडा सा चेहरा लिए उसने लेक्चर में बैठने की बात की, इन्वाइट माँगा।

-''इन्वाइट क्या यार! आ जाओ,.....मैं हूँ न गेट पे,....., नो प्रॉब्लम।''

लेकिन अगले हफ़्ते फिर डे शिफ्ट पड़ी। होनी नाईट चाहिए थी लेकिन सुपरवाइज़र बीमार पड़ गया और रोस्टर के हिसाब से तपन के ज़िम्मे फिर से डे शिफ्ट आ गयी। डे शाम को समाप्त होती और नौकरी से छूटकर जबतक वह पहुंचता लेक्चर समाप्त हो चुका होता। इसलिए लेना तो छुट्टी ही पड़ेगी।

-''वो छुट्टी पर है इसीलिए तो तुमको डे शिफ़्ट मिली.....अब तुम छुट्टी जाओगे तो क्या बॉस को ड्यूटी पर लगाऊं?''

-'' कुछ तो करो बॉस! प्लीज़! डे करूंगा लेकिन बस मुझे पांच के बजाये तीन तक छोड़ दो।''

-''नॉट पॉसिबल।''

-''अच्छा यार चार तक मैक्सिमम छोड़ दो।''

तमाम तकरार और इसरार के बाद तय हुआ को तपन को समय से आधे घंटे पहले 'रिलीव' कर दिया जायेगा।

आधे घंटे पहले रिलीव होकर तपन सीधे घर गया। हाथ मुंह धोया, कपड़े बदले और जितनी जल्दी हो सका हॉल पर पहुँच गया। लेक्चर शुरू हो चुका था और फ़िल्म डायरेक्टर - जो कि प्रोड्यूसर भी था- अपनी फ़िल्मों और अपनी ''लाइफ़'' के बारे में मज़ा ले लेकर विद्यार्थियों को सुना रहा था। विद्यार्थी सब उसे ऐसे ध्यान से सुन रहे थे और उससे ऐसे इम्प्रेस हो रहे थे जैसे बस यही है वो ब्रह्म जो सत्य है, बाकी सब मिथ्या। तपन क्योंकि देर से आया था इसलिए दरवाजे से घुसते साथ स्टेज के सामने वाली लाइन में ही- नीचे- उसे बैठने की जगह मिली थी। जैसे ही लेक्चर समाप्त हुआ वह जल्दी से उठा और फ़िल्मकार के पास जाकर उसने अपना हाथ बढ़ा दिया।

-''यू आर ग्रेट सर !.....सो इंस्पायरिंग !''

-''थैंक यू !.....तुम किस ईयर में हो?''

-''मैं सर फ़िल्म इंस्टिट्यूट से आया हूँ।''

-''ओह आई सी !''

-'' और सर मैं यहाँ स्पेशल्ली आपके लिए आया हूँ। आई वांट टु वर्क विथ यू।''

इतने में तमाम भीड़- फैकल्टी, विद्यार्थी, गैस्ट्स- तमाम लोग स्टजे पर फ़िल्मकार के चारों तरफ़ घिर आये और तपन एक तरफ़ रह गया। फ़िल्मकार उसे जवाब देना चाहकर भी कुछ कह पाने की स्थिति में नहीं रह गया। तपन ने अपने दाएं हाथ की मुट्ठी बायीं हथेली पर मारी और मन ही मन अपने भाग्य को दोष दिया। भीड़ने उसे एक किनारे कर दिया और उसके हाथ से एक सुनहरा मौक़ा और निकल गया।

उस शाम के बाद तपन के अंदर दो बातें हुईं। एक ये कि उसमें अपने मुक़द्दर के लिए एक तरह का ग़ुस्सा पैदा हो गया - ''साला मुझे कुछ करने ही नहीं देता। न जाने कौन सा गृह मेरे पीछे पड़ा है । न जाने किसका श्राप मैं झेल रहा हूँ। बस

लोहा पीटते थक जाओ तो खाना खाओ और सो जाओ। जागो तो फिर वो ही लोहा पीटो, खाना खाओ, सो जाओ..........किस कमबख्त घड़ी में लिखा गया ये भाग्य!'' और दूसरी बात जो हुई वो ये कि फ़िल्मों में जाने का उसका रुझान और शिद्दत से तेज हो गया- ''मुक़द्दर और नोमुक़द्दर.....मै साला करके रहूंगा.....देखता हूँ कौन रोक पाता है ।''

आई.आई.टी कैंपस से निकलते निकलते आठ के ऊपर बज चुके थे। अँधेरा बढ़ गया था। तबियत उदास थी। घर जाने का तो सवाल ही नहीं उठता था- क्या करेगा वहां जाकर ! वो ही घुटता हुआ माहौल, वही मिडिल क्लास फिज़ूल की बातें। तपन ने गेट से भांडुप की बस पकड़ी और पहुँच गया उडीपी कैफे में। राजन नटराजन गल्ले पर बैठा था।

-''इडली- चटनी- कॉफ़ी !.....होजाये?.....मैं भी साला चार बजे से यहाँ बैठे बैठे बोर हो गया।''

-''नई यार.....कुछ नई.....''

-''क्या रे !.....इतना डाउन क्यों?.....अं.....!''

-'' कुछ होताईच्च नई साला.....''

-''शादी कर ले.....हो भी जायेगा और लीगल भी हो जायेगा.....हंहंहंहं.....चल चल, कॉफ़ी पी।'' फिर राजन अपने अस्सिटेंट को गल्ले पर बैठने के लिए इशारा करके उठा और एक खाली मेज़ देखकर तपन के साथ वहां बैठ गया। कॉफ़ी आयी। राजन के कुरेदने पर तपन ने शाम की सारी बात बताई और बताया कि किस तरह वह फ़िल्म मेकर से बात करते करते भीड़ द्वारा किनारे कर दिया गया।

-''भाग्य को मत कोस.....तेरा भाग्य लाखों से अच्छा है। तेरे पास पेरेंट्स हैं, तेरे घर है , तू पढ़ा लिखा है, तेरे पास नौकरी है.....ऐसे कितने हैं दुनिया में जिनके पास इनमें से कुछ भी नहीं है।.....यू आर लकी !.....लगता है कभी कभी जब अपने मन की बात नहीं होती....मुझे भी लगता है ! मैं भी क्या क्या करना चाहता था और फ़ादर की सडन डेथ के बाद ये सब मुझे करना पड़ा। लेकिन बता इसमें भी मुझे कमी क्या है?.....लाखों करोड़ों से मैं अच्छा हूँ, सब कुछ तो है मेरे पास !.....इसलिए जो है उसमें खुश रह। ले, इडली खा.....आज की चटनी अच्छी है ! खुश रह !''

-''बात ठीक है तेरी,.....लेकिन अब मैं करके ही रहूंगा साल्ला !''

इतने में दो दाढ़ी वाले लोग सफ़ेद कुर्ते पायजामे में माथे पर लाल तिलक लगाए आकर राजन के पास खड़े हो गए।

-"क्या है ?" राजन ने मुड़कर पूछा।

-"नवरात्री चंदा....."

-"किदर से आया?"

-"क्या सेठ हम को नई पिछाना?.....बस क्या !.....बाजु की शाखा से आया मय....."

-"कोई भी कभी भी आता है यार। कल कोई और आया था।.....बोला न देगा. ....अभी नवरात्री में टाईम है .....रोज कोई नया नया लोग आ जाता है तुम्हारे यहाँ से।"

-"हम परली साल भी आया था सेठ,.....भूल गया आप।"

-"अरे....." राजन ने वेटर बुलाकर कहा, "इन को दो हजार रूपया दे दो।"

-"बस क्या सेठ !.....नई नई.....पिछली बार पांच हजार दिया था इस बार पचास हजार देना पड़ेगा।"

-"इस बार धंधा नई है यार,.....वो साला तुम्हारा दोस्त भी तो होटेल खोल लिया है न बाजू में.....अब उसका ज़्यादा चलता है.....मेरा धंधा चौपट हो गया है .....चल इस बार भी पांच हजार ले ले.....बस !"

-"नई चलेगा ! महंगाई देखो तुम ! हमारा प्रमुख बोला है पचास हजार से कम दिया तो होटल बंद करवा देगा।'

-"बाप का राज है !?" राजन को गुस्सा आ गया। वो उठकर खड़ा हो गया, "होटल मेरा, धंधा मेरा, सार्वजनिक नाम पर उड़ाने को तुमको पचास हजार दे दूँ और मैं मरूँ !.....प्रमुख को बोलो मुझसे बात करे। अभी जाओ.....अभी कोई पैसा नई मिलेगा,.....बाद में देखा जायेगा।"

-"सोच लो राजन सेठ.....कुछ हो गया तो हम जिम्मेवार नई।"

-"जा जा.....पंडाल बांधके पूजा के नाम पर अंदर दारू पीते हो और इधर दादा गिरी करते हो।"

दोनों दाढ़ी वालों ने राजन को आँखें तरेर कर देखा और चले गए। राजन का मूड उखड़ गया। तपन खामोश देखता रहा।

-"लास्ट आर्डर ले और बंद कर.....साढ़े दस के ऊपर तो बज रहा है।" राजन ने मैनेजर से कहा।

-"चल, मैं चलूँ।" तपन ने कहा।

-"हाँ तू चल.....आज थोड़ा रुकना पड़ेगा, हिसाब भी देखना है और हो सकता है वो प्रमुख भी आ जाये।"

-''पुलिस को फ़ोन कर दे।'' तपन ने सुझाया।

-''अरे ये सब मिले-जुले हैं.....पुलिस को फ़ोन करने से मामला बढ़ जायेगा। तू चल यार.....ये तो सब इस देश में धंधा करने की आम परेशानियाँ हैं।''

होटल के सामने सड़क के दूसरी तरफ़ बस नम्बर 396 का इंतज़ार करते तपन को बेतरह बोरियत होने लगी लेकिन टैक्सी लेने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। अपनी कॉलोनी में पहुंचते पहुंचते तपन को तकरीबन पौने बारह बज रहे थे।

-''क्या रे,.....किदर घूमता है आज कल तू?.....इतना रात को कोई घर आता है ?'' माँ ने दरवाज़ा खोलते हुए शिकायत की।

-''नौकरी कर रहा हूँ ! नौकरी करवाना चाहते थे न तुम लोग.....कर रहा हूँ. ....'' तपन ने चिढ़कर जवाब दिया, ''और नौकरी में टाइम मेरे हाथ में नई होता।''

-''ओवर टाइम?''

-''बस कुछ नहीं तो ओवर टाइम'' तपन ने अपनी क़मीज़ उतारकर खूँटी पे टांगते हुए कहा, ''तुम लोगों को सिवाय पैसे के और कुछ दिख्ताछ नई !''

-''जरा सा पूंछा तो तू इतना चिढ़ गया.....माँ हूँ.....और कौन पूछेगा तेरा अच्छा भला?.....चल, खाना गरम करूँ न?''

-''न.....मैं खाया.....तुम भी सो जाओ.....अमार के काज आच्छे.....ओमी पोड़बो....'' (मुझे काम है, मैं पढूंगा)

माँ ने हाथ पकड़कर तपन को कमरे में पड़े पलंग पर बैठाया।

-''अब क्या है ?'' तपन ने फिर चिढ़कर पूछा।

-''तेरे बाबा ने बोला था न कि वो नेवी के चीफ़ इंजीनियर से बात किया है तेरे बारे में.....''

-''तो?''

-''तो आज वो बोलता था कि उस पोस्ट का पेपर में आने वाला है ।''

-''टाइम्स में तीन चार दिन में ऐड आने वाला है'' , अंदर से तपन के पिता की आवाज आयी, ''ज़रा अख़बार देखते रहना।''

तपन ने अंदर की और झाँक कर माँ से कहा, ''ये सब कुछ सुनते रहते हैं, सोने का बहाना करते हैं।''

-''अभी गया है सोने.....नींद भी तो आते आते आती है न।''

-''सब मुझी पर नज़र रखे हुए हैं।'' तपन ने माँ से अपनी बांह छुड़ाई और पतलून की पेटी खोलने लगा, ''ठीक है तुम जाओ, सो जाओ,.....मैं ऑफ़िस में पेपर देखता रहूंगा।''

माँ अंदर चली गयी। तपन हाथ मुंह धोने के लिए बाथरूम में दाख़िल हुआ। शीशे में अपनी शक्ल देखकर ख़ुद से बोला, ''तपन बेटे तू भी अपने बाप की तरह एक सेकंड ग्रेड इंजीनियर बनने के लिए पैदा हुआ है .....तेरा फ़्यूचर सील्ड है !. ....चः.....!''

दूसरे दिन तपन जब अपनी शिफ़्ट के समय कम्पनी के दरवाज़े पर बस से उतरा तो स्टेशन रोड के मोहाने पर राजन के होटल की तरफ़ बहुत बड़ा हुजूम लगा था और पुलिस ने वह जगह तीन तरफ़ से घेर रखी थी। पहले तो तपन ने सोचा, 'होगा कुछ , इतना बड़ा शहर है, कुछ न कुछ रोज़ ही होता रहता है' फिर उसने राजन के होटल के सामने के मजमे को कल रात की बात से जोड़कर देखा और सोचा कहीं राजन के होटल वाला मामला तो नहीं है । वह धीरेधीरे आगे बढ़ा। भीड़ लगी थी। उसने ज़रा भीड़ के अंदर जाकर देखा राजन के होटल का शटर आधा बंद था और वहां पुलिस का पहरा था।

-''क्या बात है ? यहाँ पुलिस क्यों है ?'' तपन ने पूछा।

-''मर्डर हो गयेला है।''

-''किसका?''

-''होटल मालिक का।''

-''राजन नटराजन?!.....वो जो यहाँ बैठता था?''

-''हाँ ! कल रात को।''

इतने में पुलिस वाले ने आकर सारी भीड़ को हटाया और वहां खड़े रहने से मना किया। तपन का मन अजीब सा होने लगा। लेकिन 'क्या हुआ' ये पूछे भी तो किससे पूछे। वह कंपनी में अंदर चला गया। वहां उसने अपने सिक्योरिटी वाले से पूछा, ''वो क्या हो गया?''

-''रात को साब चंदा मांगने पर कुछ कहा-सुनी हो गयी। चंदा मांगने वाले ने पिस्तौल चला दी। होटल का मालिक मर गया।''

-''कब?''

-''कल रात को साढ़े ग्यारह के आस पास.....होटल बंद हुआ कि कोई प्रमुख आ गया। झगड़ा करने लगा पचास हजार दे ओ। होटल वाला बोला पचास नहीं दे सकता। वो बोला ले के रहूंगा। बस ! इसी कहा सुनी में कुछ हुआ होयेगा, प्रमुख ने गोली चला दी। होटल वाला मर गया। नौजवान लड़का था बेचारा।....ये गुंडा एरिया है साब.....ये साले भगवान के पंडाल के नाम पर चंदा उगाते हैं और अंदर बैठकर सब काले धंधे करते हैं। गुंडे का क्या धर्म क्या ईमान क्या भगवान्!''

तपन का मन उखड़ गया। कल ही तो साथ में कॉफ़ी पी थी ! कल ही तो अपना दुखड़ा बयान किया था। इतने सालों की दोस्ती का अंत किसी गुंडे ने एक गोली से कर दिया! राजन ने कल सामने नये खुले होटल वाली बात का जिक्र किया था, हो सकता है राजन उसके होटल के कम्पीटिशन में हो और प्रमुख ने अपना होटल चलाने के लिए इस कम्पीटीशन को हटाने का रास्ता यही खोजा हो!

सिक्योरिटी गेट से अपने शॉप फ़्लोर तक आहिस्ता आहिस्ता और राजन की दोस्ती के ख़्यालोंमें चलते चलते तपन अपनी मोहन अय्यर की मुलक़ात के बारे में राजन से झूठ बोलने के लिए शर्मिंदा भी हुआ और उसने मन ही मन उससे माफ़ी भी मांगी। फिर उसने एक दोस्त से बिछड़ जाने के ग़म में लम्बी सी सांस खींची और अपने शॉप फ़्लोर के अंदर बढ़ गया।

5

-"थोड़ी और डाल कंजूस....."

-"अकेले तेरे लिए नई है .....सबको देनी है....." चाय वाले ने शॉप फ़्लोर पर वर्कर्स को सुबह साढ़े ग्यारह की चाय देते हुए कहा।

-"एक तो तेरा कप इतना छोटा है ....." वर्कर ने चेताया।

-"अपना ले के आया करो बड़ा बड़ा....."

-"कितना भी बड़ा लाओ.....चाय ये इतनी ही देता है।" दूसरी तरफ़ से दूसरा वर्कर बोला।

-"चुप कर ! सुपवाइज़र जा रहा है ।" पहले ने दूसरे से आँखों का इशारा करते हुए कहा।

-"अरे चाय वाला !" तपन ने शॉप फ़्लोर पर चाय वाले का ध्यान आकर्षित किया।

-"जी?"

-"ये तेरे बग़ल में क्या है ?"

-"पेपर है .....टेमकर साब ने मंगवाया है।"

-"दिखा दिखा....." और तपन ने चाय वाले के बग़ल में खुसा हुआ टाइम्स ऑफ इंडिया ले लिया, "तू जा मैं टेमकर साब को दे दूँगा।"

-"क्यों सर, घर पर पेपर नई लेते क्या?" पहले वर्कर ने चुटकी लेते हुए तपन से पूछा।

-"मेरे यहाँ इंडियन एक्सप्रेस आता है और मुझे टाइम्स में एक ख़बर देखनी है ।"

तपन वर्कर्स की तरफ़ से नजर हटाकर पास के असेंबली लाइन वाली जगह पर अख़बार बिछा कर देखने लगा। ख़बरों से उसे वैसे भी कुछ लेना देना नहीं था। उसे तो इश्तिहार देखने थे - वो भी सरकारी नौकरी वाले इश्तिहार और ख़ासतौर से

नेवी में इन्जीनियरों की भर्ती वाले। उसने पेज दर पेज पलट डाले लेकिन उसे इस तरह का कोई इश्तिहार नहीं दिखा। उसने सोचा चलो आज भी नहीं आया - अच्छा हुआ! उसे नेवी में इन्जीनियर लगने का वैसे भी बिलकुल शौक़ नहीं था। उसने अख़बार जैसे का तैसा तहा कर रखा और अपने प्याले में बची चाय पीते पीते दूर कहीं देखते हुए सोचने लगा कि क्या यही उसकी नियति है ! क्या उसका सारा जीवन इसी तरह शॉप फ़्लोर पर लोहा पीटते गुज़र जयेगा ! वक़्त के साथ उसका प्रमोशन भले ही हो जाये लेकिन रहेगा तो वो यही - इस लेवल या उस लेवल का- इन्जीनियर !

-''क्या सोचते हो तपन?'' बग़ल से गुज़रते हुए असीम उग्रा ने उसे सोच में डूबे देखकर पूछा। असीम उग्रा दूसरा सुपरवाइज़र था जो तपन से कभी कभार इधर उधर की बात कर लिया करता था। वरना वह बहुत ख़ामोश किस्म का आदमी था।

-''सोच रहा हूँ कि तेरी मेरी जोड़ी क्या इस कंपनी के लिए ही बनी है!''

-''मैं तो बन्धु अब जल्दी ही जा रहा हूँ जमशेदपुर.....मैंने अप्लाई किया था, वहां से मेरा कॉल आ गया है। सो जोड़ी तो अपनी गयी टूट।'' उग्रा ने पीठ पर दोस्ती का हाथ रखते तपन को बैठाते हुए कहा, ''और रही बात तुम्हारी तो मैं तो सोच रहा था कि तुम यहाँ से मुझसे पहले जाओगे।'' तपन ने उग्रा की तरफ़ सर घुमाया, ''क्या मतलब?''

-''मतलब ये कि एक नया टी वी चैनल आ रहा है और उन्होंने कोरेओग्रेफ़र्स के लिए ऐड दिया है । मैं समझा तुमने अप्लाई किया होगा.....और तुम्हारे तजुर्बे के लिहाज़ से सेलेक्ट तो तुम्हें हो ही जाना है।''

-''कहाँ?'' तपन का मुंह खुला रह गया, आँखें बड़ी हो गयीं और उसकी गर्दन उग्रा की तरफ़ तनी रह गयी, ''कहाँ आया है ऐड?''

-''हफ़्ता भर हो गया,.....इसी टाइम्स में देखा था.....अब तो शायद लास्ट डेट भी निकल गयी होगी.....तुमने देखा नहीं?''

-''हफ़्ता भर हो गया?''

-''आई थिंक सो'' उग्रा ने कंधे उचका कर अपना चश्मा ठीक करते हुए कहा। ''तुम टाइम्स नहीं देखते क्या?''

-''मेरे पिताजी हैं न.....वो घर में लेते हैं इंडियन एक्सप्रेस क्योंकि उनको उसका जर्नलिज़्म पसंद है..... लेकिन मुझसे कहते हैं टाइम्स में इंजिनियर भर्ती का ऐड आने वाला है वह देखते रहना ! अब इज़िन्ट दिस नॉन सेंस! अरे अगर ऐड

आने वाला है तो कम से कम उतने दिन तो पेपर बदल कर टाइम्स कर दो.....पर नई !''

-''ये बाप लोग न बच्चों से एक्सपेक्ट करते हैं और बच्चों के एक्सपेक्टेशंस पर ध्यान ही नहीं देते.....एनी वे.....टाइम्स के पुराने पेपर्स देख लो।''

तपन ने उग्रा का हाथ अपने हाथ से दबाया - ऐसे जैसे थैंक यू कहा हो। इतने में चाय ब्रेक समाप्त होने का सायरन बज गया। लेकिन सायरन की परवाह किए बग़ैर तपन उठा और टाइम्स लेकर टेमकर की केबिन की तरफ़ तेज़ तेज़ क़दमों से चल दिया।

-''क्या हुआ? फिर कोई प्रॉब्लम है तपन? ''केबिन में उसके घुसते साथ टेमकर ने पूछा।

-''हर बार प्रॉब्लम लेकर थोड़े ही आता हूँ सर !''

-''पेपर लाये हो.....आईसी.....हाँ, चाय वाला कह रहा था कि तुमने पढ़ने के लिए ले लिया है.....कोई ख़ास बात?''

-''सर दो चार दिन पुराने पेपर्स देखने थे।''

-''पुराने?.....क्यों?.....मैं तो पेपर्स शाम को घर ले जाता हूँ।''

-''पिछले एक हफ्ते के.....इफ़ यू डोंट माइंड।''

-''छोटी बेबी ने फाड़ फूड़कर अगर उसके फूल पत्ते न बना दिए हों तो... ..नो प्रॉमिसेस.....बट.....जो भी मिलेगा कल ले आऊंगा।''

-''थैंक यू टेमकर साब !'' तपन मुड़कर जाने को हुआ ही था कि टेमकर ने पीछे से पुकारा, ''अरे तपन ! व्हाई डोंट यू गो टू दी टाइम्स ऑफ इंडिया इट सेल्फ. ....अगर मेरे पेपर्स में जो तुम ढूंढ रहे हो वो न मिला तो और पुराने पेपर्स में देखना होगा.....कल वैसे भी ऑफ़ है .....टाइम्स ऑफ़िस में जाओ और वहां पुराने पेपर्स की माइक्रोफ़िल्म चेक कर लो।''

-''गुड आईडिया'', तपन ने चुटकी बजाई, ''थैंक यू टेमकर साब !''

शाम को घर पहुँचते साथ ही पिताजी से सामना हो गया।

-''ऐड देखा?''

-''आया नहीं अब तक.....आज ही पेपर देखा.....कुछ नहीं.....''

-''आई सी.....बोला था जे ऐड आने वाला है .....की जानी की होच्वी..... एनीवे.....दैखा जाबे.....'' पिताजी अपनी लुंगी के ऊपर बनियान पहनते पहनते अंदर चले गए।

तपन ने हाथ जोड़ लिए - ऐसे जैसे कि जान छूटी !

रात को कोई कार्यक्रम था नहीं। नौकरी हो चुकी थी। अब बस खाना और सो जाना।

-''कल तुम घर पर ही है न? छुटी आछे.....'' माँ ने खाना परोसते हुए पूछा।

-''छुटी आच्छे.....पर आमार के काज आच्छे।'' (छुट्टी है पर मुझे काम है) ओमी बम्बइये जाबो।''(मैं बम्बई जाऊंगा)

-''लड़की वाले आने वाले हैं.....बारह तक रुक जाना फिर जहाँ जाना हो चले जाना।''

-''लड़की वाले? क्यों?''

-''बड़ा हो गया.....काम धंधे वाला हो गया.....अब शादी का समय भी तो आ गया है न.....लड़की वाले तो आएंगे।''

-''मैं बारह तक रुकने वाला नई हूँ.....तुम हमको पूछ के थोड़े ही बुलाया उन लोगों को.....कल मैं टाइम्स का ऑफ़िस में जाने वाला हूँ.....बाबा बोला न ऐड आने वाला है .....वोई दखने जाना है। लड़की वालों को वापस भेज दो नई तो बोलो शाम को आओ।''

-''शाम को?.....अच्छा ठीक है !.....वो नौकरी वाला ऐड देखना जरूरी है . ....तुम जाओ.....जाओ।''

दूसरे दिन तपन ग्यारह के आसपास वी.टी. स्टेशन के सामने टाइम्स ऑफ़ इंडिया बिल्डिंग के रिसेप्शन पर पहुँच गया। औपचारिकताओं के बाद उसे तीसरी मंजिल पर सारे अख़बारों की माइक्रोफ़िल्म देखने के लिए भेज दिया गया। हर रोज़ का हर पेज बारीकी से देखते देखते तपन को दो दिन पहले के अख़बार में नेवी में इंजिनियर भर्ती का ऐड- जिसका जिक्र पिताजी कर चुके थे - मिल गया और आठ दिन पहले के अख़बार में मिला एक टी वी चैनल का वो ऐड जिसमें रिसर्चर, प्रोडक्शन असिस्टेंट और प्रोड्यूसरों के लिए विज्ञापन था। तपन ने दोनों विज्ञापनों की कॉपी मांगी और निर्धारित फ़ीस दे कर ख़रीद ली। नेवी वाला ऐड तो ख़ैर घर जाकर भी पढ़ा जा सकता था लेकिन टी वी चैनल वाला ऐड पढ़ने की उसे बड़ी उतावली थी। उसने हिसाब लगाया कि टी वी प्रोडक्शन का तो उसे कोई तजुर्बा है नहीं इसलिए वो उन नौकरियों के लिए तो ठीक बैठता नहीं है । जहाँ तक रेसरचर का सवाल था उसे इस बारे में मालूम नहीं था कि ये होता क्या है और टी वी में रेसेरचर का क्या काम हो सकता है। बहरहाल ये जो हो सो हो.....लेकिन एक यही नौकरी है जिसके लिए उसे लगा कि आवेदन किया जा सकता है। लेकिन जब उसने आवेदन की अंतिम तारीख़ देखी तो उसे बहुत निराशा हुई। पता दिल्ली का था और

आवेदन की तारीख़ तो आज ही की थी। अब बम्बई से दिल्ली चिट्ठी पहुंचने में चार पांच दिन तो लगेंगे ही। याने ये मौक़ा भी गया हाथ से। तपन गर्दन झुकाये मुरझाया मन लिए वीटी स्टेशन वापसी की गाड़ी लेने आ गया। फिर अचानक उसे न जाने क्या ख्याल आया कि वह तेज़ क़दमों से बाहर जाकर जीपीओ (बम्बई का हेडपोस्ट ऑफ़िस) चला गया और उसने टी वी वाले विज्ञापन में जो पता लिखा था उस पर एक अर्जेन्ट टेलीग्राम भेजा- ''आपका ऐड अभी देखा। मैं रेसरचर के लिए अपना आवेदन अभी भेज रहा हूँ। हो सके तो फ़ैसले से पहले कृपया मेरे पत्र की प्रतीक्षा करें-तपन सेन।''

तपन ने तार भेज तो दिया लेकिन उसे अंदर से यह भी लगा कि आख़िर वह कौन सी बड़ी तोप है जिसके लिए चैनल वाले उसके आवेदन की प्रतीक्षा करें! भारत इतना बड़ा देश है और न जाने कहाँ कहाँ से कितने ही टैलेंटेड लोगों ने इस विज्ञापन को देखा होगा, अप्लाई किया होगा और उनमें से कितने ही लोग इस पोस्ट के लिए क्वालिफ़ाइड होंगे। क्या तजुर्बा है उसका रिसर्च में?!

जी.पी.ओ.से निकलते समय तपन ने एक बार फिर अपने ही भाग्य को कोसा और सोचा कि अगर ये दुनिया अपने ही कर्मों/दुष्कर्मों से चल रही है तो उसने शायद पाप ही पाप किये हैं, पुण्य एक भी नहीं ! उसे लगा कि उसकी नियति बस अब इंजिनियर बनकर ही जीवन बिताना है - वैसे ही जैसे कि उसके पिता जी ने बिताई। एक मध्यमवर्गीय बेमानी सी जिन्दगी। सुबह डिब्बा बांध कर दफ़्तर जाओ, दिन भर मशीनों के संग गुज़ारो और शाम को आकर घर का खाना खाकर- हो सके तो दो एक पैग मारकर- सो जाओ और दूसरे दिन फिर काम पर चलो। तपन की चाल ढीली पड़ गयी। मन विचारों में खो गया। सर झुक गया और नजर सड़क पर होते हुए भी साफ कुछ दिखना बंद हो गया। वह दुखी हो गया। फिर जैसे अचानक राजन का चेहरा उसके सामने आ गया। वो चेहरा जिसने उससे कभी कहा था, ''भाग्य को मत कोस ! तेरा भाग्य लाखों से अच्छा है । तेरे पास पेरेंट्स हैं, तेरे घर है, तू पढ़ा लिखा है, तेरे पास नौकरी है - ऐसे कितने हैं इस दुनिया में जिनके पास इनमें से कुछ भी नहीं है !.....यू आर लकी!'' तपन ने लम्बी सांस भरी और राजन की बात से इत्तेफाक़ किया। उसने मन ही मन सोचा, ''दिस कैन नॉट बी दी एन्ड ऑफ दी वर्ल्ड!'' और वह वीटी स्टेशन की ओर मुड़ लिया। फिर अचानक उसे ख्याल आया कि शहर आया है और आज समय भी है तो वर्ली में नए शुरू होने वाले टी वी चैनल के दफ्तर में, जहाँ वह गया था, वहां भी हो लिया जाये। उस समय उन्होंने कहा था

चैनल शुरू नहीं हुआ है, अब शायद शुरू होने वाला हो। तपन सेंट्रल लाइन से लोकल पकड़ कर परेल उतर गया। वहां से वर्ली टी वी सेण्टर- थोड़ा लम्बा था- लेकिन पैदल रास्ता था। टी वी सेण्टर के सामने ही तो थी वह बिल्डिंग।

-''किससे मिलना है ?'' सिक्योरिटी वाले ने पूछा।

-''मिस्टर सीता रामैय्या से।''

-''सीता रामैय्या छोड़ गए।''

-''तो प्रोग्रामिंग में कौन है ?''

-''एक लेडी है जिया ताहिलियानी.....लेकिन वो आपसे नहीं मिलेंगीं..... उनके पीए से मिल सकते हैं।''

-''ठीक है....., कहाँ जाना होगा?''

-''दूसरे फ़्लोर पर.....वहां जाकर नीलम जाइवा पूछ लीजियेगा.....पास पर क्या नाम लिखूं?''

-''तपन.....तपन सेन।''

-''कहाँ से?''

-''भांडुप से'' कहते हुए तपन को इतनी शर्म आयी कि उसने अपना मुंह एक तरफ़ फेर कर धीरे से बोला।

सीढ़ियां चढ़ने के बाद दूसरी मंजिल पर छोटे छोटे तमाम वर्क स्टेशन्स थे। कुछ ख़ाली थे कुछ में लोग काम कर रहे थे।

-''नीलम जाइवा.....'' एक साहब ने अपने मुंह पर ऊँगली रख कर बेतरह सोचते हुए जैसे अपने आपसे कहा। फिर बोले, ''उधर चले जाइये।'' उधर से उधर फिर उधर से भी उधर। नीलम को ढूंढने में उसी फ़्लोर पर तपन को तक़रीबन दस मिनट लग गए।

-''वो मीटिंग में हैं।''

-''चैनल शुरू हो गया?''

-''शुरू करने की ही तो मीटिंग है। बैठिये।.....अर्जेंट है तो बुलाता हूँ?'' नीली वर्दी पहने एक चपरासी नुमा शख़्स ने मददगार साबित होते हुए कहा।

-''बुलाएँगे प्लीज़ तो.....''

-''बैठिये, बैठिये.....'' और वह शख़्स एक किनारे वाली बंद केबिन में चला गया।

दो मिनट बाद ख़ूबसूरत सलवार कुर्ते में-जिसका कलफ़ किया हुआ पल्लू ज़मीन झाड़ रहा था- एक नौजवान लड़की अपनी भृकुटि चढ़ाये निहायत ऐटीट्यूड

के साथ बाहर आयी, ''यस?''

तपन ने बताया कि वह पहले सीता रामैय्या से मिला था और आज इस उम्मीद से आया है कि शायद चैनल शुरू हो गया हो। उसने कहा कि वह कोरिओग्राफ़र है और चैनल के लिए काम करना चाहता है ।

-''चैनल हैज़ नॉट बिगन.....वी आर प्लानिंग इट राइट नाउ.....कम लेटर. ....''

-''कब आऊं?''

-''व्हेन एवर यू लाइक।''

-''नेक्स्ट वीक?''

-''अपटू यू।''

-''चैनल शुरू कब होगा?''

-''सून।''

-''मैं कब आऊँ?''

-''व्हेन एवर यु लाइक।''

तपन को लड़की की समझ का अंदाज़ा लग गया और वह उसे नमस्कार करके वापस चला आया। वापस पैदल परेल और वहां से भीड़ में धक्के खाते हुए लोकल से भांडुप। दिन समाप्त हो गया, आज की छुट्टी चली गयी, शरीर की थकान से ज़्यादा मन में थकान हो गयी और - हालाँकि खाया कुछ नहीं था- भूख जैसे मर गयी थी। घर आकर उसने नेवी वाले ऐड का प्रिंट डाइनिंग टेबल पर रख दिया- ऐसे जैसे कि पिताजी को आते ही साफ़ दिखाई दे और खुद जाकर बिस्तर पर लेट गया। अपनी खुली आँखों से वह छत की ओर एकटक निहारता रहा फिर उसे नींद आ गयी। तीसरे पहर की झपकी में उसे सपना आया कि वह टी वी चैनल में नीलन की जगह है और नीलम उससे मिलने आयी है । वह भृकुटि चढ़ाये ऐटिट्यूड के साथ व्यस्त दिखते हुए केबिन से निकलकर नीलम से मिलता है। उसे ऊंची-ऊंची आवाज़ में लताड़ता है -''ऐसा क्या काम है तुमको.....सो अर्जेंट.....कि तुम मुझे मीटिंग में से बुलाती हो?.....चैनल शुरू नहीं हुआ है .....कम बैक लेटर.....'' फिर मुड़कर अपने आप से बड़बड़ाता है, ''चले आते हैं न जाने कहाँ कहाँ से मुंह उठाये.....'' और वह वापस केबिन में/मीटिंग में चला जाता है।

तपन की नींद संध्या समय फ्लैट की छोटी सी बालकनी में गमले में रखे तुलसी के पौधे पर माँ के दिया लगाकर घंटी बजाने से खुली।

-''कितना सोयेगा? उठ!....., कुबेरा नई सोते.....'' माँ की आवाज़ आयी,

''ताड़ा ताड़ी कोरो (जल्दी करो).....गेट रेडी.....लड़की वाले आते ही होंगे।''

'लड़की वाले' सुनकर तपन ने सर को एक गन्दा सा झटका दिया, आँखें मसलीं और उठकर लम्बी सी अंगड़ाई ली। उसने दबी जबान से बड़बड़ाया, ''मुझे एप्लीकेशन बनानी है .....ये लड़की वाले कहाँसे टपक पड़े'' फिर ज़ोर से माँ की तरफ़ बोला, ''इनकी लड़की को और कोई लड़का नई मिला, मैईं मिला।''

-''सब लड़के शादी से पहले ऐसे ही नख़रे करते हैं.....फिर लड़की देखकर फिसल जाते हैं।.....चल, तैयार हो जा।''

-''तपन !'' अंदर से पिताजी की आवाज़ आयी। 'ओह!' तपन समझ गया के पिताजी घर आ चुके हैं।

''साहेब बोल रहे थे ऐड एक दो दिन पहले ही आ गया है ।'' पिताजी ने कहा, ''.....तुमसे बोला था जे पेपर देखते रहना.....देखा नई?''

-''देखा.....टेबल पर रख दिया है'', तपन ने गर्दन नीचे करके बेमन से जवाब दिया। फिर मन में कहा 'अच्छा इन्होने आकर ऐड देखा ही नहीं'।

-''तब?.....अप्लाई करना है.....उसका क्या किया?''

-''इसीलिए तो टाइम्स के ऑफ़िस गया था, ऐड का फोटो लाने, एक दो दिन में पेपर्स तैयार करके अप्लाई कर दूंगा।''

-''ओके.....ठीक आछे !'' पिताजी ने अंदर से ही इत्मीनान से कहा।''

तपन ने तौलिया लिया और बाथरूम में नहाने चला गया। बाथरूम के अंदर जाकर उसने तौलिया खूँटी पर टांग दिया और खिड़की से कहीं दूर कांजुर पहाड़ी पर बने चर्च की छोटी-छोटी पीली रौशनी की तरफ़ नज़र किये क़मीज के बटन धीरे-धीरे खोलते हुए सोचता रहा कि अपने टी वी चैनल वाले आवेदन पत्र में ऐसा क्या लिखे कि वह सिलेक्शन न सही तो कम से कम इंटरव्यू तक तो पहुँच ही जाये। बाक़ी वह वहां सम्भाल लेगा।

साढ़े आठ बजे तक लड़की वाले आ गए। लड़की - माधुरी, उसके अधेड़ उम्र के अध पके बालों और अच्छी ख़ासी तोंद वाले पिता और दुबली पतली छोटी सी दिखने वाली माँ। तपन के पिता ने उन्हें इज़्ज़त से बैठक में बैठाया, तपन की माँ को आवाज़ देकर बुलाया और उन लोगों से उनका परिचय करवाया। तपन का छोटा भाई अपने आप आकर 'नमस्कार' करके वहीं बैठ गया। तपन को बुलाया गया। दो घंटे पहले मंगवाए गए समोसे और लड्डू चाय के साथ मेहमानों के सामने रखे गए। इधर उधर की बातें चलीं। माधुरी और तपन अपने आपको निहायत ऑक्वर्ड महसूस

करते रहे, बोर होते रहे। फिर तपन से कहा गया कि वह जाकर माधुरी को कॉलोनी दिखाए। 'कॉलोनी !'- तपन ने सोचा - 'कॉलोनी न हुई तजमहल हो गया ! है क्या इसमें दिखाने के लिए! चार तरफ़ पुरानी मरम्मत मांगती सरकारी बिल्डिंगें, बीच में एक गन्दा सा बरसात से भीगा हुआ छोटा सा ऐरिआ जिसे गार्डन कहते हैं और दूसरी तरफ़ कांजुर की पहाड़ी!' लेकिन उसने शिष्टाचार के नाते मुस्कुराते हुए कहा, ''चलिए आपको कॉलोनी दिखाऊं!'' हलांकि उसके यह कहने में कटाक्ष छुपा हुआ था लेकिन वो कोई समझा नहीं और तपन आज्ञाकारी की तरह माधुरी को आगे करके सीढ़ियां उतरकर बिल्डिंग के नीचे चला गया। मौसम साफ़ था और बिल्डिंग के बाहर निकला जा सकता था।

-''तुम मुझे देखने आयी हो?'' थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद तपन ने पूछा।

-''बाबा और माँ आपको देखने आये हैं।''

-''और तुम?''

-''लड़कियों को तो ऐसा अधिकार दिया नहीं गया न !''

-''इसमें अधिकार की क्या बात है ? पसंद ना-पसंद की बात है ।''

-''उसका भी तो अधिकार होना चाहिए न !''

-''हूँ !''

कुछ देर दोनों चुपचाप कॉलोनी के मैदान में किनारे किनारे चलते रहे। फिर तपन ने जैसे कोशिश करते हुए कहा, ''देखो, तुम्हारा पता नहीं लेकिन मुझे अभी शादी-वादी नहीं करनी है ।''

-''मुझे भी नहीं करनी है .....लेकिन मेरी कोई सुनता नहीं।''

तपन माधुरी को अपना चेहरा मोड़कर एक मिनट के लिए देखता रह गया। उसे इस बेबाक और स्पष्टवादी लड़की का जवाब अच्छा लगा और उसके अंदर जो कुछ अकड़ा हुआ था वह सब रिलैक्स हो गया।

-''गुड ! याने हम दोनों ही एक से हैं और एक से सरकमस्टान्सेस के मारे हुए हैं ! हंहंहंहं.....''

-''हंहंहहं.....यस !''

-''तुम करना क्या चाहती हो?''

-''मैं मनैजमेंट पूरा करना चाहती हूँ और फिर किसी एनजीओ में काम करना चाहती हूँ। इससे मेरी प्रोफेशनल क्वालिफ़िकेशन भी हो जाएगी और मेरी सोशल वर्क की इच्छा भी पुरी हो जाएगी।''

-''हाउ नाइस !''

-'' और आप?''

-"मैं डांस करना चाहता हूँ.....फ़िल्में बनाना चाहता हूँ.....समथिंग क्रिएटिव. "...."

माधुरी ने सर टेढ़ा करके अपनी आँखों में चमक लाकर तपन को देखा। कहा दोनों ने कुछ नहीं लेकिन दोनों ने एक दूसरे को अप्रिशिएट किया - और यह बात दोनों ही समझ गए।

-"मेरा तो फ़िल्मों से सम्बन्ध उतना ही है कि वीडियो लाइब्रेरी से कैसेट लाये और पिक्चर देखली, बस !" माधुरी ने चहककर कहा, "उसके लिए वीसीआर लगता है सो हमारे पड़ौस में है....., हम तीन चार मिलकर वहीं पिक्चर देख लेते हैं।"

-"मैं कभी-कभी आई आई टी में प्रोग्राम कोरिओग्राफ़ भी करता हूँ।"

-"अरे वाह ! यु आर रियली क्रिएटिव।"

-"एक प्रोग्राम में आओ तुम।"

-"आने देंगे?"

-"क्यों नहीं !.....माँ बताती थीं आप लोग कुर्ला में रहते हैं। कुर्ला में कहाँ?"

-"नेहरू नगर में.....स्टेशन के पास ही तो है।"

-" और अभी आप एस.एन.डी.टी. में मैनेजमेंट कर रही हैं.....एस.एन.डी. टी. तो कई जगह हैं.....कहाँ?"

-"चर्चगटे पर।"

-"आई सी.....बम्बई आया तो मिलूंगा.....मरीन ड्राइव का चक्कर लगाएंगे. ...."

-"मरीन ड्राइव तो खुद अर्धचक्र है.....हंहंहंहं...."

इधर उधर की हल्की फुल्की बेमतलब बातों मैं करीब पंद्रह मिनट बीत गए।

-"वापस चलें?" माधुरी ने अचानक कहा, "वो लोग ऊपर क्या सोचते होंगे !"

-"सोचते होंगे दोनों ने एक दूसर को पसंद कर लिया.....हंहंहंहं.....!"

माधुरी चुप रही।

दोनों चुपचाप सीढ़ियां चढ़कर फ़्लैट में वापस आ गए।

-"अरे कहाँ चला गिया था.....तुमि लोग का चा ठण्डा होता है....." माधुरी की माँ ने तपन को देखते हुए कहा। तपन ने उन्हें भरपूर नज़र देखा फिर हल्के से मुस्कुरा दिया। वह कहना चाहता था कि दुनिया में शायद भारत ही एक मात्र ऐसा देश होगा जहाँ चौबीसों घंटे चाय से सत्कार होता है - चाहे रात के नौ बजे हों या बारह ! लेकिन वह चुपचाप डाइनिंग टेबल की एक ख़ाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

-''आप भी आइये हमारे घर कभी.....'' माधुरी के पिता ने तपन के पिता से कहा।

-''अवश्य ! बच्चों को मिलने दीजिये.....''

औपचारिकता और चेहरे पर चिपकाई हुई मुस्कुराहटें रात दस बजे तक चलीं। तपन की बेसब्री बढ़ती रही - उसे तो कल के लिए अपना आवेदन पत्र तैयार करना था। जब सब चले गए और घर वाले खाना खाने बैठ गए तब माँ- पिता जी ने तपन से पूछा, ''लड़की कैसी लगी?''

-''तुम लोग ऐसे पूछ रहे हो जैसे ये मुर्गी कैसी लगी या ये मछली कैसी लगी !''

-''अरे !'' माँ ने नाराज़गी जताते हुए कहा, ''कैसी बात करता है आजकल !''

-''आज कल !?'' पिता ने बात काटकर कहा, ''ये हमेशा से ही उल्टी बात करता है ।.....अरे, पूछते हैं शादी के लिए लड़की कैसी लगी?.....झोल बनाने के लिए मछली का नहीं पूछ रहे हैं !''

तब तक तपन अपनी चिड़चिड़ाहट कन्ट्रोल में ले आया था, बोला-''ठीक है .....तुमि जानो.....एक दिन में कोई किसको अच्छा बुरा कह सकता है !'' फिर वह खाने से उठते हुए बोला, ''खाना हो जाये तो मुझे मेज़ चाहिए.....एप्लीकेशन लिखना है।''

-''ओके, ओके.....'' पिताजी ने जल्दी जल्दी चावल मुंह में डाला, ''ठीक आछे.....'' फिर अपनी पत्नी की तरफ़ देखकर बोले, ''ताड़ा ताड़ी कोरो।''

जब सब हाथ मुंह धोकर सोने चले गए तब तपन ने टी वी चैनल का इश्तिहार निकाला और देखा उसमें एप्लीकेशन के साथ क्या क्या संलग्न करना है। उसके पास केवल अपने सर्टिफ़िकेट्स और डिग्री थे। कोरिओग्राफ़ी का कोई प्रमाण तो था नहीं। उसने सोचा जो है वही संलग्न करेगा लेकिन एप्लीकेशन कल चली ही जानी चाहिए। फिर ख़्याल आया कि लगे हाथ नेवी वाली एप्लीकेशन भी भेज दी जाये ताकि पिताजी को कोई मलाल न रहे।

6

-“ यहाँ क्या कर रहा है खन्ना?” रॉबिन ने खन्ना की पीठ पर धौल मारते, बग़ल वाले स्टूल पर बैठते हुए कहा।

-“तो कहाँ जाऊं?.....रात के बारह बजे सारे शराब ख़ाने बंद हो चुके हैं। सारे होटल बंद हो चुके हैं, इस समय बस फ़ाइवस्टार ही खुला है।”

-“ये तो चौबीस घंटे खुला है यार !”

-“ तुम यहाँ कैसे रॉबिन?.....तुम तो जुहू के आसपास घूमते रहते हो!”

-“कोलाबा में शूटिंग कर रहा था.....सेकंड शिफ़्ट.....अभी ख़ाली हुआ..... सोचा एक पेग मार लूँ फिर घर जाऊं।”

रात के बारह के बाद ताजमहल होटल के हार्बर बार में आज बहुत दिनों बाद फ़िल्म डाइरेक्टर रॉबिन और एक बहुत बड़ी कंपनी का प्रोडक्शन इंचार्ज जो छोटा मोटा प्रोड्यूसर भी रह चुका था- मिल रहे थे।

-“आई एम्डेडटायर्ड.....ये साले स्टार्स के नख़रे सहते सहते.....” रॉबिन ने खन्ना से अपनी व्यथा बयान की।

-“इसीलिए तो मैं ने प्रोडक्शन करना बंद कर दिया.....पैसा लगाओ, नखरे उठाओ फिर डिस्ट्रीब्यूटर से जिरह करो उसके फ्रॉड सहो, उसके बाद पिक्चर चले न चले...” खन्ना ने अपनी दर्द भरी कही।

-“अब क्या किया जाये.....ये लाइन पकड़ी है तो इसकी अच्छाई बुराई भी झेलनी पड़ेगी। जब पैसा आता है तब तो अच्छा लगता है न !” रॉबिन ने ऊँगली से बार टेंडर को इशारा किया, “एक ग्लेनलिवेट, लार्ज !”

-“दिस इज़ इक्ज़ेकटली आई वाज़ थिंकिंग !”

-मतलब?”

-“मतलब ये के ज़माना बदल रहा है.....फ़िल्म इज़ ऑन इट्स वे आउट.. ...वीडियो इज़ इन.....”

-''तो?''

-''तो ये कि हम लोगों को वीडियो के डोमेन में कुछ ऐसा करना चाहिए जो नया हो और अभी तक औरों ने न किया हो।''

रॉबिन ने अपनी व्हिस्की में बर्फ के टुकड़े डालते हुए बार वाले को ऊँगली से 'बस' का इशारा किया। एक चुस्की ली और ''आह्ह !'' की आवाज़ के साथ कहा, ''प्लीज इलैबोरेट।''

-''देखो, इस देश में हजारों वीडियो लाइब्रेरीज़ हैं.....तमाम फ़िल्मी न्यूज़ के विडियोज़ रोज़ बनते हैं, फ़िल्में बनती हैं.....बट, इस देश में तुम देखो बिजनेस वालों और मैनेजमेंट वालों के लिए ले देकर एक ही मैगज़ीन है।''

-''एक पेपर भी है।''

-''मैं मैगज़ीन की बात कर रहा हूँ।''

-''सो?''

-''सो वी टेक आउट ए बिज़नेस मैगज़ीन.....बट.....वी टेक दिस मैगज़ीन आउट इन वीडियो।''

रॉबिन का गिलास हाथ में उठा का उठा रह गया और उसका मुंह खन्ना की तरफ़ मुड़ा और खुला रह गया। फिर उसने जैसे होश में आते हुए खन्ना के कंधे पर हाथ मारकर ज़ोर से कहा, ''ब्रिलियंट आईडिया मैन.....ब्रिलियंट !''

-''तू मेरा पुराना दोस्त है.....तू साथ में आता है?''

-''व्हाई नॉट !''

-''तेरी पिक्चर कब ख़त्म होती है ?''

-''उससे क्या मतलब?.....आई कैन डु बोथ टुगेदर।''

रॉबिन कर भी सकता था। वह बांद्रा की गलियों में आवारा घूमने वाला नेशनल कॉलेज का ड्रॉप आउट था जो रोमियो के नाम से कॉलेज में मशहूर था। जिसके एक नहीं कई कई लड़कियों से सम्बन्ध थे। परिवार वालों की हिल रोड पर पुश्तैनी प्रॉपर्टी थी जिसका अच्छा ख़ासा किराया आता था इसलिए पैसे की किसी को कोई परवाह नहीं थी। फिर जब ऊपर ही- ज़िगज़ैग रोड पर- एक स्टूडियो खुल गया तब रॉबिन कुछ दिनों के लिए वहां मैनेजर लग गया। वहां उसने एक हीरोइन से तालमेल बैठाकर एक पिक्चर अनाउंस कर दी। हीरोइन को इस पिक्चर से उम्मीदें होने लगीं और रॉबिन को इश्क़। पिक्चर रलीज़ हो गयी और चल गयी। रॉबिन प्रोड्यूसर हो गया। दूसरी पिक्चर उसने खुद डाइरेक्ट की।

-'' है क्या डायरेक्शन में? फ़ाइट वाला फ़ाइट कर जाता है, स्टंट वाला स्टंट

कर जाता है, डांस वाला सांग कर जाता है .....जो बीस पर्सेंट बचता है उसे हीरो हीरोइन अपने आप डायरेक्ट करवा लेते हैं.....हंहंहं.....''

लेकिन तीन पिक्चरें बनाने के बाद उसे अपनी एक हीरोइन से ज़बरदस्त इश्क हो गया और पहली बार जिन्दगी में वह किसी लड़की के लिए कुछ भी करने के लिए - बर्बाद होने तक होने के लिए- तैयार हो गया। लेकिन इस बार लड़की रॉबिन से वैसे ही खेल रही थी जैसे कि ये महाशय लड़कियों के साथ खेलते आए थे। इस बार रॉबिन का दिल टूट गया और उसे दुनिया से विरक्ति हो गयी। ये वो जमाना था जब दुनिया में रजनीश का बोल बाला था। उनकी आइडिओलॉजी सब को प्रभावित कर रही थी और पूना से लेकर अमरीका तक दुनिया ''ओशो'' की माला जप रही थी। ओशो वालों को भी ऐसे लोगों की ज़रुरत थी जिनका समाज में अच्छा स्टेटस हो ताके उनके कंम्यून का नाम हो सके। रॉबिन भी ओशो से इतना प्रभावित हुआ कि उसने कंम्यून ज्वाइन कर लिया। मायावी दुनिया से दूर एक दूसरी दुनिया का वासी ! इसी दौरान एक बार जब वह अपने गेरुए वस्त्रों में झोला लटकाये, बाल बढ़ाये लन्दन ब्रिज के किनारे अपने विचारों में गुम टहल रहा था उसे भारत से गए विज्ञापन कंपनी के फ़िल्म चीफ़ धर्मराज ने पहचान लिया।

-''रॉबिन?!''

-''आई एम नॉट रॉबिन.....आई एम स्वामी अभयानंद।''

-''ओह, कम ऑन.....कट दि क्रैप....''

-''धर्मराज?,.....तू यहाँ क्या कर रहा है ?''

-''साले, तू यहाँ क्या कर रहा है.....यू आर एक्टिंग इन सम फ़िल्म?''

-''नोनो.....आई एम सन्यासी।''

-''बॉल्स यू आर.....''

-'' लेकिन तुम यहाँ कैसे?''

-''लक्स साबुन के फ़िल्मी हेरोइनों के साथ इंटरनेशनल एड्स बनते हैं न. .... मैं लक्स साबुन का एड करने आया हूँ.....हेमा मालिनी इन लन्दन! ''मेरा सौंदर्य साबुन- लक्स !''.....हंहंहंहं.....''

-''ओह !''

-''कम लैट्स हैव ए ड्रिंक.....''

-''नो ड्रिंक्स !''

-ओके.....हैव डिनर विद मी एंड हेमाजी।''

-''ओके !''

शाम को सेन्ट्रल लन्दन के एक पॉश इटैलियन रेस्टोरेंट में अड्वॅरटाइजिंग एजेंसी चीफ धर्मराज, कैमरा मैन हीरल चोपड़ा और लीवर्स का एक सीनियर प्रॉडक्ट मैनेजर शूटिंग खत्म करके डिनर पर मिले। तब आठ के करीब बजे थे। रॉबिन साढ़े आठ तक पहुंचा।

-''हाय एवरी बॉडी !.....हेमा जी कहाँ हैं.....आयीं नहीं?'' रॉबिन ने कुर्सी में बैठते हुए पूछा।

-''वो शॉपिंग करने गयीं हैं.....बाद में उनसे मिलने कुछ लोग आने वाले हैं. ....वो नहीं आ पायेगी।''

बियर और तमाम तरह के आला इटैलियन खानों के बाद डैज़र्ट चखते चखते धर्मराज ने रॉबिन से कहा, ''तो सारी उम्र सन्यासी रहोगे?''

-''अरे व्हाट ए ब्लिस ! दिस इज़ लाइफ़।''

-''बॉल्स दिस इज़ लाइफ़ !.....दिस इज़ रनिंग अवे फ़्रॉम लाइफ़.....लाइफ़ वहां है जहाँ जद्दोजहद है, जहाँ लोगों से इंटरेक्शन है, जहाँ लोगों के लिए कुछ कर रहे हो.....यहाँ क्या है ?.....यू आर रनिंग अवे फ़्रॉम लाइफ़।''

थोड़ी देर बाद कैमरा मैन और और लोग खा पी कर अपने कमरों में चले गए। धर्मराज ने कुछ ड्रिंक्स और रॉबिन ने सोडा ऑर्डर किये और उनका डिसकशन चलता रहा। डिसकसशन में धर्मराज ने रॉबिन को ये समझा डाला कि संन्यास लेना सचमुच लाइफ़ से पलायन है और अगर लाइफ़ जीना है तो दुनिया में लौटना पड़ेगा।

-''मैं तीन साल से सन्यासी हूँ.....मैं अब इंडस्टी से भी कट ऑफ़ हूँ.....मैं वापस जाने के क़ाबिल नहीं हूँ।''

-''मैं तेरा बचपन का दोस्त हूँ एंड यू आर ए गुड फ़िल्म मेकर.....आई हैव एन ऑफ़र फ़ॉर यू.....मैं तुम्हें ऐड फ़िल्म देता हूँ.....ऐड बनाओ, दुनिया में वापस आ जाओ।''

-''ऐड्स?.....साबुन तैल की फ़िल्में !''

-''अब पैसा उन्हीं में है और बहुत सेफ़ पैसा है .....ये जितने बड़े बड़े इंटरनेशनल अवार्ड जीतने वाले फ़िल्म वाले हैं न.....ये पैसा तो ऐड से ही कमा रहे हैं!.....देखो ऐड बनाओ.....ये बनाते बनाते तुम कोई भी और फ़िल्म बना सकते हो।''

-''लेकिन मैं संन्यास नहीं छोडूंगा।''

-''गेरुआ पहने रहो, नंगे रहो.....मेरी बला से''

-''लैट मी थिंक !''

और 'थिंकिंग' में रॉबिन को छः महीने लग गए। फिर एक दिन अचानक वह बम्बई आ गया और धर्मराज के पास पहुंच गया। धर्मराज ने कहा उसे रॉबिन के बारे में क्लाइंट को भी बताना पड़ेगा इसलिए -''गिव मी योर शोरील।''

-''शोरील?''

-''जो भी पिक्चरें बनाई हैं उनमे से एक आध रील दे दे।''

-''ओ के.....एक लड़का भेज दो मैं दे दूंगा.....मैंने खार में सीज़र्स पैलेस होटल से ऑफ़िस ऑपरेट करना शुरू कर दिया है ।''

और इस तरह रॉबिन ने वापस बम्बई आकर फ़िल्मों में भी प्रवेश कर लिया और धीरे धीरे उसके गेरुए वस्त्र भी टी शर्ट और जींस में बदल गए। एक दो ऐड्स बनाकर वह फिर से फ़ीचर फ़िल्में बनाने लगा। पिछले कुछ दिनों से हालाँकि उसे पैसे की थोड़ी मुश्किल हो रही थी। उसकी पिछली पिक्चर चली नहीं थी और नई जो उसने शुरू की थी उसकी शूटिंग बढ़ती ही जाती थी। इसलिए उसे ये खन्ना का एडिशनल बिज़नेस वाला आइडिआ बहुत भाया।

-''यू कैन डु बोथ टुगेदर !?'' खन्ना ने रॉबिन की बात को सवाल की तरह दोहराया।

-''ऑफ़ कोर्स !''

-''तो चल मिला हाथ.....दोनों टीम बनाते हैं और बिज़नेस टुडे के नाम से वीडियो मैगज़ीन शुरू करते हैं। फ़िफ्टी फ़िफ्टी पार्टनर्स !''

-''इन्वेस्टमेंट कितना?''

-''पांच लाख।''

-''आई कॉंट।''

-''स्पॉसर्स लेंगे यार !.....मैंने तीन लाख का एक पकड़ा है। इंडस्ट्रियलिस्ट है । तुम दो लाख वाला एक और ढूंढ लो।.....चाहिए क्या यार.....एक छोटा सा स्टूडियो, एक कैमेरा, एक रिकॉर्डर, एक एडिटिंग मशीन और एक टेक्नीशियन। डुप्लिकेटिंग के लिए दुकानें खुली हैं.....डिस्ट्रीब्यूशन की भी एजेंसियां हैं.....वीडियो कैसेट लाइब्रेरी वाला रखेगा.....बस कमीशन देना है और काम हो गया।''

-''फिर इतना पैसा काय को?''

-''एक तो कंटिंजेंसी और दूसरे प्रोग्राम बैंक बनाने के लिए। शुरू करते साथ थोड़े ही पैसा आ जायेगा।''

और शुरू करते साथ पैसा नहीं आता ये बात खन्ना से अच्छी तरह कौन

जनता था। खन्ना दिल्ली से था। दिल्ली यूनिवर्सिटी से उसने अंग्रेजी में बी.ए. किया। फिर कुछ दिन किसी अख़बार में ट्रेनी लगा रहा लेकिन उसे कुछ जमा नहीं। वो बम्बई आ गया। कुछ दिन भटकने के बाद उसकी दोस्ती सेंटॉर होटल (एयरपोर्ट) के मैनेजर से हो गयी जिसने उसे एक फ़िल्मी पूल पार्टी में इन्वाइट किया। उसी पार्टी में खन्ना ने एक बहुत बड़े फ़िल्म प्रोड्यूसर को अपनी अंग्रेज़ी और पंजाबी से और अपनी कुशाग्र जुगाड़ बुद्धि से इतना प्रभावित किया कि उसने उसे ऑफ़िस में आकर मिलने का न्यौता दे डाला। ऑफ़िस में खन्ना को प्रोड्यूसर ने प्रोडक्शन सुपरवाइज़र लगा लिया। उसने कहा, ''तुम इन प्रोडक्शन वालों पर नजर रखो..... पढ़े लिखे हो, ईमानदार हो, हमारी डीलिंग का लेखा जोखा रखो.....तुम्हारी ज़रूरतों का ख्याल हम रख लेंगे.....''

लेकिन प्रोडक्शन स्पेशलाइज़्ड फील्ड है, वो एक नौसिखिये से क्या कंट्रोल होता ! खन्ना कुछ कर नहीं पाया। लेकिन उस ऑफ़िस में आता था एक राईटर जिससे उसकी दोस्ती हो गयी। उसने इन्हें एक डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी में ऑफ़िस मैनेजर लगवा दिया। दो साल वहां काम करने और सीखने के बाद खन्ना ने अपना बैनर शुरू कर दिया और एक फ़िल्म अनाउंस कर दी। पिक्चर चल गयी। ये प्रोड्यूसर करार दे दिये गए और जब दुकान चल गयी तो इन्होने दो और फ़िल्में बनायीं - जो एक दम डब्बा हो गयीं! हाँ, थोड़ा बहुत पैसा अंडर प्रोडक्शन बना लिया था जो कुछ दिनों से काम चलाये जा रहा था। अब इनकी मजबूरी थी कि या तो ये एक और पिक्चर बनायें या कोई और धंधा खोजें। इनकी समझ में बिज़नेस वीडियो बैठ गया।

खन्ना प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने में मास्टर था। उसने रॉबिन और अपने को बराबर बराबर का पार्टनर दिखाकर अपनी कंपनी का नाम रजिस्टर करवाया और एक बहुत इम्प्रेसिव लेटर हेड पर प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाकर दो-तीन बड़े इंडस्ट्रियलिस्ट्स को भेजी और भेजी एक बिज़नेस वीकली को। वीकली को इसने कंसल्टेंसी और कॉले बोरशन का तथा इंडस्ट्रियलिस्ट को स्पॉसरशिप का ऑफ़र दिया। बात लोगों को पसंद आ गयी। कैसेट तैयार होने से पहले ही मरीन ड्राइव और चर्चगेट स्टेशन पर मैनेजमेंट वीडियो के होर्डिंग लग गए। अख़बारों में विज्ञापन और समाचार छप गए।

इंडियन एक्सप्रेस के संडे सप्पलीमेंट में इसके बारे में छपा और ये तपन के पिताजी ने देखा। वे हँसे -''तो अब बिज़नेस भी सिनेमा से होगा! हंहंहंहं.....!'' तपन फ़ैक्ट्री जाने के लिए निकल ही रहा था कि उसने सिनेमा सुना तो अपनी

कमीज के बटन लगाते हुए आ गया-''सिनेमा क्या?''

-''बिज़नेस वीडियो वीकली.....नया निकला है ।''

-''देखूं !'' तपन अपने आपको रोक नहीं पाया। पिता तपन के चेहरे को देखता रह गया और उसे उस समय न जाने क्यों ऐसा लगा कि ये लड़का इंजीनियर बनने के लायक नहीं है .....इसे कुछ और होना चाहिए था ! लेकिन वे ये बात ज़ाहिर तौर पर क़ुबूल कैसे कर लेते !

फ़ैक्ट्री आकर तपन ने विज्ञापन में जो टेलीफ़ोन नंबर दिए थे उन पर फ़ोन किया। ऑफ़िस का पता पूछा और मन ही मन तय किया कि हो न हो इसमें शायद उसे कुछ काम मिल जाये। टी वी चैनल में तो एप्लीकेशन दे ही दी है– कॉल आये न आये - क्या पता !

तीन दिन बाद शिफ़्ट चेंज का ब्रेक आता था। वह सुबह ही उठकर, तैय्यार होकर शीशे के सामने अपने आपसे आश्वस्त रहने की ताक़ीद करके निकल पड़ा।

बिज़नेस चैनल वालों का ऑफ़िस सांताक्रूज़ में था। एस.एन.डी.टी. यूनिवर्सिटी कैंपस के सामने लीडो थिएटर के पीछे वाली एक नयी बनी कॉलोनी में। जब तपन वहां पहुंचा तब उस जगह झाड़ू लग रही थी और सिर्फ़ एक महिला- जो वहां रिसेप्शनिस्ट भी थी मैनेजर भी थी - बस अभी ऑफ़िस आयी आयी लग रही थी और तैयार होकर कुर्सी पर बैठने की तैयारी में थी। तपन के पूछने पर उसने बड़ी

बेरूखी से जवाब दिया, ''हमारा काम शुरू हो चुका है। फर्स्ट इशू ऑफ़ मैगजीन इज़ ड्यू एनी टाइम। ये हमारा रजिस्टर्ड एड्रेस है लेकिन हमारा मेन ऑफ़िस कम स्टूडियो जुहूतारा रोड पर बी आर हाउस के बग़ल में है।''

-''तो क्या मै वहां जाऊं?''

-''ये बिज़नेस वीडियो मैगज़ीन है .....इसमें आप करेंगे क्या?.....यहां वीडियो टेक्नीशियन चाहिए, रिपोर्टर चाहिए, रिसर्चर चाहिए.....आप तो इसमें कुछ भी नहीं हैं। और वैसे भी हमारा बेसिक स्टाफ़ आ चुका है।''

तपन को टी वी चैनल का विज्ञापन याद आ गया। उसने कहा, ''रिसर्चर!. ....आई एम ए रिसर्चर!''

-''बिज़नेस रिसर्च.....अकादमिक रिसर्च से अलहदा है।''

तपन को इन दोनों प्रकार की रिसर्च के बारे में कुछ भी पता नहीं था लेकिन उसने बड़े आत्मविश्वास से कहा, ''रिसर्च इज़ रिसर्च.....वेथर बिज़नेस और अकादमिक.....''

महिला तपन के आत्मविश्वास और उसके जवाब से लाजवाब उसे देखती रह

गयी। फिर उसने पूछा, ''आप अपने कुछ रिसर्च पेपर्स लाये हैं दिखाने के लिए।''

-''ला सकता हूँ।'' तपन ने बड़ी सफ़ाई से झूठबोला।

-''ठीक है तो जब लाएंगे तब बात होगी.....थैंक यू।'' और महिला अपने काम में लग गयी। तपन के पास इसके बाद कोई जवाब नहीं था और वह तीसरी मंज़िल के उस दफ्तर से जब धीरे-धीरे सीढ़ियों से उतरा तब उसे यह क़तई तौर पर समझ में आ चुका था कि वह इस तरह जो भटक भटक कर अपनी इनर्जी और अपना समय बर्बाद कर रहा है वह उसे अब बंद कर देना चाहिए और जो हो रहा है उसे एक्सेप्ट करते हुए अपने आपसे ख़ुश रहना चाहिए क्योंकि यही रास्ता है जो उसे, उसके माता पिता को ख़ुश रख सकता है और उसके छोटे भाई की लाइफ़ बनाने में मददगार हो सकता है ।

7

-''आज इतनी जल्दी तैयार होकर कहाँ जा रहा है ? आज तो ऑफ है न!''

-''मुझे शहर जाना है।''

-''शहर! ?''

-''ओबेरॉय होटल नरीमनपॉइंट।'' तपन ने खुश होते हुए बताया।

-'' न-री-म-नपॉइंट !.....क्यों?'' माँ का कौतूहल बढ़ गया।

-''इंटरव्यू है।''

-''नेवी का इंटरवयू होटल में?''

-''अरे नई माँ !''.....तपन चिड़चिड़ा गया, ''टी वी का इंटरव्यू है।''

-''टी वी ! ओ माँ !'' माँ सकते में आकर धम्म से कुर्सी में बैठ गयी।

-''क्यों?.....नया कुछ नई करूँ.....जो मैं चाहता हूँ वो कुछ नई करूँ.....बस तुम लोगों के कहे अनुसार चलूँ और अपने बाप जैसे दब्बू इंजिनियर की तरह नौकरी करके एक बेकार सी जिंदगी गुज़ार दूँ.....बस !.....भाई की शादी कर दो, दो अदद बच्चे पैदा कर लो, एक वन बैडरूम के नेवी क्वार्टर में मरते मरते किसी तरह खुश रहने का बहाना करते रहो.....इससे ज़्यादा कुछ सोचो तो ''ओ माँ !'' करने लगोगे. ....'' तपन ने गुस्से में अपने हाथ से झटक कर तौलिया ज़ोर से कुर्सी पर पटक दिया और ''व्हाट ए ब्लडी लाइफ़'' बड़बड़ाता हुआ अंदर कमरे में चला गया जहाँ उसका सामना पिता से हो गया। दोनों ने एक दूसरे को देखा, एक दूसरे के भावों को समझा और फिर दोनों ही कुछ काम न होते हुए भी जैसे कामों में लग गए। पिता ने सुन तो सब लिया था लेकिन इस समय कुछ कहना उन्होंने मुनासिब नहीं समझा।

तपन ने टी वी वालों को दिल्ली के पते पर विज्ञापन के जवाब में जो आवेदन भेजा था महीने भर तक उसका कोई जवाब नहीं आया था। तब उसने यह सोचकर तसल्ली कर ली थी कि आवेदन रजिस्ट्री करके भेजा है इसलिए उसे पहुँचने में कम

से कम आठ दिन तो लगेंगे। फिर आठ से दस दिन चैनल वालों को आवेदनों को छाँटने में लगेंगे और अगर उन्होंने जवाब दिया तो कम से कम दस दिन उसके पास इनकी चिट्ठी आने में लगेंगे। फ़ोन तो उसके घर में है नहीं कि कोई फ़ोन कर के उसे इंटरव्यू की इत्तेला दे। इस गणित से महीना भर तो वह शांत, आशान्वित, आश्वस्त और प्रार्थना रत बैठा रहा। फिर पंद्रह दिन और गुज़र गए। लेकिन जब आवेदन भेजने के बाद दो महीने गुज़र गए तब उसने उम्मीद छोड़ दी। वैसे भी, उसने सोचा, उसने आवेदन ही अंतिम तारीख़ निकल जाने के बाद किया था शायद इसलिए वह स्वीकार भी नहीं किया गया होगा। तब वह केवल भाग्य पर छोड़कर जी. के. डब्लयू. की नौकरी करता रहा। जिसे वह कहता था ''डिब्बा बांध के जाओ, लोहा काट के आओ''। तीन महीने बाद वह दिल्ली के आवेदन की बात और उससे जुड़े सपनों को भूल चुका था।

-''दिल्ली से तेरे लिए एक चिट्ठी आयी है ।'' एक दिन फ़ैक्ट्री से शाम को घर पहुंचते साथ माँ ने तपन को बताया।

-''क्या चिट्ठी है ?'' तपन ने लापरवाही से पूछा।

-''क्या पता.....अंग्रजी में है .....'' कहते हुए माँ ने लिफ़ाफ़ा तपन को थमा दिया। तपन ने भेजने वाले का पता देखा तो उछल पड़ा। टी वी चैनल वालों की ओर से भेजा गया पत्र था। मन में उसके एक डर यह भी था कि कहीं उन लोगों ने उसकी एप्लीकेशन समय सीमा के बाद भेजने पर एक्सेप्ट न की हो। फिर भी उतावली तो थी ही। दिल ज़ोरों से धड़क रहा था और एक कच्ची सी उम्मीद थी कि शायद कहीं मंजिल मिल ही जाये। उसने लिफ़ाफ़ा खोलकर देखा। पत्र चार लाइनों का था। उसमें लिखा था कि चैनल में रिसर्चर के पद के इंटरव्यू के लिए बम्बई के नरीमन पॉइंट स्थित पांच सितारा होटल ओबरॉय टावर्स में तीन तारीख़ को उसे सुबह दस बजे आना चाहिए। तपन ने पत्र पढ़ा तो उसे यक़ीन नहीं हुआ। उसने अपनी आँखें मिचमिचाकर एक नज़र माँ की तरफ़ देखा फिर पत्र को दोबारा पढ़ा, तिबारा पढ़ा और जब इस ख़त का मज़मून उसके ज़हन पर उतर गया तब उसने ख़ुशी से सामने खड़ी अपनी माँ को अपनी बाँहों में भरकर ज़मीन से उठा लिया।

-''की होलो?'' (क्या हुआ) माँ को तपन की ख़ुशी से ख़ुशी तो हुई लेकिन उसकी समझ में इस ख़ुशी की वजह नहीं आयी।

-''बताऊंगा.....बताऊंगा.....'' कहते हुए तपन चिट्ठी तहाकर जेब में रखते हुए कपड़े बदलने अंदर चला गया। तीन तारीख़ तो दो दिन बाद ही है! इंटरव्यू के लिए उसे अपने सर्टिफिकेट्स की फ़ाइल तैयार करनी होगी।

क्योंकि यह ख़त किस बारे में है यह तपन ने किसी को नहीं बताया था इसलिए आज सुबह जब माँ ने नरीमन पॉइंट सुना तो ताज्जुब में आ गयी और तपन माँ के इस अचम्भे और ''ओमाँ!'' से इंटरव्यू के लिए अपने अंतर-जनित टेंशन के चलते बेतरह चिड़चिड़ा गया।

दस बजे पहुँचने का मतलब था घर से दो घंटे पहले निकलना। बल्कि ढाई घंटे पहले - क्योंकि इंटरव्यू के समय से कम से कम पंद्रह-बीस मिनट पहले तो वहां पहुंचना ही चाहिए। तपन साढ़े सात बजे सुबह घर से निकल जाना चाहता था ताकि साढ़े नौ तक वह ओबेरॉय होटल पहुँच सके। लेकिन निकलते निकलते उसे सात चालीस हो गए। एक तो इंटरव्यू के नाम से मन में तनाव सा था ऊपर से माँ के ''ओमाँ!'' करने से चिड़चिड़ाहट पैदा हो गयी थी। बिल्डिंग की सीढ़ियां उतरते हुए उसने एक बार कागज़ों/सर्टिफिकेटों की फ़ाइल को बगल में दबोचा और आसमान की ओर देखकर जैसे मूक प्रार्थना में कहा, ''अब सेलेक्ट करवा ही दो, बस !''

अच्छी बात ये थी कि लोकल गाड़ी पकड़ने के लिए अब उसे भांडुप स्टेशन तक नहीं जाना पड़ता क्योंकि उसके घर के सामने - मुश्किल से एक फर्लांग पर -लोकल ट्रेनों का एक स्टेशन कांजुर मार्ग- हाल ही में बन गया था जिसकी वजह से शहर जाने के लिए उसका कम से कम दस से पंद्रह मिनट तक तो बच ही जाता।

स्लो लोकल मिली - हर स्टेशन पर रुकती रुकती जाने वाली। वीटी पहुँचते पहुँचते नौ बज गए। तपन को समय से पहुँचने पर संतुष्टि हुई। उसने वीटी के बाहर से नरीमन पॉइंट की बस ली जिसने उसे एन.सी.पी.ए. के पास उतार दिया। ओबेरॉय होटल का पिछला दरवाज़ा हालाँकि वहीं पास में था लेकिन अंदर जाने के लिए उसे मरीन ड्राइव की ओर से दाख़िल होना था। होटल भव्य था। ऊंची सी ईमारत, बड़ा सा रिसेप्शन, साफ़ा बांधे दरबान और महंगे महंगे लिबासों में परफ़्यूम का भभका मारते महिलाओं-पुरुषों के हुजूम। लेकिन तपन तो तजुर्बे वाला हो गया था - वह 'ताज' भी तो हो आया था ! पांच सितारा होटल तो उसने पहली बार 'ताज' ही देखा था और ओबेरॉय में अंदर जाते समय आज तो उसके पास 'वजह' थी ! वह पिछली बार की तरह किसी की तलाश में, किसी को ढूंढते हुए नहीं आया था. .... आज तो वह यहाँ बाक़ायदा बुलाया गया था !

-''यस !?.....मे आई हेल्प यू?'' एक खूबसूरत लगती लड़की ने उसे रोककर मुस्कुरा कर पूछा।

-''मुझे ये इंटरव्यू में जाना है'' तपन ने पत्र दिखाते हुए कहा।

-''या !.....स्ट्रेट.....देन लेफ्ट.....इन दी बिज़नेस सेंटर।'' लड़की की मुस्कराहट

हवा हो गयी। तपन आगे बढ़ गया। बिजनेस सेंटर में दाख़िल होते ही बड़ा सा खुला खुला रिसेप्शन कक्ष था जिसमें कुछ पुरुष/महिलाएं एक तरफ़ डेस्कों पर कम्प्यूटरों पर काम करते व्यस्त दिख रहे थे। दूसरी तरफ़ बड़ा लम्बा सा सोफ़ा पड़ा था जिस पर कुछ लोग बैठे थे जो देखने में ऐसे लगते थे जैसे वे भी इंटरव्यू के लिए आये हैं। तपन ने अपना कॉल लेटर दिखाकर डेस्क पर बैठे टाई-धारी सज्जन से पूछा कि इंटरव्यू कहाँ है तो उसने धीमी आवाज़ में झुककर अपनी टाई सँभालते हुए उंगली के इशारे से एक खुले दरवाजे वाले केबिन की ओर इशारा करते हुए अंग्रेजी में कहा, ''इंटरव्यू वहां होगा.....लेकिन आप बैठिये, जब बुलाया जाये तब जाइएगा।'' तपन लम्बे से सोफ़े की तरफ़ हो लिया लेकिन वहां बैठने की जगह नहीं थी। जितने बैठे थे वे भी किसी तरह 'एडजस्ट' कर रहे थे। तपन खड़ा, इधर उधर टहलता रहा फिर उसने तिपाई पर रखी एक अमरीकन पत्रिका उठाकर पन्ने पलटना शुरू कर दिया। तब तक एक प्रत्याशी का बुलावा आ गया और वह सोफ़े से उठकर इंटरव्यू देने चला गया। सोफ़े पर बैठने की जगह हो गयी। दस कब के बज चुके थे। जब तक तपन का नाम पुकारा गया तब तक साढ़े बारह के ऊपर हो रहा था।

-''यू आर तपन सेन?'' घुसते साथ इंटरव्यू करने वालों में से एक ने पूछा।

-''यस सर ! गुड मॉर्निंग !'' तपन ने वहां बैठे लोगों को देखकर जवाब दिया। वहां कुल पांच लोग थे। उनमे एक विदेशी गोरा था और चार देशी। वार्तालाप के दौरान उसके एक्सेंट से तपन को अंदाजा लगा कि वह गोरा अँगरेज़ है। वह काफ़ी सीधे सादे और सही सवाल भी कर रहा था। जो देशी लोग थे उनमें से एक ऐसा था जो शायद विलायत में ही रहा-बढ़ा था और विलायातियों से भी सवा था- बोली-चाली-एक्सेंट में, सवालों को घुमा फिरा कर पूछने में, कन्फ्यूज़ कर देने में इत्यादि। तपन को लगा कि वह अँगरेज से बात करने में ज़्यादा कम्फ़र्ट महसूस कर रहा है।

-''आप ने डांस किया है, फैशन शो में काम किया है लेकिन इसका कोई प्रमाण आपके पास नहीं है तो कैसे मान लिया जाये कि आपने ये सब किया है?''

-''ये सब चैकेबल है.....मूड इंडिगो आई.आई.टी. का ही है .....फ़ैशन शो में नीलम तहिलियानी के लिए कोरिओग्राफ़ किया है और डांस मैं ऑपेरा हाउस वाले डांस इंस्टिट्यूट में सिखाता हूँ।'' ये बातें तपन ने जिस आत्मविश्वास से कहीं उसका यक़ीन उसे खुद नहीं हुआ। लेकिन जिस तरह और जिस सपाट लहजे में ये सब कहा गया था उसका असर इंटरव्यू करने वालों पर साफ़ तौर पर दिख रहा था। सब एक मिनट के लिए ख़ामोश एक दूसरे की ओर देखने लगे।

- ''लेकिन'', टाई बाँधे विलायती लहजे में हिंदुस्तानी ने बुलडॉग की तरह दांत दिखाते हुए, मुंह बिचकाते और हाथ हिलाते, सर आगे लाते हुए पूछा, ''यह मान भी लिया जाये कि आपने इतना सब किया है तो इसका ये मतलब कैसे लगाया जाये कि आप रिसर्च के लिए फिट हैं?.....आप डांसर हो सकते हैं, कोरेओग्रफ़र या फैशन डिज़ाइनर भी हो सकते हैं लेकिन रिसर्चर !.....नो नो....ये तो रिसर्च का जॉब है आप इसके लिए तो फिट नहीं होते।''

तपन को ऐसा लगा जैसे हाथ में आयी मछली हाथ से फिसल कर गिर गयी। एक मिनट के लिए उसका संतुलन गड़बड़ा गया लेकिन उसकी हददर्जा इन्सेक्युरिटी ने उसे हिम्मत दी और उसने एक हल्की सी मुस्कराहट चेहरे पर लाकर कहा, ''अगर आपको लगता है कि डांस या कोरिओग्राफ़ी रिसर्च के बग़ैर की जा सकती है तो मेरा ख़्याल है आप को डांस के बारे में आधुनिक जानकारी नहीं है।''

टाई वाले ने असंतुष्ट होकर बाएं हाथ की उँगलियों से अपनी टाई को नॉट को छुआ और अँगरेज़ की तरफ़ देखा, फिर कहा, ''ठीक है .....मैं मान लेता हूँ कि आप रिसर्च कर सकते हैं लेकिन आप तो नौकरी करते हैं.....ज्वाइन कब से कर सकते हैं?''

तपन के अंदर ख़ुशी बल्लियों उछली लेकिन अपनी आदत के अनुसार उसने चेहरे पर इस प्रकार का कोई भाव नहीं आने दिया और सपाट सा कहा, ''ज्वाइन कब करना है यह तो आप बताइये।''

-''हमारा ऑफ़िस दिल्ली में है .....ज्वाइन वहां करना होगा।''

-''नो प्रॉब्लम।''

-''हम मकान या मकान का किराया इत्यादि नहीं देते, सिर्फ तनख्वाह देते हैं।''

-''नो प्रॉब्लम।''

-''आप पंद्रह दिन बाद ज्वाइन कर सकते हैं?''

-''बिलकुल।''

-''आप सैलरी क्या लेंगे?''

-''आपका सैलरी स्ट्रक्चर क्या है ?''

-''जो आप आज कमा रहे हैं उससे दो हज़ार ज़्यादा, बस।''

-''नो प्रॉब्लम।''

अँगरेज ने सामने रखे कुछ काग़ज़ पल्टे, तपन की तरफ़ एक पल देखा और अपना चश्मा ठीक करते हुए पूछा, ''आप कुछ भी करके टी वी ज्वाइन करना क्यों

चाहते हैं?.....आप तो क्वालिफाइड इंजीनियर हैं।''

-'' लेकिन मेरा पैशन जैसा के आप जानते हैं डांस है और इंजीनियरिंग में डांस नहीं होता।''

सब हंस दिए। इंटरव्यू समाप्त हो गया और तपन से कहा गया कि वह दो घंटे बाद-लंच के बाद-टाई वाले इंटरव्यूअर से बाक़ी बातें कर ले।

उस कमरे से निकलकर वह बाहर सोफ़े पर बैठ गया। सोफ़ा तब तक तक़रीबन ख़ाली हो चुका था। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि जिस बात के लिए वह इतनी शिद्दत से दुनिया भर में कोशिशें कर करके थक गया और कुछ नहीं हुआ वह सब एक मिनट में अचानक और ज़रा सी देर में हो गया ! उसे अपने आप पर भी झूठ पर झूठ बोलने और वह भी इस बेबाक़ी और सफ़ाई से बोलने पर अचम्भा हुआ। लेकिन उसको लगा कि अगर उसने इतने आत्मविश्वास से इतने झूठ नहीं बोले होते तो यह नौकरी उसे कभी नहीं मिलती। लेकिन अभी तो दो घंटे बाद फिर मिलना है और अंतिम फ़ैसला तो तब ही होगा! हालाँकि यह इतनी बड़ी मुश्किल नहीं होगी जितनी कि घर वालों को ये समझाना कि नौकरी इंजीनियरिंग की नहीं है और वह भी दिल्ली में है!

-''इफ़ यू लाइक आप लंच के बाद आ सकते हैं।'' डेस्क पर बैठी एक महिला ने कम्प्यूटर से चेहरा उठाकर तपन से कहा, ''इंटरव्यू वाले लोग भी लंच पर गए हैं और दो बजे के बाद आएंगे।''

-''नो आई एम फ़ाईन! एक गिलास पानी मिल सकता है?''

-''ओवर देयर'' महिला ने हाथ के इशारे से एक कोने में मेज़ पर रखी पानी की आधे लीटर वाली बोतलों की ओर इशारा किया।

भूख तो लगी थी। सुबह घर से बग़ैर नाश्ता किये निकला था लेकिन एक तो उसे इस इलाके में खाना कहाँ मिलेगा यह मालूम नहीं था दूसरे यह महंगा इलाक़ा है क्या पता यहाँ खाना कितना महंगा मिले-दोनों ही बातों के चलते तपन ने आधे लीटर पानी की एक बोतल पीकर संतोष कर लिया और वापस आकर फिर सोफ़े पर बैठ गया। वहां चार पांच लोग और भी आकर बैठ गए थे। या तो शायद इनका इंटरव्यू होना बाक़ी था या हो चुका था या उन्हें भी तपन की तरह ही रुकने को कहा गया था। एक ने तपन से बात करने की कोशिश भी की लेकिन तपन ने अपने हाव भाव से जता दिया कि वह इस समय किसी से बात करने के मूड में नहीं है।

ढाई के आसपास अंदर से उन बग़ल में बैठे लोगों का एक एक करके बुलावा आने लगा। उसमें करीब घंटा भर और लग गया।

साढ़े तीन बजे अंदर से टाई वाला इंटरव्यूअर बाहर आकर तपन से मिला और उसे लेकर वहीं लाउंज में एक ख़ाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। उसने कहा कि तपन को शार्टलिस्ट किया गया है लेकिन फ़िलहाल कुछ भी पूरी तरह कह पाना मुश्किल है। दिल्ली जाकर ये लोग सारी/एप्लीकेशन्स और लोगों के इंटरव्यू का एक बार रिव्यू करेंगे और फिर जो जो सेलेक्ट होगा उस उस को इत्तेला करेंगे। उसके बाद वह एक दम उठकर खड़ा हो गया और उसने तपन से तपाक से हाथ मिलाकर जल्दी जल्दी विदा ली और वापस अंदर चला गया। तपन जो अब तक समझ रहा था कि वह सेलेक्ट हो चुका है ज़मीन पर आ गया। उसके पैर भारी होने लगे और वह धीरे धीरे किसी तरह बिजनेस सेंटर से फ़ॉयर और फिर होटल के बाहर आ गया। बाहर समुद्र के ऊपर धूप पड़ रही थी, लो टाइड की हल्की हल्की लहरों की धीमी धीमी आवाज़ के साथ उमस भरी ठंडी ठंडी हवा बह रही थी। तपन ने एक पल रुककर लम्बी सांस खींची और पैदल मरीन ड्राइव के पेवमेंट पर चर्चगटे की तरफ़ चलने लगा। उसने एक बार सोचा के शहर आया है तो एक बार वर्ली वाले टी वी चैनल के दफ़्तर में भी चक्कर लगा ले। अगर दिल्ली में चैनल शुरू हो रहा है तो शायद बम्बई में भी अब शुरू होने वाला हो। पर जिस तरह निराशा आकर धम्म से गिरी थी उससे उसका मूड ऑफ़ हो गया था। पैरों ने वर्ली जाने वाली बस की तरफ़ जाने से इंकार कर दिया। तपन अम्बेसडर होटल के सामने से वी टी स्टेशन की बस पकड़ने खड़ा हुआ। फिर उसकी नजर समंदर की तरफ़ मुड़ी और उसका मन हुआ कि यहाँ आया है तो थोड़ी देर समंदर के किनारे बैठकर मन को शांत करे। उसने पेवमेंट पर टपरिया पान वाले से एक फोर स्क्वायर सिगरेट ख़रीदी और सड़क पारकर के मरीन ड्राइव के पेवमेंट पर बनी दीवार पर जाकर घुटने मोड़कर बैठ गया। उसके चेहरे पर धूप पड़ रही थी, आँखें लहरों के उठने गिरने पर लगीं थीं लेकिन कहीं दूर देखती हुई। उसे लगा जैसे सिगरेट से उठते धुंए और ज़िन्दगी में कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं है। एक पल के लिए हवा में दिखता है और फिर खो जाता है।

-''चना सींग.....'' बहँगी वाले ने पीछे चलते चलते आवाज़ लगाई। तपन ने मुड़कर देखा—''चनासींग.....!''

-''दो रूपए का!'' तपन ने दो का नोट देते हुए कहा।

चने वाले ने पुड़िया में चने/सींग दाने मिलाकर थमा दिए। सिगरेट समाप्त हो चुकी थी। तपन मुंडेर से नीचे उतर आया और चने चबाता हुआ सड़क पार करके

चर्चगटे की तरफ़ चलने लगा। फिर उसे इस तरह चहल पहल के बीच चलने में अच्छा लगने लगा और वह वीटी की तरफ़ बस लेने की बजाये पैदल ही चल दिया।

हाईकोर्ट के सिग्नल के आगे तक पहुँचते पहुँचते पुड़िया में मूंगफलियां समाप्त हो गयीं थीं। आख़िरी दाना मुंह में डालकर तपन ने पुड़िया का गोला बनाकर ओ.सी.ऐस.की ट्रैफिक लाइट्स के पास किसी गेंद की तरह फेका। बायीं गली से तमाम लड़कियों का जत्था आ रहा था। कागज़ की गेंद सामने आते देख उन लड़कियों की खिलखिलाहट थम गयी। तपन की नज़र घूमी तो उन लड़कियों के बीच उसने माधुरी को देखा। वह मुस्कुराया। माधुरी भी हल्के से मुस्कुराई।

-''तुमि एखाने की कोच्चि?'' तपन ने पूछा

-''आई एम इन एन.एन.डी.टी हियर.....''

फिर माधुरी ने अपनी सहेलियों से तपन का परिचय करवाया, ''माई फॅमिली फ्रेंड-तपन सेन।'' उसके बाद लड़कियों का आपस में बात करना ज़राज़रा धीमी आवाज़ में हो गया और माधुरी और तपन एकदम ख़ामोश चलते रहे।

-''कुर्ला!.....नो?'' तपन ने कैपिटल सिनेमा तक पहुँचते पहुँचते ऐसे पूछा जैसे उसके पास और कुछ तो कहने के लिए है नहीं।

-'' हैं !.....यू?''

-''कांजुरमार्ग !''

-''चलो बाई !''

-''बाई !''

शाम के साढ़े पांच बज चुके थे और वीटी पर भीड़ बढ़ गयी थी। फ़ास्ट गाड़ियां (कुछ ही स्टेशनों पर रुकने वाली) लगातार लग रही थीं। लेकिन तपन को स्लो गाड़ी लेनी थी जो कांजुर मार्ग रूकती।

कांजुर मार्ग स्टेशन पर उतर कर उसकी चाल एकदम धीमी हो गयी। उसका घर जाने का क़तई मन नहीं था। वही लोग, वही मिडिल क्लास एक्सिस्टेंस, वही मन मारकर जीना.....लेकिन जाता भी तो कहाँ? रुकता भी तो कहाँ? स्टेशन से निकलकर संकरी सी पथरीली गलीनुमा और फिर मेन सड़क- आगरा रोड- जिस पर ट्रकों, बसों और ऑटोरिक्शों का बेतहाशा ट्रैफ़िक! इन सब में रुकने से तो घर चले जाना ही बेहतर था। घर जाकर तपन ने अपनी फ़ाइल मेज़ पर पटक कर क़मीज के बटन खोले और कुर्सी पर पसर सा गया।

-''क्या हुआ? हो गया?'' माँ ने दरवाज़ा बंद करते हुए पूछा।

-''हाँ..... हो गया.....''

-''क्या हुआ?''

-''क्या पता !''

-''मने?''

-''मने वो लोग दिल्ली जायेंगे, सारे एप्लीकेशन्स रिव्यु करेंगे फिर बताएँगे।''

-''दिल्ली?''

-''बोला तो येई !''

-''तुझे क्या लगता है?'' माँ ने पास बैठकर तपन के कंधे पर हाथ रखकर प्यार से पूछा, ''हो जायेगा?''

-''क्या पता!''

-''तुमने ठीक किया न.....बस! अपना काम ठीक किया.....बस!.....बाकी भगवान पर छोड़ दो।''

-''आज तक भी सब कुछ भगवान पर ही छोड़ा हुआ था'', तपन ने कुछ कसैले पन से कहा।

-''अच्छा एक बात बता!'' माँ ने पास सरकते हुए पूछा, ''तुझे सचमुच इंजीनियरिंग पसंद नहीं है? तुझे टी वी में जाना है?''

-''माँ! बाबा ने कहा मैंने इंजीनियरिंग कर ली.....लेकिन मेरा मन नहीं है. ....मेरा मन है नाचने में गाने में, कुछ ऐसा करने में जिससे मेरा भी हो और लोगों का भी मनोरंजन हो.....ये रूटीन लाइफ़ मुझे बिलकुल पसंद नहीं है ।''

माँ ने एक मिनट के लिए तपन की ओर ख़ामोश देखा फिर पूछा, ''अच्छा पूछने का समय नहीं मिला, उस दिन वो लोग आये थे.....तुझे लड़की कैसी लगी?''

-''वो मुझे आज भी मिली थी।''

-''कैसे?''

-''वो कॉलेज से आ रही थी और मैं इंटरव्यू से आ रहा था.....वीटी आने का वही एक रास्ता था.....वो अपने दोस्तों के साथ थी.....''

-''क्या बात हुई?''

-''बात क्या.....हैलो, बस.....जान पहचान तो है नहीं और वैसे भी वह अपने दोस्तों के साथ थी.....फिर बात करने को है भी क्या!''

-''तुझे वह लड़की.....माधुरी नाम है न उसका.....हाँ माधुरी....कैसी लगी?''

-''पांच मिनट मिलकर के कोई किसी के बारे में क्या कह सकता है माँ?''

-''अच्छा.....सात बजने आया है पिताजी आते होंगे उनके सामने टी वी में

जाना है, टी वी में जाना है मत शुरू कर देना.....समझे!''

-''अच्छा अब ज्ञान छोड़ो.....कुछ खाने को दो.....सुबह से आधा लीटर पानी पिया है।''

-''थोड़ी देर में तो खाना खाने का समय हुआ जाता है .....अभी कुछ मिठाई विठाई खाले।''

-''ठीक है , मैं कपड़े बदलकर आता हूँ।''

कपड़े बदलते बदलते तपन सोचता रहा कि अगर ये नौकरी मिल गयी तो घर वालों को दिल्ली जाने के लिए कैसे मनाएगा! फिर उसने सोचा जब होगा तब देखा जायेगा, अभी से क्यों परेशान होना!

-''तपन सेन कौन है यहाँ?'' एक सफ़ेद पोश हेलमेट लगाए अफ़सर नुमा शख़्स ने शॉप फ़्लोर पर आकर पूछा। तपन शॉप फ़्लोर पर ही था, उसने सुन तो लिया कि कोई उसके बारे में पूछ रहा है लेकिन उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। एक वर्कर ने तपन की ओर इशारा कर दिया। अफ़सर नुमा आदमी ने तपन के पास आकर पीछे से पुकारा, ''तपन सेन?'' तपन मुड़ा, ''हाँ जी!''

-''बट साहेब ने बुलाया है।''

-''क्यों?,.....वो तो मार्केटिंग मैनेजर हैं.....उनका मेरे से क्या काम है?''

-''वो तुम उन्हीं से पूछो.....मुझे मैसेज आया....मैंने पासऑन कर दिया।'' सफ़ेद पोश बग़ैर किसी जवाब की प्रतीक्षा किये मुड़कर वापस चला गया। तपन शॉप फ़्लोर से निकलकर ऑफ़िस कॉम्प्लेक्स की ओर चला। बट साहेब अपने केबिन में थे। बट साहेब निहायत गोल-मटोल, गोरे चिट्टे कश्मीरी और अधेड़ थे। सफ़ेद क़मीज और नीली पैंट जैसे उनकी पोशाक बन गई थी। पेन हमेशा शैफ़र्स रखते थे और उनकी मेज़ पर पान पराग का बड़ा डब्बा सदैव सजा रहता था। हर दस मिनट में पान पराग की फाँकी और एक सिगरेट से दूसरी जला लेना उनकी आदत थी। उस समय भी सिगरेट के धुंए से सारा केबिन भरा हुआ था।

-''आओ, आओ तपन.....बैठो !'' फिर उन्होंने पान पराग की एक फाँकी मार कर कहा, ''देखो, पंद्रह तारीख़ को अपना एनुअल डे है वरकर्स यूनियन कुछ सांग एंड डांस का कार्यक्रम रखना चाह रही है.....हर साल करती है!.....तो उनहोंने कहा है कि तुम डांस वांस करते हो.....इज़ दैट करेक्ट?'' तपन को कोई जवाब नहीं सूझा। बट साहेब कहते गए, ''.....इसलिए डांस का कार्यक्रम तुम ऑर्गनाइज़ करोगे.....इज़ दैट ऑल राइट?''

-''मैं कोरिओग्राफ़ करता ज़रूर हूँ लेकिन मैं वर्कर्स के साथ यहां कुछ करने वाला नहीं हूँ.....''

-''हूँ .....!'' बट साहेब ने तपन की तरफ़ घूर कर अपनी सिगरेट से आख़िरी और लम्बा कश खींचा। फिर सिगरेट को ऐशट्रे में बुझाते हुए बग़ैर तपन की तरफ़ देखे बोलने लगे, ''तपन.....आई अंडर स्टैंड व्हाट यू आर सेइंग.....लेकिन देखो ये वो कंपनी है जहाँ वर्कर्स सुप्रीम हैं.....तुम शॉप फ़्लोर पर काम करते हो तो दर असल काम तो वहां वर्कर ही करता है .....तो वर्कर हमारी जान है.....हमारी बैकबोन है .....उन्हें हम नाराज़ नहीं करते और मेरा ख़्याल है तुम्हें भी वर्कर्स को नाराज़ नहीं करना चाहिए।.....मैं मानता हूँ ये प्रोफ़ेशनल डांसर्स नहीं हैं, तुम्हें शायद इनके साथ काम करने में वो मज़ा न आये जो तुम्हें और जगह आता हो।'' बट साहेब ने बात रोक कर एक सिगरेट निकालकर और सुलगाई और बोलना जारी रखा, ''एंड बाई दी वे आई.आई.टी. में भी तो स्टूडेंट्स ही हैं, प्रोफ़ेशनल डांसर्स थोड़ ही हैं.....आई थिंक यू शुड डू इट।''

-''आपको आई.आई.टी. का कैसे पता?''

-''वर्कर्स ने बताया.....एनी वे दैट्स नॉट इम्पोर्टेन्ट.....दस दिन का टाईम है, वर्कर्स की रिक्वेस्ट है इसलिए मुझे तुमसे बात करनी पड़ी। इससे एक्चुअली तुम्हारा बहुत फ़ायदा है .....यू विल बिकम ए डार्लिंग ऑफ़ दि वर्कर्स।''

बटसाहेब ने पानपराग की डिब्बी से फिर एक फाँकी मारी और मुंह के सामने से हाथ के पंजे से जैसे धुआं उड़ाते हुए कहा, ''ठीक है !.....जस्ट कन्फर्मविथ शांता राम इन दी यूनियन ऑफ़िस! ओके.....!''

-''बात करता हूँ.....थैंक यू।''

बट साहेब के दफ़्तर से निकलकर एक तरफ़ तपन ख़ुश भी था कि चलो यहाँ भी उसकी आर्ट की क़द्र है लेकिन दूसरी तरफ़ दुखी भी था ये सोचकर कि क्या सारी जिन्दगी उसे लोहा ही काटना/कटवाना पड़ेगा.....क्या इंजीनियरिंग उसका पीछा नहीं छोड़ेगी...क्या कभी भी वह टी वी/सिनेमा में काम नहीं कर पायेगा ! लेकिन उसके अंदर से उसी समय कहीं फिर राजन नटराजन की आवाज आयी, ''तपन ! किस्मत को मत कोस.....तू बहुतों से बहुत ज़्यादा लकी है.....!'' और तपन की चाल में फुर्ती और चेहरे पर कॉन्फ़िडेंस आ गया। उसने अपने आपको समझाया, ''सब्र कर तपन.....अभी दिल्ली से जवाब आना बाकी है!'' तभी उसके अंदर से एक और आवाज़ आयी, ''तपन! तू ने स्टूडेंट्स को लेकर एक शो क्या कर लिया.....अपने आप को तू कोरिओग्रफ़र कहने लगा! तुझे डांस तो आता नहीं है, रिसर्च का तुझे

'आर' भी आता नहीं.....इत्तेफ़ाक़ से अगर टी वी चैनल वालों ने तुझे नौकरी दे दी तो तू कर क्या पायेगा!.....और जब तेरी क़लई खुलेगी तब वो लोग तुझे कहीं नौकरी से निकाल न दें!.... उस सूरत में न तू इस कंपनी का रहेगा, न पूरी तरह इंजीनियर रहेगा न टी वी वाला ही हो पायेगा...'' ऐसा ख़्याल आते ही तपन ने अपने सर पर एक चपत लगाई और अंदर से आने वाली आवाज़ को धिक्कारा, ''नौकरी मिली नहीं कि नौकरी से निकलवाने की बात करने लगे.....मैं जो कुछ नहीं जानता वो क्या काम करते करते सीख नहीं सकता?'' फिर उसके मुंह से बेसाख़्ता निकल गया-''आई विल मेक इट !''

-''व्हाट आर यू गोइंग टू मेक?'' पीछे से आते हुए एक सुपरवाइज़र ने तपन की आवाज़ सुनकर हँसते हुए सवाल किया। तपन को अंदाजा नहीं था कि किसी ने उसे सुन लिया है । वह पीछे मुड़ा। जवाब में उसे कुछ सूझा नहीं और उसने कहा, ''लाइफ़!''

तपन के अगले दस दिन नाच के प्रोग्राम में शिरकत करने वाले वर्कर्स के साथ गुज़र गए। बट साहेब की बात उसकी समझ में आ गयी थी-वर्कर्स को ख़ुश रखने में भलाई थी- इसलिए उसने वर्कर्स और उनकी यूनियन वालों से ऐसा एक भी लफ़्ज़ नहीं कहा जो उन्हें किसी सूरत भी बुरा लगे। दस दिन बाद- पंद्रह तारीख़ को- प्रोग्राम था।

नवें दिन शाम को तपन जब घर पहुंचा तब उसके लिए एक ख़त आया पड़ा था। टी वी चैनल वालों ने उसे छः महीने की प्रोबेशन पर नौकरी ऑफ़र की थी। तनख़्वाह-जैसा कि उन्होने कहा था- आज से दो हज़ार रूपए ज़्यादा थी। रहने खाने की व्यवस्था दिल्ली में उसे ख़ुद करनी थी। छह महीने बाद उसका काम देखकर उसे परमानेंट किया जा सकेगा और उसका तबादला बम्बई किया जा सकेगा। तपन के घर पहुंचने से पहले उसके पिताजी घर आ चुके थे और इस ख़त को खोल कर पढ़ चुके थे। तब ही से उनकी आँखें और ज़बान दोनों आग उगल रहे थे।

-''ये टी वी चैनल वाला क्या मामला है ?'' बड़े सेन साहेब ने देखते ही पूछा।

-''क्या मामला है ?'' तपन ने कुछ न समझते हुए कहा।

-''ये क्या है ?'' पिता ने ख़त तपन के सामने हिलाकर दिखाया और पटक दिया, ''दिल्ली से कोई टी.वी चैनल का ऑफ़र लैटर.....''

तपन की आँखों में चमक आ गयी, ''देखूं'', कहकर उसने नीचे गिरे खत को उठाकर खोलना शुरू किया। पिताजी गुस्से में बड़बड़ाते रहे जिस पर तपन ने क़तई ध्यान नहीं दिया और ख़त पढता रहा। जब पढ़ चुका तो उसने सुना पिता

कह रहे थे, ''इतना पढ़ाया लिखाया, आदमी बनाया कि इज़्ज़तदार नौकरी करेगा. ...इंजीनियर...चीफ़ इंजीनियर बनेगा....भाई को देखेगा....बुढ़ापे का सहारा बनेगा. ....और तू जा रहा है देव आनंद दिलीप कुमार बनने.....शर्म नई आती?.....अच्छी ख़ासी नौकरी लग गयी है घर के पास....अभी नेवी में हो जायेगा तो ये फ़्लैट भी रह जायेगा और सब कुछ सुनियोजित चलता जायेगा.....''

-''बस करो बाबा.....'' तपन के अंदर जैसे पहाड़ फूटा।

-''बताया भी नहीं कि क्या गुल खिला रहा है....''

-''सब कुछ बताया है.....माँ को सब मालूम है।''

-''वो तो मुझे बताया नहीं''

-''बताया नहीं क्योंकि तुम हो ही इसी लायक.....बता देती तो तुम मेरा और उसका दोनों का जीना हराम कर देते.....इंटरव्यू भी शांति से नहीं होने देते.....और क्या इंजिनियर ही सिर्फ़ इंसान होते हैं, इज़्ज़तदार होते हैं.....?''

-''टी वी क्या है.....कोई लाईन है.....कोई नौकरी है.....नाच गाना कोई काम है.....दो दिन काम करेगा फिर भिखारी हो के घर आ जायेगा!.....और ये तो दिल्ली है.....तुम दिल्ली जायेगा?...हम डेढ़ साल बाद रिटायर होता है फिर हम सब लोग कहाँ जायेगा.....तुम बम्बई में इतना बड़ा फ़्लैट कैसे ले पायेगा, जानता है न जे बॉम्बे में रहने का कितना प्रॉब्लम है!''

-''शांत हो जाओ.....मैं हमेशा के लिए दिल्ली नई जा रहा हूँ.....चैनल का ऑफ़िस यहाँ भी खुलने वाला है .....''

-''तपन, तुम मेरा दिल तोड़ दिया है.....बुढ़ापे में मेरे साथ तुम विश्वासघात किया है.....आई विल नेवर स्पीक टु यू!'' और पिताजी ख़ामोश होकर बैडरूम में चले गए।

माँ बीच बीच में झगड़ा समाप्त करवाने की कोशिश करती रही और अब हार कर दोनों को उनके हाल पर छोड़कर किचेन में वापस चली गयी। तपन ने किचेन में जाकर माँ के पाओं छुए। माँ ने साड़ी के पल्लू से अपनी आँखों के किनारे सुखाये और कड़ाही में छौंक लगाने लगी। तपन के दिल्ली जाने तक पिताजी ने उससे एक बात भी नहीं की।

8

-“हाय !”

-“यस?”

-“माई नेम इज़ तपन सेन.....मुझे मिस्टर नॉरमन टोज़र से मिलना है।”

-“किस लिए?” रिसेप्शन पर बैठी लड़की ने अपनी टेलीफ़ोन डायरी में आँखें और ध्यान गड़ाए बेमन से पूछा।

-“ आई एम कॉल्ड फ़ॉर ए जॉब।”

-“गो इनसाइड टु योर लेफ्ट।” लड़की ने हाथ के इशारे से तपन की तरफ़ बग़ैर देखे कहा।

इस टी वी चैनल का ऑफ़िस दिल्ली के ग्रीनपार्क इलाक़े में एक कमर्शियल कॉम्प्लेक्स की दूसरी मंज़िल पर था। अंदर काफ़ी जगह थी, खुला खुला था लेकिन निहायत बेतरतीब और ऐसा जैसे अभी यहाँ फ़र्निशिंग नहीं करवाई गयी हो। अंदर की तरफ़ बाएं हाथ पर एक केबिन नुमा था जिसका दरवाज़ा खुला था और दीवार में बड़ी सी शीशा लगी खिड़की खुली थी जिसमें से हवा और रौशनी दोनों भरपूर आ रहे थे। एक मामूली कुर्सी पर अँगरेज़ (जो इंटरव्यू में था)- नॉरमन टोज़र-अपने कंधे झुकाये चश्मा चढ़ाये कागज़ों पर झुका हुआ कुछ लिख रहा था। उसके सामने मेज़ पर तमाम काग़ज़ और फ़ाइलें बेतरतीब बिखरे हुए थे जिनपर पेपर वेट की जगह तमाम सड़क से उठाये गए पत्थर रखे थे और ऊपर छत पर पंखा अपने पूरे ज़ोर से चल रहा था। नॉरमन गंजा था और अपने सर को बार बार अपने बाएं हाथ में संभाले एक तौलिया नुमा रुमाल से पोंछता जा रहा था। एक सिगरेट थी जो मेज़ पर ऐश ट्रे में रखी धुएं की लकीर हवा में छोड़ रही थी। नॉरमन ने बग़ैर कग़ज़ों पर से नज़र हटाए सिगरेट उठाकर एक लम्बा सा कश लिया और कुर्सी में पीछे होकर एक के ऊपर एक रखकर जूतों समेत अपनी दोनों टाँगें मेज़ पर रख दीं। वो इस अर्ध-लेटी

अवस्था में हुआ ही था कि तपन ने उसके केबिन के खुले दरवाज़े पर दस्तक दी।

-''मे आई कम इन सर?''

नॉरमन ने नज़र उठाकर दरवाज़े की तरफ़ देखा और फिर जैसे तपन को पहचान कर बड़ी गर्म जोशी से बोला, ''कम इन, कम इन.....!''

-''गुड आफ़्टर नून मिस्टर टोज़र!'' तपन ने ऑफ़र लेटर उसके सामने रखते हुए कहा, ''थैंक यू फ़ॉर दिस।''

-''गुड आफ़्टर नून.....सिट डाउन।'' नॉरमन ने अपनी अर्ध लेटी अवस्था को बरक़रार रखते हुए कहा।

इधर उधर की बातों के बाद नॉरमन ने तपन से कहा, ''देखो अभी हमारा ऑफ़िस तैयार हो रहा है.....ये टेम्पोरेरी इंतज़ाम है इसलिए एडजस्ट करो.....बैठने, काम करने की दिक्क़तें आयेंगीं लेकिन नथिंग आई कैन डू।'' फिर उसने तपन से अंदर जाकर ज्वाइन करने की औपचारिकताएं पूरी करने को कहा।

अंदर कुछ ख़ास था नहीं। लोग थे- कहीं भी बैठे हुए इधर उधर। एक बेतरतीब सा हॉल नुमा जिसमें कई मामूली सी मेज़ें और उनके इर्दगिर्द कुर्सियां-कुछ ख़ाली, कुछ पर लोग बैठे हुए। पूछने पर पता चला कि एक मोटी सी ख़ूबसूरत लड़की जो एक किनारे बैठी थी वह लीगल डिपार्टमेंट हैड थी और वही एच.आर. की ज़िम्मेदारियाँ भी निभा रही थी। उसका नाम शीतल वाधवा था। ज्वाइन उसी के पास करना था। तपन उसके पास जाकर खड़ा हुआ ही था कि शीतल ने मुस्कुरा कर कहा, ''यू मस्ट बी तपन सेन !''

-''यस! आई एम्!, हाउ डु यु नो?''

-''आज सिर्फ़ तुम ही हो जो ज्वाइन करने आने वाले हो।''

-''बाक़ी लोग?''

-''या तो कर चुके हैं या अगले हफ़्ते करेंगे.....हर एक की अपनी अपनी सुविधा है! एनीवे.....सिट डाउन.....हाउ वाज़ योर जर्नी?''

फिर बातों बातों में शीतल ने कहा, ''हमारे चैनल के बारे में पता नहीं किसी ने बताया या नहीं.....ये इंटरनेशनल टी वी चैनल है। इसमें चाइनीज, ब्रिटिश और जर्मन कम्पनियाँ पार्टनर हैं।''

पहले नॉर्मन ने और अब शीतल ने तपन को एकदम रिलैक्स कर दिया। उसे ऐसा नहीं लगा कि वह किसी बड़े इंटरनेशनल चैनल में आया है। उसे लगा कि जैसे ये लोग तो उसके हमेशा से दोस्त थे। फिर उसी दम उसे यह भी ख़्याल आया कि वो जिन चैनलों में बम्बई में होकर आया था और जैसा व्यवहार उनका था क्या

यह देशी और अंतराष्ट्रीय कल्चर का फर्क़ था !

-''अच्छा तपन, गो एंड मीट मिस्टर किशोर पुरी, ही इज़ डायरेक्टर ऑफ़ प्रोग्राम्स, तुम्हारा स्ट्रक्चर ये है कि डायरेक्टर ऑफ़ प्रोग्राम्स के अंडर में होंगे एग्ज़ीक्यूटिव प्रोडूसर्स जो कि कम्पनी में सिर्फ़ तीन हैं, उनके अंडर में प्रोडूसर्स फिर डायरेक्टर्स, अस्सिटेंट डायरेक्टर्स एंड देन रेसर्चर्स। यू आर ए रिसर्चर, राइट?!''

-''या।''

-''गो एंड से हेलो टु मिस्टर पुरी। सामने जा के लेफ़्ट...जहाँ नॉर्मन का केबिन है न....उसके डाइगोनेली अपोज़िट!.....हे, तपन!.....गुड लक एंड हैप्पी जॉइनिंग! वी विल मेक ए ग्रेट टीम! कुछ भी पूछना हो, कहना हो बेहिचक चले आना, एनी टाइम! ओके !?''

किशोर पुरी के केबिन का दरवाजा बंद था। तपन ने दस्तक दी। अंदर से एक एग्ज़ीक्यूटिव नुमा लड़के ने बड़ी मुस्तैदी से दो इंच दरवाज़ा खोलकर भृकुटि चढ़ाये झाँका, ''यस?''

-''माई नेम इज़ तपनसेन.....मुझे मिस्टर पुरी से मिलना है ।'' लड़के ने बग़ैर कुछ कहे सर अंदर मोड़ा और बुदबुदाया-'सम सेन गाए'। फिर वापस दरवाज़े की दो इंच दरार से तपन से मुख़ातिब होकर बोला, ''कम बैक इन टेन मिनट्स'' और उसने दरवाजा बंद कर दिया।

दस मिनट तक करने को कुछ था नहीं। तपन इधर उधर देखता रहा और दो फुट की उस दरवाजे के सामने वाली जगह में इधर उधर क़दम उठाता रखता रहा। केबिन के सामने खड़े खड़े दस मिनट उसे भारी लगने लगे। दस मिनट से पंद्रह हो गए और फिर बीस। तपन बोर हो गया। उसने सोचा कहीं जाकर बैठ जाये या पुरी से मिलने का इरादा कल तक के लिए मुल्तवी कर दे.....आख़िरकार नौकरी तो कर ही ली है न, अब तो रोज़ आना होगा तो आज ही क्यों झखमारी की जाये! तभी दरवाजा खुला और वो एग्ज़ीक्यूटिव नुमा लड़का बाहर निकला।

-''आपको मिस्टर पुरी से क्यों मिलना है?''

-''मैं यहाँ जॉब कर रहा हूँ और मिस शीतल ने मुझे उनसे मिलने के लिए कहा है ।''

-''आई सी.....व्हाट जॉब आर यु टेकिंग?''

-''रिसर्चर।''

-''वन मिनट!'' लड़का अंदर गया, दरवाज़ा बंद करके उसने कुछ बात की और फिर वापस बाहर आकर तपन से बोला, ''गो इन बट बी शॉर्ट।''

किशोर पुरी कभी बी.बी.सी. अंग्रेजी न्यूज़ में रह चुके थे। लन्दन में पले बढे तो जाहिर है वहीं काम भी करते। अंग्रेज़ी लिटरेचर और पत्रकारिता पढ़े थे तो बी.बी.सी. ही स्वाभाविक था। लेकिन जैसे विलायत में रह रहे हिन्दुस्तानियों में अक्सर जो 'बू' देखने को मिलती है वो इनमें कूट कूटकर भरी थी। हिंदुस्तान ये इसलिए आ गए थे क्योंकि दिल्ली के एक बड़े अख़बार के मालिक ने इन्हें मोटी तनख़्वाह देकर अपने यहाँ नौकरी ऑफ़र कर दी। दूसरी वजह ये थी कि लंदन में इनकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी और इनका वहां अब कोई था नहीं जबकि दिल्ली में इनका पुश्तैनी मकान था जिसमे इनकी माँ रहती थीं। वैसे भी हिंदुस्तान में नौकर-चाकर और ऐश ओ आराम वाली ज़िन्दगी विलायत में कहाँ! ख़ानदान बेतरह पैसे वाला, रईसाना और बेतरह 'वेस्टर्न' था। जिस अख़बार में ये थे वो ज़माने के बदलाव को देखते हुए एक टी.वी चैनल ला रहा था इसलिए और इसलिए भी कि चैनल ब्रिटिश पार्टनर शिप में था इनको डाइरेक्टर ऑफ़ प्रोग्राम्स का ओहदा देना मालिकों ने नेचुरल समझा।

मिस्टर पुरी के केबिन में ज़मीन कार्पेट से ढकी हुई थी। खिड़की एक थी लेकिन वह बंद थी और उस पर बड़े मोटे मोटे पर्दे पड़े हुए थे। रौशनी मद्दम थी। दो बहुत ख़ूबसूरत कुर्सियां मेज़ के सामने और एक किनारे पर एक छोटा सा सोफ़ा और एक तिपाई रखी थी। पुरी की मेज़ पर एक तरफ़ क़रीने से कुछ फ़ाइलें रखी हुई थीं। टेबल पर लैंप जल रहा था। पुरी एक पीछे झुक सकने वाली कुर्सी पर पीठ टिकाये कूल्हे धंसाए बैठा दोनों हाथों की उँगलियों को जोड़े तर्जनी से तर्जनी बजा रहा था।

जब तपन अंदर दाख़िल हुआ तब पुरी की नज़र सीधे दरवाज़े पर और अंदर घुसते तपन पर गड़ी थी।

-''तपन सेन! आओ मेरे दोस्त!.....ज्वाइन कर लिया''

-''गुड आफ़्टर नून सर!.....यस सर, ज्वाइन कर लिया।''

-''गुड आफ़्टर नून! आई लाईक्ड यू इन दी इंटरव्यू.....यु हैव कॉन्फ़िडेंस! लेकिन तुम तो बॉम्बे में किसी फ़ैक्ट्री में काम करते हो?''

-''वो छोड़ दूंगा।''

-''सो यु हैव टु गो बैक!''

-''दो दिन के लिए.....रिज़ाइन करने तो जाना पड़ेगा।''

-''दो दिन तो नहीं होगा.....कम से कम एक हफ़्ता लगेगा। बट दैट्स ऑलराइट.....योर एग्ज़ीक्यूटिव प्रोड्यूसर समीर सक्सेना इज़ ऑल्सो जॉइनिंग नेक्स्ट

वीक। काम उसके बाद ही शुरू होगा.....सो इट्स ऑलराइट।.....नॉर्मन से मिले?''

-''जी सर!''

-''ही इज़ ए बोर बट ए नाइस गाय.....हंहंहं!.....तुम ठहरे कहाँ हो?''

-''अभी तो पहाड़ गँज के एक होटल में कमरा लिया है लेकिन मैं ऑफ़िस के आसपास कुछ ढूंढ लूँगा।

-''गुड! ओके देन.....आल दि बेस्ट! सी यू अराउंड!'' पुरी ने हाथ बढ़ा दिया, ''बाई बाई तपन!''

किशोर पुरी की केबन से निकलकर तपन थोड़ा कन्फ़्यूज़्ड़ हो गया और क्योंकि अपना कन्फ्यूज़न दूर करने के लिए वह यहाँ किसी को जनता नहीं था इसलिए वह वापस शीतल वाधवा के पास गया।

-''मिल लिए?''

-''मिल तो लिया.....बट आई वांट टु नो समथिंग,.....मेरे पास ऑफ़र लेटर मिस्टर नॉर्मन ने साइन करके भेजा था। वह इंग्लॅण्ड से आये हैं, चैनल के क्रियेटिव कंसल्टैंट हैं लेकिन देखता हूँ वे एक बहुत मामूली सी केबन में एक बहुत मामूली तरह बैठे हैं और मिस्टर पुरी का क्या आलीशान केबिन है । तो इन दोनों में सीनियर कौन है? मुझे किसको रिपोर्ट करना है?''

-''हंहंहंहं.....'' शीतल हंसी, ''ओ, डोंट वरी अबाउट आल दिस.....मिस्टर पुरी इज़ डाइरेक्टर ऑफ़ प्रोग्राम्स और नॉर्मन इज़ कंसल्टैंट।

एक्चुअली नॉर्मन का ओहदा ज़्यादा है लेकिन वह किसी भी तरह के आडम्बर में नहीं पड़ता। उसे बंद केबिन पसंद नहीं हैं, उसे ए. सी. भी पसंद नहीं है.....वह कहता है कि अगर सबके साथ काम करना है तो सबके लिए हमेशा ओपन और एक्सेसेबल रहना चाहिए। वो बिलकुल ब्यूरोक्रेटिक नहीं है। उसने कंपनी से गाड़ी तक नहीं ली है.....वो टैक्सी ही लेता है और रास्ते भर टैक्सी वालों से ख़ूब बतियाता है।''

-''लेकिन मिस्टर पुरी तो.....''

-''आदत है अपनी अपनी.....कोई रिज़र्वड स्वाभाव का होता है कोई नहीं होता। डोंट वरी.....प्रोगरामिंग की सारी क्रियेटिव बातें सीखने-बताने की सारी ज़िम्मेदारियाँ नॉर्मन की हैं लेकिन रिपोर्ट तुम्हें अपने एग्ज़ीक्यूटिव प्रोड्यूसर समीर सक्सेना को करना होगा। ही इज़ जॉयनिंग नेक्स्ट वीक। ओके!''

-''आई सी.....अच्छा मिस वाधवा.....''

-''शीतल.....कॉल मी शीतल! साथ में काम कर रहे हैं तो लैट्स बी ऑन

फर्स्ट नेम बेसिस ! बोलो''

-''ज्वाइन तो कर लिया लेकिन वापस जाकर, जहाँ मैं काम करता हूँ वहां, रेज़िग्नेशन की फ़ॉर्मलिटीज़,..... ''

-''मिस्टर पुरी को बता दिया?''

-''हाँ।''

-''ठीक है, कब जाओगे और कब आओगे वह मुझे बता दो। नेक्स्ट वीक मंडे से पहले आ सको तो अच्छा है क्योंकि तब तक समीर इज़ जॉयनिंग।''

-''आ जाऊँगा।''

-''वो जो उधर बैठे लोग देख रहे हो.....उस मेज़ पर.....वोकुर्सी पर पाओं धरे. ....वो दूसरा रिसर्चर है और जो उससे बात कर रहा है वो एंटरटेनमेंट प्रोग्राम का प्रोड्यूसर है। जाओ जाकर दोस्ती करो, बात करो।''

यह चौबीस घंटे वाला चैनल था- बीबीसी की तर्ज़ पर। इसमें टी वी सीरियलों का स्लॉट था, अंग्रेज़ी और हिंदी समाचारों का स्लॉट था- जिसके लिए बीबीसी से कोलैबोरेशन की बात चल रही थी। नाच गाने के प्रोग्राम का स्लॉट था जिसके लिए चीनी चैनल से कोलैबोरेशन की बात चल रही थी। पार्टनशिप जर्मनी, चीन और इंग्लेंड की भले ही हो लेकिन क्रिएटिव कंसलटेंट एक ही था- नॉर्मन टोज़र। नॉर्मन ने प्रोगरामिंग में सारी ज़िन्दगी लगाई थी। उसने शुरुआत थेम्स टी.वी से की थी जहां वह मुद्दतों 'लंडन वीकेंड' प्रोग्राम का इंचार्ज रहा। वहां से उसे एनबीसी ने बुला लिया, वहां तीन साल नाम कमाने के बाद उसे बीबीसी ने एंटरटेनमेंट प्रोग्राम इंचार्ज बना कर रख लिया। वहां जब उसका कॉन्ट्रैक्ट समाप्त हुआ तब ये चैनल शुरू होने की बात आयी और उसका तजुर्बा देखते हुए उसे यहाँ बुला लिया गया। नॉर्मन सदैव से 'ब्रिटिश राज' की किताबों का शौक़ीन रहा और यह भी एक वजह थी कि वह भारत आना चाहता था। यहाँ आकर वह हर वीकेंड कहीं न कहीं भ्रमण के लिए चला जाता था। तन ख़्वाह उसे लंडन के हिसाब से पाउंड्स में मिलती थी। बच्चे उसके कोई थे नहीं। पत्नी उसकी ज़्यादतर इंग्लॅण्ड में रहती थी- कभी कभी भारत आ जाती थी। इसलिए नॉर्मन अकेला था और हमेशा अपने आपको काम में समोए रखता था।

-''हाय! आई एम तपन सेन! जॉयनिंग टुडे! '' तपन ने जाकर मेज़ पर पसरे लड़के से हाथ बढ़ाकर कहा।

-''हाय! आई एम पुनीत! रिसर्चर! एंड ये हैं शब्बीर अंसारी.....प्रोड्यूसर एंटरटेनमेंट।''

हाथ मिले। मुस्कुराहटें फैलीं। बातें शुरू हुईं।

-''एंटरटेनमेंट में तो मैं भी हूँ !'' तपन ने कहा।

-''नई नई.....एंटरटेनमेंट मतलब टी वी सीरियल्स.....हम लोग डेली सॉन्ग एंड डांस के एक घंटे वाले प्रोग्राम में हैं..... है एंटरटेनमेंट ही लेकिन इसका डिपार्टमेंट अलग है ।'' पुनीत ने समझाया।

-''सीरियल्स सिलैक्ट कर लिए आपने?'' तपन ने पूछा।

-''मैं चाहता हूँ हमारे चैनल के सीरियल्स इंटेलीजेंट हों.....औरों जैसे नहीं.. ...बेहूदा बे सिर पैर के।''

-''अभी तो पूरी तरह दूसरे चैनल्स शुरू भी नहीं हुए हैं।''

-''हां अभी तो जो चार चैनलों की बात है वे भी पूरी तरह कहाँ आए हैं... ..और दिखा तो वे ज़्यादातर वो ही भंगार अमेरिकन सीरियल्स रहे हैं.....मैं चाहता हूँ हमारी चैनल के सीरियल्स एंटरटेनिंग हों और आउटस्टैंडिंग हों।''

-''अच्छा एक तीसरा डिपार्ट मेंट भी तो है आपने यहाँ?''

-''हाँ वो है न्यूज़! एक्सक्लूसिव! उसका अलग डिपार्टमेंट है– ई पी है, प्रोड्यूसर है, डाइरेक्टर है और उसका सब कुछ डाइरेक्टली मिस्टर पुरी के अंडर में है।''

-''है तो सब प्रोग्रामिंग मिस्टर पुरी के अंडर में।''

-''वो तो है पर न्यूज पर उनका ज़्यादा फ़ोकस है ।''

-''चाय वाय पिया?'' पुनीत ने पूछा।

-''कहाँ पीते हैं?''

-''वहां टी कॉफ़ी मशीन है .....शब्बीर जी ! आप चाय लेंगे?''

शब्बीर ने सर हिला दिया।

-''चलो अपन चलते हैं।'' पुनीत ने कहा और वह तपन को लेकर कॉरिडोर में लगी कॉफ़ी मशीन की तरफ़ हो लिया।

-''मिस्टर पुरी से मिले?'' पुनीत ने चाय का कप मशीन में लगाते हुए पूछा।

-''हाँ !.....टेल मी ये मिस्टर पुरी का स्टेटस नॉर्मन से ज़्यादा है .....है न? .....ही इज़ बिगर.....''

-''एक्चुअली बिगर तो नॉर्मन है .....ही इज़ क्रिएटिव कंसल्टेंट लेकिन मिस्टर पुरी डाइरेक्टर ऑफ़ प्रोग्राम्स हैं.....वो लन्दन से आए हैं, उनका अपना स्टाइल है। नॉर्मन इज़ ए डार्लिंग.....कभी भी जाओ, कुछ भी डिसकस करो! और क्या तजुर्बा है उसका-माइंडब्लोइंग!'' पुनीत ने तपन को चाय का कप पकड़ाते हुए कहा, ''अपने असल बॉस ने तो अभी तक ज्वाइन ही नहीं किया-समीर सक्सेना।.....तुम तो बम्बई

से हो.....तुम जानते हो उसे?''

-''मैं?...नहीं मैं कैसे जानूंगा उसे?''

-''क्यों बॉम्बे में भी तो एक दो चैनल खुल गए हैं, उनके ऑफ़िसेस में नहीं गए?''

-''गया था जब चैनल शुरू नहीं हुए थे.....बट आई मस्ट से वहां जो तजुर्बा मुझे हुआ उससे मैं यहाँ आते डर रहा था। क्या तड़ी है यार वहां के लोगों में! सीधे बात ही नहीं करते। यहाँ तो एवरीबॉडी इज़ सो नाइस। इट्स सो कम्फर्टेबल हियर।''

अभी तो अपॉइंटमेंट्स हो रहे हैं.....सभी नए हैं.....सभी दोस्ताना हैं। मुझे तो जाने कैसे ये नौकरी मिल गयी,.....इंटरव्यू में भी मैं आधे मन से आया था लेकिन दिस गाय नॉर्मन.....इसने मुझे प्रोग्राम की तमाम जानकारी दी, मेरा हौसला बढ़ाया और कहा जल्दी नहीं करो अच्छी तरह सोच लो और तब अगर चाहो तो ज्वाइन करो नहीं तो नहीं। मेरा तो गाने नाचने से कोई सम्बन्ध ही नहीं था। मैंने तो फ़ैशन डिज़ाइनिंग किया था लेकिन इस पट्ठे ने मुझे रैंप वाक और मॉडल शूट्स, फ़ैब्रिक डिज़ाइन, इवेंट आर्गेनाइज़ेशन का जो कनेक्शन इस प्रोग्राम के साथ बताया.....आई गॉट एक्साइटेड। चलो चल के बैठते हैं।.....तुम डांस करते हो?''

-''हाँ लेकिन शौक़िया.....नौकरी के हिसाब से मैं इंजीनियर हूँ।''

-''इंजीनियर! हाउ नाइस ! माई ब्रदर इज़ ऑल्सो एन इंजीनियर।''

-''और ये शब्बीर कहाँ से है ?''

-''एन एस डी! रिपर्टरी में था। सेंसिबल आदमी है, पढ़ा लिखा है और अच्छा काम करने का इरादा रखता है। लेकिन जो भी सीरियल प्रोडूसर्स आ रहे हैं ज़्यादातर बेकार-वो ही इंडस्ट्रियल फ़्यूड, वही जलन-कुढ़न वो ही फ़िल्मी कहानियों को तोड़ मरोड़ कर आधे घंटे में घुसेड़ने की कोशिश! शब्बीर ने कुछ प्रोडूसर्स को कुछ आइडिआज़ तो दिए हैं देखो वो क्या बना के लाते हैं।''

-''सीरियल आने शुरू हो गए?''

-''मार्किट में हमारी खबर काफ़ी पहले से है। तकरीबन सब अपॉइंटमेंट्स हो चुके हैं। प्रोग्राम का बैंक बन जाये तो चैनल लाँच कर दिया जाये।''

-''लाँच कब होगा?''

-''जैसे ही प्रोग्राम्स रेडी हो जाएँ,....., कम से कम तीस दिन का टेलीकास्ट तो हाथ में होना चाहिए न.....''

-''मैं सोचता हूँ कल वापस जाकर रिज़ाइन करके आ जाऊं। टिकट मिल जायेगा यहाँ से?''

-''सब मिल जायेगा यार.....पचास रूपए एजेंट को देना वो सब करवा देगा।''

पश्चिम एक्सप्रेस के सेकंड क्लास स्लीपर से तपन जब बॉम्बे सेंट्रल स्टेशन उतरा तब उसका शरीर टूट रहा था। चौबीस घंटे भीड़ भाड़ और टॉयलेट के खुले दरवाज़े से भभका मारती बदबू ने उस में चिड़चिड़ाहट भर दी थी। अब यहां से उसे कांजुर मार्ग की लोकल पकड़ना भी दुश्वार लग रहा था। घर जाने के नाम से उसके पैर भारी हो रहे थे। वही पितजी की ख़ामोश और आग उगलती आँखें, वही लोहा काटने वाली फ़ैक्ट्री में जाकर सर खपाना। पता नहीं रिज़ाइन करने दें या नहीं.... वो तो वर्कर्स के प्रोग्राम वाले दिन से एक दिन पहले ही निकल लिया था न....क्या पता वर्कर्स उससे नाराज़ हों और बट साहेब तो सदैव वर्कर्स की ही तरफ़दारी करेंगे। ''नहीं करने देंगे तो न करने दें रिज़ाइन'' उसने सोचा, ''भाग जाऊं.....न जाऊं काम पर तो क्या कर लेंगे?'' इन्हीं ख़्यालों में डूबते उतराते उसने कांजुर मार्ग का टिकट ख़रीदा और परेल पर लोकल बदलकर घर आया।

-''आ गया!'' माँ ने प्यार से मुस्कुराकर दरवाज़ा खोला। तपन ने पाओं छुए और फिर माँ के गले लग गया।

-''कैसा रहा?''

-''भालो.....खूब भालो! मैं बता नहीं सकता कितने अच्छे लोग हैं वहां।'' तपन माँ को छोड़कर कुर्सी पर बैठा।

-''अब आ गया कि वापस जाना है?''

-''वापस तो जाना है....ऑफ़िस तो वहीं है .....लेकिन बाद में ऑफ़िस इधर होने वाला है .....बेशी दिन नाइ।''

-''चा खाबो?''

-''दाओ।''

दूसरे दिन तपन जी. के. डब्ल्यू. फ़ैक्ट्री में गया।

-''तपन दादा !'' पीछे से फ़ैक्ट्री का एक वर्कर चिल्लाया, ''किदर हैय तुम?. ....तुम प्रोग्राम से पहले चला गया.....बीमार था क्या?''

-''पहले था.....अब अच्छा हो गया '' तपन ने मुड़कर मुस्कुराते हुए कहा। इसका निहित मतलब वर्कर समझा नहीं। बोला, ''अभी ठीक हैय न !.....काय झाला

होता?'' तपन कोई जवाब दिए बग़ैर वर्कर की पीठ पर हाथ थपथपा कर एडमिन बिल्डिंग में घुस गया। अंदर सीधे जाकर दाहिनी तरफ़ कोने में बट साहेब का केबिन था। दरवाज़ा खटखटा कर तपन 'कमइन' की आवाज आने से पहले ही अंदर चला गया। ए.सी. की ठंडक और सिगरेट के धुंए से भरे माहौल में बट साहेब किसी के साथ मीटिंग में थे। तपन को देखकर उनकी त्योरियां चढ़ गयीं लेकिन उन्होंने अपनी नाराज़गी ज़ाहिर नहीं होने दी।

-''कहाँ हो भाई? बग़ैर कुछ कहे सुने चले गए.....यू नो यू आर ऑन टेम्पोरेरी बेसिस हियर.....''

-''आई हैव कम टु रिज़ाइन।'' तपन ने बट साहेब की बात काटते हुए कहा।

-''व्हाट?'' बटसाहेब की उँगलियों में फँसी सिगरेट खाल जलाने लगी। उन्होंने उसे फ़ौरन झटका देकर ऐश ट्रे में तक़रीबन फेक दिया। ''व्हाट?..... रिज़ाइन?.....तो उसका भी प्रोसेस होता है। ये क्या बेहूदगी है कि ग़ायब हो गए और फिर अचानक प्रकट हो गए और कहा कि आई हैव कम टु रिज़ाइन।'' बट का ग़ुस्सा उनकी आवाज़ से झलकने लगा।

-''सर आप प्रोसेस बताइये मैं कर दूंगा बट आई हैव टुगो टु डेल्ही टुमॉरो।''

-''तो लौट के आओ तब करो।''

-''नो...नो...आई मीन.....मैं हमेशा के लिए कल दिल्ली जा रहा हूँ.....मैं आज अपने सारे ड्यूज़ क्लियर करना चाहता हूँ।''

बट साहेब जिसके साथ मीटिंग में थे उससे उन्होने मीटिंग मुल्तवी करने को कहा और उसे बाहर भेज दिया। तपन को बैठाकर तफ़्सील से बात की। तय यह हुआ कि कितनी भी जल्दी किया जाये रेज़िग्नेशन की प्रक्रिया में कम से कम दो तीन दिन तो लगेंगे और उसके बाद भी जो रक़म तपन को तनख़्वाह के तहत मिलनी है वह बाद में उसके घर पर पोस्ट कर दी जाएगी। जब तपन ने बट को बताया कि वह इंजीनियरिंग छोड़कर टी.वी. चैनल ज्वाइन करने जा रहा है तो बट साहेब ने कुर्सी से उठकर तपन को गले लगा लिया।

-''यू नो तुम्हारी हिम्मत की मैं दाद देता हूँ!.....मुझे मार्केटिंग एच. आर. कुछ भी कभी पसंद नहीं था लेकिन मेरे पिताजी ने मुझे ज़बरदस्ती यह सब करने के लिए प्रेरित किया और बाध्य भी किया,.....मैं लाइफ़ में कैमिस्ट्री का प्रोफ़ेसर बनना चाहता था। काश, मैंने भी तुम्हारी तरह जो चाहता था वो किया होता तो आज मैं बहुत संतुष्ट और ख़ुश होता। लेकिन मैं अपने पिता की इकलौती औलाद था और बुढ़ापे में उन्हें दुःख नहीं पहुँचाना चाहता था।'' बट ने सर एक तरफ़ को ऐसे झटका

जैसे आँखें छुपा रहे हों फिर पांच सेकंड बाद तपन से बोले, ''गॉड ब्लैस यू माय फ्रेंड!. ....एक्चुअली यू आर लाइक माय सन एंड आई विश यू आल दी बेस्ट।''

-''थैंक यू सर !''

-''तुम ऐसा करो.....शिंदे के साथ बैठ जाओ और सारी फ़ॉर्मलिटीज़ पूरी कर लो, फिर मैं देख लूँगा। ओ के!''

-''थैंक यू सर।''

-'' और हाँ.....! मैं यूनियन लीडर शिवाजी से कह दूंगा कि तुम जा रहे हो। वर्कर्स शायद तुम्हें फेयरवेल देना चाहें। तुमने उनके लिए एक अच्छा प्रोग्राम जो किया है ।''

फ़ैक्ट्री में मिलने मिलाने और दो चार फ़ॉर्मलिटीज में दो दिन यूँ ही गुज़र गए। दूसरे दिन दोपहर में सेकंड शिफ़्ट के बाद वर्कर्स यूनियन ने बड़ी गर्म जोशी से फ़ेयरवेल दिया-चाय, वेफर्स, भजिये और एक एक छोटा टुकड़ा नारियल बर्फी। यूनियन लीडर शिवाजी साटम ने तपन को गले लगाकर उसे सालाना प्रोग्राम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया। आख़िर में तपन ने शिंदे से बाई बाई की और बट साहेब से हाथ जोड़कर नमस्कार किया, आज्ञा मांगी।

घर में दो दिन बहुत अजीब से रहे। पिताजी ने तो तपन से उसी दिन से बात चीत बंद कर दी थी जिस दिन से उन्होंने टी.वी. चैनल का ऑफ़र लैटर देखा था- वो ख़ामोशी अब भी जारी थी। माँ से बातचीत होती थी लेकिन माँ भी समय और मौक़ा देखकर बात करती थी और यदा कदा समझाती थी कि लगी बंधी नौकरी छोड़ना और इस उम्र में कोई नई लाईन पकड़ना कौन सी अक्लमंदी है। छोटा भाई था वो अपने दोस्तों में रमा रहता था और हुलसहुलस कर शान से कहता फिरता था की 'मेरा भाई टी.वी. में है।' माधुरी के परिवार वालों को जब से पता चला था वे बार बार यह कह रहे थे कि टी.वी. में जाने से पहले तपन और माधुरी की शादी कर दी जाये- शायद उन्हें तपन सही लड़का लगा हो और यह भी लगा हो की शायद टी.वी. में जाकर उसकी जान पहचान तमाम लड़कियों से होगी और वह कहीं उनमे से किसी से आँख न लड़ा बैठे। यह डर दरअसल तपन के पिता को भी था। उन्होंने ख़ुद तो नहीं लेकिन अपनी पत्नी के ज़रिये तपन से कहलवाया भी था- 'दिल्ली जा रहा है, घर से दूर जाकर अकेला हो जायेगा। फिर टी.वी. में सिनेमा में तो लड़कियां बहुत मिलती हैं.....शादी वादी मत कर लाना' । हालाँकि यह सब आम बातें हैं जो आम घरों/लोगों में आमतौर पर होती रहती हैं लेकिन ये तपन को बहुत चिड़चिड़ाती

थीं। वैसे ही जैसे की जहाँ चोट लगी हो वहां मामूली सी हवा भी दुखाती है।

बम्बई से दिल्ली का टिकट मिलना कभी भी आसान नहीं रहा इस बार कैसे होता ! लेकिन जिस बात का तोड़ किसी के पास न हो उसका इलाज 'दलाल' नाम के पंछी के पास अवश्य होता है और क्योंकि जैसे अक्सर बहुत से हिंदी शब्दों को 'डाउन मार्केट' समझा जाता है और उनके अंग्रेज़ी तर्जुमों को 'इज़्ज़तदार' इसलिए इस धंधे को एजेंट कहा जाता है।

-''जितने का टिकट है उतना ही आपका कमीशन?'' तपन ने पूछा।

-''गाडी में जागा नई है। लेना है तो लो नई तो रास्ता नापो।''

बॉम्बे सेन्ट्रल स्टेशन के मेन दरवाज़े के नीचे खड़े 'एजेंट' ने दबी आवाज़ में कहा और वह चला जाने लगा।

-''ठहरो.....ठहरो.....लाओ।.....सफ़र में तो कोई राड़ा नई होयेगा न?''

-''होयेगा तो मैं बैठा है न !''

-''तुम तो यहां बैठा है .....राड़ा हुआ तो ट्रेन में होयेगा न।''

-''टीसी कुछ बोले तो बोलना टिकट शेरूभाई से लियेला है ।.....जाओ जाओ. ...दस मिनट में ट्रेन छूटता है।''

रास्ता लम्बा था- चौबीस घंटे का। रास्ते में टीसी ने टिकट देखा फिर तपन का चेहरा देखा और बग़ैर कुछ पूछे अपने कागज़ों पर सही का निशान लगाकर आगे बढ़ गया। तपन जब दिल्ली पहुंचा तो सोमवार था और रात हो चुकी थी।

दूसरे दिन-मंगलवार को-जब वह ऑफ़िस पहुंचा तब तक समीर सक्सेना ज्वाइन कर चुका था और उसके साथ ज्वाइन कर चुके थे तीन डाइरेक्टर्स और असिस्टेंट डाइरेक्टर्स। टीमें पूरी बन चुकी थीं। अब सिर्फ़ काम ठीक ठीक समझ कर शुरू कर देना था। तीन की तीन टीमें नॉर्मन के साथ बैठकर प्रोग्राम की बारीकियां समझती रहीं। चार दिनों बाद दिल्ली के एक स्टूडियो में डांस के लिए सेट लगाया गया। नॉर्मन जाकर ग्रुप से डांस तैयार करने के लिए बात कर आया और दूसरे दिन जब ऑफ़िस आया तब उसके हाथ में एक टेप था जो उसने पूरी टीम को बुलाकर सुनाया।

-''दिस इज़ दी सिग्नेचर ट्यून ऑफ़ दी प्रोग्राम।'' नॉर्मन ने टेप सुनाकर कहा।

-''आपने रिकॉर्ड भी कर ली!'' समीर से रहा नहीं गया।

-''वैल.....मै था उस स्टूडियो में.....डांस नम्बर फ़िक्स करने गया था। वहां म्यूज़िक डाइरेक्टर था जो मुझे पसंद आया.....मैने उसके साथ ये ट्यून रिकॉर्ड कर ली।''

-''मै कल ही सिग्नेचर ट्यून के बारे में मिस्टर पुरी से बात कर रहा था.....'' समीर ने कहा।

-''पुरी इज़ एन इडियट.....ही हैज़ नो आईडिया ऑफ़ प्रोग्रामिंग। उसे क्या आता है .....नक़्शेबाज़ी, शो बाज़ी, अफ़सरी.....बस! बी. बी. सी. का नाम भर लेने से क्या होता है! ऐसे वहां कितने घूमते हैं.....एनी वे.....'' फिर नॉर्मन ने अपना सर रुमाल से साफ़ करते हुए कहा, ''अच्छा समीर यु आर दी एग्ज़ीक्यूटिव प्रोड्यूसर. ....हैड ऑफ़ दिस यूनिट-पहला प्रोग्राम तुम्हें रिकॉर्ड करना है। टाइटिल जिंगल मैं ले आया हूँ। डांस ग्रुप वाले दोपहर तक आते होंगे उनका डांस देख लो और सेट और शॉट्स प्लान कर लो। दो दिन बाद सेट लग जायेगा। तीसरे दिन दस से पांच की शिफ़्ट में रिकॉर्ड कर लो।''

-''एक एपिसोड?''

-''हाँ! पहले एक ही क्योंकि ये हम लोग स्पॉसर्स को दिखाएंगे और जब कोई स्पॉसर मिल जायेगा तब पूरे फोर्स से प्रोग्राम बैंक बना लेंगे।''

-''चैनल कब शुरू होना है ?''

-''वो डेट भी तय हो जाएगी। तुम लोग प्रोग्राम पर कंसन्ट्रेट करो।''

-''स्क्रिप्ट तो करना पड़ेगी।'' समीर ने कहा।

-''ऑफ़ कोर्स करना पड़ेगी'' नॉर्मन ने सिगरेट का लम्बा सा कश लेकर धुआं छोड़ते हुए कहा, ''एंकर मैंने तय किया है - रोशन! ही इज़ ए थिएटर गाए। एक्टिंग जानता है, डिक्शन जानता है.....''

-''वो तो सर'' पुनीत ने बीच मे काटा, ''अंग्रेज़ी थिएटर वाला है। अपना प्रोग्राम तो हिंदी में है। मैं तो दिल्ली का हूँ मैं जनता हूँ उसे।''

-''व्हाट्स दी डिफ़रेंस?'' नॉर्मन ने पुनीत की तरफ़ घूरकर कर कहा, ''व्हाट्स दी डिफरेंस?.....है तो इंडियन, अंग्रेज़ी जानता है, हिंदी भी जानता है। अगर एक भाषा में उसका डिक्शन ठीक है तो दूसरे में भी ठीक ही होगा। एनी वे...हिंदी में तो मैं बात करता नहीं इसलिए वो तुम लोग उससे मिलकर देख लो। आई एम श्योर ही इज़ राइट एंकर।''

-''तो सुब कुछ तो आप तय कर ही चुके हैं.....स्क्रिप्ट भी बना दीजिये,'' समीर की आवाज़ में झुंझलाहट नहीं तो एक कसैला पन ज़रूर था।

-''वैल, सब कुछ नहीं.....बट मे बी ऑल मोस्ट सब कुछ ! देखो, एक घंटे का प्रोग्राम है, पांच सेग्मेंट्स हैं, चार ब्रेक्स हैं। हर सेगमेंट के शुरू में और अंत में एंकर है । इन पांच सेग्मेंट्स में एक इंटरव्यू सेगमेंट है जो एंकर करेगा इसलिए प्लान

करने के हैं सिर्फ चार। एक डांस, एक मिमिक्री और कॉमेडी, एक कोरेओग्राफ़्ड डांस। इंटरव्यू मैंने बता ही दिया। पांचवां सेगमेंट है बॉलीवुड स्टाइल डांस ऑन ए पॉपुलर सॉन्ग।''

मीटिंग लम्बी चली। उस टीम के सारे डाइरेक्टर्स, असिस्टेंट्स, रिर्सचर्स और समीर नॉर्मन के साथ डिस्कशन में थे। ऑफ़िस की हॉल नुमा जगह सिगरेट के धुंए और चाय कॉफ़ी वाले काग़ज के कपों से भर गयी थी। रात के आठ बज गए।

-''ओ के देन ! गुड नाईट !'' नॉर्मन ने मीटिंग समाप्ति का एलान करते हुए कहा।

-''गुड नाईट सर!'' तक़रीबन सब ने एक साथ कहा।

-''वैसे,'' समीर ने मुड़कर सबसे कहा, ''अपना काम अब शुरू होता है इसलिए जिसको जो खाना हो आर्डर कर दो और चलो काम शुरू किया जाये।''

तपन और पुनीत को कॉमेडियन तलाश करने और डांस सेलेब्रिटी-जिसका इंटरव्यू किया जा सके-तय करने की ज़िम्मेदारियां दी गयीं। समीर ने स्क्रिप्ट करने का जिम्मा लिया और डायरेक्टर्स ने सेट वालों से डिज़ाइन डिसकस करने और कैमेरा प्लेसमेंट की जिम्मेदारियाँ लीं। असिस्टेंट्स को तो हर काम में असिस्ट करना था। दूसरे दिन रोशन से मीटिंग की गयी। उसके कपड़े तय किये गए। शब्बीर से पूछकर एन. एस. डी. के ही एक पुराने एक्टर को स्टैंड-अप कॉमेडी के लिए तय किया गया। कॉमेडी की स्क्रिप्ट उसने कहा वह ख़ुद लाएगा। सेलेब्रिटी इंटरव्यू के लिए रिकॉर्डिंग से एक शाम पहले तक कोई नाम तय नहीं हो पाया। बड़ी जद्दो जहद रही, सब बड़े तनाव में रहे। रात के आठ बजे तक जब कुछ फ़ाइनल नहीं हुआ तब सोचा गया कि इंटरव्यू वाला सेगमेंट फिलहाल छोड़ दिया जाये और आगे किसी और दिन शूट करके प्रोग्राम में डालकर इसे पूरा कर दिया जाये। रात नौ तक जब सारी टीम ने मीटिंग बर्ख़ास्त की ताकि जाकर एक रात अच्छी तरह सोएं और 'कल' रिकॉर्डिंग के लिए 'फ्रेश' रहें- ऑफ़िस में फ़ोन बजा। उस वक़्त सिर्फ़ यही टीम वहां थी और वह भी जाने को तैयार थी। पहले सोचा गया कि छोड़ो फ़ोन कौन उठाये। फिर तपन ने दौड़कर फ़ोन उठा लिया। जब तपन ने फ़ोन पर 'यस सर, गुड़ईवनिंग सर' कहा तो सब ख़ामोश खड़े देखने लगे।

-''समीर सर !'' तपन ने समीर को पुकारते हुए कहा, ''मिस्टर पुरी फॉर यू।''

-''इस समय !'' समीर ने घड़ी देखी, मुंह ही मुंह में बुदबुदाया और फ़ोन पर पहुंचा, ''यस सर ! गुडईवनिंग !.....ओके.....वैरी गुड.....राइट अवे सर.....थैंकयू.

....हाँ.....हाँ.....करेक्ट.....हम तो सोच रहे थे कि सेगमेंट ड्रॉप करना पड़ेगा। थैंक यू.....गुड नाईट।''

-''क्या हुआ?'' सभी ने तक़रीबन एक साथ पूछा।

-''यू हैव गॉट दी सेलेब्रिटी.....वाजिद अलीशाह जिन्होंने कत्थक नृत्य ईजाद किया था उनके शिष्य बिंदादीन के शिष्य जो कि लखनऊ के ही हैं और वहीं रहते हैं-वे कन्फर्म हो गए हैं। कल वो रिकॉर्डिंग के लिए ग्यारह तक स्टूडियो में आ जायेंगे।''

-''ओह वंडरफुल ! सब की जैसे सांस में सांस आयी।

-''बट !'' समीर ने हाथ ऊपर करके सब को शांत करते हुए कहा, ''बट. ....इसका मतलब है कि हमको इनके बारे में पता करना पड़ेगा.....इंटरव्यू के सवाल बनाने पड़ेंगे और इंटरव्यू के लिए रोशन को तैयार करना पड़ेगा। सो पुनीत आप कल सुबह आठ बजे उनके घर जाइये.....ही इज़ स्टेइंग इन वसंत विहार, टेक दी एड्रेस आई हैव हियर.....उनके बारे में पूरी जानकारी लेकर दस बजे स्टूडियो में आइये।''

-''सर मैं कहाँ जाऊँगा.....मैं तो कॉस्ट्यूम लेने जा रहा हूँ और वहां से रोशन को लेते हुए आ रहा हूँ।''

-''मै चला जाऊं?'' तपन ने हाथ ऊपर करके कहा।

-''ओ के...लेकिन तुम तो डांसर हो। डांस पहला ही सेगमेंट है तुम्हें तो कोरिओग्राफ़ी चेक करनी चाहिए।''

-''मैं कर लूँगा सर! आठ बजे जाकर मैं साढ़े नौ तक स्टूडियो पहुँच जाऊंगा।''

-''ओ के,'' समीर ने कंधे उचका कर कहा, ''ओके डाइरेक्टर्स ! हियर इज़ दी स्क्रिप्ट। ज़ेरोक्स कॉपीस आप लोगों के पास आलरेडी हैं, , आई विल डू दी शॉट ब्रेक डाउन इन दि नाईट.....आप लोग अपना काम मुस्तैदी से करें.....आल दी बेस्ट।''

स्टूडियो दर असल स्टूडियो नहीं था। दिल्ली में तब स्टूडियों का चल नही नहीं था। इसलिए एक बड़े से हॉल नुमा गोदाम में सेट लगाया गया था। सेट बहुत मामूली सा था—एक स्टेज जिसके तीन तरफ़ भारत की ख़ासख़ास इमारतों की याद दिलाते कट-आउट्स थे, ऊपर से कुछ रंगीन ग़ुब्बारे लटकाये गए थे। ज़्यादा कुछ करना मुश्किल था और इसलिए कुछ लाइट्स ही सिर्फ ऊपर से लटकाई गयीं थीं।

सेट उस तरफ़ दीवार से करीब डेढ़ फुट की दूरी पर लगा था। इस तरफ़ की बहुत सी जगह कैमेरा मूवमेंट के लिए छोड़ी गयी थी। दस बजे की रिकॉर्डिंग के लिए सब कुछ तैयार होते होते बारह बज गए। सोचा गया कि पहले स्टैंड-अप कॉमेडियन का सेगमेंट रिकॉर्ड कर लिया जाये जो कि मुश्किल से दस मिनट का है और एक रिहर्सल के बाद एक बजे तक रिकॉर्ड कर लिया जा सकेगा। उसके बाद लंच ब्रेक करके बाक़ी काम किया जाये।

श्री नाथ झा-जो काफ़ी पुराना एन. एस. डी. का पास आउट था और अब रिपर्टरी में था व्यंग्य लिखता भी था और कॉमिक एक्टिंग सिखाता भी था— स्टैंड-अप कॉमेडी के लिए बुलाया गया था। मेकअप उसका कुछ ख़ास था नहीं-सिर्फ़ टच अप था। कॉस्ट्यूम भी वही जो वह पहनकर आया था। झा आज्ञानुसार नौ बजे स्टूडियो पहुँच गया था- जब वहां सिवाय सेट वालों के कोई और नहीं था। वह अपने साथ 'सार्त्रे' की एक किताब लाया था जो वह एक कोने में बैठकर पढ़ता रहा। कभी ऊब जाता तो बाहर हवा में चहल क़दमी कर लेता। दो चार बार उससे समीर ने समय लगने के लिए माफी मांगी तो उसने हंसी में उड़ा दिया। बारह बजे झा को बुलाया गया।

-''एक रिहर्सल और फिर टेक.....ओ के फ़ॉर यू?''

-''ओ के.....चलिए।''

समीर, नॉर्मन, डाइरेक्टर्स, असिस्टेंट्स सब कण्ट्रोल रूम में चले गए। वहां से समीर ने कैमेरा मैनों से शॉट्स 'ब्लॉक' करवाए, फ़्लोर मैनेजर को झा को इशारा करने को कहा। झा ने अपना कॉमेडी पीस धारा प्रवाह, बिला हिचक और बिला किसी ग़ल्ती के शुरू किया। स्टूडियों में और ऊपर कंट्रोल रूम में निस्तब्ध शांति हो गयी थी ताकि साउंड सही सही मिले। पांच मिनट के बाद झा को थोड़ा इधर उधर देखकर, मटक कर, पॉज़ देकर अपना 'पीस' जारी रखना था और वो मटकना और पॉज़ उसी एक परफॉरमेंस का हिस्सा था। जब रिहर्सल समाप्त हुई तो स्टूडियो के सारे लोग झा को बधाई देने लगे, उसकी परफॉरमेंस की तारीफ़ करने लगे। कंट्रोल रूम में समीर पैनल पर बैठा था, उसने मुड़कर नॉर्मन की तरफ़ देखा, ''ओके?.....रिकॉर्ड करें?''

-''नो वन मोर रिहर्सल।'' कहकर नॉर्मन उठकर नीचे स्टूडियो में चला गया और झा के पास जाकर बोला, ''थोड़ा और लाइफ़ डालिये.....थोड़ा और ।''

झा ने 'अच्छा' में सर हिला दिया।

एक बजकर पच्चीस मिनट हो गए और तब तक चार रिहर्सलें हो चुकीं

लेकिन नॉर्मन संतुष्ट न हुआ।

-''ये चाहते क्या हैं?.....बताते भी नहीं'' एक डाइरेक्टर ने समीर से कहा।

-''चाहते क्या.....लाइफ़ लाइफ़ करते हैं। इनको क्या मालूम कि बेचारे ने कितनी लाइफ़ डाली थी अपनी पहली परफ़ॉरमेंस में। इतनी रिहर्सल के बाद परफ़ॉरमेंस तो क्या परफ़ॉर्मर भी डेड होने लगा है ।'' कंट्रोल रूम में हंसी हो गयी। तीन बजे तक न ब्रेक हुआ न नॉर्मन संतुष्ट हुआ।

अब वह बुरी तरह चिड़चिड़ा गया और झा को और समीर को ज़राज़रा सी बात पर झिड़कने लगा।

-''व्हाट्स योर प्रॉब्लम नॉर्मन? व्हाट इज़ इट दैट्स नॉट राइट?''

-''इट इज़ नॉट जनरेटिंग लाफ्टर.....हंसी किसी को नहीं आ रही है तो कॉमेडी का क्या मतलब! ये किस बेवक़ूफ को पकड़ लाये हो तुम लोग !''

-''आप हिंदी नहीं समझते इसलिए ऐसा कह रहे हैं.....वरना उसका पीस एक दम ए-वन है। सब हंसी से लोटपोट हो रहे हैं। लेकिन आपको नहीं दिख रहा क्योंकि रिहर्सल में, रिकॉर्डिंग में कोई आवाज़ कर सकता है क्या?''

-''मैं किसी को किसी लाइन पर हँसते नहीं देख रहा हूँ।''

-''रिहर्सल में मत देखो सर.....पर्सनल परफ़ॉरमेंस देखो.....सब लोग हंसी से लोटपोट होएंगे'' समीर ने नॉर्मन को समझाते हुए कहा।

-''व्हाट नॉन सेंस! मैं हिंदी नहीं समझता पर परफ़ॉरमेंस तो समझता हूँ.... .एक रेहरसल और करेंगे अगर ये फिर भी नहीं सुधरा तो फिर मजबूरी है उसके बाद टेक कर लेंगे।''

चार बजे झा का प्रोग्राम रिकॉर्ड हुआ। तब तक झा और सारी टीम थक चुकी थी, भूखी-प्यासी थी और आगे और कुछ भी रिकॉर्ड करने के मूड में नहीं थी। लेकिन काम तो करना था। स्टूडियो वालों को टाइम बढ़ाने के लिए बोला गया। वैसे भी कोई और रिकॉर्डिंग तो थी नहीं और उन्हें पैसे से मतलब था। जब सारा प्रोग्राम रिकॉर्ड हुआ सुबह का दो बज चुका था और सारे लोग किसी तरह-कहीं भी-बस सो जाना चाहते थे। लेकिन रिकॉर्डिंग जैसे ही समाप्त हुई किशोर पुरी, जो शाम से आकर सब कुछ ख़ामोश और-बग़ैर किसी से कुछ कहे-सुने देख रहा था, यकायक चिल्लाया, ''ओके गाइज़! लेटस मीट फ़ॉर ए व्हाइल।''

नीचे स्टूडियो फ़्लोर पे सब जमा हुए। पुरी ने सारी टीम की जैसे बड़े भाई की तरह बड़ी हमदर्दी से तारीफ़ की और हर एक से रिकॉर्डिंग में उसे दरपेश आयी मुश्किलें पूछीं। यह एक तरह से उसकी पी. आर. मीटिंग थी- सारी टीम, सारे

डिपार्टमेंट को नॉर्मन की तरफ़ से हटाकर अपनी तरफ़ करने की।

दूसरे दिन सारे के सारे दोपहर दो के आसपास ऑफ़िस पहुंचे। तब तक पता चला नॉर्मन समीर से कल रात की रिकॉर्डिंग की गड़बड़ियों और समय से काम समाप्त न करने के कारण ज़बरदस्त उखड़ा हुआ था और उसने समीर को 'इन्कॉम्पिटेंट' कहकर नौकरी से बर्ख़ास्त कर दिया था। समीर कहता फिर रहा था की 'मेरी ग़लती कुछ नहीं है, सारी गड़बड़ी नॉर्मन की है - क्योंकि एक तो वह हम बग़ैर ट्रेंड लोगों से बी. बी. सी. स्टाइल के प्रोफ़ेशनल होने की उम्मीद रखता है और दूसरे उसे क्योंकि भाषा की समझ नहीं है इसलिए वह हिंदी प्रोग्रामों की 'रूह' को समझ नहीं पाता। हर बात की तोहमत वह हम पर मढ़ रहा है।' लेकिन नॉर्मन कंपनी का इंटरनेशनल कंसल्टेंट था और समीर एक प्रोग्राम का एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर! नौकरी में हैसियत देखी जाती है न कि सही गलत! उसी शाम समीर नौकरी से निकाल दिया गया।

किशोर पुरी नॉर्मन से मिला।

-''नॉर्मन! यू हैव फ़ायर्ड दी ई. पी.। अब प्रोग्राम का क्या होगा?''

-''सब ठीक होगा.....वो लड़का कुछ जानता नहीं था।''

-''इतनी जल्दी दूसरा लाना भी आसान नहीं है ।''

-''उस बेवक़ूफ को रखने से तो किसी एक प्रोड्यूसर को ही प्रमोट कर के ई. पी. बना देना ज़्यादा ठीक लगता है।''

-''कौन है इस लायक?''

-''एरोन है, शालिनी है.....ये दोनों सेंसिबल लोग हैं।''

-''नहीं नहीं.....एक किसी को एप्पोइंट करना पड़ेगा।''

-''झंझट होगा। फिर ऐड दो, फिर इंटरव्यू फ़िक्स करो.....''

-''नहीं अब के उसकी बजाये मैं सोचता हूँ कि लोगों की सलाह से काम लिया जाये। रेकमेंडेड लोगों के ही इंटरव्यू किये जाएँ और उनमें जो ठीक लगे उसे रख लिया जाये।''

-''ओके.....यहाँ के लोगों को तुम जानते हो, मैं तो जानता नहीं। उनसे मशविरा करो। मुझे तो वैसे भी वक़्त नहीं है। जो रिकॉर्ड किया है उसकी एडिटिंग और साउंड में ही मेरा काफ़ी समय जाने वाला है।''

दो सप्ताह बाद एक नौजवान गौरव कपूर को ई.पी. के बतौर रखा गया। गौरव ने कनाडा में कहीं से एक तीन चार महीने का फ़िल्म डायरेक्शन का कोर्स किया

था और क्योंकि वह वहां की ठण्ड बर्दश्त नहीं कर पा रहा था इसलिए वापस भारत आकर नौकरी ढूंढ रहा था। वह दिल्ली का ही था और उसके पिता का सरिता विहार में एक पेट्रोल पंप था। गौरव के मिज़ाज में तुर्शी भी थी, अहंकार भी था और अपने अंग्रेज़ी संस्कारों के कारण उसे अपने आपको 'प्रोजेक्ट' करना और 'सैल' करना बख़ूबी आता था। किशोर पुरी को गौरव का नाम एक सरकारी बाबू- पेट्रोलियम मिनिस्ट्री के एक जॉइंट सेक्रेटरी- ने सुझाया था। बाबू और गौरव कपूर के पारिवारिक सम्बन्ध थे और किशोर पुरी तो ख़ैर एक बड़े 'नेशनल डेली' से जुड़े होने के कारण बड़े बड़े लोगों के बीच उठता बैठता ही था। पुरी को गौरव का स्टाइल भी अच्छा लगा और उसका ये विलायती डिप्लोमा भी अच्छा लगा। गौरव जब नॉर्मन से मिला तो नॉर्मन तो कनाडा का नाम सुनकर ही ख़ुश हो गया। फिर जो कपूर ख़ानदान ने नॉर्मन और पुरी को घर बुला बुला कर फ़्रेंच वाइन और कॉन्टिनेंटल डिशेज़ का स्वाद चखाया तो और कुछ हुआ हो न हुआ हो गौरव की नौकरी पक्की हो गयी। ये बात और है कि काम में और क्रिएटिव कल्पना शक्ति में गौरव कच्चा पड़ता था। क्योंकि बॉसेस का उस पर वरद-हस्त था इसलिए बज़ाहिर तो कोई कुछ नहीं कहता था लेकिन छुपे छुपे सब यही कहते थे कि इन्हें 'आता कुछ है नहीं'। शब्बीर तो यह भी कहता था कि डायरेक्शन 'एक बहुत वृहत विषय है, लोग सालों साल अच्छे डाइरेक्टर नहीं बन पाते ये छह महीने के कोर्स में क्या पहाड़ खोद के आये हैं। स्टूडियो दर्शन टूर करके आये होंगे!' गौरव भी यह बात अच्छी तरह समझता था कि उसे कुछ खास आता नहीं है इसलिए जब भी प्रोग्राम रिकॉर्ड करने/डायरेक्ट करने की बात उठती वह फ़ौरन डायरेक्टर्स की तरफ़ इशारा कर देता- ''ये इनका काम है। लेट देम डू इट। देखें तो इनको कितना आता है।'' और वह अपना पल्ला झाड़ लेता था।

-''प्रेसीडेंट ऑफ़ दी चैनल मिस्टर पात्रा विल मीट अस टुडे एट टू।'' शीतल वाधवा का एक छोटा सा सर्कुलर सब को घुमाया गया। प्रेसीडेंट मिस्टर प्रवीण पात्रा किसी बड़ी कंपनी के सी.ई.ओ. रह चुके थे और उस कंपनी को नुक़सान से निकालकर मुनाफ़े में लेकर आने के ज़िम्मेदार थे। वे निहायत ही सुलझे हुए, कम बोलने वाले और काम से काम रखने वाले शख़्स थे। हालाँकि पुरी उनके नीचे था लेकिन उन्होंने कभी अपने आपको किसी का भी बॉस महसूस होने नहीं दिया।

-'' सब लोग सोच रहे हैं, '' मिस्टर प्रवीण पात्रा ने अपना चश्मा साफ़ करते करते सभा को सम्बोधित करना शुरू किया, ''कि आख़िर चैनल शुरू कब हो रहा

है !'' यह कहकर वे एक दम चुप हो गए। उन्होने चश्मा पहना, रुमाल निकालकर अपने हाथ पोंछे। सब ख़ामोश, निस्तब्ध उन्हें लगातार देखते रहे - इंतज़ार में कि वे आगे क्या बोलते हैं। ''सो आई हैव डिसाइडेड, ''उन्होंने बात फिर शुरू की, ''लैट्स बिगिन ऑन फ़र्सूट सप्टेम्बर।''

-''फर्सूट सेप्टेम्बर!.....टू क्लोज़....बहुत जल्दी है।''

-''नो नो.....अभी तो प्रोग्राम तैयार ही नहीं हैं।''

-''सॅटॅलाइट टाइम, टेलीकास्ट अरेंजमेंट.....वो सब तो अभी बाकी है।''

-''टेलीकास्ट हॉन्गकोंग से है तो हॉन्गकोंग में कौन बैठेगा?''

तमाम तरह की बातें उठाई गयीं और बहस का सिलसिला चल निकला।

फिर सवाल उठा कि डांस गाने का प्रोग्राम तो बम्बई से बनेगा। उस यूनिट को बम्बई पहुंचना है, ऑफि बनाना है, एपिसोड रिकॉर्ड करना शुरू करना है– वो सब इतनी जल्दी कैसे होगा। उसके लिए कहा गया कि डांस का प्रोग्राम चैनल शुरू होने के एक महीने बाद शुरू होगा इसलिए उसमें वक़्त है। पात्रा साहेब इस मैदान के पुराने खिलाड़ी थे, हर बात का जवाब उनके पास था।

-''तैयार नहीं है तो कब करोगे तैयारी? तीन महीने हो गए! और अगर डेट फ़िक्स नहीं करेंगे तो काम आगे बढ़ेगा ही नहीं। नो फरदर क्वैश्चन्स.....नो आर्ग्यूमेंट्स.....जस्ट प्लान एवरीथिंग फ़ॉर फ़र्सूट सेप्टेम्बर!'' पात्रा जी उठकर चल गए। लोग बैठे आपस में चिल्ल-पों करते रहे।

-''पुरी सर! वाहट इज़ दिस?'' गौरव ने अपनी टीम के उकसाने पर पूछ लिया।

-''वैल.....कभी तो डेट डिसाइड करना ही है न.....बट सेप्टेम्बर की बजाये अक्टूबर होना चाहिए था.....बट ये पात्रा ज़रा ढीठ किस्म का आदमी है .....अब चेंज नहीं करेगा।''

-''बॉम्बे ऑफ़िस शिफ़्ट करना है । आफ़्टर आल डांस-गाने का प्रोग्राम तो बॉम्बे में ही प्रोड्यूस होगा। स्टूडियो, ऑफ़िस.....युनो.....''

-''या या.....मैं ने ऑलरेडी एक स्टूडियो से बात की है उनकी जगह हम फ़िलहाल किराये पर ले रहे हैं।''

-'' और सर, हमने सुना है कि अपने चैनल में न्यूज़ बी.बी.सी. की होगी?''

-''करेक्ट! उसके लिए'' पुरी ने अपनी टाई ठीक करते हुए कुर्सी में पीछे धसते हुए कहा, ''हम लोग-मैं और प्रवीण पात्रा-नेक्स्ट वीक लंदन जा रहे हैं। बी.बी.सी. से डील फ़ाइनल करने''

तालियां बज गयीं।

-''यह,'' पुरी ने फिर कहना शुरू किया, ''भारत में अपनी प्रकार का पहला चैनल होगा जो बी.बी.सी. के साथ न्यूज़ साझा करेगा।''

-''एक दूसरा चैनल-हिंदी का आया है हाल ही में, ''शब्बीर ने कहा, ''वो तो सारे अंतर्राष्ट्रीय चैनल नॉर्मस ताक में रखकर काम कर रहा है नॉर्मली एक घंटे में पांच ब्रेक होते हैं वह छह कभी कभी सात ब्रेक्स करता है। धुंआधार एड्स दिखाता है। प्रोग्राम के टाइटिल के फ़ौरन बाद भी एड दिखा देता है।''

-''वो तो पैसा कमाने के लिए मार्किट में आए हैं.....उनको कंटेंट से, दर्शकों से कोई मतलब नहीं है ।''

-''इसके लिए कोई रेगुलेटरी अथॉरिटी होनी चाहिए।''

-'' कुछ बन रही हैं, कुछ बन जायेंगीं.....धीरे धीरे सब हो जायेगा।''

थोड़े बहुत इधर उधर के सवाल जवाब, हंसी मज़ाक़ हुए और फिर लोग अपने अपने कामों में जुट गए।

-''लिसेन तपन एंड पुनीत'' गौरव ने दूसरे दिन दोनों रिसर्चरों को बुलाकर कहा, ''अपना डेली प्रोगाम है। एक प्रोग्राम तैयार हे। टेलीकास्ट से पहले कम से कम बीस दिन के एपिसोड्स तैयार होने चाहिए। मैंने डॉयरेक्टर्स से बात कर ली है, वे कुछ प्लान कर रहे हैं लेकिन तुम लोग रिसर्चर हो तुम इनको नए नए टैलेंट्स/आइडिआज़ ढूंढकर लाकर दो। नहीं तो काम कैसे चलेगा? यहाँ करो बम्बई में करो....लेकिन जल्दी करो।''

-''ठीक है सर !'' दोनों ने सर हिलाकर बॉस के सामने से छुट्टी पा ली। फिर उसके बाद एक दूसरे की ओर ऐसे देखा जैसे पूछ रहे हों- ''क्या करें?''

लेकिन यह तो हर डिपार्टमेंट का हर शख़्स एक दुसरे की तरफ़ देखकर पूछ रहा था।

9

नाच गाने वाले एक घंटे के प्रोग्राम के लिए बम्बई के गोरेगाव में एक बना बनाया स्टूडियो किराये पर लिया गया था। इसमें एडिटिंग भी थी, शूटिंग फ्लोर भी था और स्टाफ़ के लिए ऑफ़िस की जगह भी थी। स्टाफ़ में दिल्ली में जो लोग थे वे भी थे और बम्बई के एप्पोइंट किये गए दो प्रोड्यूर्सस भी थे। शब्बीर अगर दिल्ली में सीरियल प्रोग्रामिंग का ई. पी. था तो बम्बई में उन सीरियलों के लिए प्रोड्यूसर था शुब्रतो घोषाल। बम्बई में इसलिए कि ड्रामा, थिएटर, एक्टिंग वाले, डयरेक्टर्स और फ़िल्मों से जुड़े तमाम सब तो बम्बई में ही थे— वे ही तो सीरियल बनाते। शुब्रतो घोषाल का काम 'लिएज़ों' का था। सीरियल की कहानी, ट्रीटमेंट, कास्ट इत्यादि सारा फैसला शब्बीर का था - लेकिन दर असल किशोर पुरी का। क्योंकि किशोरपुरी अपने आपको हर फ़न में माहिर समझता था और ''सब कुछ'' जानता था। हालाँकि हर एक का इंटरव्यू पुरी ने किया था लेकिन शुब्रतो घोषाल कभी उस कंपनी में हुआ करता था जिसमे पात्रा सी.ई.ओ. रहे थे और पात्रा उससे ''इम्प्रैस्ड'' था। शुब्रतो थिएटर से ताल्लुक रखता था इसलिए बम्बई में सीरियलों का प्रोड्यूसर उसे रखा गया। वह हर छोटी बड़ी बात पात्रा से ही करता था जो कि पुरी को नागवार गुज़रती थी। दूसरा प्रोड्यूसर था अभिजित-न्यूज फ़ीचर का-जिसे खुद पुरी ने इंटरव्यू करके चुना था। दिल्ली से जब स्टाफ़ आया तो नॉर्मन को सबसे बड़ा शीशे जड़ा कोने वाला केबिन दिया गया। उसके बाद वाला केबिन दिया गया गौरव को। उसके बाद खुली जगह थी जहाँ तमाम वर्क स्टेशन्स बनाकर स्टाफ़ को बैठाया गया। नॉर्मन और गौरव के सामने की तरफ़ दो छोटे छोटे केबिन और थे जिनमे एक में शुब्रतो और दूसरे में अभिजित को जगह दी गयी। अभिजित ने बाकायदा पहले दिन से ही ऑफ़िस आकर काम करना शुरू कर दिया लेकिन शुब्रतो हफ़्ते भर बाद एक दिन आकर ऑफ़िस देख भर गया और फिर ग़ायब हो गया। ख़बर दिल्ली में पात्रा साहेब को पहुंचाई गई। पात्रा ने शुब्रतो को घर पर फ़ोन करके वजह पूछी।

-''आई डोंट लाइक दी ऑफ़िस।''

-''क्यों?'' पात्रा ने पूछा।

-''मेरा केबिन एक दम कोने में है.....आई एम सीरियल का प्रोड्यूसर...लोग मिलने आएंगे तो मेरे बारे में क्या सोचेंगे?''

-''आज जो ऑफ़िस है वही है...काम तो वहीं से करना होगा।''

-''देन इन दैट केस.....आप मुझे सामने गौरव वाला केबिन दिलवा दीजिये। आई वुड लाइक टू सिट देयर।''

तीन दिन बाद पात्रा का बम्बई दौरा था - देखने के लिए कि सब कुछ ठीक ठाक है या नहीं। वे सीधे गौरव के केबिन में गए।

-''आई वांट टू आस्क यू ए फेवर गौरव।''

-''कहिये।''

-''कैन यू शिफ्ट योर केबिन टू दी अपोजिट वन.....शुब्रतो कैन सिट हियर. ....उसके पास मिलने जुलने वाले.....यु नो.....''

-''ये आपसे शुब्रतो ने कहा है ?''

-''हाँ, ही कॉल्ड।''

-''आई हैव नो प्रॉब्लम.....लेकिन सामने बैठता है....यह इतनी छोटी सी बात है कि यह तो वह भी मुझसे कह सकता था। आई वुड हैव ग्लैडली शिफ्टेड। इसके लिए आपको और वो भी दिल्ली फ़ोन करके बोलने की क्या ज़रुरत थी ! एनी वे. ....आई विल शिफ़्ट। मुझे केबिन से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।''

जब सीनियर ई.पी गौरव सामने वाले जूनियर प्रोड्यूसर के एक छोटे केबिन में शिफ़्ट हो गया तब शुब्रतो बाक़ायदा और रोज़ाना ऑफ़िस आने लगा।

चैनल का हैड ऑफ़िस दिल्ली में था और बम्बई में सिर्फ़ सीरियलों और न्यूज़ के प्रोडूसर्स थे लेकिन बम्बई में जो सबसे बड़ा कारोबार था वह था रोज़ाना एक घंटे वाले नाच-गाने के प्रोग्राम का। गौरव के साथ पांच प्रोड्यूसर, पांच उनके असिस्टेंट्स, चार रेसर्चर्स (तपन और पुनीत के आलावा दो और लोकल लोग रखे गए थे) प्रोडक्शन स्टाफ़, कैमरा मैन, साउंड रेक्रॉरडिस्ट्स, टेक्निकल लोग, फ़्लोर मैनेजर, सेट वाले इत्यादि, सब मिलाकर लोगों की तादाद तक़रीबन अस्सी तक पहुँच गयी थी।

-''सर, प्लीज़.....आप जूते बाहर उतार दीजिये।'' एक अटैंडेंट ने गौरव को एडिटिंग रूम में घुसने से पहले टोका।

-''मेरे दोस्त ! तुम्हारे एडिटिंग रुम में इतनी तो धूल पड़ी है .....पहले वो साफ़

करवाओ फिर मुझसे जूते उतारने को कहो।''

लेकिन किरायेदार तो किरायेदार होता है। बात मालिक तक पहुंची और जगह के मालिक ने पुरी से शिकायत की। गौरव ने बताया कि एडिटिंग रूम की ज़मीन तो ज़मीन वहां की मशीनों की भी गंदगी साफ नहीं की जाती और इस वजह से वहां एडिटिंग करते समय मशीन में टेप अटक जाते हैं। पुरी ने टेक्निकल चीफ़ से बात की।

-''कहाँ.....गन्दगी है सर?....बेकार की बातें करते हैं ये प्रोडक्शन वाले।

-'' मैं तो सुनता हूँ वहां एडिटिंग करते में टेप अटक जाते हैं, शॉट मिट जाते हैं।''

-''मैं देखता हूँ।''

लेकिन टेक्निकल चीफ़-मुकुल जोशी-झुन्झुनू राजस्थान का हाई स्कूल फ़ेल किसी तरह आई. टी. आई का डिप्लोमा इंजीनियर-जिसने अपनी सूझबूझ से धीरे धीरे अपनी जगह टी वी इंडस्ट्री में काफी दिनों तकनीशियन रहकर अब टेक्निकल चीफ़ की बना ली थी। वह इस मामले को क्यों देखता? इस स्टूडियो/एडीटिंग/ऑफ़िस के बड़े से बड़े कॉम्प्लेक्स का मालिक हीरा लाल गणात्रा उसका पुराना परिचित था और जोशी का आभारी था कि उसने इस पूरे कॉम्प्लेक्स को मार्किट से तीन गुना किराये पर चैनल को टिकवाया था। इस तिगुने किराये में एक हिस्सा जोशी का भी था। दोनों एक दुसरे पर टिके थे। इसलिए दोनों आधी आंख बंद किये सब कुछ जैसा चल रहा था, चलने दे रहे थे। गणात्रा क्योंकि मालिक था इसलिए चैनल को घुड़की देने के नाम पर पुरी या पात्रा से कभी शिकायत शिकवा कर दिया करता था। वरना उसकी बला से कोई क्या करता है। जगह और मशीन सुरक्षित रहनी चाहिए, प्रोग्राम वालों के टेप बिगड़ें, एपिसोड मिट जाएँ इससे उसका क्या ताल्लुक़! एक तिहाई देने का बाद भी तो उसकी जेब में अपनी जगह और मशीनों की दोगुनी क़ीमत आ रही थी। गणात्रा की जोशी से मुलाक़ात तब हुई थी जब वह चैनल शुरू करना चाह रहा था लेकिन तब तक जोशी ने दिल्ली का ये चैनल ज्वाइन कर लिया और गणात्रा की जगह उसने किराये पर लगवा दी। बहरहाल! इसका नतीजा ये था कि प्रोग्राम की एडिटिंग में जहाँ एक दिन लगना चाहिए था तीन तीन दिन लगते थे। स्टूडियो में ए.सी न चलने की वजह से जो एपिसोड आठ घंटे में रिकॉर्ड होना चाहिए था वह दो दिनों में होता था.....इत्यादि, इत्यदि, इत्यादि! टेलीकास्ट तक बीस एपिसोड के बैंक का सोचा गया था लेकिन लग रहा था कि शायद दस भी मुश्किल से ही रेडी हो पाएंगे।

-''योर बैंक इज़ नॉट रेडी।'' पुरी ने गौरव को फ़ोन किया।

पहले तो घंटी सुनते ही गौरव ने अपने माथे पर हाथ मारा और एक भद्दी सी गाली पुरी को दी, ''ये साला उसी का फ़ोन होगा।'' यह बात उसने कुछ इस दर्द से कही कि उसका लैंडलॉर्ड (अँधेरी में जहाँ गौरव पी.जी. रहता था) भी फिक्क से हंस दिया।

-''जी मिस्टर पुरी.....गुड मॉर्निंग।''

-''नॉट सो गुड ए मॉर्निंग गौरव.....व्हाई इज़ योर बैंक नॉट रेडी?''

-''आपको तो मालूम है, एडिटिंग में टाइम लग रहा है.....सब लगे हुए हैं. ....''

-''और तुम्हारे एपिसोड्स का कंटेंट भी अच्छा नहीं है.....तुमसे कहा था वो दोनों स्टैंड-अप कॉमेडियन्स को आगे से मत लो.....तुम उनको हर एपिसोड में लिए जा रहे हो।''

डिस्कशन करीब आधे घंटे चला और उसके बाद गौरव का मुंह, मूड और तबियत सब लाल हो गए।

-''ये साला मेरा संडे बर्बाद कर देता है .....बारह बजे सो के उठता है और सीधे फ़ोन घुमा देता है .....ये क्यों किया, ऐसा क्यों नहीं किया.....व्हाट नॉन सैस यार !'' रेसर्चर्स की मीटिंग में गौरव उफन पड़ा।

-''सर हम तो ढूंढ ढूंढकर ला रहे हैं जो बेस्ट लोग हैं लेकिन हर रोज़ के लिए इतने कहाँ से लाएं?'' तपन ने गौरव की मेज़ पर अपनी कोहनियां टिकाते हुए कहा।

-''आई एग्री विथ यू.....लेकिन कुछ न कुछ तो करना पड़ेगा.....ये महाराज हफ़्ते भर का प्रोग्राम बैंक शनिवार रात को देखते हैं और संडे सुबह मेरी'' गौरव ने भद्दा सा इशारा किया, ''....., हर सन्डे जवाब तो मुझे देना पड़ता है ।''

-''सर टेक्निकल चीफ़ को उनसे भिड़ा दीजिये.....वो दोनों एडिटिंग प्रॉब्लम सॉल्व कर दें बाकी हम देख लेंगे।'' पुनीत ने कहा।

-''और सर.....कहना नहीं चाहिए लेकिन जो चौथा रिसर्चर अपने रखा है न. ....निबेन्दु.....वह कुछ काम नहीं करता। उसकी फ़ाइल देखिए उसने सिर्फ पुराने पुराने पेपर्स जमा करके रखे हुए हैं। प्रोग्राम सजेशन एक भी नहीं है। बेमतलब की तनख़्वाह ले रहा है।'' तपन ने बड़ी माज़रत के साथ कहा। निबेन्दु कहीं गया था, इस मीटिंग में नहीं आ पाया था। दुसरे दिन गौरव ने उसे बुलाया, उसकी फ़ाइल मंगवाई, उसके काम के बारे में सवाल पूछे और जब देखा कि उसने कुछ किया नहीं है तो उससे कहा, ''गेट आउट! अपना हिसाब करो और जाओ।''

दूसरे दिन शूटिंग से पहले तपन गौरव के पास आया।

-''सर एक रिक्वेस्ट है ।''

-''क्या?''

-''सर मुझे भी पैनल पर बैठकर प्रोग्राम करने दें.....मैं भी थोड़ा सीख जाऊं आपके अंडर में।''

-''टैल योर डायरेक्टर।''

-''थैंक यू सर !''

डायरेक्टर जीवन प्रकाश-जिसके साथ तपन की जोड़ी बनी थी- वैसे भी लिप्पुस था। था तो वह फ़िल्म संस्थान पूना का डायरेक्शन पास आउट लेकिन टी वी प्रोडक्शन में उसकी रूचि नहीं थी और वैसे भी उसे डायरेक्शन आता ही नहीं था। उसका काम कोई शेयर करे इससे अच्छी बात उसके लिए और क्या हो सकती थी।

टेलीकास्ट शुरू होने की तारीख़ तक चैनल की हालत किसी बदहवास और कन्फ़्यूज़ड शख़्स जैसी थी। शब्बीर निहयात अला दर्जे के सीरियल ही पास करता था और सिर्फ पुरी की ही सुनता था। शुब्रतो का कहना था कि इतने अला दर्जे के प्रोग्राम बनाने वाले बम्बई तो क्या हिंदुस्तान में नहीं हैं और अगर होंगे भी तो कम से कम उतने अला दर्जे के प्रोग्रामों को देखने वाली ऑडियंस भारत में नहीं है। शुब्रतो शब्बीर की एक नहीं सुनता था और सिर्फ पात्रा से ही बात करता था। पात्रा और पुरी एक दूसरे को फूटी आंख नहीं सुहाते थे। पात्रा कहता था ये सिर्फ नक़्शेबाज़ी कर सकता है और कुछ नहीं। पुरी कहता था कि हो सकता है पात्रा ने किसी कंपनी में अच्छा काम किया हो लेकिन इसका ये मतलब नहीं कि ये यहाँ भी अच्छा काम करेंगे, ये टी वी है और और लाइनों से अलग है। नॉर्मन वैसे भी पुरी को हमेशा से ''इडियट'' कहा करता था, अब प्रोग्राम प्रोडक्शन की दिक़्क़तें देख कर उसका चिड़चिड़ा पन बढ़ गया था और बम्बई की इस जगह को किराये पर लेने के लिए वह पुरी की ''बेवक़ूफ़ी'' को ज़िम्मेदार ठहराता था। न्यूज़ का जो बी.बी.सी. से समझौता होने वाला था वह बीच में ही टूट गया था और अब पुरी इस बारे में नए सिरे से सोच रहा था। इस सबके चलते एक परेशानी और थी और वो यह कि हिंदी का एक एंटरटेनमेंट चैनल और भी शुरू हो गया था और वह लोगों को पसंद आ रहा था-पसंद इसलिए कि हिंदी का और कोई चैनल (सिवाय डी डी के) मार्किट में था नहीं। और टी वी की खास बात ये है कि जब कोई चेहरा-चाहे जैसा भी हो-रोज़ रोज़ अपने घर के परदे पर दिखे तो चाहे अनचाहे पसंद आने ही लगता है। और

जब एक चीज़ पसंद आने लगती है तो दूसरी को लोगों के दिलों में घर बनाना इतना आसान नहीं होता - फिर वह चाहे कितनी ही बेहतर क्यों न हो।

इन तमाम जद्दोजहद और कन्फ़्यूजनों का सबसे ज़्यादा फ़ायदा तपन को मिला। उसकी रिसर्च पर तो गाहे ब गाहे चर्चा हो लेती थी लेकिन सवाल तलब यूनिट के डायरेक्टरों से होते थे, गौरव से होते थे। सारे के सारे अपने मसलों में व्यस्त रहते और तपन इत्मीनान से प्रोग्राम डायरेक्शन सीखने में लगा होता। कैमेरा कहाँ रखना चाहिए, आर्टिस्ट कहाँ और कैसे प्लेस करने चाहिए, रिदम पर काटना क्या होता है, कैसे होता है.....इत्यादि इत्यादि।

जब से ये यूनिट दिल्ली से बम्बई ट्रांसफ़र हुआ था और ऑफ़िस गोरेगाँव में रखा गया था तपन को घर से यहाँ आने जाने में दिक़्क़त होती थी। उसके घर के सामने से एक बस गोरेगाँव जाती थी लेकिन वह ईस्ट (पूर्व) में छोड़ती थी-रेल की पटरी के इस तरफ़ और ऑफ़िस था पटरी के उस तरफ़ वेस्ट (पश्चिम) में, घोड़बंदर रोड पर। इसलिए ज़्यादातर वह लोकल ट्रेन ही लेता था-कांजुरमार्ग से दादर और फिर वहां से लाइन बदल कर गोरेगाँव। रात को ऑफ़िस से आने का समय निर्धारित नहीं था-तक़रीबन रोज़ाना देर रात हो जाती थी। सुबह फिर जल्दी उठकर चल देना। पिता की नाराज़गी कुछ कुछ कम हुई थी लेकिन ख़त्म नहीं हुई थी। छोटा भाई रोज़ाना की हर बात खोद खोदकर पूछता रहता था-आज किससे मिले, कौन स्टूडियो में आया, प्रोग्राम कैसे रिकॉर्ड होता है, एडिटिंग क्या होता है वग़ैरह वग़ैरह। अब तपन का आई.आई.टी. जाना भी बंद हो गया था और उसके अंदर एक आत्मविश्वास पैदा हो गया था कि' मैं डायरेक्शन सीख रहा हूँ और डायरेक्टर बनके रहूंगा'।

मुआयने के लिए या कभी किसी मीटिंग के लिए केदार पुरी बम्बई पधार जाते थे-और ये संयोग तक़रीबन हर दस बारह दिनों में आ ही जाता था। एयरपोर्ट से उतरकर वे सीधे प्राइवेट टैक्सी-जो अक्सर मर्सेडीज़ कार होती थी-लेकर नरीमन पॉइंट के ओबेरॉय होटल में चेकइन करते थे। वहां से वही टैक्सी लेकर गोरेगाँव के ऑफ़िस आते थे और जिस जिस जगह जाना होता था वहां वहां उसी टैक्सी से आते जाते थे।

-''सर ऑफ़िस यहाँ है.....आप सीधे एयरपोर्ट से गोरेगाँव आ जाया करें। मुश्किल से बीस मिनट लगेंगे और ज़्यादा से ज़्यादा पचास रूपए किराया होगा। यहाँ गोरेगाँव में ही ऑफ़िस के बगल में होटल है वहां आपको बेस्ट कमरा दिलवा देंगे।

आपका खर्च कम से कम अस्सी पर्सेंट कम हो जायेगा।'' गौरव कभी कभी उनसे कहा करता था। कहा करता था क्योंकि उसे प्रोग्राम के बजट पर कंट्रोल रखने को कहा गया था और पुरी की बम्बई विज़िट इसी डांस प्रोग्राम के बजट का हस्सा होती थी।

-''नहीं यार!'' पुरी अपनी क़ातिलाना मुस्कराहट बिखेरते हुए जवाब देता, ''ओबेरॉय वाले मुझे चालीस परसेंट डिस्काउंट देते हैं और उनका अपना क्लास है। वहां ठहरने में और कहीं और ठहरने में फर्क है।'' इसके आगे कोई अपने बॉस से और क्या कह सकता था। आपस में लोग पुरी की नक्शेबाज़ियों और फिज़ूल ख़र्चियों के चर्चे कर लेते थे, कभी नॉर्मन के कंधे पर रो भी लेते थे। लेकिन नॉर्मन का बजट से या चैनल के दैनंदिन काम काज से कोई ताल्लुक़ तो था नहीं। वह तो क्रिएटिव कंसलटेंट था और वह भी इसी एक प्रोग्राम का। सो वह मज़ा भी लेता था और लोगों को सांत्वना भी कभी कभी दे देता था।

ग़र्ज़े के जब चैनल शुरू हुआ तो लंगड़ाते लंगड़ाते और टेलीकास्ट शुरू होने के साथ ही सारे लोगों की परेशानियां और झुँझलाहटें बेतरह बढ़ गयीं। वह चैनल जो पहले शुरू हो चुका था हिंदी भाषियों के बीच अब तक अपनी जगह बना चुका था। उसके सीरियल भी बहुत कुछ बी-क्लास हिंदी फ़िल्मों की तर्ज़ पर थे जो के आम लोगों को पसंद आ गए थे। इस चैनल के सीरियलों को लोग 'इंटेलेक्चुअल', 'वेस्टर्न' और 'हाई क्लास' कहकर नकार रहे थे। डांस का प्रोग्राम नार्मल टेली कास्ट शुरू होने के एक माह बाद जब शुरू हुआ तो उसे भी कोई ख़ास 'रिस्पांस' नहीं मिला। न्यूज शुरू करने की बस बातें ही होती रहीं, न्यूज़ या करेंट अफेयर्स के प्रोग्राम मीटिंगों से आगे नहीं बढ़ पाए। शुब्रतो ताल ठोककर शब्बीर और पुरी को नाम धरता रहा कि ''और कर लो अपने सीरियलों को इंटेलेक्चुअल, और बनाओ साहित्यिक उपन्यासों/कहानियों पर प्रोग्राम.....देख लिया, दूसरे चैनल ने फ़िल्मी तर्ज़ पर प्रोग्राम बनाये और सफल हो गए.....तुम बैठे रहो अपने अंडे उबालते हुए!'' पात्रा शुब्रतो की बात से इत्तेफ़ाक़ करता था लेकिन पुरी की सोच भिन्न थी। टेलीकास्ट किसी तरह चार महीने चला फिर सबकी समझ में आ गया कि इस चैनल का भविष्य सुनहरा नहीं है ।

परेशान और झल्लाए हुए तो सभी थे लेकिन बम्बई के डांस प्रोग्राम के स्टाफ़ में फ़्लोर मैनेजर सुरेंद्र भाटिया परेशान भी था और व्यथित भी था। व्यथित इसलिए कि बावजूद इसके कि सब लोग मेहनत कर रहे थे बॉसेस का रवैय्या चैनल के हित में नहीं था, और परेशान इसलिए कि अब उसकी उम्र पैतालीस की हो चली थी और

इस चैनल की नौकरी के लिए उसने दूरदर्शन से वी. आर. एस. लिया था—यह सोचकर कि वहां उसका नुक़सान नहीं होगा और इस चैनल में हर माह तनख़्वाह डी.डी. से दो गुना मिलेगी। अब अगर यह चैनल बंद हुआ तो वह कहाँ जायेगा! फ़्लोर मैनेजर की नौकरियां ही कितनी हैं? क्या करेगा सुरेंद्र भाटिया? उसकी व्यथा और चिड़चिड़ाहट फ़्लोर पर भी दिखती थी।

-"क्या कर रहा है भाटिया.....!" तपन ने पैनल से स्टूडियो में बैठी ऑडियंस को मैनेज करने के बारे में हेडफ़ोन्स पर कहा।

-"क्या कर रहा है?".....जो करना है वो कर रहा हूँ.....तुम प्रोड्यूसर भी नहीं हो, डाइरेक्टर भी नहीं हो.....तुम पैनल पर बैठकर बेकार की धौंस मत जताया करो. ....समझे!"

-"अरे धौंस नहीं यार.....लेकिन उस साले लौंडे को तो देखो, वह बार बार हाथ उठा उठा के हाय हाय कर रहा है.....रोको उसे....."

दूसरे दिन तपन जब सुबह सुबह ऑफ़िस पहुंचा तो उसके डेस्क पर गौरव के हस्ताक्षर वाला एक 'मेमो' पड़ा था जिसमे लिखा था कि तपन पैनल पर बैठकर स्टाफ को गालियों देता है और झल्लाते हुए बात करता है। वह डाइरेक्टर नहीं है और आगे से उसे पैनल पर बैठने की इज़ाजत कतई न दी जाये। सी.सी. डाइरेक्टर जीवन प्रकाश को मार्कड थी और इस मेमो को नोटिस बोर्ड पर लगाने के लिए कहा गया था। तपन पर जैसे आसमान फट पड़ा। अभी तो उड़ान भरी भी नहीं और गिर भी पड़े ! गौरव सुबह जल्दी आ चुका था। तपन सीधे गौरव के केबिन में दाख़िल हुआ।

-"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया सर।"

-"भाटिया बोलता है पैनल पर तुम माँ बहन की गालियां देते हो।"

-"ग़लत है सर।"

-"उस दिन की रिकॉर्डिंग के सारे स्टूडियो स्टाफ़ ने साइन करके लिखित कंप्लेंट की है। उन सबकी कंप्लेंट ग़लत है?"

-"मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ मैंने किसी को गाली नहीं दी।"

-"गाली वैसे तुम देते हो कभी कभी।"

-"कभी कभी....."

-" और अगर तुम कहोगे कि तुमने गाली नहीं दी तो बैठाना पड़ेगी इन्क्वारी जिसमें स्टूडियो के पचास लोग एक तरफ़ और तुम अकेले एक तरफ़.....यू हैव नो चांस।"

-“मैं क्या करूँ सर? मैं तो फँस गया।”

-“लुक यू आर ए गुड बॉय...एक काम करो सीधे सीधे अन-कंडीशनल अपोलोजी लिखो, जिसमे लिखो इट वाज़ अन-एक्सपेक्टेड, अन-इन्टेन्डेड स्लिप ऑफ़ टंग....किसी के लिए नहीं था और अब आगे से ऐसा नहीं होगा बस! फिर मैं देख लूँगा।”

-“सर प्लीज़.....मेरा करियर.....” तपन रुआँसा हो गया।

गौरव अपनी कुर्सी से उठा और तपन के पास उसकी पीठ पर हाथ रखकर बोला, “तपन, डोंट वरी।”

लेकिन पुरी तो दैनंदिन स्टाफ़ के संपर्क में रहता था। इसलिए कि कहीं उसका वर्चस्व कम न हो जाये। कहीं कुछ भी ऐसा न हो जिसका उसे पता न हो। इसलिए ख़बर फ़ौरन पुरी तक पहुँच गयी।

-“गौरव! हाउ कैन यु लेट ए रिसर्चर सिट ऑन दी पैनल?.....वो प्रोग्राम के बारे में क्या जानता है?”

-“जानता तो जीवन प्रकाश भी डायरेक्शन के बारे में कितना है .....”

-“अब मैं क्या करूँ.....नॉर्मन ने उसे सेलेक्ट किया है।”

-“तो सर एक तो सड़े सड़े डाइरेक्टर्स लगे हैं, मशीनें ठीक से काम नहीं कर रहीं.....तो बैठ गया होगा तपन.....लड़का है, शौक़ लगता है।”

-“व्हाट डु यू मीन शौक़ लगता है? ही कैन नॉट डाइरेक्ट।”

-“बट ही कैन लर्न। अच्छा लड़का है, मेहनती है, काम सीख रहा है और ऐसे लड़कों को आगे बढ़ाना, उनकी लाइफ़ बनाना हमारा फर्ज़ है। उसे चांस मिलना चाहिए।”

अब तक गौरव भी पुरी के रोज़ रोज़ के सवालों से तंग आ चुका था और काम भी सीख चुका था। पैसे की उसे ज़रुरत नहीं थी और वह जानता था कि अब देश में और टी वी चैनल भी खुल रहे हैं इसलिए इस तजुर्बे के बाद उसे नौकरी की भी कोई कमी नहीं रहेगी। वह अब पुरी या नॉर्मन से उतना नहीं दबता था जितना कभी दबा करता था।

-“गौरव! डु यू नीड नॉर्मन एनी मोर?”

-“वैल! वो क्रिएटिव कंसलटेंट है और आप लोग और आपके चैनल पार्टनर्स उसे लाये हैं। मैं इसमें क्या कह सकता हूँ।”

-“अगर तुम लोग प्रोग्राम समझ गए हो, करने में अपने को सक्षम समझने लगे हो तो फिर उसकी ज़रुरत नहीं है।”

-''रहने दो.....बुज़ुर्ग है, तजुर्बेकार है, कहीं अटके तो उससे सलाह कर सकते हैं।''

-''नहीं यार! वह बहुत महंगा है। उसकी तनख़्वाह उसके ख़र्चे उसका रहन सहन सब ब्रिटिश पौंड के हिसाब से देना पड़ता है और वह चैनल को भारी पड़ रहा है। अगर उसकी ज़रुरत न हो तो उसे वापस भेज दिया जाये।''

लेकिन पुरी का गौरव से यह पूछना पाछना या तो केवल एक औपचारिकता थी या फिर अप्रत्यक्ष तरह से उसे सूचना देना था। वापस तो पुरी नॉर्मन को भेजने ही वाला था।

काम और पार्टियों के सिलसिले में गौरव को जाना तो दिल्ली ऑफ़िस पड़ता ही था। वहां सबसे मुलाकात भी होती थी। शब्बीर से भी और शीतल से भी। दोनों ने दबी ज़बान से गौरव को सलाह दी थी कि प्रोग्राम के ख़र्चे कम करे। चैनल के ख़र्चे बहुत हो रहे हैं और आमदनी कुछ नहीं है।

-''मार्केटिंग डिपार्टमेंट वाले क्या कर रहे हैं? एड्स कितने ला रहे हैं?''

-''ऐड देने वाले भी तो अंधे नहीं हैं। आपके प्रोग्राम पॉपुलर होंगे, लोग देख रहे होंगे तब तो ऐड देंगे न कि बस इसलिए कि आप टी वी चैनल हैं !''

-''प्रोग्राम तो अपने अच्छे हैं.....शब्बीर ने बहुत क्लास सीरियल्स अप्रूव किये हैं।''

-''क्लास!'' शीतल हंसी, ''क्लास ही तो प्रॉब्लम है। ऑडियंस क्लास नहीं है मास है.....और मास को लिटरेचर नहीं चाहिए, एंटरटेनमेंट चाहिए। वी आर लेग्गिंग बिहाइंड। एनी वे प्लीज़ डोंट मेंशन दिस टू शब्बीर और मिस्टर पुरी,.....दोनों यह बात नहीं मानते।''

-''और मिस्टर पात्रा?''

-''पात्रा! वो सिर्फ़ कह सकते हैं.....इम्प्लीमेंट करने वाले तो यह लोग हैं।''

बातचीत के सिलसिलों में ज़ाहिर हुआ कि पार्टनर्स ने जो बजट दो सालों के लिए तय कर रखा था वह एक साल ख़त्म होने से पहले ही समाप्त हो चुका था। शायद नॉर्मन को वापस भेजने का प्लान इसी पैसे की कमी के कारण था। गौरव ने पुरी के पांच सितारा होटल और बम्बई में मर्सेडीज़ गाड़ियों पर पैसे उड़ाने की बातें बताईं। दिल्ली वालों ने कहा ''यहाँ भी उसने कंपनी से मर्सिडीज़ ही मांगी हुई है....., और जानते हो, वह अपने ड्राइवर को सफ़ेद वर्दी और सफ़ेद दस्तानों में रहने को कहता है।''

-'' और पात्रा साहेब?''

-''वो तो अपनी गाड़ी से आते हैं, खुद चलाकर और उनका ख़र्चा भी कोई खास नहीं है। हाँ, तनख़्वाह उनकी सॉलिड है।''

-‘‘तो वो भी कम होनी चाहिए।’’

-‘‘जब बोर्ड कम करे तब न!’’

एक दिन बम्बई में गौरव के पास दिल्ली से शब्बीर का फ़ोन आया।

-‘‘क्या हाल चाल है?’’

-‘‘हम वहां हैं जहाँ हमें अपनी ख़बर नहीं होती।’’

-‘‘अच्छा देखो.....पुरी और पात्रा दोनों बम्बई स्टूडियो आने वाले हैं।’’

-‘‘क्यों?’’

-‘‘तुम्हारा प्रोग्राम बंद होने वाला है ।’’

-‘‘अरे.....! और हमें ही मालूम नहीं।’’

-‘‘यहाँ ऐसे ही है। हमारा हो चुका है और अब तुम्हारा बंद होना है। न्यूज़ तो ख़ैर शुरू ही नहीं हुई थी.....तो सुनो, इतनी आसानी से मत जाने देना। थोड़ा तो तुम लोगों को भी रेज़िस्ट करना चाहिए। ये क्या बात हुई कि जब चाहा चैनल खोला, नौकरी दे दी और जब चाहा चैनल बंद कर दिया, नौकरी ले ली।’’

लेकिन ये बात केवल शब्बीर ने ही गौरव से थोड़े ही कही थी। ये बात तो सर्व विदित हो गयी थी और अलग अलग लोगों से सारे स्टाफ़ को ख़बर लग गयी थी। कैमरा मन, स्टूडियो स्टाफ़, टेक्निकल स्टाफ़, सेट वाले सारे के सारे एक एक करके गौरव के पास आये।

-‘‘सर चैनल बंद हो रहा है ?’’

-‘‘पता नहीं.....अभी तक सिर्फ़ सुना सुना है .....पक्का कुछ पता नहीं।’’

लेकिन पक्का होने में कुछ बचा थोड़े ही था। तीन दिन बाद तो ‘नेक्स्ट वीक’ था और पात्रा और पुरी का आगमन था। सारे स्टाफ़ को स्टूडियो फ़्लोर पर पहुँचने के लिए कहा गया। प्रोग्राम वालों को ऑडियंस के लिए लगाई गयी कुर्सियों पर बैठाया गया। पात्रा ने पुरी को आगे कर दिया। पुरी ने सबको सम्बोधित किया। उसने बहुत चतुराई सें ये समझाया के ‘डांस का आपका प्रोग्राम इज़ नॉट वर्किंग’। लेकिन लोग तो अंदर की बात जानते थे। कुछ ने पूछा, ‘‘कहा तो जा रहा है कि बजट के हिसाब से ख़र्चा ज़्यादा हो गया है।’’

-‘‘करेक्ट! जितना आपके प्रोग्राम के लिए एलोकेटेड बजट था उससे दो गुना खर्चा हुआ है।’’

-‘‘मैंने तो,’’ गौरव ने कहा, ‘‘ख़र्चा बजट से आधा किया है।’’

-''बम्बई का स्टूडियो, इंफ्रास्ट्रक्चर, प्रोगरामिंग स्टाफ़ एट्सेटरा सब मिलाकर इट हैज फार एक्सीडेड दी बजट।''

वहां हर बात का जवाब था और बहस का कोई फ़ायदा नहीं था। दोपहर को मीटिंग के बाद दो डायरेक्टर्स गौरव के पास आये।

-''आपने बग़ैर किसी रेज़िस्टेंस के प्रोग्राम बंद करना मान लिया।''

-''क्या करता? लड़ता? गुस्सा दिखाता? कोर्ट में जाता? क्या करता?.....जो होना था हो गया। बग़ैर किसी वैमनस्य के किसी लड़ाई झगड़े के बाई बाई करो और अपना नया रास्ता देखो।''

सब अपने अपने लिए सर्टिफ़िकेट्स के प्रिंट आउट लेकर गौरव से साइन करवा रहे थे ताकि कहीं और नौकरी के लिए अप्लाई कर सकें।

-''सर!'' तपन आया।

-''यस?''

-''सर आज थोड़ी छुट्टी मिलेगी?''

-''कहाँ जाना है?''

-''अँधेरी में सर एक नया चैनल खुला है। मैं गया था एक दिन वहां जब वह चैनल शुरू नहीं हुआ था। अब शायद शुरू हो रहा है।''

-''अरे वो जिसमे मोहन अय्यर डाइरेक्टर है?''

-''आप जानते हैं मोहन अय्यर को सर?''

-''अरे वो प्रोडक्शन मैनेजर था कभी। दिल्ली में मुलाक़ात हो गयी थी।''

-''सर प्लीज़!'' तपन ने गौरव क हाथ पकड़ कर ज़ोर से दबाया, ''मुझे वहां लगवा दो सर.....ये नौकरी तो गयी।''

-''तुम तो कहते हो तुम गए हो वहां, जानते हो उसे?''

-''अरे छोड़ो सर.....मेरा क्या तो जाना और क्या उससे मिलना.....बस आप लगवा दो मुझे।

-''ठीक है....., आई विल टॉक टू हिम.....उसका नम्बर ढूंढना पड़ेगा। उसे क्या चाहिए क्या नहीं चाहिए अभी तो मुझे पता नहीं।''

उस शाम जब तपन ऑफ़िस से निकला तब वह यह मना रहा था कि भगवान करे अँधेरी वाले चैनल में उसकी नौकरी लग जाये, उसे बेकार घर न बैठना पड़े नहीं तो पिताजी उसे कोस कोस मारेंगे। उसी शाम जब और स्टाफ़ ऑफ़िस से निकला तो सबने अपने अपने कॉन्टेक्ट्स को फ़ोन घुमाया, चापलूसी की। गौरव ऑफ़िस से आज ज़रा देर से निकल पाया। उसने अपनी गाड़ी गोरेगाव सिग्नल के ज़रा पहले

खड़ी की। सड़क पार करके दूसरी तरफ़ वाली वाइन शॉप से बियर की एक ठंडी बोतल खरीद कर अपने गेयर लीवर के पास रखी और फिर आहिस्ता आहिस्ता गाड़ी चलाते, बियर की चुस्कियां लेते अपने फ़्लैट की तरफ़ रवाना हो लिया। वह इस असमंजस में था कि अब नौकरी बंबई में ढूंढे या वापस अपने घर दिल्ली चला जाये जहाँ उसके लिए हर सुख सुविधा का सामान मौजूद था।

10

-''ऐसी औलाद से तो औलाद न होना अच्छा है।'' पिताजी ने अपनी पत्नी से अपनी थाली में उंगलियों में लगा चावल झटकते हुए दुखी होकर कहा।

-''क्यों ऐसा अशुभ बोलते हो! लड़का है अपना।''

-''यही तो रोना है कि लड़का है अपना! अच्छी ख़ासी नौकरी लगवा रहा था नेवी में। सारा जीवन तनख़्वाह मिलती, फिर पेंशन मिलती, घर होता, बहू होती, नाती होते, हम लोग बनारस कभी बृन्दावन घूमते.....लेकिन ये नचैया!.....कम्बख़्त.....!.....अब हो गयी कंपनी बंद, छूट गयी नौकरी.....बैठो घर, दलो हमारे सीनो पर मूंग! मैं बुढ़ापे तक भी कमाऊं तो भी कितना कमाऊंगा?.....एक दिन तो उसे कमाना पड़ेगा न.....लेकिन वो तो बस कमाने की जगह नाचने लगेगा!''

-''कमा तो रहा था.....अभी तक तो अच्छी तनख़्वाह थी। अब कंपनी बंद हो गयी तो उसमें उसका क्या क़सूर है।''

-''क़सूर उसका नहीं है.....क़सूर इस धंधे का है। ये नचनिये गवनिये ऐसे ही होते हैं। कमाते हैं तो ख़ूब कमाते हैं, फिर जब नहीं कमाते तो भिखारी से भी बदतर होते हैं।''

रात के आठ बजे जब माँ-बाप में ये बातें चल रही थीं और छोटा लड़का बालकनी में अपनी टेबल लगाए पढ़ रहा था तब दरवाजे की घंटी बजी। तपन दाख़िल हुआ। दाख़िल हुआ कि सन्नाटा छा गया। बातचीत बंद हो गयी। भाई ने किताब/कापियों से नज़र हटाकर तपन की ओर देखना शुरू कर दिया और इंतज़ार करने लगा कि देखें आज पिता-पुत्र का घमासान किस रूप में शुरू होता है। तपन आकर सीधे मेज़ पर बैठ गया।

-''अब क्या?.....क्या सोचा है?'' माँ ने सहमते सहमते पूछा।

-''कल एक दूसरे चैनल में जाना है। वहां मेरे बॉस की जान पहचान का डायरेक्टर है। नौकरी तो मिल ही जानी है।''

-''जब तक मिली नहीं,'' पिताजी ने मेज़ से उठते हुए कहा, ''तब तक मिली करके माना नहीं जा सकता।''

तपन ने तुर्श निगाहों से पिताजी की तरफ़ देखा। माँ ने मामला ताड़ते हुए बात संभाली, बोली, ''कह तो रहा है कि कल दूसरी जॉब मिल जाएगी.....कल तक इंतज़ार तो करना पड़ेगा न!''

हालाँकि गोरेगाँव के चैनल का आख़िरी दिन पांच दिन बाद था लेकिन वहां लोगों ने आना-जाना तकरीबन बंद कर दिया था। जिसका जितना पैसा बनता था वह उसे मिल चुका था। गौरव-जो कभी सुबह नौ के ज़रा पहले ही दफ़्तर आ जाता था-अब ग्यारह बारह तक आता और आधे घंटे कुछ इधर उधर का काम निबटा कर चलता बनता। तपन ऑफ़िस आता तो था लेकिन सिर्फ़ इसलिए कि तमाम लोगों को-जो इस समय काम आ सकते थे-फ़ोन करने के लिए और समय गुजारने के लिए ताकि घर वाले और पड़ौसी उसे 'बेकार' और 'निठल्ला' न समझने लगें।

उस दिन तपन जब घर से निकला तो उसने गोरेगाँव की नहीं घर के सामने से अँधेरी की बस पकड़ी। जिस दफ़्तर में उसे जाना था वह साल भर पहले उसका देखा हुआ था। वहीं जहाँ वह मोहन अइय्यर से ''मैं फ़िल्म इंस्टिट्यूट से आया हूँ'' कहकर मिलने गया था। वीरा देसाई रोड के उस तरफ़ बड़े बड़े इंस्डस्ट्रियल गाले बंद हाल पड़े थे। एक से दूसरे का पहचानना मुश्किल था। लेकिन अपने अंदाज़े से तपन सही जगह पहुँच गया। गौरव ने तपन को साइन किया हुआ अपना एक विजिटिंग कार्ड दिया था इस ताक़ीद के साथ कि जाकर तपन इस कार्ड को अइय्यर को दे दे। उसे यकीन था कि अइय्यर उसे ज़रूर फ़ोन करेगा और तब तपन के बारे में बात की जाएगी।

-''मोहन अइय्यर?'' रिसेप्शन डेस्क पर बैठे एक सिक्योरिटी गार्ड ने कहा, ''अइय्यर साब तो छह महीना हुआ बैंकाक शिफ़्ट कर गया।''

-''तब?'' तपन की समझ में नहीं आया कि अब क्या कहे/करे।

-''तब क्या?''

-''मैं किससे मिलूं?.....यहाँ कोई एच.आर. कोई और डाइरेक्टर.....''

-''सामने जाओ लेफ़्ट में डिसिल्वा साब बैठा है, उधर मिलो।''

तपन अंदर की ओर चलने को हुआ कि सिक्योरिटी वाले ने आवाज़ लगाकर कहा, ''ए....! ये लो.....पास लेते जाओ.....और लौटते में सई करा के लाना।''

डिसिल्वा गंजे सर का सांवला सा नौजवान था जो बार बार अपनी छोटी छोटी मूंछों पर उँगलियाँ फेरता रहता था और अपने नाक पर उतरते रह रहे चश्मे को चढ़ाता

रहता था। वह एक मामूली डेस्क पर बैठा अंग्रेज़ी अख़बार देख रहा था। तपन के दो बार 'मिस्टर डिसिल्वा' पुकारने पर उसने नज़र उठाकर देखा। तपन ने बताया कि वह चैनल में रिसर्चर है और चैनल बंद हो जाने के कारण नौकरी ढूंढ रहा है।

-''रिसर्चर ! नोनो.....वी डोंट नीड रिसर्चर।''

-'' यहाँ कोई डाइरेक्टर, अफ़सर, एच. आर.....कौन है ? मैं उनसे मिल लेता हूँ।''

-''सब हाय, पन अबी कोई नई हाय.....अभी अम ही हाय.....नाउ गो।... ..थैंक यू।''

-''इतना बड़ा ऑफ़िस है, चैनल है और मालिक सिर्फ़ आप हैं.....और कोई नहीं है?''

-''सब हाय न बाबा! लेकिन अबी कोई नई हाय.....नवा नवा हाय नई.... .बन रा हाय.....सब लोग दो तक आयेंगा !''

-''यहाँ का इंचार्ज कौन है?''

-''तुम को क्या करने का हाय?''

-''डिसिल्वा साब !'' तपन ने झुक कर डिसिल्वा के चेहरे के सामने आकर बड़े दर्द से कहा, ''नौकरी चली गयी बॉस.....चैनल बंद हो गया.....नौकरी ढूंढ रहा हूँ।'' डिसिल्वा ने अपनी नाक पर चश्मा चढ़ाकर आंखे फाड़कर उसे देखा।

-''सर गॉड न करे कि ये चैनल बंद हो, गॉड न करे आपकी नौकरी कभी जाये'' तपन ने बहुत भावुक होकर कहा, ''हेल्प ए फ्रेंड इन नीड मिस्टर डिसिल्वा. ....गॉड सीज़ एव्री गुड डीड।''

डिसिल्वा ने अख़बार मेज़ पर पटककर, नाक सिकुड़कर मूंछों पर उँगलियाँ फेरीं, चश्मा चढ़ाया और भृकुटि सिकोड़ कर तपन की आँखों में झाँका फिर आँखें मिचमिचाकर बोला, ''सॉरी मैन.....यु आर रियली इन नीड! ऐसा करो, तीन बजा आओ.....मैं तुम को मैडम से मिलाता.....सारा काम मैडम देखता हाय।''

तपन सीधे खड़ा हो गया, ''कौन मैडम''

-''मैडम! .....सीता केसवानी!''

-''तीन बजे!'' तपन ने अपना बड़ा सा पंजा डिसिल्वा की तरफ़ बढ़ा दिया, ''थैंक यू मिस्टर डिसिल्वा! गॉड विल ब्लेस्स यू।''

इस समय दिन के साढ़े ग्यारह बजे थे। तपन सोचने लगा कि तीन बजे तक वह समय कैसे काटेगा और जब उसकी मुलाकात सीमा केसवानी से होगी तो वह उससे कहेगा क्या ! अपना बायोडाटा भी तो वह लाया नहीं। वह तो इस उम्मीद से

आया था कि अइय्यर और गौरव फ़ोन पर बात करेंगे और बस उसकी नौकरी पक्की।

दफ्तर से बाहर निकलकर तपन आसमान की ओर देखकर सोचने लगा कि अगर यहाँ कुछ नहीं मिला तो वह वर्ली वाले उस चैनल में जायेगा जहाँ वह पहले तब गया था जब चैनल शुरू नहीं हुआ था। अब तो चैनल शुरू भी हो चुका है और चल भी निकला है। पिछले साल भर की नौकरी में, उसने सोचा, कितना इत्मीनान सा हो गया था। फिर उसने लम्बी सांस भरकर सोचा कि उसका भाग्य ही ऐसा है। भाग्य की बात से उसे याद आ गया अपना पुराना दोस्त राजन नटराजन जिसने कभी उससे कहा था कि अपने भाग्य को मत कोस, तेरा भाग्य बहुतों से बहुत अच्छा है। उसे याद आया कि वह इसी दफ्तर में डेढ़ साल पहले जिस राजन के कहे से मोहन अइय्यर से मिलने आया था उसी से यह बात उसने छुपाई थी। तपन को अपने ऊपर थोड़ी कोफ़्त हुई लेकिन उसकी आदत थी कि वह अपने किये के बारे में ज़्यादा विचार नहीं करता था। जो कर दिया वह कर दिया, जो कह दिया वह कह दिया, हो गया,.....अब उसके बारे में सोच सोचकर समय और मन ख़राब क्या करना। इस तरह ख़्यालों में डोलता उतराता तपन मेन रोड पर आ गया। उसने सोचा कहीं कोई ढंग की जगह मिल जाये तो कुछ खा लिया जाये। छोटी मोटी खाने की जगहें दिखीं जो कि रेस्टोरेंट और ढाबे के बीच की तरह कुछ थीं। एक आध में उसने अंदर जाकर देखने की कोशिश भी की लेकिन उसे इनकी सफ़ाई पर शक हुआ। फिर दिखाई दिया कोने पर एक बांकड़ा जहाँ वड़ा पाव और चाय बिक रहे थे और जहाँ लोगों की बेतहाशा भीड़ जमा थी। तपन उस बांकड़े तक गया। उसने सोचा एक चाय पी ली जाये लेकिन फिर इरादा बदलकर वह दूसरी दिशा में बेमतलब सा चल दिया। सड़क के दोनों तरफ़ बेतरह खुदाई चल रही थी, बिल्डिंगें बन रही थीं और धूल ही धूल उड़ रही थी। उसने किसी तरह बचते बचते आगे बढ़ने की कोशिश की लेकिन जाना तो कहीं था नहीं इसलिए वह दफ़्तर में वापस आ गया। सिक्योरिटी के बग़ल में एक पुराना सा सोफ़ा पड़ा था जिस पर जाकर वह यह सोचकर बैठ गया कि अब तीन बजे तक यहीं बैठेगा। सिक्योरिटी वाला कुछ देर चुप रहा लेकिन बाद में उसने तपन को वहां से उठने को कहा।

-'डिसिल्वा सब ने बोला बैठो।''

-''डिसिल्वा सब ने बोला बैठो?''

-'' सीमा केसवानी मैडम तीन बजे आएगा तब तक बैठो।''

-''तुम को सीमा मैडम से मिलना है?''

-''हाँ जी!''

इसके बाद सिक्योरिटी वाले ने न कुछ पूछा न कहा।

डेढ़ बजे के बाद तमाम और लोगों का आना शुरू हुआ। जिसमे कुछ वे भी थे जो उसकी चैनल में भी काम मांगने के लिए चक्कर लगा चुके थे या प्रोग्रामों में हिस्सा लेने के लिए आ चुके थे। कुछ तपन के सहयोगी-जिनकी नौकरियां चली गयीं थीं—भी आ रहे थे। अभी तक जिस आसानी से तपन बैठा रहा था अब उसे यहाँ बैठना दूभर लग रहा था। तमाम लोगों के सामने अपनी बेकारी की सत्यता को उजागर करना उसे असह्य लगा। उसकी तबियत ऊब गयी और उसे लगा कि उसे यहाँ से उठकर फ़ौरन चले जाना चाहिए। लेकिन वह पहले भी तो बाहर गया था! तो अब भाग कर जायेगा कहाँ!

ढाई के आसपास एक बहुत तेज़ किस्म की तीस बत्तीस वर्षीय महिला दाख़िल हुई। ऊंची एड़ियों के सैंडल, एक चुस्त स्लैक्स, ढीली शर्ट, ऊपर से गले में लपेटा इधर उधर लटकता हुआ लम्बा सा दुपट्टा नुमा, माथे पर बड़ा सा गोल बरगंडी रंग का टीका, हाथों और गले में सोने की मोटी मोटी चेनें, आँखों में बेफ़िक्री, चाल में तुर्शी के साथ मस्ती और एक कंधे पर लटकता चमड़े का मोटा सा ढीला ढाला बैग लिए ख़ुश्बू बखेरती इस महिला ने बग़ैर इधर उधर देखे जब दफ्तर में क़दम रखा तो सिक्योरिटी वाला भी 'नमस्ते मैडम' कहकर खड़ा हो गया। तपन समझ गया की हो न हो यही सीमा केसवानी है। लेकिन इस महिला के तेवर देखकर उसका आत्मविश्वास जो अब थकने लगा था कम भी हो गया। 'पास' तो सिक्योरिटी वाला कह ही चुका था कि जो पहले लिया है वही चलेगा इसलिए तपन उठा और अंदर चलने लगा। लेकिन अंदर 'मैडम' से मिलने के लिए पहले से ही लाइन लग चुकी थी। बहुत देर बाद डिसिल्वा की मेहरबानी से तपन की एंट्री हुई।

-''यू आर ए रिसर्चर, वी डोंट नीड ए रिसर्चर,'' मैडम ने बग़ैर तपन की तरफ़ देखे मेज़ पर कागज़ समेटते हुए सपाट सा कहा।

-''एवरी वन नीड्स रिसर्चर!'' तपन को अपने वाक्य पर स्वयं ताज्जुब हुआ। लेकिन वह थक चुका था और उसके मन में सारे लिहाज़ ख़त्म हो चुके थे। अब वो इस नौबत पर आ चुका था कि 'नौकरी देना है तो दो वरना...'। केसवानी ने जवाब सुनकर काग़ज़ समेटना बंद करके, सर उठाकर तपन की ओर एक सेकंड को देखा। फिर कहा, ''हम एंटरटेनमेंट चैनल हैं.....प्योर एंटरटेनमेंट चैनल.....और वो भी फ़िल्म एंटरटेनमेंट। फ़िल्में हम इंटरनेशनल लाने वाले हैं। हमें क्या रिसर्च की ज़रुरत हो सकती है ?''

-''मेरा तजुर्बा चैनल में प्रोग्राम और टैलेंट रिसर्च का है लेकिन मेरा तजुर्बा कोरिओग्राफ़ी और टेक्निकल एक्सपर्टीज़ का भी है। मैं किसी भी चैनल के लिए मल्टी यूजफुल शख़्स हूँ। मैं डायरेक्ट कर सकता हूँ, एडिट कर सकता हूँ,.....आप जो फ़िल्मे लायेंगे उनको इस देश में वैसे की वैसे तो दिखा नहीं पाएंगे, उन्हें चेक करके, एडिट करके दिखाना पड़ेगा.....अपनी सोसाइटी ही ऐसी है.....और उसके लिए मैं आपके काम का हूँ।''

सीमा ने तपन के आत्मविश्वास को आंकते हुए उसे एक पल घूरकर कहा, ''तुम नौकरी मांगने आये हो और अपना बायोडेटा भी नहीं लाये।''

-''मुझे मालूम नहीं था कि मुझे आपसे मिलना पड़ेगा नहीं तो ज़रूर लाता।''

-''तुम परसों इसी वक्त बायोडेटा लेकर आओ तब बात करेंगे। ओ के !''

तपन को अपनी बायोडेटा न लाने की ग़लती का एहसास हुआ। उसने सर हिलाकर मैडम से विदा ली। अब उसे लगा कि उस बांकड़े वाले से ही सही एक वड़ा-पाव खा लिया जाये। फिर उसके बाद वह चलता हुआ अँधेरी स्टेशन आया और पुल पारकर के ईस्ट में आकर उसने घर आने के लिए कांजुरमार्ग की बस पकड़ी।

-''अरे! तुमी एखाने?'' तपन ने उसे देखकर कहा। लड़की ने भृकुटी चढ़ाकर सर उसकी तरफ़ मोड़ते हुए एक गन्दा सा लुक दिया। लेकिन फ़ौरन ही उसका वह लुक मुस्कराहट में बदल गया।

-''हैं! .....तुमी एखाने?!'' माधुरी थी—जिसका रिश्ता लेकर उसके माँ-बाप कभी तपन के घर आये थे। उस दिन के बाद दोनों की यह दूसरी इत्तेफ़ाक़न मीटिंग थी। डेढ़ साल गुजर गया तो भी शक्ल तो दोनों एक दूसरे की पहचानते ही थे। माधुरी शायद अँधेरी से ही लेकिन तपन से पहले बस में चढ़ गयी थी और उसे बैठने के लिए सीट भी मिल गयी थी। तपन खड़ा था।

-''बैठिये।'' माधुरी ने उठते हुए कहा।

-''ना ना.....'' तपन ने अपना पंजा माधुरी के कंधे पर रखकर कहा, ''तुमी बोशो।''

आज दोनों बहुत दिनों बाद बिला किसी मुखौटे और बिला एक दूसरे के अप्रूवल की प्रत्याशा के मिल रहे थे इसलिए 'फ़्री' थे और उन्मुक्त थे। बम्बई की भीड़भरी बस में मुसाफ़िर जितनी बात कर सकते थे उतनी बात होती रही- इधर उधर की।

माधुरी ने ऑर्गनाइसेशनल बिहेवियर (एच. आर.) में मैनेजमेंट डिप्लोमा पूरा

कर लिया था और जैसा कि वह चाहती थी—अँधेरी ईस्ट में एक चैरिटेबल संस्था से - जहाँ तक़रीबन पचास से साठ लोग काम करते थे—जुड़ गयी थी। तनख़्वाह उसकी बहुत कम थी लेकिन उसे पैसे से ज़्यादा आत्म-सुख और जन-सेवा की संतुष्टि थी।

-''तुम को कुर्ला रहती हो, बस तो यहां से कुर्ला की भी जाती है।''

-''हाँ जाती है लेकिन मुझे आज एक काम से पवई जाना है।''

तपन ने शायद हंसी हंसी में कहा, ''हमारा मिलना लिखा था।''

-''हंहंहंहं.....''

फिर तपन ने बताया कि वह अब शायद अँधेरी वाली चैनल में काम करने जायेगा। हाँ ये उसने नहीं बताया कि उसकी नौकरी चली गयी है और वह दूसरी नौकरी ढूंढ रहा है ।

-''चलो, घर चलो।'' तपन ने न्यौता दिया।

-''पवई में काम है।''

-''तो पवई के काम के बाद सही।''

-''घर पर देर हो जाएगी। फिर किसी दिन।''

लेकिन दोनों में पता नहीं किस दैवी कैमिस्ट्री ने काम किया कि पवई उतरते समय माधुरी ने तपन से कहा, ''दो मिनट का काम है, आते हो?'' और तपन साथ हो लिया। उसके बाद दो घंटे वे दोनों साथ रहे— चाय पीते, पवई झील के किनारे किनारे चलते एक बस स्टॉप से दूसरे फिर तीसरे चौथे को पार करते हुए। मुलाक़ात ने दोनों की जान पहचान को दोस्ती तक ला दिया। इसके बाद बेतक्लुफ़ी यों बढ़ी कि एक दूसरे से लगातार मिलते रहने के सिलसिले बन गए। घर वालों को इन मुलाक़ातों से क्या सरोकार!

परसों जब तपन सीमा केसवानी से मिलने पहुंचा तो वहां कई लोग बैठ हुए थे। सीमा पहले तो तपन को पहचान नहीं पायी फिर बाद में उसने बड़ी बेफिक्री से उसका बायोडेटा बग़ैर देखे रख लिया। तपन जिन उम्मीदों को बांधकर आया था सब हवा हो गयीं। लेकिन आज तपन सोचकर आया था कि अगर यहाँ नहीं तो कहीं तो उसके लिए काम होगा। उसने बाहर आकर तैंतीस नम्बर की बस पकड़ी और पहुंचा सीधे वर्ली वाले टी.वी. चैनल के दफ्तर।

-''यू आर ए डाइरेक्टर?''

-''आई एम् !'' तपन ने कहा।

-''बट वी आर लुकिंग फॉर एडिटर्स।''

-''आई एडिट।''

-''ऐसे कैसे? या तो डाइरेक्टर हो या एडिटर हो.....तुम सब कुछ कैसे हो सकते हो?''

तपन ने एच.आर. वालों की बुद्धि की मन ही मन 'तारीफ़' की फिर कहा, ''आई डाइरेक्ट एंड एडिट माई ओन प्रोग्रम्मेस।''

-''ओह ओह'' फिर एच. आर. वाली कन्या ने अपना गिरता हुआ दुपट्टा सँभालते हुए, सर मोड़कर और हाथ के इशारे से तपन को एक तरफ़ जाने के लिए इशारा करते हुए कहा, ''गो एंड मीट नरेंद्रबाबू। वो टेक्निकल इंचार्ज हैं।''

नरेंद्रबाबू छोटे क़द का उडीपी से आया हुआ, मोटा चश्मा चढ़ाये वो शख़्स था जो कभी दूरदर्शन में था और वी.आर.एस. लेकर अच्छी तनख़्वाह के चक्कर में चैनल में आया था। नरेंद्रबाबू से बातचीत में कोई ख़ास वक़्त नहीं लगा और इधर उधर की पूछताछ के बाद तपन को दो दिन बाद जॉयन करने को कह दिया गया।

-''टेम्पोररी है । वीकली कॉन्ट्रैक्ट। महीना भर बाद बोले तो परमामेंट हो भी सकता है।''

-''नो प्रॉब्लम !'' तपन ने मन ही मन शुक्र मनाया।

-''पैसे की बात, कॉन्ट्रैक्ट की बात वोई लेडी करेगा जिससे आप अबी मिलाता.....वोई।''

हफ़्तावार कॉन्ट्रैक्ट के हिसाब से तपन को जो अभी तक तनख़्वाह मिलती थी उससे एक हज़ार रूपए कम पड़ते थे। लेकिन यह तो सिर्फ़ चार हफ्तों की बात थी। उसके बाद, उसने सोचा, सब ठीक हो जायेगा।

ज्वाइन करते साथ नरेंद्रबाबू ने तपन को प्रोमो डिपार्टमेंट में रखवा दिया यह कह कर कि ''यह लड़का डायरेक्शन भी जानता है और एडिटिंग भी.....तुम्हारे काम का है। कितने काम का है यह तुम देखो और मुझे बताओ।'' उसके ज्वाइन करते साथ प्रोग्रामिंग चीफ़ प्रियंका घोषाल ने प्रोमो डिपार्टमेंट की मीटिंग ली। प्रोमो डिपार्टमेंट में तपन मिलाकर तीन लोग हो गए थे।

-''मुझे ऐ क्लास प्रोमो चाहिए.....इंटरनेशनल.....ड्रामा से भरपूर और स्लीक।''

-''मशीने कहाँ हैं'' एक ने कहा, ''ले दे के दो मशीने हैं, सब काम उन पर हो रहा है।''

-''समय कहाँ है'' दूसरे ने शिकायती स्वर में कहा, ''समय दो हम बना सकते हैं। समय तो प्रोगम्मिंग देता नहीं। अभी प्रोग्राम का टेप दिया, शाम तक प्रोमो चाहिए.....ऐसा थोड़े ही होता है।''

-''न मशीनें मिलेंगी न टाईम, फिर भी हो सकता है क्या.....'' प्रियंका घोषाल

ने अपनी सिगरेट सुलगाकर धुआं छोड़ते हुए धमकी वाले स्वर में पूछा।

सब चुप रहे। प्रियंका ने हिकारत से 'छिः' किया और वहां से उठकर चल दी। एडिटर्स ने एक दूसरे की तरफ़ देखा और अपने सरों को झटका देकर प्रियंका को नाम धरा। तपन चुप रहा। आधे घंटे बाद तपन ने जाकर प्रियंका के केबिन नुमा दड़बे के सामने जाकर हैलो किया।

-''व्हाट.....हू आर यू....''

-''एडिटर।''

-''सो''

-''मैं ऐ क्लास प्रोमो बना सकता हूँ।''

-''ओके.....गो एंड टेल नरेंद्रबाबू।''

प्रियंका ने बड़ी बेदिली से अपने आपको व्यस्त जताते हुए कहा। प्रियंका घोषाल की केबिन से लौटते समय तपन को अपने आप पर ग्लानि हुई कि आख़िर वह इसके पास आया ही क्यों। वह तो सोच रहा था कि प्रियंका उसे हाथों हाथ लेगी और उसे अपना फ़ेवरिट समझकर अच्छा काम देगी लेकिन यहाँ तो किसी को कोई फ़र्क़ ही नहीं पड़ता। उसने निश्चय किया कि इस बार जब हफ़्ते का ब्रेक आएगा तब वह अँधेरी वाले चैनल का चक्कर फिर लगाएगा। और यदि गौरव अभी बम्बई में ही है तो वह जाकर उससे भी मिलेगा-गौरव का उस पर बढ़ावा देने और सिखाने का बड़ा एहसान है। लेकिन सप्ताह कब समाप्त हो गया, कब दूसरा शुरू हो गया पता ही नहीं चला। एडिटिंग का काम ही ऐसा है– सुबह कमरे में घुसे और काम करते करते कब रात हो गयी पता नहीं.....रात से कब सुबह होने को आई पता नहीं। अंदर मशीनों और प्रोग्राम के टेपों के बीच बाहर से न रौशनी आती थी न आवाज़ और न ही कोई शख़्स जिसकी वहां जरूरत न हो। कमरे से बाहर केवल शारीरिक ज़रूरतों और खाने के लिए ही निकला जाता था– वह भी मुश्किल से मिनटों के लिए। उस पर भी काम समाप्त करने का प्रोग्रामिंग का प्रेशर बना रहता था– हर दम। इसी में तपन के चार सप्ताह कब समाप्त हो गए पता नहीं चला और नरेंद्रबाबू ने उसे परमानेंट करने की ताक़ीद कर दी। वह भी उनकी मजबूरी थी क्योंकि ट्रेंड वीडियो एडिटर्स आसानी से मिल नहीं रहे थे। परमानेंट होने के बाद तपन ने पहला फ़ोन घुमाया। -''कैन आई टॉक टू माधुरी प्लीज़!'' और जब बहुत देर तक तपन फ़ोन पर माधुरी से बात करता रहा तो चैनल के रेस्पॉन्स डिपार्टमेंट की लड़की ने मज़ा लेकर कहा, ''क्या बात है तपन! फ़ोन पर ही पैंट गीली कर रहा है। अरे जा के मिल.....जा के मिल!'' लेकिन

तब तक मीटिंग तय हो चुकी थी— सायन स्टेशन के सामने वाले उडीपी होटल हनुमान में इस संडे शाम के चार बजे। सायन इसलिए कि यह दोनों के लिए आसान होगा-माधुरी के लिए कुर्ला से और तपन के लिए कांजुर से। पवई की मीटिंग के बाद जो दोस्ती और बेतक्कुलफ़ी पैदा हुई थी वो अब तक और बढ़ चुकी थी और अच्छे दोस्त के आलावा ये दोनों एक दुसरे के कामों और तौर तरीकों पर भी छींटा कशी, हंसी मज़ाक़ और तनक़ीद तक आ चुके थे। लेकिन इस सब के पीछे एक दूसरे से निस्बत और एक दूसरे के लिए 'केयर' का जज़्बा सर्वोपरि था। अब एक दूसरा एक दूसरे से वो दिल की बात कर सकता था जो शायद बहुतों से नहीं की जा सकती थी।

-''तुम अँधेरी वाली चैनल में फिर गए ही नहीं !'' माधुरी ने इडली चम्मच से तोड़कर सांभर में डुबोते हुए तपन की तरफ़ देखे बग़ैर ही पूछा।

-''अब यहाँ मिल गया है तो सोचा.....''

-'' और वो लोग तुम्हें ढूंढ रहे हों तो?''

-''वो क्या ढूंढेंगे.....गौरव जी के मित्र वहां हैं नहीं.....सीमा केसवानी इतनी बात करने के बाद भी इतनी इंडिफेरंट निकलीं।''

-''अरे छोड़ो यार गौरव जी को और छोड़ो सीमा केसवानी को- वो तुम्हारे काम नहीं आने वाले। तुम्हारे काम आने वाले हो सिर्फ़ तुम और तुम्हारा काम।'' माधुरी ने तपन की ओर अपनी तर्जनी हिलाते हुए कहा।

-''तो?''

-''तो ! आई विल टेल यू.....बट बिफ़ोर दैट.....ये बताओ कि क्या तुम इस एडिटिंग जॉब से खुश हो? यही तुम करना चाहते हो?''

-''अरे टाइम पास है यार.....आई वांट टू बी ए डाइरेक्टर.....लेकिन एडिटिंग भी डायरेक्शन का पार्ट है .....सो नो कम्प्लेंट्स।''

-''तो एडिटिंग में अटके हुए मिस्टर डाइरेक्टर तुम एक बार जाकर उस अँधेरी वाले चैनल से मिल आओ.....हो सकता है वे तुम्हें डाइरेक्टर की जगह दे दें.....या और कुछ इससे अच्छा। जा के मिलोगे नहीं तो पता कैसे लगेगा कि उनके मन में क्या है ?''

तपन ने एक पल नज़र भर कर माधुरी की ओर देखा और फिक्क से हंसकर बोला, ''यु आर आलरेडी बिहेविंग ऐज़ ए वाईफ़!'' माधुरी थोड़ी शर्मा गयी। फिर बोली ''आई एम टेलिंग यू दी ट्रुथ।'' तपन ने माधुरी का हाथ अपने दोनों हाथों से पकड़कर कुछ देर दबाये रखा और फिर धीरे से कहा, ''यु नो यु आर एन ऑनेस्ट

गर्ल।'' फिर तपन फिर हंस दिया और हँसते हुए कहने लगा, ''तुम बंगाली कैसे पैदा हो गया !''

-''क्यों बंगाली क्या ऑनेस्ट नहीं होता? शेम ऑन यू फॉर सेइंग सच ए थिंग।''

-''यू नो आई डोंट मीन दैट.....आई मीन तुम बंगाली नई होता तो मेरे घर नई आता.....नई आता तो हम मिलता नई.....मिलता नई तो मैं तुम्हारे साथ यहां बैठकर इडली कैसे खा रहा होता?!'' दोनों हंस दिए। लेकिन उस शाम माधुरी की बात तपन के ज़हन में उतर गयी। अँधेरी वाले चैनल में चक्कर लगाना चाहिए। लेकिन उसके लिए समय चाहिए और समय तो यहां मिलता नहीं। दूसरे दिन-सोमवार को– सुबह सुबह नरेंद्रबाबू को तपन ने पब्लिक बूथ से मुंह पर रुमाल बांध कर फ़ोन किया। सर दर्द का बहाना बनाकर आज न आने की बात कही। फिर घर वापस आकर तैयार होकर अँधेरी की बस पकड़ी और चला गया सीधे चैनल के ऑफ़िस।

-''रिसर्चर की जगह हमारे पास है नहीं.....आई टोल्ड यू।'' सीमा केसवानी ने अपने बालों में बड़ा सा कंघा फेरते हुए कहा।

-''बट आई एम नाउ ए प्रोमो इंचार्ज।''

-''प्रोमो !.....इंचार्ज.....!'' सीमा ने कुछ सोचा

-''रिसर्चर तो कभी था.....अब तो मैं डाइरेक्टर कम एडिटर हूँ।''

-''आई सी.....ओके.....मीट मी टुमारो.....मुझे कंपनी के डाइरेक्टर से बात करने दो।''

-''कल तो काम पर जाना होगा.....आज नहीं गया.....कल भी नहीं जाऊँगा तो चैनल का कितना नुकसान होगा।''

-''तो परसों आओ।''

तपन को लगा कि ये मामला तो हाथ से निकलता जा रहा है। वो बोला, ''ओ के कल आता हूँ,, कोई फ़ोन नंबर देंगी यहाँ का?''

-''हाँ ले लो.....लेकिन यहाँ एक ही फ़ोन है और उस पर या तो लगातार फ़ोन आते रहते हैं या यहाँ के लोग करते रहते हैं, देख लो।''

-''ठीक है, मैं कल आता हूँ।''

दूसरे दिन जब तपन पहुंचा तो चैनल की सीईओ ने उसे सीधे कम्पनी के डाइरेक्टर देब ब्रतदत्ता के पास भेज दिया। दत्ता का परिवार कभी ढाका-जब वह बांग्लादेश नहीं था–से कलकत्ता आकर बस गया था। अंग्रेज़ी पढ़ाई लिखाई और

अंग्रेज़ों की तारीफ़ करते उन्होंने बहुत बड़ा कारोबार, बहुत सी संपत्ति और बहुत इज़्ज़त कमाई। लेकिन रखा हुआ तो कुछ भी सदैव चलता नहीं। दादाजी के मरने के बाद भाई भाई संपत्ति को लेकर लड़ पड़े और बटवारे में जो मिला वह विलासता के कारण उड़ गया। देबब्रत के पिता तीसरी पीढ़ी थे और उन्होंने अपने जीवन में आराम/आसाइश भी देखा था और संपत्ति जाने के बाद मेहनत करके जीने का समय भी देखा था। उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ने लिखने और अपने बूतेपर आगे बढ़ने के गुण सिखाये। देबब्रत ने मैनेजमेन्ट पढ़ने के बाद कई सालों तक हिंदुस्तान लीवर्स में काम किया। उसके बाद कुछ दिन वह सा. रे. गा. मा. (पहले एच.एम.वी.) में सी.ई.ओ. रहा। वहां के उसके काम को देखकर इस अंतर्राष्ट्रीय कंपनी वालों ने अपने चैनल में उसे अब तक के सबसे ऊंचे पैकेज पर डाइरेक्टर का ओहदा दिया था। वे जानते थे कि ये शख्स चैनल को ऊंचाइयों तक ले जायेगा।

दत्ता ने तपन का बायोडाटा देखा न कोई सवाल पूछा। सिर्फ तपन ने जो उससे कहा वो सुना। वह भी मुश्किल से तीन मिनट और फिर 'ओके' कहकर उसने इण्टरकॉम से एक मिस्टर नायर को बुलाकर उससे तपन को ले जाकर ज्वाइन करवाने को कहा।

-''एंड बिफोर यू गो,'' दत्ता ने जाते हुए दोनों के पीछे से ज़ोर देकर कहा, ''परसों अँधेरी स्टेडियम में माइकेल जैक्सन का प्रोग्राम है। आई वांट यू टू कवर दैट विथ एटलीस्ट सिक्स कैमरा शूट।''

-''परसों?'' तपन ने भरपूर ताज्जुब से कहा, ''प्लानिंग का टाइम.....''

दत्ता ने जैसे कुछ सुना नहीं। वह बात काटकर बोला, ''जस्ट डू इट।''

नौकरी दे रहा था। बॉस था। मना करना तपन के हक़ में नहीं था।

नायर ने तपन को चलने का इशारा किया और दोनों दत्ता साहेब की कैबिन से बाहर आ गए। तपन सीमा से मिला। ''परसों कैसे होगा? एक तो मुझे चैनल में जाकर रिज़ाइन करना पड़ेगा दूसरे इवेंट कवर करने के लिए प्लानिंग करनी पड़ेगी। मैंने तो स्पोर्ट्स क्लब तक देखा नहीं.....कैमेरा, साउंड.....''

-''कैन यु डू इट और यु कॉंट?'' सीमा ने बात काटते हुए पूछा।

-''आई कैन.....बट.....''

-''दैन डू इट। हाउ यु डू इट इज़ योर प्रॉब्लम। हाँ ! जहाँ तक कैमेरा साउंड और बाकी क्रू का सवाल है वो कुछ तो हमारे स्टाफ़ में हैं कुछ तुम हमारे प्रोडक्शन को ऑर्डिनेटर हीरा लाल जी के साथ ऑर्गनाइज़ कर लो। ओके !''

मिलती हुई नौकरी और वह भी अपनी पुरानी तनख्वाह से पांच हज़ार रूपए ज़्यादा की नौकरी कौन हाथ से जाने देता। 1995 का जमाना था पांच हजार में तो एक परिवार का एक महीना कट जाता था। तपन ने सारी शर्तें मंजूर कर लीं। हीरालाल से 'दादा- दादा' कह कर कुछ इस तरह बात की कि तपन की लाज बचाने का ज़िम्मा उन्होंने पर्सनली अपने ऊपर ले लिया।

दूसरे दिन जाकर वर्ली वाले चैनल से रिज़ाइन किया गया। नरेंद्रबाबू ने बहुत सुनाया, एथिक्सपर लेक्चर दिए लेकिन अभी अग्रीमेन्ट तो बना नहीं था इसलिए कुछ कर तो सकते नहीं थे। फिर सारी भड़ास निकालने के बाद उन्होंने तपन के सर पर हाथ फेर कर कहा, ''जा यार! जवान आदमी है, तेरे कैरियर का सवाल है। तू छोकरा अच्छा है लेकिन साला चालू है''। तपन ''हंहंहंहं'' करते वहां से निकल लिया। हिसाब पंद्रह दिन बाद मिलेगा तो कोई बात नहीं।

माधुरी को फ़ोन करके तपन ने अपनी परेशानी साझा की तो माधुरी जैसे उफन पड़ी।

-''हर चीज तुम को कोई प्लेट में रखकर देने वाला नहीं है । ऑड से लड़कर ही रास्ता ऊपर जाता है। सक्सेस चाहिए तो उसका प्राइस पे करो। तीन दिनों की तो बात है। तुम तो ये सब किया है.....किया है न !''

-''इतना टेंशन में टाइट शेड्यूल मे तो कभी कुछ किया नहीं।''

-''तो अब करो.....तुम्हारा कुछ जाता नहीं है.....कर लिया तो सक्सेस तुम्हारी!''

-''नहीं कर पाए तो?''

-''नहीं का तो सोचो भी मत। यू कैन डू इट! मुझे भी तुम प्रोग्राम के बाद फ़ोन करना। ऑल दी बेस्ट !''

तपन चार्जड हो गया। माइकेल जैक्सन और उसके ट्रुप से मिलने का जितना एक्साइटमेंट था उतना ही 'काम कैसे होगा' का डर भी उसके अंदर था। लेकिन वह तो सारी टीम के मन में था।

स्टेडियम जब देखा गया तब वहां सेट लगना शुरू हो चुका था। साऊंड चेक हो रही थी। इसलिए कैमरा पोज़ीशन करने में और केबिल बिछाने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं आयी। क्रू मे ज़्यादातर फ़्री लांसर्स थे। छह में से दो कैमरा वाले वे थे जो पिछली चैनल में तपन के सहयोगी रह चुके थे।

-''सम्भाल लेना बॉस! डर लग रहा है।'' तपन ने उन दोनों से बड़ी आत्मीयता से कहा।

-''तझे ब्रेक मिला है, तू अपना संभाल। शॉट्स की चिंता मत कर। वो हम देख लेंगे।''

-''स्विचर कौन है?'' तपन ने पूछा।

-''डोंट एडिट ऑनलाइन। सारे कैमरों से रिकॉर्ड कर लो टेबल पर एडिट करेंगे। बाद मे।'' सीमा ने शान जताते हुए कहा।

-''चार घंटे का प्रोग्राम, छह कैमरे और एडिटिंग बाद मे? मरने वाली बात है। थिंक अबाउट इट।''

सीमा को लगा उसने कुछ ज़्यादा ही कह दिया। बोली, ''तो? व्हाट यू सजेस्ट?''

-''एक कैमेरा कंटीन्यूअस रिकॉर्डिंग पर रखिये, जरूरत पड़ी तो उसे काटेंगे अदर वाइज़ ऑन-लाइन एडिट करके प्रोग्राम बनाइये। विज़न मिक्सर तो है न आपके पास?''

-''ओके.....बट यू शैल बी रेस्पोंसिबल फॉर दिस।'' सीमा कहकर चली गयी। तपन को और डर लगा लेकिन पीछे से हीरा लाल ने उसके कंधे पर हाथ रखकर आँख मार दी। बोला, ''अल्टीमेटली दत्ता साहेब देखेंगे, डोंट वरी। तुम समझ गए न कि सीमा को प्रोग्रामिंग का कितना आता है।''

दूसरे दिन सुबह से तीसरी रात तक-रिकॉर्डिंग समाप्त होने तक -कोई घर नहीं जा पाया। प्लानिंग, रिहर्सल, टेक्निकल अडजस्टमेंट्स और फिर रिकॉर्डिंग। न खाने का समय न सोने का। रात के बारह बजे जब रिकॉर्डिंग समाप्त हुई उसके बाद बाक़ी सब तो चले गए घर, तपन टेप लेकर सीधा गया एडिटिंग रूम में। उसने टेप चेक किये, लाइन से लगाए और दूसरे दिन से एडिटिंग का समय तय किया।

रिकॉर्डिंग के बाद पांचवें दिन जब फ़ाइनल प्रोग्राम तैयार हुआ तो सीमा केसवानी और देबब्रत दत्ता को देखने के लिए बुलाया गया। प्रोग्राम ए क्लास तो नहीं था लेकिन ठीक ठाक था।

-''टेलीकास्ट के क़ाबिल है? 'दत्ता ने सीमा से पूछा।

-''चलेगा।''

-''चार घंटे का है.....आधे आधे घंटे के कितने एपिसोड बनेंगे?''

-''आठ तो मोठे तौर पर.....दस एपिसोड आराम से।''

-''टॉक टू दी मार्केटिंग गाइज़.....गैट स्पोंसर्स.....एंड लैट्स पुट इट ऑन।''

तपन से किसी ने कुछ बात नहीं की। न ही किसी ने उसकी इतनी जल्दी

प्रोग्राम बनाने के लिए तारीफ़ की। दत्ता साहेब जब कुर्सी से उठे तो उन्होंने एक पल के लिए ''हूँ'' की आवाज की और अपनी केबिन में चले गए।

-''आई न्यू.....आई न्यू.....'' माधुरी जैसे फ़ोन पर उचक पड़ी, ''आई न्यू तुम कर सकते हो!''

-''जो भी हो, लगता है इससे नौकरी पक्की हो गयी।'' तपन ने कहा।

-''नौकरी तो पक्की हो गयी.....चैनल चलना पक्का हो गया कि नहीं? हंहंहंहं.....''

-''यहाँ कोई पुरी नहीं है। यहां दत्ता है और वह शान शौकत, नक्शेबाजी से ज़्यादा काम में विश्वास करता है इसलिए लगता है कि चैनल चल जायेगा। यहाँ कोई हर तीसरे महीने लन्दन के चक्कर नहीं लगाता। पैसा जो भी ख़र्च होता है वह सिर्फ प्रोग्रामिंग में और इक्विपमेंट्स में।

-''चाय पीनी हो तो आ जाओ।''

-''मुझे शक्कर खानी है।''

-''हट !''

-''शाम को मिल। मै चकाला बस स्टॉप पर छह बजे वेट करता हूँ।''

-''और मै न आऊं तो?''

-'तो वेट कर लूँगा।''

-''कब तक?''

-''जब तक तुम आओ।''

-''नेक्स्ट डे तक?''

-''नेक्स्ट शाम तक।''

-''तुम पागल हो गए हो।''

-''जैसे तुम ठीक ठाक हो। तुम तो मुझ से भी ज़्यादा पागल हो।''

-''यू नो.....हम लोग कुछ ज़्यादा ही नहीं.....''

-''अभी बहुत कसर है!''

-''छह बजे।''

-''छह बजे।''

छह बजे शाम को चकाला नाका बेतरह जाम था। ट्रैफ़िक ही ट्रैफ़िक। तपन साढ़े पांच तक पहुँच गया था। पौने छह तक माधुरी भी आ गयी। यहाँ कहीं किसी रेस्टोरेंट में बैठने की बजाये दोनों ने सोचा सीधे ऑटोरिक्शा ले लिया जाये और बतियाते बतियाते कांजुरमार्ग तक चला जाये जहाँ से ट्रेन लेकर माधुरी कुर्ला चली

जा सके। उस समय वैसे भी उल्टी दिशा में लोकल में भीड़ कम होगी।

-''क्या करते हो!'' माधुरी ने अपने को छुड़ाते हुए ऑटोरिक्शा के शीशे में देखकर कहा।

-''जो सब करते हैं।''

-''वो देख रहा है।''

-''तो.....वो भी तो करता होगा।''

-''हमारे सामने थोड़े ही करता है।''

-''वो उसकी प्रॉब्लम है।''

-''बिहेव!''

फिर तपन ने माधुरी का मुंह अपने मुंह से बंदकर दिया। माधुरी पहले ऊँ ऊँ करती रही लेकिन फिर फौरन ही उसकी बाहें तपन के गिर्द बन्ध गयीं। रिक्शे वाले की रफ़्तार तेज हो गयी और मौसम में हरारत बढ़ गयी। महब्बतों की गर्मियां अपने पूरे उरूज पर आ गयीं।

-''तपन! कैन यु कम हियर फ़ॉर ए मिनिट!'' दत्ता साहेब का फ़ोन था।

दत्ता साहेब का केबिन केबिन कम और मिनी कॉन्फरेंस रूम ज़्यादा था। बड़ी सी गोल मेज़, चार तरफ़ चार नक्काशीदार कुर्सियां, बग़ल में एक पुरानी बर्माटीक की बड़ी सी साइडटेबल जिस पर एक जग पानी और गिलास रखा रहता था। कमरे की दीवारों के किनारों पर तक़रीबन आठ-दस कुर्सियां-ताके मीटिंग हो तो लोग वहां बैठ सकें। सामने वाली दीवार पर एक बड़ा सा टी.वी. जिस पर चैनल के प्रोग्राम लगातार चलते रहते थे। चैनल अभी अभी शुरू हुआ था और थोड़ा बहुत चल भी चुका था लेकिन दत्ता इस चैनल को नम्बर वन करने की कोशिश में थे। जब तपन पहुंचा तो वहां सीमा के आलावा चैनल के पांच प्रोड्यूसर्स भी बैठे थे।

-''मेरा ख़्याल है हिंदुस्तान में सिर्फ तीन चीज़ें चलती हैं- एक धर्म, दूसरा राजनीति और तीसरा सिनेमा। सिनेमा चैनल हम हैं ही, राजनीति इज़ टू डेंजरस. ....आई वांट टू इंक्लूड धर्म। एंड हमारा पॉपुलर धर्म है - क्रिकेट।'' दत्ता ने अपनी बात कहकर चश्मा उतार कर मेज़ पर रखा और अपनी फ़ोर स्क्वायर सिगरेट निकालकर लाइटर से सुलगाने लगे। जब उन्हें अपने कहे पर किसी से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली तो उन्होंने अपने फेफड़ों में भरे धुंए को मुंह और नाक से निकालते हुए पूछा, ''व्हाट डु यु थिंक?''

-''गुड आईडिया सर!'' सीमा ने अपने बालों पर हाथ फेरते हुए कहा।

-''यू पीपुल? व्हाट यू थिंक?'' दत्ता ने प्रोडूसर्स की और देखकर पूछा।

-''गुड आईडिया.....लेकिन हम तो फ़िल्म एंटरटेनमेंट चैनल हैं.....हमारा क्रिकेट से क्या ताल्लुक़?'' एक प्रोड्यूसर ने सहम सहम कर पूछा।

-''यु आर राइट।'' दत्ता ने चश्मा चढ़ाकर प्रोड्यूसर को नज़र भर देखते हुए कहा, ''इसीलिए मैं सोच रहा हूँ.....क्रिकेट के लिए एक नया चैनल ही शुरू करूँ।''

-''नया चैनल?''

-''क्यों.....चैनल तो है न.....एक और प्लेटफ़ार्म खड़ा करने में क्या जाता है। एनीवे.....आई हैव डिसाइडेड। और क्रिकेट के लिए हम बाहर से फीड नहीं लेंगे. ....वो बहुत महंगा पड़ता है....इसलिए तपन ! सेलेक्ट योर टीम एंड यू हैव टू कवर डिफरेंट मैचेस एंड पुट देम टुगेदर फ़ॉर दी चैनल। अंडर स्टुड!.....यू प्ले क्रिकेट. ....डोंट यू?.....वैसे बंगाली फ़ुटबॉल ज़्यादा खेलता है.....''

-''आई प्ले क्रिकेट सर।''

-''गुड।''

मीटिंग बर्ख़ास्त हो गयी। सीमा ने जली नज़रों से तपन को देखा। प्रोड्यूसर्स ने बाहर निकलकर दत्ता के प्लान को बेवक़ूफी बताया।

-''इतने टी वी चैनल्स, रेडियो वगैरह क्रिकेट दिखाते सुनाते हैं एक हम और दिखाने लगे तो क्या उखाड़ लेंगे.....''

-''जो लोग एक जगह सक्सेस पा जाते हैं वे समझते हैं कि वे हर बात में हर जगह सक्सेसफुल होंगे.....दत्ता इज़ नो डिफरेंट''

-''दत्ता इज़ मेकिंग ए मिस्टेक।''

-''ए बिग मिस्टेक। और वो भी ये रिस्पॉन्सिबिलिटी तपन को देकर.....''

-''देकर नहीं यार.....वो साला मल्टी कैम जानता है न इसलिए.....''

-''फिर भी.....ही इज़ टू जूनियर।''

लेकिन दत्ता ने यह फ़ैसला बहुत सोच समझकर और दूरगामी नतीजों को ध्यान में रखकर किया था। उसने क्रिकेट के बारे में पूरी रिसर्च की थी। उसने पाया था कि क्रिकेट देखने वाले ज़्यादातर पुरुष हैं इसलिए उसने इस खेल से महिलाओं को जोड़ने की शुरुआत की। उसने दुनिया भर में होने वाले तमाम अलग अलग क्रिकेट मैचों को कवर करने का प्लान बनाया। ये वो दिन थे जब एक दिन वाले (वनडे) क्रिकेट मैचों की शुरुआत हुई थी। उसने चैनल को उससे जोड़ने की शुरुआत की।

तपन का काम बेतरह बढ़ गया। फ़ुर्सत के पल उसे दुर्लभ हो गए। कभी

बम्बई, कभी दिल्ली, कभी चंडीगढ़ और कभी कभी साऊथ अफ्रीका, लन्दन या पेरिस. ....उसके पैरों में जैसे चक्री बांध गयी। उसका घर पर रहना मोहाल हो गया। क्रिकेट कवर करते करते वह सपने में भी क्रिकेट ही देखने लगा। लेकिन इसके बावुजूद तपन को अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास था। उसे मालूम था कि समय हो चला है जब पिता जी रिटायर होने वाले हैं और कुछ दिनों में ही ये सरकारी फ़्लैट खाली करना पड़ेगा।

तीन महीने बाद की बात है एक शाम जब तपन घर आया तो उसने ऐलान किया, ''मैने मीरा रोड में एक बिल्डर से बात की है। पिताजी अगले महीने रिटायर हो जायेंगे। हम लोग मीरा रोड जाकर रहेंगे।

-''लेकिन मीरा रोड क्यों? यहाँ आस पास क्यों नहीं?''

-''वहां नया फ़्लैट है.....और यहाँ से मुझे भी आने जाने में असुविधा होती है।''

-''पैसा? पैसा कहाँ से आएगा? प्रोविडेंड फण्ड से?'' पिताजी ने कटाक्ष किया।

-''प्रोविडेंड फण्ड आप रखो अपना.....मैने इनिशियल पैसा दे दिया है और बाक़ी का लोन मुझे मिल रहा है।''

-''लोन?.....कहाँ से?''

-''कुछ कंपनी से, कुछ बैंक से। मैं तो बाहर रहता हूँ, आप लोग फ़्लैट देख लो और उसमे जो तब्दीलियाँ करवानी हों, बनवाना हो वह सब अपने हिसाब से करवा लो.....जल्दी ही वहां शिफ्ट कर लेंगे।'' सब चुप एक दूसरे का मुंह देखते रहे।

-''शादी कर लेता तो ये काम तेरी बीबी कर लेती.....हम बुढ़ापे में क्या क्या करवाते फिरेंगे।'' माँ ने कहा, ''लेकिन तेरे पास टाइम नहीं है। कितने रिश्ते आते हैं तेरे लिए।''

-''दिखाई थी न वो लड़की तुमने.....माधुरी.....बात कर लो उससे।'

-''तुझे पसंद है?!'' माँ की आँखों में जैसे चमक आ गयी।

-''पसंद है। उससे मैं अक्सर मिलता रहता हूँ.....वह भी अँधेरी में काम करती है।''

माँ-पिताजी की जैसे बांछें खिल गयीं। उन्होंने तपन से इस बारे में सब खोद खोद कर पूछा। छोटा भाई मुंह छुपाकर हंसा और फिर उसने दूर से ही तपन को सर हिलाकर चिढ़ाया।

शादी के लिए और घर शिफ़्ट करने के लिए तपन को चार दिनों की छुट्टी मिली, बस। हनीमून के लिए कहा गया कि जहानसबर्ग (साउथ अफ्रीका) कवरेज के लिए जाना है उसी काम के साथ हनीमून भी कर आओ।

-''तपन! लिसेन!'' एक दिन कॉरिडोर में सीमा केसवानी ने सामने से निकलते तपन को आवाज दी।

-''यस सीमा !''

-:कम हियर। कॉन्फ़िडेंशियल है ।''

-''यस !''

-''ये तुम्हारे साथ जो एडिटर पाण्डे लगा है'' सीमा ने फुसफुसाते हुए कहा, ''ये सुना है कुछ बाहर के प्रोडूसर्स को फ़ेवर करता है।''

-''कैसे?''

-'' कुछ क्रिकेट कंपनियों की फुटेज बढ़ाकर, कुछ फ़िल्म वालों के इंटरव्यू फटाफट एडिट कर के.....इस सबके लिए सुना है ये उन लोगों से पैसा भी लेता है।''

-''आई डोंट नो।''

-''हाउ कम यु डोंट नो? तुम भी तो रात दिन उसी एडिटिंग रूम में होते हो।''

-''काम के बाद वह क्या करता है.....मैं क्या जानू।''

-''आई सी.....ओके।''

लेकिन ख़बर पक्की थी और तीन दिन बाद पाण्डे को नौकरी से निकाल दिया गया।

चैनल का क्रिकेट वाला सिस्टर चैनल चल निकला। उसमें लड़की एंकर ली गयी थी जो थी तो लड़की लेकिन मर्दाना लगती थी। पहले सभी ने उसे एंकर लेने पर दत्ता की हंसी उड़ाई थी लेकिन जब चैनल हिट हो गया तो सबने दत्ता की तारीफ़ों के पुल बाँध दिए।

तपन के पिताजी अब तपन से नाराज़ नहीं होते थे। अपने छोटे लड़के से अक्सर कहा करते थे, ''देखो, अपने बड़े भाई को देखो.....वैसा बनने की कोशिश करो।''

11

-''की होच्चे की? हैव यू एनी आईडिया ऑफ़ टाइम?'' तपन जाने के लिए तैयार दरवाज़े के पास एक मिनट इंतज़ार करने के बाद चिढ़कर बोला।

-''आ रही हूँ बाबा.....!'' माधुरी ने अंदर से जवाब दिया।

-''इस हालत में उसे अपनी मोबाइक पर मत ले जाया करो।'' माँ ने सलाह की टोन में कहा।

-''मैं तो ले ही नहीं जाना चाहता.....देखो न कितना गड्ढा है, ऊबड़ खाबड़ सड़क है .....एक्चुअल्ली सड़क है ही नहीं ! लेकिन वो बोलती है उसे बोरीवली स्टेशन तक छोड़ दो।''

-''मैं क्या करूँ'' माधुरी अंदर से तैयार होकर निकलते अपना पर्स सँभालते हुए बोली, ''यहाँ कोई रिक्शा वाला भी जाने को तैयार नहीं होता, बस का ठिकाना नहीं है .....ऑफ़िस तो समय से पहुंचना है न !''

-''देखो.....'' माँ ने मधुरी से कहा, ''अब कुछ दिन, जब तक बच्चा नहीं हो जाता, जाना आना, इतनी मेहनत करना छोड़ दो।''

-''अभी दो महीना और है .....कितना बिगाड़ोगी इस लड़की को.....ये ऑलरेडी बिगड़ी हुई है ।'' तपन ने चुहुल करते हुए कहा।

-''धत ! तू प्रेग्नेंट होता तो जानता।'' माँ ने कहा।

-''मैं तैयार हूँ.....कर दो मुझे प्रेग्नेंट !''

-''बेशर्म !''

-''चलो चलो'' माधुरी ने तपन को धक्का देते हुए कहा, ''अच्छा माँ जी, जाच्छी !''

-''तुम गेट पर ठहरो मैं मोटर साइकिल लेकर आता हूँ,'' नीचे पहुँचकर तपन ने माधुरी से कहा और पार्किंग में खड़ी अपनी हीरो हौंडा लेने चला गया।

-''तपन?....आर यू तपन सेन?'' पीछे से आवाज़ आयी।

तपन ताज्जुब से मुड़ा। उसने देखा एक टी शर्ट और ढीली सी पैंट में एक नौजवान दाढ़ी बढ़ाये उसे पुकार रहा है ।

तपन ने पहचानने में कुछ सेकंड लगाए -''सिद्धार्थ ! ओ माईगॉड ! तुम यहाँ? दाढ़ी कब बढ़ा ली यार?''

-''पहले तुम बताओ तुम यहाँ कैसे?''

-''मैं यहाँ 512 में रहता हूँ।''.....कम मीट माई वाईफ़।'' तपन सिद्धार्थ को माधुरी के पास ले गया। ''माधुरी मीट सिद्धार्थ, ही इज़ ए डाइरेक्टर। हम फ़िल्म इंस्टिट्यूट पूना में मिले थे और अच्छे दोस्त बन गए थे। ये माधुरी है, मेरी वाईफ़! एंड लिसेन अभी जल्दी में हूँ शाम को 512 में आजा। मिलते हैं।''

सिद्धार्थ अपनी दाढ़ी सहलाता तपन को जाते हुए देखता रह गया।

फ़िल्म इंस्टिट्यूट से डायरेक्शन का कोर्स समाप्त करने के बाद आँखों में सपने सजाये और मिज़ाज में अपने क्रिएटिव होने का अभिमान लिए सिद्धार्थ जब माया नगरी बम्बई में आया तब उसे अपने से पहले पास हुए विद्यार्थियों - सीनियर्स- से उम्मीद थी और आकांक्षा यह थी कि सीधे-सीधे कोई आएगा और उसे एक फ़िल्म डाइरेक्ट करने की रिक्वेस्ट करेगा और वो रातोंरात सितारों की दुनिया में चाँद की तरह इज़्ज़त पा जायेगा। लेकिन बम्बई जिसका नाम है वह किसी को बनाये या न बनाये तोड़ ज़रूर डालती है । सिद्धार्थ दो साल पहले जब बम्बई आया तो वह अपने एक सीनियर के साथ विलेपार्ले के एक गेस्टहाउस में कुछ दिन रहा। एक ही पलंग, एक ही चद्दर, कमरा बग़ैर खिड़की का और चार कमरों के बीच एक ही टॉयलेट। सीनियर भी स्ट्रगलर था। चार दिन तक तो मोहब्बत फलती रही पांचवें दिन सिद्धार्थ से कोई जगह ढूंढ लेने के लिए कह दिया गया। हफ़्ता भर ढूंढने के बाद बड़ी मुश्किल से अम्बोली में, फ़िल्मालय स्टूडियो के पास, किसी मैडम फ़ॉनसिका के फ़्लैट में पी. जी. की जगह मिल पायी। फॉनसिका का फ़्लैट एक बैडरूम का था। आने जाने का दरवाज़ा एक ही था। बैडरूम जिसे उन्होंने सिद्धार्थ को किराये पर दिया था उसके दरवाजे पर ताला नहीं था इसलिए सिद्धार्थ का तैल/साबुन/तौलिया इत्यादि मिसेज फ़ॉनसिका का हस्बैंड बाक़ायदा हक़ से इस्तेमाल करता था। सिद्धार्थ कुछ कहता तो उसे मकान से निकल जाने की धमकी मिलती। इसलिए जब तक दूसरी जगह न मिले उसने ख़ामोश रहना ही उचित समझा। तीन महीने बाद उसे कांदिवली में एक कमरा मिला लेकिन वह भी उसे माफिक नहीं आया। रहने की दिक़्क़तों ने उसकी काम ढूंढने की कोशिशों पर बेतरह लगाम लगा दी। काम था नहीं, पैसा था नहीं, घर

वाले बेमन से कुछ भेज रहे थे, लेकिन कब तक? जो काम मिल भी रहा था वो था असिस्टेंट डाइरेक्टर का और सिद्धार्थ को असिस्टेंट बनना नहीं था इसलिए जो काम आ रहा था वो भी आना बंद हो गया। हार कर दूरदर्शन सेंटर की शरण ली गई। वहां पंद्रह पंद्रह दिन के कॉन्ट्रैक्ट बेसिस पर इन्हें प्रोडक्शन असिस्टेंट रख लिया गया। खाना पीना चलने लगा। मीरा रोड में बस्ती भरने लगी थी। वहां किराये भी कम थे। सिद्धार्थ वहां इंस्टिट्यूट के एक और विद्यार्थी के साथ मिलकर एक फ़्लैट में किराये पर रहने लगा।

शाम के नौ बजे के आसपास सिद्धार्थ जब तपन के फ़्लैट पर पहुंचा तो उसे उम्मीद नहीं थी कि वहां उसके माता- पिता- भाई भी रहते होंगे। वह सोच रहा था कि तपन के साथ शाम दो दो बियर 'मार' कर गुज़रेगी। थोड़ी देर के बाद जब एक दूसरे ने अपनी अपनी पिछले दो सालों की कहानी बयान की तो सिद्धार्थ को अपने ऊपर थोड़ी ग्लानि सी हुई।

-''तुमने तो बहुत अच्छा किया यार कैरियर भी सम्भाल लिया, फ़ॅमिली भी सम्भाल ली, पेरेंट्स भी सम्भाल लिए.....''

-''नौकरी मेरी मजबूरी थी यार.....वरना मैं भी तुम्हारी तरह फ़िल्में बनाने के लिए कोशिश करता। तुम्हारा काम बड़ा है इसलिए तुम्हारा रास्ता लम्बा है ।..... लेकिन तुमने ये दूरदर्शन की नौकरी क्यों कर ली? तुम तो टी वी वालों को 'स्मॉल स्क्रीन गाइज़' कहकर गाली देते थे।''

-''अरे जब तक कुछ मिल नहीं जाता सर्वाइव तो करना पड़ता है न।''

थोड़ी गपशप के बाद जब सिद्धार्थ चलने को हुआ तो अंदर से माधुरी ने उसे रोककर कहा, ''भाई साहब, खाना खाकर जाइये। आपको कहाँ घर का खाना मिलता होगा।''

खाना खाते खाते सिद्धार्थ ने तपन से कहा, ''यार तेरी चैनल में कोई काम वाम हो तो मैं.....''

-''काम.....आई डोंट नो.....पता करूंगा.....तुम अपना नम्बर मुझे दे दो.....''

-''फ़ोन....सिक्योरिटी पर.....''

-''सेलफ़ोन आ गए हैं यार इंडिया में.....एक सेल लेले।''

-''बहुत महंगा है .....इवन इन कमिंग चार्ज देखो कितना है''

-''ठीक है .....मैं पूछकर कल तेरे फ़्लैट पर आता हूँ।''

-''कल? कल तो तुमने कहा तुम लन्दन जा रहे हो।''

-''ओ यस, आई विल टैल माधुरी टु टैल यू। ओके !''

लंदन जाने के लिए ब्रिटिश एयर वेज़ की उड़ान बम्बई के इंटरनेशनल एयरपोर्ट से रात के दो बजे थी। ग्यारह तक टर्मिनल पहुंचना था। मीरा रोड से ऑटोरिक्शा लेकर जाना ट्रैफ़िक में फंसना था इसलिए तपन ने लोकल पकड़ी।

-''लोकल? क्राउड में चढ़ पाओगे?'' माधुरी ने सवाल किया।

-''अभी तो ओप्पोसिट डायरेक्शन है .....विलेपार्ले से रिक्शा पकड़ लूँगा।''

-''एयरपोर्ट पहुँचकर फ़ोन कर देना जे एवरीथिंग इज़ ऑल राइट।''

-''.....ऑर शोनो.....'' माँ ने बैडरूम से चिल्लाते हुए कहा, ''लन्दन पहुँच के फ़ोन कर देना.....तुम भूल जाता है। हम लोग परेशान हो जाते हैं।''

एयरपोर्ट पहुँचकर पता चला फ़्लाइट दो घंटे लेट है। जब बोर्डिगं शुरू हुई तब तक सूर्योदय हो चुका था। नींद से बोझिल आँखें लिए तपन ने अपनी सीट पकड़ी और आंखे बंद किये हाथ छाती पर बांधे सोने की कोशिश करने लगा। तभी बग़ल में एक बेहद ख़ूबसूरत, जवान और सभ्रांत दिखती हुई महिला आकर बैठ गयी जिसकी इत्र की ख़ुशबु इतनी तेज़ और इतनी दिलकश थी कि तपन की आँखें ख़ुद बख़ुद खुल भी गयीं और उस महिला की तरफ़ मुड़ भी गयीं। महिला मुस्कुराई। तपन ने भी मुस्कुराकर सर हिलाया। फिर नींद में उसका मन नहीं लगा।

-''हाय! आई एम शहनाज़।'' उसने हाथ बढ़ा दिया।

-''आई एम तपन!''

आठ घंटे का सफ़र था। साथ बैठे थे। बातचीत के दौरान एक दूसरे ने एक दूसरे को जाना। शहनाज़ थी हिंदुस्तानी लेकिन उसका लन्दन में एक बड़ा सा बुटीक था और वह ख़ुद एंटीक कलेक्टर थी। उसका जन्म फ़रुख़ाबाद में हुआ था और पढ़ाई लिखाई अलीगढ़ में। जिसके बाद वह ऑक्सफ़ोर्ड में टेक्सटाइल टेक्नोलोजी का कोर्स करने गयी लेकिन उसका मन वहां पढ़ाई में लगा नहीं और उसने लन्दन के सेंट पॉल्स इलाक़े में कोने वाली एक ईमारत के ग्राउंड फ़्लोर पर अपना बुटीक खोल दिया। ख़ानदान पैसेवालों का था, शहनाज़ की अक़्ल और सूझबूझ थी - चलने में वक़्त भले ही लगा मगर बुटीक चल निकला और आला दर्जे के अमीर लोगों के लिए यह आम जगह बन गयी। दुनिया के बड़े बड़े डिज़ाइनर्स भी वहां आने लगे और दो सालों के अंदर शहनाज़ हुसैनी लन्दन में एक अमीर और इज़्ज़तदार नाम हो गया। शहनाज़ की उम्र उस समय तीस की थी। उसकी जवानी, खूबसूरती और उसकी टेढ़ा होंठ करके मुस्कुराने की जानलेवा अदा ने यों तो न जाने किस किसको दीवाना बना दिया था लेकिन एक अँगरेज़ वेंचर कॅपिटलिस्ट-रिचर्ड ग्रीन-उस पर मर

ही तो मिटा। लड़का अच्छा था। अच्छे घर का था। तहज़ीब मंद था। ऑक्सफ़ोर्ड से इकोनॉमिक्स का पोस्ट ग्रेजुएट था और कामयाब था। शहनाज़ और रिचर्ड दोनों जवान थे और जवानी अपने जोश में न किसी की सुनती है न कुछ समझती है न इधर देखती है न उधर। दोनों को इश्क़ हो गया और इस दर्जा हो गया कि रिचर्ड और शहनाज़ एक दूसरे के बग़ैर एक पल भी नहीं रह पाते थे। शहनाज़ के घरवालों को यह बात क़तई नापसंद आई लेकिन औलाद के आगे तो देवता तक हाथ जोड़ लेते हैं। रिचर्ड के घरवालों में सिर्फ माँ थीं जो एक हिंदुस्तानी लड़की से शादी के ख़िलाफ़ तो थीं लेकिन कुछ कह नहीं पाती थीं। शादी जितने दिन चली बेहद रोमांटिक रही। दोनों ने सारा काम छोड़कर 'अराउंड दी वर्ल्ड' का टिकट ख़रीदा और हैवरसैक बांधे बांधे एक सिरे से दूसरे सिरे तक दुनिया का चक्कर लगा लिया। फिर बच्चों की बात को लेकर मन मुटाव हो गया। शहनाज़ को चाहिए थे और रिचर्ड को कतई नहीं। बात बढ़ी तो इतनी कि बात बात में झगड़ा विकराल रूप लेता गया। दो सालों में नौबत तलाक़ पर आ गयी। उस दौरान शहनाज़ का मन रिचर्ड और लन्दन दोनों से उचाट हो गया और वह तीन महीनों के लिए अब्बू अम्मी के पास फरुख़ाबाद आकर रह गयी। बुटीक मुलाज़िम चला रहे थे और वहां नफ़े से नुक़सान ज़्यादा हो रहा था। इसलिए तीन महीने के लिए आयी शहनाज़ दो महीनों में ही वापस हो रही थी। आज उसी वापसी में शहनाज़ की मुलाक़ात तपन से हुई।

-''अगर तुम इतने टैलेंटेड हो कि चैनल तुम पर इतना भरोसा करता है तो फिर क्यों नौकरी में सड़ रहे हो? अपने टैलेंट का कुछ अपने लिए इस्तेमाल क्यों नहीं करते?''

-''अभी तो इंस्टीटूशनल सपोर्ट है .....इंडिविजुअल को क्लाइंट ढूंढने पड़ेंगे. ... कौन काम देगा एंड सो ऑन।''

-''ओप्पोरचुनिटी ढूंढनी पड़ती है तपन.....दे डोंट कम टू यू।''

-''माने?''

-''ज़माना देखो, टी वी सीन देखो। कम्प्यूटर आया, सेल फ़ोन आया, तुम क्या समझते हो टेक्नोलोजी का खेल यहीं रुकेगा? लन्दन में टी वी था डॉक्युमेन्ट्री एट्सेटरा थी....फिर पब्लिक पार्टिसिपेशन के प्रोग्राम आये और वही इंडिया में भी आने वाले हैं.....ट्रेंड वही है.....वही फ़्यूचर है यू शुड गेट ऑन दी बस।.....एनी वे, दैट्स योर लाइफ़....लन्दन में टाइम मिले तो कम टु माई बुटीक। हियर इज़ माई कार्ड।''

लेकिन लन्दन में तो तपन सिर्फ़ उतरने वाला था, जाना तो उसे मेनचेस्टर था। मेनचेस्टर में जो सहयोगी थे वे अब तक तक़रीबन दोस्त बन चुके थे और उनके साथ बियर पीने का मज़ा ही कुछ और था। प्लानिंग का दिन था। डिस्कशन सुबह से शुरू हुआ और ख़त्म पर आने को ही नहीं होता था।

-''लैट्स हैव लंच।''

-''शॉल वी गो टू दी सेम पब?''

-सेम पब!''

आठ दस लोग। जिसमें दो अश्वेत अँगरेज़ एक तपन, एक आयरिश और बाकी गोरे अँगरेज - सब साथ साथ पास की पब में गए। लन्दन में पब का ग़ज़ब कल्चर है। वहां बियर और ड्रिंक्स भी मिलते हैं और खाना भी मिलता है। यह पब था तो ज़रा मामूली सा मगर जहाँ ये लोग थे वहां से बेहद पास था। पब के अंदर सिगरेट का धुआं भरा हुआ था। बेकन और अंडे फ्राई होने की बू हवा में थी। एक तरफ़ दो मेज़ों पर आठ दस नौजवान अँगरेज़ लड़के बैठे ज़ोर ज़ोर से आपस में झगड़े की तर्ज़ पर बातचीत हंसी मजाक में व्यस्त थे। तपन अपने साथियों के साथ जैसे ही अंदर दाख़िल हुआ इन लड़कों ने उसे देखकर ऊंची आवाज में ''पाकी !पाकी!'' चिल्लाना शुरू किया। तपन ने एक उड़ती नज़र भर उधर देखा लेकिन कोई तवज्जो नहीं दी। फिर आर्डर देते वक्त उसने बार वाले से कहा, ''वहां जो बैठे हैं उन्हें एक एक बियर मेरी तरफ़ से दीजिये।'' जब बियर के बड़े बड़े गिलास उन ''पाकी'' कहने वालों तक पहुंचे तो उन्होंने गिलास उठाकर तपन को ''चियर्स'' किया। तपन ने इधर से चिल्लाया, ''ड्रिंक्स फ़्रॉम दी पाकी! एन्जॉय!''

चार दिन मेनचेस्टर में निकल गए। उसके बाद जब यह लन्दन के लिए ट्रेन में बैठने लगा और सोचने लगा कि वह माधुरी के लिए इस बार लन्दन से क्या ले जायेगा तब अचानक उसे ख़्याल आया शहनाज़ के बुटीक का। हो सकता है उसके यहाँ कुछ नायाब मिल जाये। लन्दन में उसे एक रात और एक दिन रुकना था। कोई ख़ास काम उसे वहां था नहीं और लन्दन वह कई बार देख चुका था इसलिए उतरते साथ वह शहनाज़ के बुटीक में चला गया।

-''हाउ इज़ वर्क?'' शहनाज़ ने तपन को सोफ़े पर बैठाते हुए पूछा।

-''गुड ऐज़ यूज़ुअल !''

-''तपन आई एम सीरियसली प्लानिंग टू बी बैक इन इंडिया। इफ़ देयर इज़ एनीथिंग आई कैन डू विथ यू और फ़ॉर यू लेट मी नो।''

-''हाहाहा ! आई डोंट वांट तो ओपन ए बुटीक !''

-''हंहंहंहं.....!.....कॉफ़ी?''

तपन का दिमाग़ कुंद हो गया। उसे लगा कि उसके ज़रा ग़लत बोल देने से हाथ आया मौक़ा चला गया।

-''ऐं?.....कॉफ़ी?'' शहनाज़ ने फिर पूछा।

-''हाँ हाँ.....हाँ!'' तपन जैसे होश में आया।

शहनाज़ अपने व्यक्तिगत जीवन के तजुर्बों और उससे जुड़ी यादों से पिंड छुड़ाने के लिए हिंदुस्तान वापस आना चाहती थी, अपने बुजुर्ग पिता और माता के साथ कुछ दिन बिताना चाहती थी। उसके पिता ने उससे कई बार कहा था कि वे अपनी बिरादरी का एक अच्छा ख़ानदानी लड़का देखकर उसकी शादी करवा देंगे। शहनाज़ बड़े शहरों में रहने की आदी हो चुकी है इसलिए हो सकता है वह फ़रुखाबाद में ख़ुश न रह पाए, इसके लिए उन्होंने बम्बई के अपने कार्टर रोड के बंगले में शिफ़्ट करना भी मंजूर कर लिया था। वे चाहते थे कि शहनाज़ हिंदुस्तान में रहे और अपनी पुरानी यादों से दूर रहे। शहनाज़ ने शादी के लिए तो ख़ैर हाँ नहीं की थी लेकिन उसने वापस आकर कुछ दिन भारत में बिताने का निर्णय ज़रूर किया था। और जब कोई किसी बात का निर्णय कर ही लेता है तो रास्ते भी खुलने लगते हैं। इसी सबके चलते उसने तपन से कहा था कि वह ''इज़ प्लानिंग तू बी बैक इन इंडिया।''

-''आई हैव एन ऑफ़र तपन।'' शहनाज़ ने अपना कॉफ़ी का प्याला उठाते हुए कहा। तपन ने सर उठाकर एकटक शहनाज़ की ओर देखा। उसे लगा जो ग़लती वो अभी अभी कर चुका था वह अपने आप ही सुधर रही है। शायद शहनाज़ फिर से ऑफ़र दे रही है ।

-''क्या?'' थोड़े इंतज़ार के बाद तपन से पूछे बग़ैर रहा नहीं गया।

-''हिंदुस्तान में टेलीविजन अब बहुत बढ़ गया है। प्रोग्रामिंग की भरपूर संभावनाएं पैदा हो गयीं हैं।'' शहनाज़ ने कॉफ़ी की चुस्की ली और फिर अपनी कोमल उँगलियों से अपने होठों के कोनों को छुआते हुए बोली, ''इसके चलते हम लोगों ने.....एक्चुअली मैने.....लंडन वीकेंड टेलीविजन के एक प्रोग्राम के राइट्स लिए हैं जिसे हम हिंदुस्तान में हिंदी में बनाएंगे। इफ़ यु वांट टू ज्वाइन इन दिस प्रोजेक्ट यु आर वेलकम।''

तपन ने बड़ी सावधानी से अपनी कॉफ़ी के प्याले को तश्तरी में रखा। फिर बोला, ''ज्वाइन मतलब?''

-''हम लोग प्रोडक्शन कंपनी खोलेंगे। यु एंड मी बीइंग पार्टनर्स। मै प्रोड्यूसर तुम डाइरेक्टर। सिक्सटी फोर्टी प्रॉफ़िट शेयरिंग।''

तपन ग़ौर से सुनता रहा। शहनाज़ ने कॉफ़ी की एक और चुस्की ली और प्याले को तश्तरी में रखकर खिसकाते हुए कहना शुरू किया, ''तुम्हारी ज़िम्मेदारियाँ बढ़ती जा रही हैं। तुम्हें काम से ज़्यादा पैसे की ज़रूरत है , मुझे पैसे से ज़्यादा काम में बिज़ी होने की ज़रूरत है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।'' तपन एक मिनट के लिए ख़ामोश हो गया।

-''नो हरी.....सोच लो....मैं अगले हफ़्ते बम्बई आती हूँ। लीगेलिटीज़ तब पूरी कर लेंगे.....अगर डिसाइड करो तो!'' शहनाज़ ने तपन को एक चिट पर पता लिखकर देते हुए कहा, ''बम्बई में यह मेरा पता है। लैट्स कनेक्ट।'' फिर शहनाज़ ने जैसे मीटिंग समाप्त करने के अंदाज में पूछा, ''वापस कब जा रहे हो?''

-''कल शाम। सोचता हूँ माधुरी के लिए कोई गिफ़्ट लेता जाऊं।'

-''गुड आईडिया।''

मीटिंग जब समाप्त हुई तब दोपहर के चार के आसपास बजने आये थे। बाहर सड़क पर आकर पहले तो तपन के समझ में ही नहीं आया कि इस तरह का ऑफ़र इतनी सी जान पहचान के बाद इतनी आसानी से उसकी तरफ़ आ सकता है। उसने अदृश्य शक्तियों और अपने भाग्य को धन्यवाद दिया। भाग्य के नाम पर उसे फिर राजन नटराजन के शब्द याद आ गए— ''तेरा भाग्य बहुतों से बहुत अच्छा है तपन।'' और इस बार उसे फिर इस बात से ग्लानि हुई कि उसने राजन को अय्यर से मुलाक़ात का सच नहीं बताया था। लेकिन इस समय वह बहुत हल्का और अपने आपसे काफ़ी ख़ुश महसूस कर रहा था। आज उसे अचानक यह ख़्याल आया कि वह इतने बार लन्दन आया है लेकिन उसने एक बार भी यहाँ का थिएटर नहीं देखा। थिएटर लन्दन की ख़ासबात है। फिर बग़ैर यह देखे कि कौन से थिएटर में कौन सा नाटक चल रहा है उसने एक टैक्सी रोकी- ''ट्रैफ़ाल्गार स्कॉयर!'' वहां जाकर उसने बीच स्कॉयर में बैठकर थोड़ा नज़ारा देखा, कबूतरों को दाना खिलाया और जब साढ़े पांच के ऊपर होने आये तो चल दिया पास के थिएटर में 'माउस ट्रैप' नाटक देखने।

लन्दन से वापस आकर तपन जब घर आया और माँ ने दरवाज़ा खोला उस समय सुबह के आठ बजने आये थे।

-''बेटा !'' माँ ने शिकायत के स्वर में कहा, ''ज़रा घर पर भी रहा करो।''

-''घर पर ही तो हूँ।''

-''डाक्टर बोलता है पंद्रह दिन बाद किसी भी दिन माधुरी की डिलीवरी हो सकती है। अस्पताल क्या उसे अकेले जाना पड़ेगा?''

-''ओह !'' तपन ने ताज्जुब से कहा। फिर उसके मुंह पर हलकी सी मुस्कराहट फैल गयी।

उस दिन अपनी बाइक पर ऑफ़िस जाते में मीरा रोड से निकलकर घोड़ बन्दर रोड तक आते आते तपन का मन बड़ा विचलित रहा। वह बार बार यही सोचता रहा कि इतनी मेहनत करके क्या वह सारी जिन्दगी दूसरों के लिए काम करता रहेगा? क्या दूसरे ही उसकी मेहनत का मुनाफ़ा खाते रहेंगे?.....अब उसकी जिम्मदारियां बढ़ रहीं हैं, उसे पैसे की ज़्यादा ज़रूरत है। इस सब ख़्यालों के पीछे कहीं शहनाज़ के शब्द थे—''तुम्हें काम से ज़्यादा पैसे की ज़रुरत है।'' लेकिन गोरेगाँव तक आते आते उसके मन को एक अनजाने डर ने जकड़ लिया—''आज तो मुझे इंस्टीटूशनल सपोर्ट है, रेगुलर आमदनी है.....अगर अपना काम शुरू किया और नहीं चला तो? तब तो वह कहीं का नहीं रहेगा। तब क्या वह एक बार फिर से नौकरी की तलाश में चैनल चैनल भटकता फिरेगा?''

इसी उधेड़ बुन में वह बाइक पार्क करके ऑफ़िस में कुर्सी पर आकर बैठ तो गया लेकिन एडिटिंग में जाने का उसका मन नहीं हुआ।

-''क्या लम्बू ! बहुत लन्दन पेरिस घूमता है साले! कभी हमें भी ले चल!'' रश्मि चड्ढा ने तपन की मेज़ पर कूल्हा जमाते हुए अपने हाथ के क़ाग़ज उसके मुंह के सामने हिलाते हुए कहा।

-''कसम से बड़ा मज़ा आएगा!'' तपन ने शैतानी से आँखें ने मटका कर कहा।

-''साले !'' रश्मि ने तपन को क़ाग़जों से झटका, ''शर्म नहीं आती गंदे ख़यालात पालते !''

-''जैसी तुम हो वैसे ही ख़यालात भी आएंगे न!''

-''लिसेन यु इडियट, शाम को हम सब नरीमन पॉइंट वाले इनॉक्स में जा रहे हैं, तुम्हें भी चलना है ।''

-''क्यों?''

-'' क्योंकि जो फ़िल्म आज वहां रिलीज होने वाली है उसके प्रोडक्शन में

अपनी चैनल पार्टनर है। इसलिए हम लोग प्रीमियर में इन्वाइटेड हैं।''

-''मिस्टर दत्ता और सीमा सब आ रहे हैं?''

-''क्यों? वो आएंगे तब तू जायेगा? स्साले मक्खन बाज़! चापलूस !''

-''नो, आई मीन.....''

-''ऑफ़ कोर्स यु आर मीन!''

-''मुझे नई आना यार!''

-''आना तो पड़ेगा बेटा!''

रश्मि चड्ढा चैनल में उस डिपार्टमेंट की इंचार्ज थी जो फ़िल्म प्रोडक्शन देखता था। आईडिया सेलेक्ट करना, प्रोड्यूसर और डायरेक्टर सेलेक्ट करना, सिनेमेटो-ग्राफर, संगीतकार, गीतकार तय करना स्टार कास्ट तय करना इत्यादि-सब उसकी ज़िम्मेदारी थी। सीमा केसवानी अगर प्रोग्रामिंग इंचार्ज थी तो रश्मि फ़िल्म डिपार्टमेंट इंचार्ज। सीमा केसवानी में ऐटिटूड था रश्मि बिनधास्त थी।

इनॉक्स थिएटर नरीमन पॉइंट पर ओबेरॉय होटल के बग़ल में था। वहां कार से उतरते ही उस जगह को देखकर तपन को नॉर्मन टोजर के साथ चैनल वाला अपने इंटरव्यू का समय याद आ गया। उसे गौरव भी याद आ गया और मन ही मन उसने गौरव का एहसान माना, 'आज मैं जो कुछ हूँ, गौरव आप ही की वजह से। न आपने सपोर्ट किया होता न मैं सीखता न यहाँ तक पहुँच पाता।''

-''डिड यु लाइक दि फ़िल्म?'' फ़िल्म शो के बाद सीमा ने तपन के कान के पास फुसफुसा कर पूछा।

-''ठीकठक है!'' तपन ने लापरवाही से कहा।

-'' और ये सारा खेल-राइट फ्रॉम दी आईडिया-एप्रूव किया हुआ रश्मि का है। शूटिंग तक में वो दख़ल देती थी।''

-''अच्छा!''

-'' कुछ नहीं आता इस लड़की को, न इसे फ़िल्म का ज्ञान है न स्टोरी का. ...लेकिन दत्ता इस पर ऐसा मेहरबान है कि क्या कहा जाये।''

-''दत्ता भी क्या करे.....काम तो करवाना है।'' तपन ने आग भड़काते हुए कहा।

-''व्हाट नॉनसेंस! मैंने आधी लाइफ़ प्रोग्रामिंग में निकाली है। मुझे फ़िल्मों का इंचार्ज बनाते तो मैं एक से एक ब्लॉक बस्टर्स बनवा देती। अरे फ़िल्म में स्टोरी होती है, स्ट्रक्चर होता है, म्यूज़िक होता है। इस फ़िल्म में तो कुछ भी नहीं है।....है कि नहीं...?''

-''यु आर राइट सीमा।''

-''तुम तो दत्ता के बड़े क़रीबी बन गए हो, एक बार ज़रा ये बात दत्ता से भी कह कर देखो।''

-''मैं?.....वो मेरी क्यों सुनेगा?''

-''तुम्हारा बोंग कनेक्शन है।''

-''दत्ता बंगालियों को गाली देता है। वो कहता है बंगाली आलसी होता है।''

-''वो सब कहने की बात है।''

-''चलो देखता हूँ।''

इतने में रश्मि तपन के पास आ गयी। और सीमा की 'बिचिंग' रुक गयी।

-क्या लम्बू! पिक्चर कैसी लगी?''

तपन और सीमा ने नजरें मिलायीं।

-''ठीककक है!'' तपन ने जैसा सीमा से कहा था उसी अंदाज में कहा।

-''तुम लोग साले कंजूस हो। तारीफ़ भी खुल कर नहीं कर सकते। अच्छा लगे तो कहोगे 'नॉट बैड'। हह.....'' रश्मि ने कहा।

जब सीमा वहां से चली गयी तब तपन ने रश्मि के दोनों कंधे पकड़ कर कहा, ''बेबी इट इज़ ए ब्लॉक बस्टर! लिखले!''

-''थैंक यू लम्बू !'' रश्मि ख़ुश होकर आगे चली गयी।

वापस आते में तपन ने मीरा रोड के लिए चर्च गेट से लोकल ट्रेन पकड़ी। रात के दस बजने आये थे फिर भी गाड़ी में भीड़ बहुत थी। यह रास्ते भर शहनाज़ और उसके ऑफ़र के बारे में सोचता रहा। शहनाज़ ने कहा था वो बम्बई नेक्स्ट वीक में आएगी। नेक्स्ट वीक में अभी तीन दिन और थे और तपन की बेसब्री बढ़ती जाती थी।

घर पहुँचते पहुँचते तपन को रात के साढ़े ग्यारह बज गए थे और माधुरी को लेबर पेन्स शुरू हो चुके थे। बारह के आसपास एम्बुलेंस बुलाई गयी और एक बजे तक माधुरी को बोरीवली में अस्पताल में भर्ती करवाया गया। अस्पताल में दो दिन बाद सीज़ेरियन ऑपरेशन से माधुरी ने एक लड़के को जन्म दिया। तपन शाम के उससे अस्पताल जाकर मिला। डाक्टर की सलाह के मुताबिक़ बच्चे और माधुरी को दो दिन अभी अस्पताल में और रखना था।

तीन दिन बाद तपन शहनाज़ के कार्टर रोड वाले घर-हुसैनी बंगला—गया। ऑफ़र यह था कि कंपनी में दो ही पार्टनर्स होंगे—तपन और शहनाज़। इन्हीं के नामों को तोड़ताड़ कर कंपनी का नाम रखा गया- 'शहतूत प्रोडक्शंस'! कम्पनी का ऑफ़िस

चौदह नम्बर रोड खार में हुसैनी ख़ानदान के एक खाली पड़े ग्राउंड के फ़्लैट में होगा जिसके रेनोवेशन में करीब पंद्रह बीस दिन लगेंगे। तपन के लिए रोज़ मीरारोड से खार स्टेशन और फिर खार डांडा तक बस या रिक्शे में आना बहुत समय खा जायेगा इसलिए उसे कांदिवली में एक फ़्लैट में शिफ़्ट करने के लिए कहा गया और आने जाने के लिए दे दी गयी एक हौंडा सिटी गाड़ी। पार्टनशिप में शहनाज़ साठ और तपन का चालीस प्रतिशत मुनाफ़ा पहले ही तय हो चुका था। तपन अचानक सुन्न हो गया, उसकी बुद्धि एक दम कुन्द हो गयी।

-''कांदिवली.....वहां का रेंट....''

-''नो यार.....हमारे वहां तीन फ़्लैट्स हैं। दो किराये पर दिए हुए हैं तीसरा ख़ाली है उसमें तुम रहो। किराया मुनाफ़े में से कट जाया करेगा। मैंने अब्बू से बात कर ली है। फ़्लैटों के मालिक तो वही हैं।

-''और गाड़ी?''

-''खड़ी है नीचे, कोई इस्तेमाल नहीं है....तुम चलाओ.....पेट्रोल और मैंटेनन्स के लिए हमारे मैनेजर तसनीम से बुक ले लो.....हमारा बांद्रा पेट्रोल पंप पर अकाउंट है।

-''मुझे ऑफ़िस में नोटिस देना पड़ेगा।''

-''एक महीना न.....तब तक ऑफ़िस भी रेडी हो जायेगा। गुड टाइमिंग।''

तपन को इनमें से किसी भी बात की उम्मीद नहीं थी। उसे तो इस पार्टनरशिप की भी उम्मीद नहीं थी। इसलिए उसने अभी तक इस बारे में घर में भी कुछ बताया नहीं था। लेकिन अब तो बताना पड़ेगा। बताया तो तमाशा हो गया।

-''नौकरी छोड़ेगा? तो सैलरी जायेगा। फ़्लैट का हफ़्ता कौन देगा?''

-''गाड़ी?!....बाबा! इतना पैसा खर्च करेगा तो खायेगा क्या?''

-''नई नई.....हम लोग इहांई ठीक से सेटल्ड हैं, कांदिवली जाके क्या करेगा।''

-''तुम्हारे पास गाड़ी है....तुम इधर से जाओ या कांदिवली से जाओ एक ही बात है.....हाइवे से पंद्रह मिनट का फर्क पड़ेगा बस।'' सबसे ज़्यादा परेशानी माधुरी को थी, ''पार्टनर लड़की है! ओ बाबा! वो भी डाइवोर्सी और उस पर मुसलमान!.. ..नाना.....ये ठीक नई है।''

सबको समझाते समझाते तपन खुद संशय में पड़ गया। इस संशय में कि वह चैनल से रेज़ाइन करे या नौकरी में बना रहे। बहरहाल! आदमी वही करता है जो उसे अपने हक़ में लगता है और वही जो उससे उसका मुक़द्दर करवा लेता है।

महीने भर के अंदर तपन प्रोड्यूसर/डाइरेक्टर हो गया। प्रोग्राम एक रिअलिटी शो था। जिसमें समय-समय पर एक ना एक फ़िल्म स्टार को शामिल किया जाता था। शो बहुत महंगा था और मुनाफ़ा भी ज़बरदस्त। प्रोग्राम का सैट फ़िल्म सिटी में लगा था। शहनाज़ सैट पर कम ही आती थी और प्रोग्रामिंग में तब तक कोई दख़ल नहीं देती थी जब तक कि चैनल की तरफ़ से कोई टिपण्णी न आये। तपन भी खुलकर आज़ादी से और पूरी लगन से काम कर रहा था। अब उसके घर पर रहने का समय कम से कमतर होता जा रहा था। प्रोग्राम में चौबीसों घंटों की रिकॉर्डिंग होती थी और एडिटिंग लगातार चलती थी और इस सब में तपन का होना ज़रूरी होता था। माधुरी को यह सब नागवार गुज़रने लगा। उसे लगा कि तपन का ज़्यादा वक्त शहनाज़ के साथ गुज़र रहा है। तीन चार महीने गुज़रे होंगे कि उसका सब्र टूट गया और वह एक दिन अचानक सैट पर पहुँच गयी। इत्तेफाक़ ये कि उसी दिन शहनाज़–जो यदा कदा ही सैट पर आती थी– भी वहां थी। और माधुरी जिस दम दाख़िल हुई उस दम इत्तेफाक़ ये भी कि तपन और शहनाज़ किसी बात पर आपस में बात करते करते बेतरह हंसी मज़ाक कर रहे थे। दोनों ने माधुरी को देखा और उनकी हंसी बंद हो गयी। इससे माधुरी का शक और बढ़ गया। वह फ़ौरन घर वापस आ गई। शाम को घर में कोहराम हो गया।

-''तुम को शर्म नईं आती...बच्चा मेरे साथ करते हो और फ्लर्ट उसके साथ करते हो?'' माधुरी ने बवाल खड़ा करते हुए चिल्ला कर कहा।

-''व्हाट नॉनसेंस! वो मेरी पार्टनर है। बस।''

-''वो ही तो! वो पार्टनर है....हम कोई नईं।''

-''तुम को शर्म आनी चाहिए ऐसा सोचते हुए भी।''

-'' और तुम्हें शर्म नईं आती ऐसा करते हुए.....क्या खिलखिला के गले मिल मिल के रहते हो आपस में.....इसीलिए तो घर आते नईं ना.....'मैं काम में हूँ'!. ...झक काम में हूँ! तुम कल के कल छोड़ दो नईं तो मैं यहाँ नईं रह सकती।''

ऐसे ऐसे झगड़े तकरीबन रोज़ होने लगे। और रोज़ तपन का मूड उखड़ा उखड़ा रहने लगा। तपन ने आप बीती शहनाज़ को बताई। उसने इसे बहुत सहज अंदाज में लिया और कहा कि यदि प्रॉब्लम है तो उसे ये प्रोजेक्ट छोड़ देना चाहिए क्योंकि काम काम है लेकिन परिवार से बड़ा नहीं है। तपन पार्टनरशिप छोड़ना नहीं चाहता था क्योंकि इसमें उसका कितना तो फ़ायदा था। लेकिन घर पर तनाव बढ़ता जाता था और काम करना उसके लिए मुश्किल होता जाता था। शहनाज़ ने कहा कि यदि पार्टनरशिप छोड़ भी दे तो भी उसे फ़्लैट और गाड़ी छोड़ने की जब तक ज़रुरत नहीं

है जब तक कि उसे कोई और प्रजेक्ट नहीं मिल जाता। वैसे भी तपन ने इन पाँच छह महीनों में पिछले दो सालों की कमाई से कहीं ज़्यादा कमा लिया था सो वह कुछ दिन काम ढूंढने में लगा सकता था। लेकिन जब तक वह कोई दूसरा प्रोजेक्ट ढूंढता माधुरी अपना बच्चा और अपने सामान की अलमारी लेकर घर छोड़कर चली गई। माँ और पिता ने तपन को दोष दिया और ससुर ने कुर्ला से फ़ोन करके क्या कुछ नहीं सुनाया।

-''दादा ऐसा क्यों किया तुमने? भाभी चली गई।'' छोटा भाई अब बड़ा हो गया था।

-''मैंने कुछ नहीं किया.....वो पागल है....हम साथ काम करते थे बस।'' तपन ने भाई को समझाते हुए कहा।

-''अच्छा अब क्या करेगा?'' पीछे से माँ ने सवाल किया।

-''अब तो जो करना है वही करूंगा।''

-''कुछ भी कर.....पहले जाकर बीबी को मना कर घर ले आ।''

-''नहीं जाऊँगा।''

-''क्यों?''

-''वो गई है....मैंने भेजा नहीं है। उसे आना हो आये ना आना हो अपने घर बैठे।''

-''लोग क्या कहेंगे?''

-''तुम्हें लोगों की पड़ी है ?''

-''समाज में तो रहना है ना!'' पिताजी ने सामने सोफ़े पर बैठते हुए कहा।

-''समाज में मैंने बहुत इज़्ज़त कमा ली है और वो एक लड़की की वजह से बर्बाद नहीं होने वाली।''

शहनाज़ ने पार्टनरशिप डिज़ॉल्व कर दी और अपने प्रोग्राम के लिए एक डाइरेक्टर फ़ी एपिसोड बेसिस पर रख लिया। तपन ने पार्टनरशिप छोड़ी तो सारी इंडस्ट्री में ख़बर फैल गई। कुछ टी वी चैनल वालों ने ख़बर की पुष्टि करने के लिए फ़ोन किये कुछ ने अपने प्रोग्रामों को डाइरेक्ट करने के ऑफ़र दिए। और जब आपके पास बड़ी गाड़ी हो, मौक़े की पॉश जगह पर रिहायश हो, फ़िल्म स्टार्स से कॉन्टेक्ट्स हों तो आदमी का मान और भाव स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है। तपन की गिनती अब बड़े और महंगे डायरेक्टरों में होने लगी।

12

सैट बम्बई की फ़िल्म सिटी के स्टूडियो नंबर चार में लगा था। 'आरे' के दरवाजे की तरफ़ ऐड लैब्स जाने वाली चढ़ान से पहले। स्टूडियो के बाहर तमाम गाड़ियां खड़ी थीं। प्राइवेट सिक्योरिटी रखी गई थी सो उनके गार्ड्स वर्दी में बड़ी मुस्तैदी से खड़े पहरा दे रहे थे। टी वी चैनल वाले लड़के लड़कियां जींस और बरम्यूडा में कुछ अपने रेडियो फ़ोन और कुछ अपने सेल फ़ोन लिए इधर उधर बेतरह व्यस्त दिख रहे थे। स्टूडियों के अंदर बहुत बड़ा फ़्लोर था जिसके एक तरफ़ गोलाई में दर्शकों के बैठने के लिए स्टेडियम स्टाइल व्यवस्था की गयी थी। दूसरी तरफ़ बहुत बड़ा स्टेज बना था जिसके पीछे बदलते रहने की सुविधा के साथ वाली बैकग्राउंड पेंटिंग थी। स्टेज के एक तरफ़ जजों के बैठने का प्रावधान किया गया था। स्टूडियो में तक़रीबन दस कैमरे लगने थे और वे कहाँ कहाँ लगेंगे और किस किस प्रकार के शॉट्स देंगे इस पर डायरेक्टर तपन सेन और कैमरामैन प्रीत बत्रा बड़ी गंभीरता से हाथ, पैर, बदन, गर्दन और टाँगें हिला हिलाकर डिस्कशन कर रहे थे। यहाँ एक टी वी चैनल के सर्वाधिक लोकप्रिय 'नचले-गाले' प्रोग्राम की शूटिंग/रिकॉर्डिंग थी।

'नचले-गाले' वो प्रोग्राम था जिसमें सारे हिंदुस्तान से जो भी चाहे इसमें गाने नाचने में हिस्सा लेने के लिए आवेदन कर सकता था। इन आवेदकों का पहले उनके ही शहर में एक 'ऑडिशन' होता था जिसमें यदि वे जूरी को ठीक लगे तो उन्हें बम्बई बुलाया जाता था और उनका एक लम्बा इंटरव्यू और एक काफ़ी 'रिगरेस' टेस्ट लिया जाता था। जिसमें उनके गाने या नाचने की कला को बहुत बारीकी से परखा जाता था। इसमें यदि वे पास हो गए तो फिर उन्हें प्रोग्राम के लिए उपयुक्त समझकर टी वी प्रोग्राम में हिस्सा लेने की अनुमति दी जाती थी।

रघुवीर न नाचता था न गाता था लेकिन उसका चयन इसलिए किया गया था कि वह बहुत अच्छा 'स्टैंड-अप कॉमेडियन' था। ग़ज़ब का हंसाता था और इस प्रोग्राम में रघुवीर को एक डांस और एक गाना कम्पटीशन होने के बाद मोनोटोनी

ब्रेक करने के लिए चुना गया था। टी वी के प्रोग्राम दर्शकों के मनोरंजन के लिए ही तो होते हैं।

-''कॉस्ट्यूम आ गया?'' ड्रेस वाली लड़की सायरा ने रघुवीर के बग़ल से सर्र से गुजरते हुए पूछा।

-''जी मैडम। पहन लूँ?''

-''या....याआ.....! अब तक क्या कर रहे थे.....काम ऑन.....बीक्विक।''

अचानक असिस्टेंट डाइरेक्टर बीर ने ज़ोर से ताली बजाकर ध्यान आकर्षित करते हुए बोलना शुरू किया, ''ऑल राइट! एवरीवन!.....ऑन दी मार्क्स ! कम ऑन, क्विक !''

-''रंजना तो अभी तक आई नहीं।''

-''रंजना चैनल की प्रोग्रमिंग हैड है यार.....वो अभी से आकर क्या करेगी।''

-''वैसे भी साली आके करेगी क्या!?.....'एक इंच कुर्सी इधर हटाना.....नहीं नहीं.....उधर को.....ऊँहूँ.....उतना नही.....हाँ हाँ.....!' आते साथ उसका टेंशन देना शुरू।'' एक कैमरा मैन ने दूसरे से कहा।

-''टाईम है तो एक कश मार लें!'' दूसरे कैमरा मैन ने पूछने जैसे लहजे में कहा।

-''पीपुल!'' डाइरेक्टर तपन सेन अपना काला चश्मा ठीक करते हुए ताली बजाकर चिल्लाया, ''हाय!.....ऑल क्लियर?.....आप सब लोग समझ गए किसको क्या करना है? नो कन्फ़्यूशन्स?'' फिर उसने एक पल ख़ामोशी के साथ सब को देखा और पूछा, ''एनी क्वेश्चन्स?''

-''ओके!.....नो क्वेश्चन्स।'' बीर ने जैसे सबकी मंशा ज़ाहिर कर दी।

फिर वो समझाने के लहजे में फिर चिल्लाया, ''पहला सीक्वेंस रागिनी और हेमा के गाने के कम्पीटिशन का है । दूसरा साबिर और हरजीत के डान्स कम्पटीशन का। तीसरा रघुवीर के कॉमेडी एक्ट का।.....ऑलराइट?!,....उसके बाद लन्च ब्रेक, फिर क्राउड आ जायेगा....'' फिर उसने इधर उधर देखकर प्रोडक्शन मैनेजर पिन्टो को पुकारा, ''पिन्टो!.....वेयर इज़ पिन्टो?....ओके.....या.....यू आर हियर.....सो यू नो पिन्टो....तुम सब क्राउड को दर्शक गैलेरी में बैठा देना। उसके बाद जजेज़ भी आ जायेंगे तब एक्चुअल रिकॉर्डिंग शुरू करेंगे।.....ओके?''

क्राउड वो था जो टी वी में बतौर दर्शक दिखाया जाना था और जजेज़ की जगह बैठने वाले थे दो-तीन जाने पहचाने फ़िल्मी लोग।

'नचले-गाले' इस टी वी चैनल का ही नहीं बल्कि सारे टी वी चैनलों में मिला कर सबसे ज़्यादा लोकप्रिय प्रोग्राम था-हर शुक्रवार की शाम आठ बजे से एक घंटे का। इसमें गाने और नाचने के नए नए लोगों को प्रोमोट किया जाता था। फिर जो जो 'बेस्ट' समझे जाते थे उनकी भी आपस में प्रतिस्पर्धा करवाकर उनमें से भी 'बेस्ट' छांटा जाता था। आज का प्रोग्राम पिछले पांच एपोसोडो से चली आ रही नाच-गाने की स्पर्धा का फ़ाइनल था।

-"आई एम गोइंग टू कण्ट्रोल रूम!" तपन अपने बालों की छोटी सी पोनी टेल पर हाथ फेरते चला गया।

-"रघुवीर!" बीर ने पुकारा

-"यस सर!"

-"तेरी स्क्रिप्ट रेडी है?"

-"यस सर।"

-"रिहर्सल कर ली?"

-"यस सर।"

-"भूलेगा नई न!?.....एक टेक में कर लेगा?"

-"यस सर।"

-"चल ठीक है....ओके....." फिर बीर मुड़ा और उसने बत्रा की तरफ़ रुख किया, "सर जी!....कैमेरा पोजिशन अंडर कण्ट्रोल?"

-"अबे तू जा यार.....सब हो जायेगा। डरता क्यों है ?"

-"एक बारी मुझे भी बता दो सर।"

-"डाइरेक्टर से पूंछ न....तू तो उसका मुंह लगा असिस्टेंट है ।"

-"बता दो न सर जी" बीर ने बत्रा को बग़ल से लगाकर अपनी बाँहों में उसका कन्धा दबाते हुए कहा।

-"चल आ जा.....ये देख.....कैमेरा वन इधर से एंगल पर, दो और छह उधर से क्लोजअप पर। पांच बीच में मास्टर शॉट पर, एक हैंगिंग है, एक जिमी जिब और एक मैंने ऑडियंस रिएक्शन के लिए लगाया हुआ है।"

पूरे सैट पर दस कैमरे लगे हुए थे। जिसे जिमी जिब कहते थे वो क्रेन पर लगा एक छोटा सा कैमरा था जो इधर उधर या ऊपर नीचे आसानी से स्वीपिंग शॉट्स ले सकता था। इन सब कैमरों की तस्वीरें कण्ट्रोल रूम में दिखाई देती थीं और वहीं से डायरेक्टर इन कैमरों को निर्देश देता था और प्रोग्राम की रिकॉर्डिंग को अंजाम देता था। कण्ट्रोल रूम से तपन ने माईक पर (जिसे फ़ोल्ड बैक कहते

हैं) स्टूडियों के लिए निर्देश दिया। स्टूडियों में लाउडस्पीकर से आवाज आयी, ''साइलेन्स ! ड्राई रिहर्सल।''

रिहर्सल दो प्रकार की होती थी - एक ड्राई -आर्टिस्ट, क्रू और कैमेरा वालों के लिए, दूसरी कलाकारों उनके नाच गाने वाले साथियों और ऑडियो इत्यादि के लिए। फिर सुझाओं के अनुरूप फ़ाइनल रिहर्सल - सबके साथ एक दम फ़ाइनल रिकॉर्डिंग जैसी। उसके बाद टेक।

-''रागिनी.....'' बरम्यूडा पहने कान में हेडफोन्स लगाए हाथ में फ़ाइल लिए दीवानी सी दिखती एक लड़की ने मुंह में चुइंग गम चबाते हुए इधर उधर देखा, ''वेयर इज़ रागिनी या.....?''

-''जी मैं यहाँ हूँ....अपने मार्क पर।'' पीछे से आवाज आयी।

-''ओह.....तुम गा रही हो न? गाना भूलेगी तो नई? ओह....नई नई तुम्हारा गाना तो ऑलरेडी रिकार्डेड है, तुम्हें तो सिर्फ लिप चलाना है, है न !'' फिर जैसे उसे कुछ याद आया ''एंड व्हेयर इज़ हेमा.....दी अदर सिंगर?.....ओह गॉड!'' फिर बग़ैर किसी भी जवाब का इंतज़ार किये लड़की पीछे मुड़ी और चली गयी।

जब तक ड्राई रिहर्सल पुरी हुई तब तक दोपहर का दो बज चुका था। लंच ब्रेक के लिए लोग बेताब हो रहे थे। इतने में टी वी चैनल की प्रोग्रामिंग हैड रंजना भी आ गयी।

-''हाय एवरी वन!.....हाउ इज़ इट गोइंग?'' रंजना ने कंट्रोल रूम में घुसते साथ अपना काला चश्मा उतारते और कानों से हेडफोन्स निकालते हुए कहा। तपन सेन आवाज़ सुनकर मुड़ा। आहिस्ता से कुर्सी से खड़ा हुआ। रंजना को देखकर ज़रा रुका, थोड़ा झुका और रंजना से जाकर ऐसे गले मिला जैसे पिछले जन्म के बाद मिल रहे हों।

-''हाय स्वीट हार्ट! वेयर हैव यू बीईईइन....!'' तपन ने तक़रीबन शिकायती स्वर में कहा।

-''इन योर ड्रीम्स बेबी!'' रंजना ने तपन के गालों पर चूमकर अपने को छुड़ाते हुए कहा, ''कैसे चल रहा है?.....आई वांट ए ब्लडी गुड प्रोग्राम तपन.....सो डोंट स्क्रू मी दिस टाईम।''

-''कमऑन लव ! हैव आई एवर गिवेन यू ए बैड प्रोग्राम?!''

-''लास्ट टाइम यू.....''

-''एक कलर बार ग़लत छप गया था यार.....वो एडिटर का मिस्टेक था मेरा नई.....'' तपन ने रंजना की बात काटते हुए कहा। फिर उसने रंजना को कन्धों

से पकड़कर पीछे मोड़ा, ''चल यार.....खाना तो खाने दे.....एवरी वन इज़ वेटिंग फ़ॉर यू।''

कंट्रोल रूम स्टूडियों की ऊपरी मंज़िल पर बना था। दोनों सीढ़ियां उतरकर नीचे आए। खाना बाहर मैदान में लगा था– पहाड़ी की तरफ़ बड़े से शामियाने के नीचे। उसमे कई बड़ी बड़ी मेज़ें लगीं थीं और उन पर तमाम प्रकार की बड़ी बड़ी देग़चियों में खाना रखा था। देग़चियों में खाना गर्म रखने के लिए उनके नीचे बत्तियां जलाई गयीं थीं। बग़ल में प्लेटें, नैपकिन्स और चम्मचें रखी गयीं थीं।

-''इडियट्स !'' रंजन ने इंतजाम पर नज़र डालते हुए कहा, ''आई टोल्ड देम मुझे ये इंडियन फूड सूट नहीं करता गेट सम कॉन्टिनेनेटल स्टफ फ़ॉर मी.....लेकिन ये सब स्पाइसी फूड ही लाया।''

-''अभी मंगाते हैं डार्लिंग.....अभी मंगाते हैं.....!.....पिन्टो.....!'' तपन ने प्रोडक्शन मैनेजर को आवाज़ लगाई।

पिन्टो ने अपनी जलती हुई सिगरेट को उल्टा करके हथेली में छुपाया और सामने आया, ''यस !''

-''ये मैडम ने तो कॉन्टिनेंटल बोला था।''

-'' है न वहां.....मैडम के लिए।''

-ओ के!''

रंजना और तपन जब मेज़ की तरफ़ बढ़ गए तो पिन्टो ने अपनी सिगरेट सीधी की और अपने असिस्टेंट स्पॉट बॉय पर भड़ास निकाली ''स्साले देखते हैं नहीं.....आजाते हैं प्रोक्शन की गलतियाँ निकालने।'' स्पॉट बॉय फिक्क से हंस दिया।

-''तूजा, इधर क्यों खड़ा है.....उधर देख'', पिन्टो ने बॉय को डाटते हुए कहा, ''और कुछ तो नहीं चाहिए।''

सब के सब प्लेटें लेने में जुट गए थे। खाना चल ही रहा था कि कुछ बसों का एक पूरा क़ाफिला स्टूडियो के दरवाज़े पर आकर रुका– बाहर तक लाइन लगाए। किसी ने चिल्ला कर कहा, ''क्राउड आ गया।''

पहली बस में से सबसे पहले उतरीं हर्षा व्यास। हर्षा व्यास वो थीं जो प्रोग्राम वालों के लिए क्राउड सप्लाई करती थीं। हर रोज़ पचीस हजार रूपया अपने लिए और खाना पीना क्राउड में सबके लिए। जो आएगा वो खायेगा भी। ये क्राउड वो था जो दर्शक के बतौर टी वी प्रोग्रामों में दिखाया जाता था जिसमें कम से कम सौ डेढ़ सौ और ज़्यादा से ज़्यादा ढाई तीन सौ लोग हो सकते थे। आज के प्रोग्राम में तीन सौ लोग थे। पांच बसें भरकर। इन बसों का किराया और हर्षाव्यास का मेहनाता

प्रोड्यूसर-यानी चैनल-देने वाला था। क्राउड क्योंकि लन्च के बाद आर्डर किया गया था इसलिये उनको लन्च देने का सवाल नहीं उठता था लेकिन दोपहर में चाय नाश्ता तो देना ही पड़ेगा और अगर कहीं शूटिंग रात के दस के बाद तक चली तो सब को रात का खाना भी खिलाना पड़ेगा। क्राउड में हर्षा जाने कहाँ कहाँ से दोस्तों रिश्तेदारों, पेशेवरों इत्यादि को ढूंढ ढूंढ कर लाती थी। कुछ लोग तो यों ही टी वी शो के नाम पर शौक़िया आ जाते थे। कुछ अगर पैसे लेते भी थे तो मुश्किल से दो सौ ढाई सौ बाकी की रक़म हर्षाजी की जेब में जाती थी इसलिए वे हमेशा प्रोग्राम वालों से अच्छी बनाकर रखती थीं। आज इसके प्रोग्राम में तो कल उसके प्रोग्राम में 'ऑडियंस' तो ज़्यादातर प्रोग्रामों में लगती ही थी इन दिनों।

हर्षा बस से उतरी ही थी कि पीछे से बड़ी ज़ोर ज़ोर से किसी कार का हॉर्न बजने लगा। देखा तो पता लगा शालिनी डोरके की मर्सिडीज है जो सामने इतनी बसें खड़ी होने के कारण स्टूडियो के गेट के अंदर नहीं आ पा रही है और बसें हटाने के लिए हॉर्न दे रही है ।

-''तो हटा न बसें !'' पिन्टो स्पॉट बॉय पर चिल्लाया। फिर हर्षाव्यास की तरफ़ देखकर बोला, ''ये बसें हटवाइये हमारी जज आ गई हैं.....वो अंदर कैसे आयेंगीं?!''

-''अभी.....अभी.....'' हर्षा ने एक हाथ से अपने उड़ते हुए बाल ठीक करते और दूसरे से बग़ल में अपना पर्स संभालते हुए कहा।

सलाद की गाजर का आख़िरी छोटा टुकड़ा मुंह में डालने के बाद अपनी प्लेट बग़ल में खड़े वेटर को थमा टिशू से हाथ पोंछकर रंजना ने तपन की तरफ़ सर मोड़ा तो देखा वो खाने के बाद अपनी सिगरेट सुलगा चुका था।

-''यू.....?!'' तपन ने रंजना को सिगरेट का पैकेट दिखाकर पूंछा। रंजना ने बग़ैर जवाब दिए एक सिगरेट ले ली और होठों से चिपका ली। तपन ने अपना लाइटर निकालकर उसमे आग लगा दी। एक लम्बा सा कश अपने फेफडों में भरकर रंजना ने धुआं छोड़ा ही था कि बीर दौड़ता हुआ आया, ''शालिनी हैज़ अराइव्ड।''

-''कहाँ?'' तपन जैसे अव्यवस्थित सा हो गया।

-''मेकअप रूम में भेज आया हूँ।''

-''ओके, आई एम कमिंग।'' तपन आगे बढ़ा

-''सैट तो देखना है न!'' रंजना ने दोबारा धुआं छोड़ते हुए कहा।

-''शालिनी से मिल के चलते हैं।''

-''लेट दि बिच वेट यार....हमेशा साली लेट आती है.....आज टाईम पे आई

है.....वैसे भी पैसे के लिए कितना तंग करती है।''

-''ओके।''

तपन और रंजना सैट देखने चल पड़े तो रंजना ने बीर की तरफ़ देखकर कहा, ''पिन्टो को बोलो मुझे मिले।''

-''जी मैडम।''

टी वी चैनल इस प्रोग्राम का प्रोड्यूसर था। रंजना टी वी चैनल की प्रोग्रामिंग हैड थी और तपन बाहर से लिया गया डाइरेक्टर था। पिन्टो प्रोक्शन इंचार्ज था। पैसा सबको चैनल वालों से ही मिलता था। सारे ख़र्चे-चेक के, कैश के, सब-चैनल के द्वारा ही होते थे। हफ़्तावार प्रोगाम था। पिछले दो महीनों से चल रहा था और अगले एक महीने याने पांच हफ्ते और चलने वाला था। लाखों रूपए रोज़ का खर्च था-क्राउड, खाना-पीना, कैमेरा, सैट, साउंड, स्टार जजेज़, डाइरेक्टर, कनवेयन्स और और तमाम ख़र्चे। पिन्टो की सिगरेट फ़ोर स्क्वायर से अब 555 हो गयी थी, उसका सेल फ़ोन ऐपल हो गया था और उसके असिस्टेंट/स्पॉट बॉयज़ तक के कपड़े अब सफ़ेद और कलफ़दार होने लगे थे। लाखों में से दो-पांच हज़ार जेब में आ गए तो किस को फ़र्क़ पड़ने वाला है। रंजना भी तो साल में दो बार इंटरनेशनल हॉलिडे पर जाती है! जानते सब के बारे में सब थे लेकिन प्रोग्राम हिट था। प्रोग्राम की टेलीविजन रेटिंग्स (टीआरपी) ग़ज़ब की थी। स्पॉसर ख़ुश था। पैसा भरपूर आ रहा था। किसी को कोई गिला नहीं था।

-''सैट तूने एप्प्रोव किया तपू?''

-''हाँ! क्यों?'' तपन ने रंजना से पूछा।

-''तू साले मरवाएगा.....अबे ये पान मसाले वाला बोर्ड बीच में कर.....ये तो प्रोग्राम का मेन स्पाँसर है....प्रोग्राम में उसे अपना बोर्ड साइड में दिखेगा तो ही विल फ़क मी.....यू अंडर स्टैंड !?''

-''गुरु जी ईईई.....!'' तपन ने पीछे मुड़कर चिल्लाया। गुरुजी आर्ट डाइरेक्टर थे। सैट उन्हीं के लोगों ने बनाया था। गुरु जी ढीला ढाला पाजामे जैसा पिंडलियों तक ऊंचा पैंट और एक गन्दी सी पेंट लगी शर्ट पहने अपने गोल गोल चेहरे पर उगी भरी भरी दाढ़ी पर हाथ फेरते धीरे धीरे आये।

-''कायाला?'' (क्या हुआ?)

-''दादा हे काय केला? (ये क्या किया?), पान मसाला वाला बोर्ड मैडम को बीच में मांगता है।''

-''हो नई सकता है।''

-''अरे!.....व्हाट नॉन सेंस!'' रंजना के अहंकार को ठेस लग गयी। उसने एक नज़र तपन पर डालकर भंवें चढ़ाते हुए पूछा, ''क्यों नहीं हो सकता है?''

-''उदर कॉलम है कॉन्क्रीट का। उसमे कील गाड़ेगा कैसा?''

पंद्रह मिनट तक क्या हो सकता है क्या नहीं हो सकता, मामले को कैसे सुलझाया जा सकता है इस पर बहस होती रही फिर गुरुजी ने, ''अच्छा देखता है।'' कहकर पल्ला झाड़ लिया।

-''एक घंटे में रिकॉर्डिंग है .....कुछ करो....दादाआ !'' तपन ने गुरुजी को कन्धों से पकड़कर प्यार से झकझोर दिया।

-''अरे तू इधर खड़ा है .....''तपन ने अचानक रघुवीर को गुरुजी के इस तरफ़ खड़ा देखकर प्यार से कहा फिर फ़ौरन रंजना की तरफ़ मुड़कर बोला, ''मीट दिस मैन.....ही इज़ ए पररर्फेक्ट एक्टर.....एक्सक्सक्सक्सक्सलेंट कॉमेडियन !.....कम हियर रघुवीर.....!'' रघुवीर शर्माता सा बड़ी शाइस्तगी से आकर रंजना से नमस्ते करके खड़ा हुआ।

-''आई सी!'' रंजना ने रघुवीर को ऊपर से नीचे तक देखकर रूखे तौर पर कहा, ''गुड!'' फिर उसे जैसे अचानक कुछ याद आ गया, बोली, ''चलो, चलो... ..शालिनी से हैलो करते हैं।''

शालिनी डोरके–हिंदी फ़िल्मों की रह चुकी हीरोइन और इस प्रोग्राम की जज-के मेक-अप रूम से बड़ी ज़ोर ज़ोर से आवाज़ें आ रही थीं।

-''मैं नई बैठ सकती यार!....पिन्टो! मेरी जान! मैं नई बैठ सकती.....ना ना. ...''

-''क्या हुआ?'' रंजना ने दरवाज़े पर खड़े होकर पूछा।

-''हाइइइ रंजनो!'' शालिनी क़रीब आकर उसके गले मिली।

-''क्या हुआ डार्लिंग?'' रंजना ने पूछा।

-''नथिंग यार! इतनी गर्मी है यहाँ कि बाप रे! देख न कितना पसीना आ रहा है मुझे.....तो मैं बोली मैं गाड़ी में जाकर बैठती हूँ.....जब रिकॉर्डिंग हो तो मुझे बुलवा लेना।''

-''व्हाई ए सी इज़ नॉट वर्किंग पिन्टो? फ़िल्म सिटी वाले पैसे किस बात के लेते हैं?''

-''ए सी इज़ वर्किंग !'' पिन्टो ने कहा। कहना वो दरअसल चाहता था कि 'ये चुड़ैल नाटक कर रही है....अपनी इम्पोर्टेंस जता रही है 'लेकिन उसने डिप्लोमैटिकली जवाब देते हुए कहा, ''मैडम बाहर से आयीं हैं न इसलिए इनको गर्मी ज़्यादा लग

रही है। ज़रा देर में ठीक हो जायेगा।''

-''ओके'' शालिनी ने रंजना का हाथ पकड़कर उसे मेक-अप रूम मे सोफे की तरफ़ खींचते हुए कहा, ''छोड़ना ये सब.....आ तू बैठ, तेरे साथ बहुत दिनों से बात नहीं होती.....''

-'दोस्त मिल गयी तो मुझे भी भूल गयीं शालिनी जी।'' तपन जो अब तक दरवाज़े के पीछे ओट में खड़ा था रूम के अंदर आते हुए बोला, ''कर लो, कर लो. ....लड़कियां लड़कियों की बड़ी पक्की दोस्त होती हैं।''

-''कम ऑन तपू!.....आई एम नार्मल यू नो.....आई एम नॉट ए लेस्बो.... .हंहंहंहं! और आपको तो मैंने देखा ही नहीं।''

फिर शालिनी तपन के पास आकर उसका हाथ पकड़कर हाथ मिलाने लगी।

एक स्पॉट बॉय तपन के पीछे से आकर धीरे से बोला ''सर! फेकू श्रॉफ आ गए।''

तपन ने गर्दन मोड़ी और स्पॉट बॉय से ज़ोर से कहा, ''अबे फेकू श्रॉफ नहीं. ....फ्रैंकश्रॉफ! वो सुनेगा तो मारेगा!.....चल, उन्हें बिठा मैं आता हूँ।''

-''कौन फ्रैंक? दी ग्रेट म्यूजिक डाइरेक्टर?'' शालिनी का चेहरा खिल गया।

-''याआ ! ही इज़ जज विद यू।''

शालिनी ने दोनों हाथ हवा में उछाले, फिर दोनों को बांधकर अपनी छाती पर लगाकर आसमान की ओर देखकर कहा, ''हाउ ग्रेट!.....दैट मैन इज़ ए जीनियस! क्या गाने देता है .....वाह !''

रंजना अब तक ऊब चुकी थी। उसने सवाल किया, ''रियली?....मैंने तो सुना था कि वो दस दस लोगों की टीम रखता है जो कि दुनिया की सब हिट गानों की ट्यून की कॉपी करते हैं और फ्रैंक उन पर गाने बनाता है .....आई डोंट नो इफ़ दिस इज़ ट्रू.....एह!''

शालिनी का जैसे असली रूप सामने आ गया। रंजना की तरफ़ मुंह करके धीरे से बोली, ''चोर है, सब जानते हैं.....हंहंहंहं, लेकिन वो भी तो सभी हैं आजकल. ...ओरिजिनल किदर बचा है ?''

फ्रैंक श्रॉफ लोखंड वाला कॉम्प्लेक्स की बेहतरीन बिल्डिंग पैराडाइस हाइट्स की बारहवीं मंजिल पर रहता था और उसी बिल्डिंग की चौथी मंजिल पर उसका म्यूज़िक रूम था। म्यूज़िक रूम दो बैडरूम के दो फ़्लैट्स को जोड़कर बनाया गया था और उसमें दिन रात किसी भी वक्त उसके कम से कम चार से पांच असिस्टेंट्स मौजूद रहते थे। म्यूज़िक रूम साज़ों और रिकॉर्डिंग मशीनों, एडिटिंग मशीनों से भरा

पड़ा था– दुनिया के तक़रीबन हर ज़बान के तमाम ख्याति प्राप्त हिट गानों और म्यूजिक ट्रैकों से। फिर उसके यहाँ सैटेलाइट डिश का भी कनेक्शन था जिससे उसके यहाँ दो टी वी हमेशा चलते रहते थे–एक पर पूर्व एशियाई देशों के वैराइटी तथा संगीत कार्यक्रम चलते थे दूसरे पर अमरीकन गानों और संगीत के कार्यक्रम। फ्रैंक ज़्यादातर बाहर ही रहता था–प्रोडूसर्स, डायरेक्टर्स के साथ म्यूज़िक सिटिंग्स पर। दिन में तक़रीबन बस वो दो घंटों के लिए अपने म्यूजिक रूम आता था। काम, सब जानते थे, उसके असिस्टेंट्स करते थे, नाम फ्रैंक का होता था। असिस्टेंट्स को ताक़ीद यह थी कि टी वी और सीडी आदि से यह देखो कि सबसे अच्छी धुन या गाना कौन सा है– सबसे पॉपुलर-उसे रिकॉर्ड कर लो। उन्हीं डाउनलोड की हुई धुनों को वह प्रोड्यूसरों को सुनाकर अपने काम की वाहवाही लूटता था। बहुत से लोग ये सब जानते थे लेकिन फ़िल्म वाले सिर्फ एक बात जानते/मानते हैं– हिट! अगर फ्रैंक हिट है तो उनकी फ़िल्म को उससे फ़ायदा है और जिससे फायदा है वही ठीक है।

-''तपू.....तपू.....तपू.....'' करते हुए तेज़ तेज़ चल कर फ्रैंक पीछे से आकर तपन सेन की पीठ से चिपक गया, ''हाउ आर यू बडी?'' तपन ने गर्दन पीछे मोड़ने की कोशिश की और दोनों हाथों से फ्रैंक की बाहें थाम लीं। फिर फ्रैंक तपन को छोड़कर रंजना के गले लगा और फिर शालिनी के सामने हाथ जोड़कर 'प्रणाम' में झुककर खड़ा हो गया।

-''क्या करते हैं जी.....'' शालिनी ने फ्रैंक के कन्धों को दोनों हाथों से पकड़ कर कहा, '' प्रणाम तो मैं करती हूँ आपके टैलेंट को।'' तब तक रंजना ऊब चुकी थी। उसने घड़ी देखी। तपन समझ गया।

-''चलें?'' तपन ने कहा, ''आप लोग तैयार हो जाओ....आधे घंटे में रिकॉर्डिंग करते हैं।''

-''ओके'' सब अपनी अपनी तैयारी में जुट गए। जब फ्रैंक ने देखा कि रंजना थोड़ा आगे निकल गयी है तो उसने तपन को पंजे से जरा देर 'इधर' आने का इशारा किया।

-''तपू !....तू कब तक ये टी वी शोज़ डाइरेक्ट करेगा यार !....लेटस डु ए फ़ीचर फ़िल्म यार.....टुगेदर।'' तपन ने बग़ैर कोई गर्म जोशी दिखाए 'ओके' में सर हिलाया।

-''डील?'' फ्रैंक बोला, ''कल मुझे फ़ोन कर ले शाम को मीटिंग करते हैं। प्रोड्यूसर इंटरेस्टेड है, फाइनेंस रेडी है । कहानी ले आ, फाइनल कर लेंगे।''

-''अब मैं रिकॉर्डिंग पे चलूँ?'' तपन ने फिर बग़ैर ज़रा भी अपना इंटरेस्ट

दिखाए, बग़ैर किसी ख़ुशी के संजीदा चेहरे वाला सर हिलाकर पूछा। उसे मालूम था फ़िल्म वाले इस तरह के ऑफ़र देते ही रहते हैं और हर बार दूसरे को ख़ुश करने वाली बात ही करते हैं।

तपन और रंजना के दाख़िले के साथ ही कंट्रोल रूम में मुस्तैदी छा गयी। जो कुर्सियों या ज़मीन पर खाने के बाद ख़ुमारी में आ गए थे हरकत में आगए।

-''टेप चेक कर लिए?'' तपन ने पूछा।

-''एक थोड़ा ठीक नहीं था सो वो पिन्टो को दे दिया एक्सचेंज के लिए... ..'' रिकार्डिस्ट ने कहा।

-''एक ठीक नहीं था?'' तपन ने सर पर हाथ ठोका, ''क्या होगा इस कंट्री का यार?.....साले प्रोग्राम बनाते हैं टेप इम्पोर्ट करते हैं.....अब बोलो !.....अच्छा. ....एनी वे। टेप कम तो नहीं पड़ेंगे न?''

-''नहीं नहीं.....तीन घंटों वाले पच्चीस टेप्स हैं....कम नहीं पड़ेंगे।''

-ःहर कैमेरा रिकॉर्ड हो रहा है।''

-''नो प्रॉब्लम।''

-''रात को अचानक मत बोलना 'सर टेप खत्म हो गया'.....तब श्याम भाई की दुकान बंद हो जाती है, टेप नहीं मिल पायेगा।''

-''अरे नई नई.....''

-''बीर !'' तपन ने आवाज लगाई।

-''यस सर !'' बीर पीछे ही था।

-''तुझे नौकरी प्यारी है कि नई?'' तपन ने गर्दन पीछे मोड़कर बीर से कहा। बीर कुछ समझा नहीं। उसने इधर उधर देखकर कन्फ्यूज़ सा पूछा, ''क्या हुआ सर?''

-''अबे रंजना जी को लंच के बाद कॉफ़ी नहीं पिलायेगा?''

-''ओह.....अभी लाता हूँ.....''

रंजना ने मुस्कुराकर अपनी गर्दन को हल्का सा, शान से हिलाया और अपना बायाँ हाथ हिलाकर कहा, 'इट्स ओके, लैटस गेट ऑन विद इट।''

काम शुरू हुआ। स्टूडियो में क्राउड और जजेज़ को उनकी अपनी पोज़िशन दे दी गयी और उन सबको समझा दिया गया कि कहाँ ताली बजानी है, कहाँ हंसना है, कहाँ कमेंट करना है इत्यादि। फ़ाईनल रिहर्सल करते करते शाम के छः बज गए। उसके बाद हुआ टी ब्रेक। फिर इतर अडजस्टमेंट्स के बाद शुरू की गयी रिकॉर्डिंग जो चली रात के ग्यारह तक। सबसे बाई बाई करते बज गए रात के बारह और स्टाफ़ को सब सामान समेटते, पैक-अप करते बज गए दो।

-''एडिट कब दे रहे हो?'' गाड़ी में बैठते बैठते रंजना ने पूछा।

-''आज क्या है.....'' तपन ने उँगलियों पर गिनकर सोचकर कहा, ''ट्यूसडे मॉर्निंग.....!.....फ्राइडे देता हूँ !''

-''पॉज़िटिव?''

-''पॉज़िटिव !''

रिकॉर्डिंग के बाद वापस जाते समय तपन जब अपनी हौंडा सिटी की पिछली सीट पर बैठकर घर की तरफ़ चला तब सड़कों पर इक्का दुक्का ट्रैफ़िक था और सिग्नल फ़्लैश पर हो गए थे। गाड़ी ने रफ़्तार पकड़ ली। अंदर के ए.सी. और आराम देह सीट पर तपन को हल्की हल्की नींद आने लगी उसने आँखें बंद कर लीं। कल से एडिटिंग पर बैठना है– लगातार तीन दिन-तब शायद सोने का समय ही न मिले।

13

जिस रघुवीर को बेहतरीन एक्टर कहकर तपन ने रंजना से मिलवाया था वह हिमाचल के कसौली से था।

-"तूने दिन में खाना क्यों नई खाया?" माँ ने बर्तनों में खाना जैसा का तैसा रखा देख कर पूछा, "चुप क्यों है ? खाना क्यों नई खाया?" जवाब न मिलने पर माँ ने बच्चे के पास जाकर उसके सामने घुटनो बैठते हुए प्यार से पूछा। लड़का चुप, सकुचाता रहा, अपने पैर के अंगूठे से ज़मीन खोदता सा सर झुकाये रहा।

-"बेटा मैं नई होती तो तू खाना भी नई खाता? ऐसे कैसे चलेगा? नौकरी तो करनी पड़ेगी न.....जाना तो पड़ेगा न.....नई तो घर कैसे चलेगा? खाना कैसे बनेगा?"

-"मैं भी नौकरी करूंगा।" बच्चे ने मासूमियत से उसने सर उठाकर ऐसे कहा जैसे उसने ख़ज़ाना खोल लिया हो। माँ ने प्यार से अपने बहते आंसुओं को छुपाते हुए बच्चे को गले लगा लिया, "कल सेअच्छी तरह खाना खाया कर। तू अकेला नई है, मैं हर दम तेरे साथ हूँ। थोड़ी देर के लिए काम पर चली गयी तो तुझसे दूर थोड़े ही चली गयी।"

इस छः साल के बच्चे का नाम रघुवीर था। प्यार से सब इसे रघु बुलाते थे। कसौली क़स्बे की एक छोटी सी बस्ती के एक छोटे से मकान में रहने वाला यह एक छोटा सा सुखी परिवार था। पिता-चीना नेगी-मोहन मीकिन्स फ़ैक्ट्री में बॉटलिंग डिपार्टमेंट में काम करता था, माँ दिन में घर के काम काज के बाद आसपास के साभ्रांत परिवार वालों के घरों में हाथ बटा दिया करती थी। रघु या तो माँ के गिर्द डोलता रहता था या फिर उसकी गोदी या सर पर लदा रहता था। परिवार की आवश्यकताएं भी ज़्यादा नहीं थीं और महंगाई भी इतनी नहीं थी। ख़र्चा आराम से चल जाता था इसलिए घर के वातावरण में प्यार ही प्यार बसता था। अक्सर शामों

में जब चीना फ़ैक्ट्री से लौट रहा होता तो उसकी पत्नी गौरी रघु को कंधे पर धरे उसे आधे रास्ते लेने आ जाती। चीना प्यार से रघु को गौरी के सर से उतार लेता, ''आजा. ....मेरा बेटा.....आजा !'' चीना उसे अपनी बाँहों में लेकर अपनी गोदी में रख लेता। रघु को जैसे दोनों जहान की दौलत मिल जाती। वो बोलना तब बस सीखा ही सीखा था। वह दिनभर की सारी बातें तफ़्सील से सिलसिले वार अपने पिता को रास्ते भर बताता आता जैसे अगर यह सब रघु ने नहीं बताया तो उसके पिता को कौन बताने वाला है।

रघु जब तक पांच साल का हुआ तब एक दुर्घटना में चीना की मृत्यु हो गयी। कसौली से बस में अपने एक रिश्तेदार की मृत्यु पर जाते हुए उसकी बस एक खाई में गिर गयी और उसमें बैठे कई लोग जख़्मी हो गए। चार लोग– जो उस तरफ़ बैठे थे जिस तरफ़ को बस गिरी-तत्काल स्वर्गवासी हो गए। उन चार में से एक चीना नेगी भी था। उसके बाद घर के समीकरण गड़बड़ा गए। पैसे की क़िल्लत शुरू हो गयी और गौरी जिसने कभी नौकरी नहीं की थी, उसे नौकरी ढूंढनी पड़ी। फैक्ट्री वालों ने रहम किया और गौरी को फलों की छटाई वाले डिपार्टमेंट में रख दिया। नौकरी तो मिल गयी, काम तो चलने लगा लेकिन रघु अकेला रह गया। और अकेला पन रघु को क़तई बर्दाश्त नहीं होता था। उसका दाख़िला माँ ने पास के एक छोटे से स्कूल में करवा दिया था लेकिन स्कूल तो सुबह से दोपहर के एक बजे समाप्त हो जाता था। एक के बाद? रघु घर के दरवाज़े पर बैठकर अमूमन अपनी माँ के आने के इंतज़ार में वक़्त गुज़ारता रहता। उसे खाने पीने का भी होश नहीं रहता।

-''मैं नौकरी नहीं कर सकता माँ?'' रघु ने माँ से एक शाम पूछा।

-''क्यों नहीं कर सकता! तू ज़रा बड़ा हो जा, फिर नौकरी क्या तू तो नौकर रख सकेगा।''

-''मैं बहुत सा पैसा कमाऊंगा। फिर तुम्हें काम नहीं करना पड़ेगा।''

माँ ने तुलसी पर दिया लगाकर प्रणाम करके रघुवीर को प्यार से गले लगा लिया, ''अच्छा, अभी खाना तो बनाऊँ?'' रघु ने 'हाँ' में सर हिला दिया।

समय कटता रहा और समय के साथे-जैसे और जगह हुआ-कसौली में भी पारम्परिक कलाएं/नृत्यगीत धीरे-धीरे कम होने लगे और हिंदी फ़िल्मों और फ़िल्मीगीतों का कल्चर घर करता गया। शहर में फ़िल्मों के गाने खूब सुनाई देते थे। रघु के बड़े होने तक तो सेल फ़ोन भी आ चुके थे सो उनमें भी भर भरकर लोग पिक्चरें, टी वी प्रोग्राम और गाने देखा करते थे। रघु भी देखता था। वह तमाम एक्टरों की आवाज़

की नक़ल करने में मास्टर था। उसका हुनर यह था कि वह अलग अलग एक्टरों की नक़ल अपने अनोखे अंदाज़ में करता था और उससे एक अलग प्रकार की कहानी नुमा बनाकर पेश करता था। उसके दोस्त उसकी अदाकारी, नक़ल और कहानियां सुन सुन कर लोटपोट हो जाते थे। गाना भी रघु कुछ इस तरह एक्टिंग करके, नाच नाच के गाता था कि कॉलेज के प्रोग्रामों में लोग झूम झूम जाते थे। रघु और रघुके दोस्त अक्सर पास के सैंट मैरी स्कूल के चक्कर लगाते थे। सैंट मैरी स्कूल को-एजुकेशन वाला था। वहां लड़कियां भी पढ़ती थीं।

-''रघु ! संभल के रहियो।...'' एक दोस्त ने कहा।

-''क्यों?''

-''ये लड़कियां राक्षसी होती हैं। ददा जी कहा करते थे कि ये पीछे पड़ जाएँ तो जीना मुश्किल कर देती हैं।''

-''तो इनको अपने पीछे मत पड़ने दो। तुम उनके पीछे चलो।''

-''अरे यार मेरा मतलब.....''

-''मतलब छोड़.....वो देख.....स्कूटी वाली....'' दूसरे दोस्त ने उस तरफ़ इशारा करते हुए कहा, ''है न ग़ज़ब.....क्या टाइट जींस में आती है रे....क्या ख़ूबसूरत भरी भरी टाँगें दिखती हैं उसकी।''

-''टांगें.....टांगें.....टांगें.....'' रघु बमका, ''तुम लोग साले इतने दिनों से टांगों की बातें कर रहे हो, टांगों में ऐसा है क्या ये नहीं बताते।''

-''रघु तू नहीं समझेगा।'' दोस्त ने कंधे पर हाथ रखकर समझाया।

-''नहीं समझूंगा तो मैं यहाँ क्यों हूँ?....मैं चला। टाइम वेस्ट मत करो।'' रघु चलने को हुआ कि सैंटमैरी में पढ़ने वाले एक लड़के ने उसे पीछे से पुकारा, ''आर यू रघुवीर?'' रघुवीर मुड़ा। ज़रा सा डरा। उसे लगा के शायद स्कूल वालों ने उसे यहाँ खड़ा होकर लड़कियां देखते हुए देख लिया होगा और अब वे उसे लताड़ने के लिए बुला रहे हैं। वह वहां से निकल जाना चाहता था लेकिन तब तक वह बुलाने वाला लड़का दौड़कर बहुत पास आ गया था और रघुवीर का वहां से भाग जाना मुमकिन नहीं था।

-''आर यू रघुवीर?'' लड़के ने फिर हाँफते हुए पूंछा।

रघुवीर सिर्फ उस लड़के को देखता रह गया।

-''लिसिन'' लड़के ने साँस थामते हुए कहा, ''मैंने तुम्हारी मिमिक्री देखी है, कल यहीं इसी पेड़ के पास। तुम कुछ फ़िल्म एक्टर्स की नक़ल कर रहे थे और कॉमेडी कर रहे थे.....''

-''देखिये भाई जी, ''रघु के दोस्त ने रघु को बचाने की तर्ज़ में डरते डरते कहा, ''हम जा रहे हैं.....हम यहाँ नहीं आएंगे, बस।''

-''नहीं नहीं, ''लड़के ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मैं यहाँ कॉलेज में पढ़ता हूँ और मैं अपने एनुअल डे में एक कॉमेडी शो कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि रघुवीर! यू पार्टिसिपेट इन दैट।''

-''मैं?'' रघुवीर ने सहमते हुए पूछा, ''मैं तो इस कॉलेज में नहीं पढ़ता।''

-''अरे यार.....कॉलेज में नहीं पढ़ते, शहर में तो रहते हो! लोकल टैलेंट तो हो !....प्लीज़ कल इसी वक्त आ जाओ, मैं रिहर्सल हॉल में मिलूंगा। चार दिन बाद फ़ंक्शन है।''

चार दिन बाद के कॉमेडी शो का नतीजा ये निकला कि रघुवीर- जो अब तक सिर्फ़ अपने दोस्तों में ही मशहूर था-सारे शहर में मशहूर हो गया। आवाजें निकालने, लोगों की नक़ल करने की उस पर जो दिव्य कृपा थी भरपूर यश देने लगी। स्कूल में और फिर दो साल कॉलेज में स्टेज प्रोग्रामों में वाह वाही लूटने के बाद उसे यह बात सताने लगी कि इस छोटे से शहर में वह करेगा क्या! घर था, घर के कुछ बाग़ान थे लेकिन वह जो कुछ भी था उससे किस मारा मारी से घर का ख़र्च चलता था यह भी वह देख ही रहा था। बम्बईया फ़िल्में कसौली में ख़ूब देखी जाती थीं। वीडियो पर दोस्तों के साथ दिन रात फ़िल्में देखना, इधर उधर फ़िल्मी हरकतें करते हुए हीरो/हीरोइनों के डायलॉग दोहराते फिरना बस यही काम था। टी वी चैनल भी आ गए थे लेकिन वे भी या तो फ़िल्में दिखाते रहते थे या फिर फ़िल्मी तर्ज़ के सीरियल दिखाते रहते थे। एक चैनल था जो टैलेंट हंट के नाम पर सारे भारत से नए नए अदाकारों की खोज में था। ख़बर कसौली भी पहुंची। दोस्तों ने रघुवीर को वैसे ही 'मिस्टर कसौली' कहकर चढ़ा रखा था। चैनल के नुमाइंदे तमाम जगह घूम रहे थे। जब लोकल टैलेंट तलाशने की बात आयी तो तक़रीबन सभी ने रघुवीर का नाम तजवीज़ किया। हिमाचल प्रदेश से तीन लोग चुने गए, उनमे से एक रघुवीर!

-''ओ ए बादशाह! वारे न्यारे तेरे तो.....''

-''साला हीरो बनेगा!''

-''अबे हीरो तो वो है ही.....अब तो सुपरस्टार बनेगा।''

दोस्तों ने तमाम तरह की बातें कीं। माँ को इस दुनिया का कुछ मालूम नहीं था इसलिए उसे सुर्ख़ ख़्वाब दिखाना आसान था। वो मान गयी।

बम्बई में चैनल वालों ने सारे चुने हुए लोगों के लिए एक गैस्ट हाउस में ठहरने का बंदोबस्त किया था। एक कमरे में दो लोग। खाने पीने उठने बैठने के

लिए बड़ा सा हॉल और एक किचेन जो सुबह नौ से रात के दस तक खुला रहता था। चुने हुए लोगों में लड़कियां भी थीं। उनके ठहरने के लिए अलग एक बड़े से फ़्लैट में बंदोबस्त किया गया था। फ़्लैट बड़ा था जिसमे चार कमरे थे, किचेन था और एक बैठक थी। हर कमरे में दो-दो लड़कियां रखी गयी थीं। फ़्लैट में एक नौकरानी थी जो सफ़ाई भी करती थी, खाना भी बनाती थी और रहती भी वहीं थी। लड़कियां कई अलग-अलग जगहों से चुनकर आयीं थीं। उनमें से एक थी पल्लवी। पल्लवी तीखे नैन नक़्श की तेज़ तर्रार लड़की थी जो ग़ज़ब की अदाकारा भी थी, गायिका भी थी और छरछरे बदन वाली सांवले रंग की वो लड़की थी जिसमें ग़ज़ब का 'नमक' था। जो एक बार देखे उस पर फ़िदा हो जाये। पल्लवी तक़रीबन बीस साल की लखनऊ के ला-मार्टिनियर गर्ल्स कॉलेज के बीए में पढ़ने वाली वो लड़की थी जिसका लखनऊ के थिएटर सर्कल से लेकर भातखण्डे स्कूल तक ज़बरदस्त नाम था।

राधा मोहन सक्सैना ने-जो निराला नगर में भांडों की मस्जिद के पास रहते थे-अपनी बेटी पल्लवी सक्सैना को लड़की नहीं लड़का समझ कर पाला था। उसको पढ़ाने लिखाने, संगीत सिखाने और उसकी हर मांग पूरी करने में उन्होंने एक रत्ती कसर नहीं छोड़ी। दोस्त कहते रहे कि 'क्यों करते हो इतना ख़र्च इस पर.....ये तो पराये घर जाने वाली है 'लेकिन सक्सैना साहेब के आगे - पीछे कोई था नहीं, बीबी मर चुकी थी और ले देकर जो कुछ था वह पल्लवी ही थी। पल्लवी भी इस बात को अच्छी तरह जानती थी। वह अपने पिता का ख़्याल भी रखती थी और उनकी हर बात मानती भी थी। लखनऊ में हुए 'टैलेंट हंट' में जब पल्लवी के सिलेक्शन की बात आयी तो सक्सैना साहेब ने कहा, ''कहाँ तुम आर्टिस्ट और कहाँ ये भांड़ों की लाइन !'' लेकिन पल्लवी के 'एक बार की ही तो बात है.....मैं कहाँ एक्टिंग ज्वाइन करने जा रही हूँ' कहने पर उन्हें राज़ी होना पड़ा।

लड़की लखनऊ से पहली बार निकली थी और अचानक इतनी बड़ी दुनिया, लड़कों का साथ, इस बेबाक़ी बेतक्कलुफ़ी का माहौल और इतनी आज़ादी.....सब मिला जुलाकर पल्लवी को मज़ा आ गया। मज़ा तो रघुवीर को और और लड़कों को भी आ गया। बम्बई आने के दो दिनों के भीतर ही सारे के सारे दोस्त बन गए। फिर इत्तेफाक़ कहिये, संजोग कहिये फ़ाइनल सिलेक्शन में दो लड़कियां- पल्लवी सक्सैना और गुड़िया कंचन तथा लड़कों में रघुवीर चीना नेगी और अरविन्द इनामदार ही चुने गए। इन चारों को छोड़कर सबको वापस कर दिया गया। फिर गुड़िया कंचन को लगा कि इस तरह यहाँ पड़े रहने से तो उसकी पढ़ाई पर असर पड़ेगा और घर

वाले भी इतने दिन यहाँ अकेले पड़े रहने पर टंटा खड़ा करेंगे सो उसने तो विदा ले ली। अरविन्द इनामदार बैंगलोर का था, पढ़ाई लिखाई में वह वैसे भी ढीला था इसलिए उसके लिए तो अच्छा था कि वह यहाँ पड़ा रहे। एक्टर बन गया तो ठीक, नहीं बन पाया तो बम्बई इतना बड़ा, इतनी संभावनाओं का शहर है कि यहाँ कुछ तो कर ही लेगा। लेकिन रघुवीर बड़ी शिद्दत से एक्टिंग को अपना कॅरियर बनाने पर तुला था। पल्लवी से उसकी अच्छी पटने लगी थी और अक्सर उससे वह अपने दिल की बात भी कर लेता था। इन तीनों-अरविन्द, रघुवीर और पल्लवी को जब फ़ाइनल किया गया और इनको लेकर सीरियल और एक डांस-म्यूजिक शो प्लान किया गया तो इन तीनों से कहा गया कि अब इनको पैसे मिलने लगे हैं, अब ये अपने रहने खाने, अपने ख़र्चे का बंदोबस्त कर लें।

तीनों ने बड़ी खोज के बाद अँधेरी के आदर्श नगर इलाक़े में दो बैडरूम का एक फ़्लैट किराये पर ले लिया।

-''दो लड़के और एक लड़की !....नो....नो.....'' पल्लवी ने ऐतराज़ किया, ''मेरा बाप मुझे मार डालेगा।''

-''मार तो वो जब डालेगा जब हम तेरे लिए दूल्हा बनकर बरात लेकर जायेंगे. ....हम तो तुझ से नफ़रत करते हैं।''

-''नफ़रत, माई फुट ! तीन बैडरूम वाला फ़्लैट क्यों नहीं?''

-''ये बम्बई है अवध -सुंदरी....यहाँ एक बैडरूम फ़्लैट भी बड़ी प्रार्थनाओं के बाद मिलता है। दो तो जब मिलता है जब भगवान प्रसन्न हो जाते हैं। तीन बैडरूम वाले फ़्लैट्स तो यहाँ आसपास के पांच किलोमीटर रेडियस में भी शायद न मिलें।''

-''एक बैडरूम मुझे चाहिए।''

यहाँ फ़्लैट लिया जा रहा था उधर लखनऊ में सक्सैना साहेब परेशान थे-''थोड़े दिनों की बात थी, ये तो लम्बा मामला कर लिया तुमने।.....पढ़ाई लिखाई.....''

-''एक महीना और....ज़्यादा से ज़्यादा.....'' पल्लवी ने समझाया।

-''ऐसा वो कहते हैं.....एक महीने के ऊपर लगा तो?''

-''नहीं नहीं.....और ऊपर नहीं लगेगा....और लगेगा तो मैं सब छोड़ छाड़कर चली आऊँगी।''

लेकिन सुनहरा पर्दा एक ऐसी चीज़ है जो लत की तरह लगता है, नशे की तरह चढ़ता है और जोंक की तरह चिपकता है। एक बार आदमी कैमरे के सामने आ जाये, बस! फिर बार-बार कैमरे पर आने की लालसा दिनों दिन बढ़ती जाती है। लेकिन इन तीनों के साथ एक बात और भी थी और वह यह

थी कि चैनल वालों ने प्रोग्राम की तारीखों में रद्दो बदल कर के शेड्यूल को आगे बढ़ा दिया था। इसलिए दस दिन बीच में ऐसे ही बेकार चले गए। जब मालूम पड़ा कि दस दिन कुछ होने वाला नहीं है तो अरविन्द इनामदार तो घर-बैंगलोर-हो लिया। पल्लवी ने बड़ी कोशिश की कि बम्बई से लखनऊ का टिकट मिल जाये लेकिन एसी में वेटलिस्ट सौ के ऊपर तक थी और स्लीपर से वह जाना नहीं चाहती थी।

-''क्यों स्लीपर तो अच्छा है....हवा आती है, लोग सीधे सादे बग़ैर 'नाक' वाले होते हैं.....''

-''गन्दा होता है यार।''

-''तो मूतने मत जाओ। हंहंहंहं !''

-''शट अप!''

-''लियो.....सच्ची कहो तो शटअप! देखो अवध सुंदरी अब बड़े हो गए, अब बच्चों की तरह शर्मा के नहीं चलेगा।''

-''बड़े हो गए तो क्या गन्दा गन्दा बोलो?''

-''अच्छा ये बताओ.....ये लड़कियां बैठकर ही क्यों करती हैं, खड़े खड़े लड़कों की तरह क्यों नहीं करतीं?सब बात में बराबरी करती हैं तो मूतने में क्यों नहीं?''

-'' क्योंकि लड़की के न.....ओह शट अप!''

दोनों ठठा के हंस पड़े। पल्लवी ने रघुवीर को तकिया उठा के दे मारा। रघुवीर बचा और फिर दौड़कर पल्लवी से लिपट गया।

-''क्या बदतमीज़ी है!'' पल्लवी ने ऐतराज़ किया।

-''घबराओ नहीं, कोई नहीं देख रहा है।'' रघुवीर ने पल्लवी की आँखों में एक पल गहरे देखा। पल्लवी की नज़रें नीची हो गयीं। रघुवीर ने उसके होंठों पर अपने होंठ रख दिए। ज़रा सी कुनमुन के बाद दोनों के होंठ से होंठ, जीभ से जीभ और गर्मियों से गर्मियां खेलने लगीं। दोनों के दोनों तरफ़ दोनों की बाहें कस गयीं। रघुवीर ने कभी लड़की और पल्लवी ने कभी लड़के की इतनी कुरबत महसूस नहीं की थी। जवानी अपने जोश पर उछली और दोनों के हाथ एक दूसरे के जिस्म को 'एक्स्प्लोर' करने में लग गए। रघुवीर ने पल्लवी के सख़्त सीनों को मसलते मसलते अपने हाथों से नीचे बंधा उसकी शलवार का नाड़ा खोल दिया। पल्लवी ने ऐतराज़ किया और उसके दोनों हाथों को हटाने की कोशिश भी की।

-''देखने तो दे...होती कैसी है लड़कियों की। मैं तो यह बात बचपन से पूछ रहा हूँ.....टांगों के बीच आख़िर ऐसा है क्या, कोई बताता ही नहीं।''

-“मेरे पीरियड्स चल रहे हैं।”

-“देख ही तो रहा हूँ....कुछ कर थोड़े ही रहा हूँ।”

फिर रघुवीर खून से सनी पल्लवी की जांघों के बीच देखता रहा, चूमता रहा। लड़की रघुवीर की अपनी जांघों में अठखेलियां करती उँगलियाँ महसूस करती आंखे बंद किये लेटी रही। गोधुली का समय बस बीता ही बीता था। दस कदम दूर पेट्रोल पम्प के बग़ल वाली मस्जिद से लाउडस्पीकर पर मग़रिब की अज़ान शुरू हो गयी। ऐसे जैसे कि इस पनपते अलिखित रिश्ते को दैवी अनुमति हासिल हो गयी हो।

-“पल्लवी!” डायरेक्टर ने आवाज लगाई, “व्हेर इज़ पल्लवी?” उसने मेक-अप मेन से पूछा।

-“आ रही है सर।” मेक-अप वाले ने अपना बैग सँभालते हुए कहा।

-“आह ! देयर यू आर !” पल्ल्वी को देखकर डाइरेक्टर के जैसे जान में जान आ गयी, “तुम तो डांसर भी हो और गाती भी हो.....है न?...एक काम करते हैं, एक डांस आईटम सी, उस विच न मैं मेन डांसर ताल संतुष्ट नई हूँ, तुम कर सकती हो?”

-“मेरे पाओं में बहुत दर्द है।”

-“ओये कोई नई.....गोल्ली खाल्ले....बोल इंजेक्शन लगवा दूँ....लेकिन करना तुझे ही है।”

फेमस स्टूडियो महालक्ष्मी के बड़े वाले स्टूडियो में सैट लगा था। दस कैमेरा सैट-अप था। ऊपर नीचे अग़ल बग़ल तमाम लाइटें लगी थीं। एक तरफ़ ऑडियंस के लिए कुर्सियां थीं और सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर पहली मज़िल पर कण्ट्रोल रूम (जहाँ प्रोग्राम रिकॉर्ड होता) बनाया गया था। सुबह से शुरू होकर लन्च तक रिहर्सल चली। लन्च के बाद रिकॉर्डिंग शुरू हुई। रिकॉर्डिंग टुकड़ों में थी— डांस स्टेप्स की, साज़ों की, ऑडियंस रिऐक्शनो की, लाइट्स के कट्स की। रिकॉर्डिंग जब समाप्त हुई तब तक रात के ग्यारह बज चुके थे और तब तक पल्लवी के पाओं का दर्द बढ़कर 104 डिग्री बुख़ार बन गया था। उसका बदन तप रहा था और उसे घर पहुँचाने के लिए प्रोडक्शन के एक आदमी को मुक़र्रर करना पड़ा। रघुवीर का उस दिन उस रिकॉर्डिंग में कोई काम नहीं था इसलिए वह घर पर ही था। दिन में उसने पास के शेट्टी के होटल में जाकर फुल पूरी ‘राईसप्लेट’ खाई थी लेकिन रात में उसने घर में आलू मैथी की भाजी बनाकर रखी थी। उसे मालूम था पल्लवी को आलू मैथी बहुत पसंद है। उसने सोचा पल्लवी को सरप्राईज़ दिया

जाये। वह पल्लवी का शूटिंग से लौटने का इंतज़ार करता रहा। उसने सोचा था कि उसके आने के बाद वह 'रेडतंदूर' रेस्टॉरंट से दो फ़र्स्टक्लास बटर परांठे मंगवाएगा और फिर दोनों बैठकर शांति से खाएंगे। लेकिन जब दस बज गए तो रघवीर ने पल्लवी के साथ खाना खाने की आशा छोड़ दी। मैथी आलू की भाजी बर्तन से ढांककर सुबह के नाश्ते में पाओ के साथ खाने के लिए रख दी और एक गिलास दूध पीकर सोने का बंदोबस्त करने लगा। हालाँकि नींद कैसे आती? एक तो इतनी जल्दी और वह भी पल्लवी के बग़ैर! पौने बारह बजे जब दरवाजे की घंटी बजी और तपते बदन पल्लवी घर में दाख़िल हुई तो रघुवीर की नींद ही नहीं चैन भी उड़ गया।

-''डाक्टर को दिखाया? दवा खाई?''

-''सैट पर काम चल रहा था.....मुझे बहुत ठण्ड लग रही है।''

-'' यहाँ कम्बख़्त न कम्बल है न रज़ाई।''

-''गद्दा ओढ़ा दो....प्लीज...''

-''तुम लेटो....मैं डाक्टर देखता हूँ कोई खुला हो तो.....''

-''इस समय कोई नहीं होगा। तुम तो गद्दा ओढ़ा दो और सो जाओ।''

-'' कुछ खाया?''

-''खाते बना ही नहीं।''

-''दूध पियोगी?''

-''दूध है?''

-''हाँ हाँ....हल्दी डाल के दे दूँ? पियोगी?''

-''छोडो अब बस।''

पल्लवी कंप कंपाती सी गद्दा ओढ़ कर किसी तरह नींद में चली गयी। रघुवीर कुर्सी पर बैठा सर पर हाथ रखे रात भर जागता रहा।

-''चाय पियोगी?'' सुबह जैसे ही पल्लवी की आंख ज़रा खुली तो रघुवीर ने पूछा।

-''ऊँ हूँ।''

-''दूध?''

-''ऊँ हूँ।''

-''बुख़ार तो कल से कम लगता है।'' माथे पर हाथ लगाकर रघुवीर ने कहा, ''अभी साढ़े आठ बजा है, तुम हाथ मुंह धोलो.....चाहो तो चाय बना दूँ, पीलो.... .फिर मैं डाक्टर लेकर आता हूँ।.....तुमसे उठते बनेगा?''

-''हाँ मैं अब ठीक हूँ.....पीरियड्स चल रहे हैं, दो तीन दिन में सब ठीक हो जायेगा।''

-''तो दो तीन दिन भुगतोगी?...डाक्टर किस लिए होते हैं?''

-''तो लाना क्या.....डाक्टर के यहाँ तो मैं चल सकती हूँ।''

-''अब ऐसी भी मर्दानी न बनो अवध सुंदरी.....दो दिन आराम करोगी तो ग़दर नहीं हो जायेगा।''

-''तुम्हें जाना नहीं है?'' पल्लवी ने फिर से आँखें मूंदते हुए पूछा।

-''मुझे कहीं नहीं जाना।''

-''क्यों, आज तो तुम्हारे प्रोग्राम की रिकॉर्डिंग है न.....''

-''होने दो....आज मेरा प्रोग्राम घर में बीमार पड़ा है।''

-''चैनल तुम्हारे लिए थोड़े ही ठहरेगा।''

-''क्या करेंगे.....मेरे बग़ैर कर लेंगे?.....नो वे....।''

-''अब बेकार की बातें न करो.....चलो डाक्टर के यहां मैं चली जाती हूँ, तुम रिकॉर्डिंग पर जाओ।''

पल्ल्वी की बात किसी तरह मानकर रघुवीर गया तो रिकॉर्डिंग पर लेकिन उसका दिल नहीं लगा।

-''यार मिस्टर नेगी!'' डाइरेक्टर ने कंट्रोल रूम से नीचे फ़्लोर पर आकर रघुवीर से दोस्ताना अंदाज में कहा, ''आज दिल से काम नहीं हो रहा है....क्या बात है ?''

-''सर मेरी रूम मेट.....''

-''पल्लवी?''

-''हाँ सर!''

-''तो?''

-''उसकी तबियत ख़राब है.....तो थोड़ी चिंता है थोड़ी थकान है।''

-''गाने के लिए तो आदमी को रिलैक्स्ड होना चाहिए न.....मन पर बोझ लेकर आवाज़ ठीक नहीं होती।''

-''हाँ सर''

-''तो अब एक काम कर.....मन का बोझ उतार दे और काम पर ध्यान दे।''

-''बेटा आप सीधे टिकट करो और वापस आ जाओ'', सक्सेना साहेब ने बड़े भरे गले से कहा। उन्हें पल्लवी की ख़राब तबियत के बारे में कई दिनों बाद पता चला था।

-''अब तो मैं ठीक हूँ पापा। बस पंद्रह बीस दिन की और बात है।''

-''नहीं चाहिए उनका पैसा भाई।''

-''पैसे की बात नहीं है पापा.....कमिटमेंट की बात है.....जो तय किया है उतना तो करना पड़ेगा।"

-''नहीं तो क्या कर लेंगे? मुक़दमा करेंगे?.....मैं देख लूँगा।''

-''अरे दस पंद्रह दिन की बात और है लड़ाई झगड़े में क्यों पड़ना।''

लखनऊ में सक्सेना साहेब ने माथा पीट लिया जो कि पल्लवी देख नहीं पायी और न ये समझ पायी कि आख़िर बाप उसकी बात समझ क्यों नहीं रहा है। लेकिन वो तो बाप बनकर ही, या माँ बनकर ही, समझ में आता है।

अब बाप को कुछ कुछ ऐसा लगने लगा था कि लड़की के बम्बई रुकने की ज़िद के पीछे केवल टी वी प्रोग्राम ही नहीं कुछ और भी है। ये ''और'' मोहब्बत भी हो सकती है ये उनकी समझ में नहीं आया और वे ऐसी उम्मीद भी नहीं करते थे। उनकी पहली प्रतिक्रिया ये थी कि वे फ़ौरन टिकट बुक करें और बम्बई जाकर बिटिया का हाल चाल लें और उसे मना कर वापस ले आएं। फिर उनके ज़ेहन में पल्लवी के ही शब्द गूंजे ''पंद्रह बीस दिनों की ही तो और बात है'' और उन्होंने सब्र कर लिया।

इधर पल्लवी की बीमारी में जिस शिद्दत और मोहब्बत से रघु ने जी जान लगा दी थी उससे पल्लवी का सर झुक गया, मन शुक्रगुज़ार हो गया और दिल उसे एक पल भी छोड़ने को तैयार न हुआ। ''शादी कर ले!'' सैट पर एक एक्ट्रेस ने पल्लवी के लिए रघु की सेवा देखकर मशविरा दिया।

-''शादी?''

-''ऐसा लड़का आजकल दुर्लभ है जो बुरे वक़्त में साथ दे, अच्छे में तो सब आ जाते हैं।'' एक्ट्रेस मिडिल क्लास घराने से आयी थी और हाल ही में टी वी एक्ट्रेस बनी थी। उसने मेक-अप वाले से नेल पॉलिश लगवाते बग़ल में बैठी 'हेयर' कर-वाती पल्लवी से कहा।

-''पिता जी को बिना बताये?'' पल्लवी ने लड़की की तरफ़ नजरें तिरछी करके सवाल किया।

-''पिता को तो पता चल ही जाने वाला है और तू बाप की इकलौती औलाद है, एक्सेप्ट तो उसे करना ही पड़ेगा।''

-''न ! पिता जी की परमीशन की बग़ैर नहीं। मेरे फ़ादर ने अपनी पूरी लाईफ़ मेरे वेलफ़ेयर में लगा दी।''

-''चलो चलो.....जल्दी करो....'' प्रोडक्शन के लड़के ने मेक-अप/हेयर वालों

को इशारा करते हुए कहा, ''लाइटिंग हो चुकी है, सब रेडी है। आर्टिस्ट को भेजो! जल्दी।''

चौदहवीं रोड खार पर रात के ग्यारह बजे भी शहतूत प्रोडक्शंस का ऑफ़िस गुलज़ार था। रौशनी दरवाज़े के बाहर तक फैल रही थी और अंदर स्टाफ़ की भीड़ थी। पार्टनरशिप टूटने के बाद भी शहतूत प्रोडक्शंस का नाम नहीं बदला गया था। अब एक नहीं दो तीन डाइरेक्टर्स उस प्रोग्राम के साथ जुड़ गए थे। शहनाज़ अब तक़रीबन रोजाना ऑफ़िस और स्टूडियो के चक्कर लगाती थी। शहनाज़ का भाई जो कभी दुबई में गार्डन-फ़र्नीचर बनाने का कंसल्टैंट था वह भी पिता के कहने पर शहनाज़ का हाथ बटाने मय बीबी बच्चों के बम्बई आकर बस गया था। अब शहनाज़ के पास अपने गुज़रे कल के बारे में सोचने का वक्त ही नहीं होता था। यह प्रोग्राम उसके लिए एक 'थेरपी' की तरह साबित हुआ। तपन की हौंडा सिटी जब ऑफ़िस के कम्पाउंड में घुसी तब दो लड़के खुले में खड़े सिगरट ब्रेक ले रहे थे। गाड़ियां वहां तमाम आती जाती थीं इसलिए किसी ने कोई नोटिस नहीं लिया लेकिन जैसे ही तपन उतरा तो एक लड़के ने गहरी नज़र से उसे पहचानने की कोशिश की और फिर जल्दी से अपनी जलती सिगरेट फेककर उसकी तरफ़ लपका।

-''हैलो!.....यू आर तपन सेन?''

तपन को तब तक आम लोगों से मिस्टर तपन या तपन जी या तपन सर सुनने की आदत पड़ चुकी थी इसलिए सिर्फ तपन सेन सुनकर उसकी भंवें तन गयीं। वह मुड़ा।

-''हू आर यू?''

-''आप भूल गए.....'' लड़के ने हाथ बढ़ाते हुए कहा, ''मैं दीपक चोपड़ा, हम कभी टी वी सेण्टर में मिले थे। हम दोनों टी वी सीरियल के लिए वहां गए थे... ..रिमेम्बर?!''

तपन को याद तो आया लेकिन उसने अनजान बनना ही पसंद किया। फिर उसने जैसे सोचते हुए कहा, ''टी वी सेण्टर.....सीरियल.....आई सी....''

फिर उसने दीपक की बढ़े हाथ को मिलाते हुए कहा, ''गुड टू मीट यू दीपक! आप यहाँ कैसे?''

-''मैं यहाँ असिस्टेंट डाइरेक्टर हूँ।'' दीपक की समझ में आ गया कि तपन से बराबरी से बात नहीं की जा सकती।

-''गुड टू सी यू दीपक।'' तपन अंदर चला गया और दीपक वापस अपने

दोस्त के पास आकर यह सोचता रह गया कि आख़िर ऐसे शख़्स के लिए उसने अपनी आधी सिगरेट क्यों बर्बाद की।

-''कौन है?'' दीपक के साथी ने पूछा।

-''है साला एक, कल तक मुझ से भीख मांगता था 'गाने नाच का प्रोग्राम करो तो मुझे बुलाना, प्लीज़!' आज कामयाबी मिल गयी तो साला पहचानता नहीं। हुंह! बास्टर्ड!''

अंदर घुसते साथ कॉरिडोर में देखा तो कभी टी वी सेंटर में रहे और भांडुप से जान पहचाने वाले गोरे एडिटिंग रूम से निकल रहे थे। सामने पड़ गए। तपन ने ज़ोर से आवाज लगाई, ''गोरे साब!''

-''अरे तपन जी!''

तपन ने गोरे के कंधे पर हाथ रखा, ''यहाँ आ गए? टी वी छोड़ दिया?''

-''वी आर एस ले लिया।''

-''तो आज कल रहते कहाँ है?''

-''अब डोम्बिवली में रहता हूँ।''

-गुड टू सी यू!'' और तपन अंदर ऑफ़िस की ओर चल दिया।

-''हाय शहनाज़!'' तपन ने शहनाज़ की केबिन का दरवाज़ा खोलते हुए कहा। उसने ख़ासतौर से फ़ोन करके शहनाज़ से मिलने का अपॉइंटमेंट माँगा था।

-''कम इन तपन।''

मीटिंग बहुत छोटी थी। तपन ने कहा कि अब उसे हौंडा सिटी गाड़ी की ज़रुरत नहीं है क्योंकि उसने नई ई-क्लास मर्सिडीज ख़रीद ली है इसलिए वह गाड़ी वापस कर रहा है और दूसरे कि कांदिवली के जिस फ़्लैट में वह रह रहा है अगर शहनाज़ वह फ़्लैट उसे बेचना चाहे तो वह उस फ़्लैट को ख़रीदने की लिए तैयार है।

-''गाड़ी तो बहुत रगड़ चुकी है, तुम ही रख लो। हाँ! फ़्लैट की बात मैं अब्बू से कर लूंगी तो या तो वो या मुबश्शिर-मेरा भाई-तुमसे बात कर लेंगे।'' फिर शहनाज़ ने जैसे शिष्टाचार के नाते पूछा, ''मैं हट गयी तो अब तो बीबी वापस आ गयी?''

-''मैं लेने ही नहीं गया।''

-''तो वो तो आ सकती थी।''

-''उसकी मर्ज़ी।''

-''तो क्या आधी ज़िन्दगी कुंवारे रहोगे।''

-''तुम भी तो हो।''

शहनाज़ के चेहरे की नसें जरा तनीं इस ख़्याल से कि ''जिसने तुम्हें बनाया उसी से बराबरी! तुम्हारी हैसियत भले ही मेरी वजह से बढ़ गयी हो औक़ात वही है! चींटी सर तक चढ़ जाने भर से हाथी के बराबर नहीं हो जाती।' फिर उसके होंठों पर हल्की सी मुस्कराहट तैर गयी और उसने कहा, ''बहुत फ़र्क़ है तपन....ज़िंदगियों में भी और तजुबां में भी!''

14

प्याले से काली कॉफ़ी की चुस्की लेकर अपना कल रात का नशा उतारते हुए बम्बई के सबसे ज़्यादा बिकने वाले अंग्रेज़ी अख़बार के संपादक मिस्टर सदाशिव चारी ने प्याला नीचे रखा भी नहीं था कि उनके फ़ोन की घंटी बजी। सुबह की कॉफ़ी पीते में उन्हें किसी से बात करना क़तई पसंद नहीं था। उन्होंने प्याला मेज़ पर रखकर फ़ोन की ओर घूरा ही था कि दूसरी घंटी बजी। फ़ोन उनकी डाइरेक्ट लाइन पर था। इस नम्बर पर हर कोई तो फ़ोन कर भी नहीं सकता था। तीसरी घंटी बजने को हुई कि चारी ने फ़ोन उठाया।

-''चारी!''

-''गुड मॉर्निंग मिस्टर सदाशिव चारी।''

-''गुड मॉर्निंग!'' चारी ने माथे पर बल डालते हुए यह सोचने की कोशिश की कि फ़ोन करने वाला कौन हो सकता है।

-''दिस इज़ निमेष गणात्रा फ्रॉम हैंगर्स एंड हैंगर्स।''

-''ओहो!'' चारी ने ऐसे कहा जैसे उसकी बांछें खिल गयीं। उसने कुर्सी में आगे आते हुए चश्मा चढ़ाते हुए सावधान होकर कहा, ''गुड मॉर्निंग मिस्टर गणात्रा। ''

हैंगर्स एंड हैंगर्स एक अंतर्राष्ट्रीय पी.आर. फर्म थी और निमेष गणात्रा भारत में उसका मैनेजिंग डायरेक्टर। निमेष गणात्रा बम्बई का ही था। मुलुंड कॉलोनी में पैदा हुआ, पला बढ़ा। उसने जब एम.सी.एम्. कॉलेज से किसी तरह बी.कॉम. कर लिया तो उसके बाद न उ सकी आगे पढ़ने की कोई इच्छा थी न घरवालों को इसे आगे पढ़ाने की हैसियत। इसलिए नौकरी ही रास्ता था। एकाउंटेंसी में उसके नंबर अच्छे आये थे इसलिए एकाउंट्स लिखने का काम उसे मिल सकता था। बम्बई में मिड-डे अख़बार शुरू हो चुका था और उसमें नौकरियों के तमाम विज्ञापन होते थे। तमाम बेकारों की तरह उसने भी कई विज्ञापन दाताओं को फ़ोन किये, कुछ के साथ

साक्षात्कार भी हुए लेकिन दो महीने जब कुछ काम नहीं बना तो उसने अपने एक मित्र को फ़ोन किया। ये मित्र वह था जो कभी निमेष के साथ मुलुंड में आठवीं तक पढ़ा था और फिर बाद में परिवार सहित नवी मुम्बई मे शिफ़्ट कर गया था और ग्रेजुएशन के बाद चला गया था छह महीने के लिए अमरीका-आडवर्टाइज़िंग पढ़ने। इसलिए अब यदा कदा ही बात होती थी। इस कभी कभी ही बात होने का एक कारण यह भी था कि निमेष को उसके सामने इन्फ़ेरिओरिटी महसूस होती थी। मित्र-कृष्ण कुमार जैसवाल-ने अमरीका से आने के बाद अपनी एक विज्ञापन एजेंसी खोल ली थी। ये वो दौर था जब नई नई कम्पनियाँ खुल रही थीं और अपना अपना शेयर इशू लेकर आ रही थीं। शेयर इशू बड़ा धंधा था और जैसवाल ने इन शेयर इशू के विज्ञापनों के लिए अपनी विज्ञापन एजेंसी को ख़ासतौर से समर्पित किया। जैस-वाल की कंपनी चल निकली। निमेष ने सोचा जैसवाल बड़ी बड़ी कंपनियों से संपर्क में है इसलिए शायद मदद कर सके। जैसवाल ने कहा, 'नौकरी क्या करेगा निमेष. ....मेरे साथ ज्वाइन कर ले। फ़ाइनेन्सियल एडवर्टाइजिंग में ज़्यादा तर लोग आना नहीं चाहते और मुझे सपोर्ट की ज़रुरत है।'' निमेष को चाह से ज़्यादा मिल गया।

जमाना बदल रहा था और पब्लिक रिलेशन्स की अहमियत बढ़ने लगी थी। निमेष ने समय को पहचाना और बम्बई में धब्बू स्ट्रीट की एक पुरानी इमारत की तीसरी मज़िल पर एक कमरे का छोटा सा ऑफ़िस लेकर 'ओरायन पी. आर.' के नाम से एक पी. आर. कंपनी शुरू कर दी। जैसवाल ने भी ऐतराज़ नहीं किया। शुरुआत हुई अख़बारों में विज्ञापन बुक करने और इवेंट्स करवाने से। क्योंकि उस दौर में ज़्यादा पी.आर. एजेंसियां थीं नहीं और जो थीं उनमें निमेष की साख कंपनियों और प्रेस में पहले से ही बनी हुई थी इसलिए इनका नाम चल निकला। बिज़नेस वाले मार्केट ढूंढते हैं। जब भारत में पी.आर. का काम बढ़ने लगा और विदेशी पी. आर. कम्पनियाँ यहाँ दुकान लगाने की सोचने लगीं तो उन्होने भारत में अपने लिए पार्टनर्स ढूंढने शुरू किये ताके वे अपनी अंतर्राष्ट्रीय साख और लोकल संबंधों को जोड़कर धंधा आगे बढ़ा सकें। हैंगर्स एंड हैंगर्स स्विट्जरलैंड का एक बड़ा नाम था। लोकल एजेंसियों में कई से इंटरव्यू करने के बाद उन्होंने निमेष की ओरायन के साथ टाई-अप करना तय किया। शर्त यह थी कि ओरायन पूरी तरह डिज़ोल्व हो जाएगी, स्टाफ़ और क्लाइंट्स फ़िलहाल ओरायन के ही रहेंगे, कंसल्टेंट स्विट्जरलैंड से आएगा, निमेष को भारतीय ऑपरेशन्स का एम्. डी. नियुक्त किया जायेगा जो हर छह माही की रिपोर्ट पैरेंट कंपनी को देगा। धीरे धीरे कंपनी नए क्लाइंट्स बनायेगी। निमेष को वेतन तथा भत्ता पैरेंट कंपनी के नियमों के हिसाब से मिलेगा तथा उसे

वे सारी सुविधाएँ मिलेंगीं जो कंपनी के किसी भी एम्. डी. को और देशों में मिलती हैं। निमेष अचानक बड़ा ही नहीं बहुत बड़ा आदमी हो गया-रुतबे से, ओहदे से, पैसे से, संबंधों से और काम से। इसलिए वह मामूली लोगों से बात तो क्या हैलो तक नहीं करता था।

-''चारी साहेब'' निमेष ने फ़ोन पर बड़े धैर्य और आत्म विश्वास के साथ कहना शुरू किया, ''इज़ इट पॉसिबल फ़ॉर यू कि आप आज शाम चार बजे ताज बॉल रूम में आ जाएँ.....अपने फ़ोटो ग्राफ़र, कैमरामैन और दो तीन रिपोर्टर लेकर?'' बग़ैर जवाब का इंतज़ार किये उसने तुरंत कहा, ''एक न्यूज़ ब्रेक है और इसे ब्रेक करने वाला है हिंदी फ़िल्मों का सुपरस्टार.....तो मैं चाह रहा था इसे ज़रा तफ़सील से, प्यार से.....एडिटोरियल के ज़रिये.....युनो.....''

-''अरे बिल्कुल!'' चारी ने पूरे जोश से कहा, ''आप बेफ़िक्र रहिये! आज शाम चार बजे, बॉल रूम.....डन!''

-''थैंक यू मिस्टर चारी।''

फ़ोन रखते समय चारी के माथे पर बल थे और होठों पर एक भद्दी गाली। उसने अपनी कॉफ़ी का प्याला परे खिसकाया और इण्टर कॉम पर अपने एक एसोसियेट एडीटर को आने के लिए कहा।

हालाँकि आज शाम के चार बजे एक अहम् एडिटोरियल मीटिंग रखी गयी थी-जिसे पंद्रह दिन पहले तय किया गया था। लेकिन अचानक इस ताज वाले प्रोग्राम को मना नहीं किया जा सकता था क्योंकि हैंगर्स एंड हैंगर्स से तो अख़बार का बहुत सा काम और फ़ायदा बंधा था। जो न्यूज़ छपवाने की बात गणात्रा कर रहा था वह अख़बार में बतौर ऐडवर्टोरिअल छपेगी-याने जितनी जगह ये न्यूज़ या इसका राइट-अप घेरेगा उतनी जगह की क़ीमत-वो भी विज्ञापन की दर से-अख़बार को मिलेगी जो कि लाखों में होगी। ये न्यूज और एडिटोरियल लोगों का मन बनाएंगे और चर्चा चलाएंगे जिस पर मज़ा ये के पाठक को यह भनक तक नहीं पड़ेगी की यह पेड न्यूज है। इसके आलावा जो फ़ोटोग्राफ़र, रिपोर्टर इस इवेंट में जायेंगे उन्हें तबियत से खाना-पीना और गिफ़्ट मिलेगी। दोनों हाथों में लड्डू कौन छोड़ेगा

-''शाम को मीटिंग तुम कर लो!'' चारी ने एसोसिएट से कहा।

-''उसमें तो कई इम्पोर्टेन्ट पॉलिसीज़ डिसकस होने वाली हैं और वो आप ही कर सकते हैं।''

-''नेवर माइन्ड! आज कल हम लोग जर्नलिस्ट कम और दलाली ज़्यादा कर रहे हैं।'' चारी ने लम्बा सांस लेकर अपने बाएं हाथ से माथे पर से बाल हटाते हुए

दुखद टोन में कहा।

-''फिर कोई पी.आर.इवेंट है क्या?''

-''क्या बताऊँ आई हेट इट लेकिन क्या करूँ बॉस को पैसा चाहिए। ऊपर से गणात्रा ने खुद फ़ोन किया है कुछ तो ख़ास है।''

साढ़े तीन बजे से ताज महल होटल के बाहर कारों का ताँता लगा था। सिक्यो-रिटी एक दम टाइट थी। दरबान भी आदमी जांच परख कर अंदर आने दे रहा था। पुलिस वाले बग़ैर वर्दी के हर जगह नज़र रखे थे। एक गबरू कुत्ते को सड़क से लेकर बॉलरूम के डायस तक सुंघाया जा रहा था। आखिर हिंदी फ़िल्मों का सुपरस्टार आने वाला था! फ़िल्मों के सिवाय इस सोसाइटी में वैसे भी अब बचा क्या है! और जो बचा खुचा है उसे तो सुरक्षित रखना ही होगा।

चार के साढ़े चार फिर साढ़े पांच हो गए! इवेंट मैनेजमेंट कंपनी और पी. आर. कंपनी के एक्सेक्यूटिव्स इधर से उधर बतियाते और फ़ोन पर न जाने किस किस से अपने हाथ हिला हिला कर अपना जोश नुमायां कर रहे थे। तक़रीबन पचास कुर्सियां लगी थीं जिन पर पत्रकार और कुछ और आमंत्रित आकर अपने काग़ज़ात, बैग ऊपर रखकर बगल की मेज़ों पर रखे शैम्पेन भरे गिलासों को खाली कर रहे थे। हू हक़ और गर्म जोशी की बुलंद आवाजें छत के शैंडेलियर्स तक को हिलाये देर रही थीं। इधर उधर दो बड़े बड़े ऐल. सी. डी. टी वी स्क्रीन लगे थे जिन पर स्टेज का कार्यक्रम पीछे बैठे लोगों के लिए प्रसारित किया जाने वाला था। स्टेज के दोनों तरफ़ एक एक लम्बा ऊंचा बोर्ड रखा था जिनपर लिखा था-''इंडियन एकैडेमी ऑफ़ फ़िल्म क्रिएटिविटी अवार्ड्स- नाऊ इन सिंगापुर!'' और उस पर इस एकैडेमी का बड़ा सा लोगो छपा था। नाम ज़रूर इसका इंडियन एकैडेमी था लेकिन इसका ताल्लुक़ सिर्फ हिंदी फ़िल्मों से था।

दिल्ली की एक इवेंट मनैजमेंट कंपनी 'टिड बिट्स' इसकी ऑर्गनाइज़र थी। इस कंपनी ने हैंगर्स एंड हैंगर्स की सर्विसेज लेकर बम्बई में इतना बड़ा समारोह आयोजित किया था-और ये केवल अवार्ड्स घोषित करने के लिए था! असली अवार्ड्स फ़ंक्शन सिंगापुर में होना था। तमाम फ़िल्मी सितारों, उनके मेहमानों, काम करने वालों और और लोगों को बम्बई से सिंगापुर ले जाना, वहां रखना, खिलाना-पिलाना, स्टेज शो कराना इत्यादि का ख़र्चा तगड़ा था। याने स्पॉसर तगड़ा नहीं खासा तगड़ा चाहिए था। इस ख़र्चे के आलावा स्टार्स की फ़ीस अलग क्योंकि मुफ़्त में तो कोई अवार्ड भी नहीं लेता!

'टिड बिटस' दिल्ली के राजौरी गार्डन में रहने वाले दो उन लड़कों ने शुरू की

थी जो शादी ब्याह में इवेंट के नाम पर हलूके फुल्के स्टेज शो और ओर्केस्ट्रा अरेंज करते थे। पढ़ना छोड़ चुके थे। घर वाले उन्हें आवारा /नाकारा करार दे चुके थे। लड़कियां इनसे दूर ही रहना पसंद करती थीं और अक्सर इनके पास अपनी सिगरेट तक के लिए पैसा नहीं होता था। शायद इन्हीं वजहों से मैथ्यू और जैसन एक दूसरे के दोस्त थे और उनकी दोस्ती बरक़रार भी थी। चार सालों के ओर्केस्ट्रा अरेंजमेंट के बाद ये समझ चुके थे कि इसके आगे इनका कुछ होने वाला नहीं है। लेकिन जब सारे दरवाजे बंद हो जाते हैं तब कहीं न कहीं से कोई रास्ता ज़रूर निकल आता है।

चित्तरंजन पार्क के चैटर्जी साहेब ने अपनी लड़की की शादी में 'टिड बिट्स' को हायर किया। चैटर्जी एक बड़ी सीमेंट कंपनी के सी. ई. ओ. थे और पचास के ऊपर थे। मैथ्यू और जैसन ने बड़ी लगन के साथ प्रोग्राम अरेंज किया और बंगाली महाशय से बड़ी विनम्रता और शिष्टाचार से 'डील' किया। चैटर्जी साहेब खुश हो गए।

-''तुम अभी जवान है.....काल किया करेगा?''

-''कल भी हम यही करेगा! नाचेगा, गायेगा, शादी कराएगा! हंहंहंहं....'' जैसन ने मामला हंसी में उड़ाते हुए जवाब दिया।

-''नोनो.....यू आर गुड वर्कर्स, आई हैव ए प्रोपोज़ल।''

और प्रोपोजल था सीमेंट कंपनी का एनुअल इवेंट ऑर्गनाइज़ करना। इसमें टिड बिट्स को नाम भी मिला, नामा भी मिला और इन दोनों दोस्तों का आत्मविश्वास भी बढ़ा। उसके बाद इन्होने शादी-ब्याह में ऑर्केस्ट्रा अरेंज करना कम और कंपनियों के इवेंट्स का ठेका लेना ज़्यादा शुरू कर दिया। काम बढ़ता गया, इनकी हिम्मत भी बढ़ती गयी, लोग साथ जुड़ते गए, टीम बनती गयी और डेढ़ साल के अंदर ही इनका अपना ऑफ़िस हो गया। पाओं और पसरने लगे और ये स्पॉन्सर्ड शो, अवार्ड फ़ंक्शन्स और इस तरह के तमाम इवेंट्स करने लगे। पैसा बढ़ता गया। सेलेब्रिटीज़, फ़िल्मी सितारों, राजनेताओं, खिलाड़ियों से रिश्ते बनते और सुद्रढ़ होते गए। पिछले साल एक फ़ेस क्रीम बनाने वाली मल्टीनेशनल कंपनी के लिए इन्होने इंटरनेशनल ब्यूटी कांटेस्ट ऑर्गनाइज़ किया। दिल्ली के लोधी गार्डन के बीचों-बीच इस खूबसूरती से सेटिंग करके कि अगर इब्राहिम लोधी उतरकर आ जाता तो फिर शायद वापस ही न जाता। कुछ वी. आई. पी. को छोड़कर शो के लिए टिकट था और बहुत महंगा था। शो स्पॉन्सर्ड था और मुनाफ़ा करोड़ों में था। लेकिन दो दिन चलने वाला ये इवेंट इतना सफल हुआ कि टिड बिट् स का नाम भारत की सर्वोत्तम इवेंट कंपनियों में

शुमार होने लगा। इस इवेंट में हिंदी फ़िल्मों के एक सुपरस्टार और एक सुपर सुंदरी फ़िल्म तरिका आमंत्रित भी थे और गेस्ट ऑफ ऑनर भी थे। चीफ़गेस्ट थीं भारत सरकार की एक महिला मंत्री। ये महिला मंत्री दिखने में काफी सुंदर भी थीं और इन्होने अपना फ़िगर भी सम्भाल कर रखा हुआ था। ये असल में कुछ फ़िल्मों में हीरोइन आ चुकी थीं और अपने किरदारों में चर्चित हो चुकी थीं। एक साबुन बनाने वाली कंपनी ने अपने विज्ञापनों के लिए इन्हें ब्रांड अम्बेसडर ले लिया। पब्लिक ने इस फ़िल्मी सितारे द्वारा एंडोर्समनेट देखा तो उपत पड़ी और कंपनी के सेल में चार गुना इज़ाफ़ा होने लगा। एक राजनीतिक पार्टी को लगा कि यदि लड़की इतनी लोकप्रिय है तो ये लोकप्रियता वोटों में भी दिखेगी सो उसने इन्हें लोकसभा का टिकट दे दिया। जिस अदा से इन्होने अपनी सभाओं में डायलॉग के अंदाज में लोगों को सम्बोधित किया नौजवान इन पर मर मिटा और ये जीत गयीं। जीत गयीं तो पार्टी वालों ने इन्हें सरकार में कल्चर मिनिस्टर बना दिया।

टिड बिट्स को इस इवेंट से कई फ़ायदे हुए। एक तो उन्हें करोड़ों की कमाई हुई दूसरे बेस्ट इवेंट मैनेजमेंट कंपनी का पुरुस्कार मिला और तीसरे फ़िल्मो के सुपरस्टार, सुपरसुंदरी और भारत सरकार के मंत्रियों से अच्छी जान पहचान हो गयी।

सुपरस्टार साहेब हिंदी फ़िल्मों से काफ़ी नाम कमा चुके थे। अब उनका इरादा हिंदी फ़िल्मों (जिन्हें वे इंडियन फ़िल्मों के नाम से पुकारते थे) को विदेशों में लोकप्रिय करना था। लोकप्रिय करने से मतलब हिंदी फ़िल्मों को ज़्यादा से ज़्यादा विदेशों में रिलीज़ करके विदेशों से डॉलर कमाना। यहाँ क्या देता है एक दर्शक-पचास, सौ मल्टी प्लेक्स में गया तो पांच सौ! विदेशों में टिकट होता है दस से बीस डॉलर! तो फ़िल्म वालों की कमाई कहां से ज़्यादा हुई?! इसलिए बड़े बड़े फ़िल्म प्रोड्यूसरों, सुपरस्टारों, सुपर हीरोइनों ने सोचा कि हिंदी फ़िल्मों के कुछ अवार्ड फ़ंक्शन्स विदेशों में किये जाएँ। हिंदी फ़िल्मों के दर्शक तो वहां मौजूद हैं ही.....और जब यहाँ के छलिये वहां स्टेज पर फ़िल्मी गानों पर ठुमका लगाएंगे तो वहां का दर्शक झूम झूम जायेगा और वो हिंदी फ़िल्में और चावसे देखेगा।

-''सोचिये कितना फ़र्स्ट्टक्लास आईडिया है।'' सुपरस्टार ने कहा। सुपर हीरोइन ने हामी भरी।

-''बट वैरी कॉस्टली अफ़ेयर !'' जैसन ने अपनी हाल ही में बढ़ाई दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा।

-''करेक्ट !.....वैरी कॉस्टली !'' हीरोइन ने सुपरस्टार की तरफ़ देखकर कहा।

-''कॉस्ट इज़ नो प्रॉब्लम। आई हैव स्पांसर्स।''

-''ठीक है.....फ़िल्म स्टार्स को लाने का काम आपका.....इवेंट ऑर्गनाइज़ करना हमारा।''

-''इवेंट आप ऑर्गनाइज़ करें बस.....फ़िल्म स्टार्स को लाना, ले जाना एट्सेटरा ये सब काम मैं एक पी.आर.एजेंसी को देने वाला हूँ। हू वांट्स बोदरेशन. ... कौन किस के नख़रे उठाएगा।''

-''नख़रे! नख़रे तो आप सब स्टार्स के हैं!'' मैथ्यू ने चुटकी ली।

सुपरस्टार के अहंकार को शायद अच्छा नहीं लगा। उसने एक गहरी नजर भरकर मैथ्यू को देखा। सुपर सुंदरी ने स्टार की गहरी नज़र देख ली इसलिए बात बदल कर बोली, ''लेट्स मूव ऑन देन! मैं चलूँ!'' मीटिंग बर्ख़ास्त हो गयी।

-''वी आर हैंगर्स एंड हैंगर्स मिस्टर मैथ्यू और हम सिर्फ़ इंटरनेशनल कॉर्पोरेट क्लाइंट्स को ही केटर करते हैं।''

-''सो?'' जैसन ने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए सवालिया नजरो ंसे गणात्रा को देखा।

-''सो दी पॉइंट इज़ कैन यू अफ्फ़ोर्ड अस?''

-''आपने प्राईस तो बताई नहीं।''

-''प्राईस की बात भी हो जाएगी, सवाल ये है कि इसमें फ़िल्म वाले इन्वोल्वड हैं। वो सुपरस्टार हो या कोई हो इन फ़िल्म वालों की हवा ही हवा होती है अंदर से ये कड़के होते हैं। आपको उस स्टार ने कहा कि उसके पास स्पाँसर है और आप मान गए.....उसने माल दिखाया क्या?''

-''वो हो जायेगा.....उसकी चिंता आप न करें।''

-''ओ के.....ये करोड़ों का खेल है और ऊपर से फ़िल्म वालों के बेकार के नख़रे। ये झूठ भी बोलते हैं- कहते हैं सुबह आठ बजे उठ जाऊंगा लेकिन शाम तक सोते रहते हैं।''

-''तो?''

-''तो ये कि आई विल टेक फ़िफ्टी परसेंट एडवांस, पच्चीस परसेंट ड्यूरिंग और लास्ट में बैलेंस-बिफ़ोर दी एन्ड ऑफ़ दि शो।''

-''मंज़ूर।''

-''ठीक है। मैं कोटेशन भिजवाता हूँ आप मुझे कंट्री-जहाँ ये इवेंट आप करना चाहते हैं, होटल, इवेंट का वेन्यू एट्सेटरा के डिटेल्स मेल करवा दीजिये।''

-''ग्रेट! तो हम चलते हैं।''

-"चाय, कॉफ़ी.....?"

-"नेक्स्ट टाइम निमेष !.....और हाँ अनाउंसमेंट फंक्शन ताज बॉल रूम में जो है उसमें प्रेस टी वी और जो जो कुछ है .....उसके लिए रिमाइंड तो नहीं करना पड़ेगा?"

-"उसका चेक एडवांस में.....शाम तक।"

-"दो करोड़.....राइट?"

-"राइट !"

ताज के बॉल रूम में रौशनी मद्दम और रोमांटिक थी। शैम्पेन तैर रही थी। गिलास खनक रहे थे। ठहाके गूँज रहे थे। लोग अपने अपने कॉन्टैक्ट्स ताज़ा कर रहे थे। साढ़े छह बजने आए थे कि दरवाज़े की तरफ़ से तमाम सिक्योरिटी वाले बॉडी गार्ड्स और इधर उधर के आगे पीछे चलने वाले सुपरस्टार को जैसे अपने घेरे में सुरक्षित रखते हुए दाख़िल हुए। उसे स्टेज पर ले जाकर बैठाने की पहल हुई तो स्टार ने कहा पहले अनाउंसमेंट हो तब वो स्टेज पर जायेगा।

-"लेडीज एंड जेंटल मैन! गुड ईवनिंग!" माईक पर एक महिला का मादक स्वर गूंजा। लोग जो इधर उधर मँडरा रहे थे अपने अपने गिलास सम्भाले अपनी अपनी कुर्सी की तरफ़ चले आए।

-"दी वेट इज़ ओवर!" महिला स्वर ने कहा, "ग्रीटिंग्स फ्रॉम दी इंडियन अकैडमी ऑफ फ़िल्म क्रिएटिविटी!.... लैट्स सेलिब्रेट!"

इतना अनाउंसमेंट होना था कि जो महिला माईक पर थी उस पर धीरे धीरे लाईट आ गयी और संगीत की झंकार हुई। महिला ने सुनहरे गोटे में बग़ैर कन्धों वाली, छाती को किसी तरह सम्भाले हुए नायाब ड्रेस पहनी हुई थी। गोरी, लम्बी खुली टांगों वाली पच्चीस साला जवान लड़की बला की खूबसूरत दिखाई दी। उसकी बाहें उघरी हुई थीं और उसकी दायीं कलाई में एक बेशकीमती सोने का ब्रेस्लेट था जिस में शायद घडी जड़ी हुई थी। बाल उसके लड़कों की तरह कटे हुए थे और बरगंडी रंग में रँगे हुए थे। उसने सबकी तरफ़ नजर दौड़ा कर एक मनमोहक सी मुस्कराहट बिखेरी और अपनी आवाज़ की खनक बरक़रार रखते हुए अपना अनाउंसमेंट शुरू किया जिसमे उसने ये अकैडमी क्या है और ये अवार्ड्स किस लिए हैं, इसके साथ कौन कौन सी हस्तियां जुड़ी हैं इत्यादि बहुत संतुलित और 'टू दि पॉइंट' तरह से बताया। मुश्किल से दो मिनट में उसने अपना अनाउंस मेंट समाप्त करते हुए कहा, "एंड नाऊ लेडीज़ एंड जेन्टलमन पुट योर हैंड्स टुगेदर फ़ॉर दी वन एंड ओन ली,

दी रियल सेलिब्रिटी, दी आर्टिस्ट ऑफ दि सेंचुरी, दी ओनली सुपरस्टार दैट इंडियन फिल्मस हैव एवर सीन.....अवर पैट्रन, गाइड एंड फ़िलोसोफर, वन एंड ओन ली सुपरस्टार मिस्टर राज रंजन!'' तालिया गड़ गड़ा गयीं। सुपरस्टार का माथा ऊंचा हो गया। अपनी जगह से उठकर पीछे सबकी तरफ़ मुड़कर बड़ी शाइस्तगी से उसने हाथ जोड़े। लड़की की आवाज गूंजी, ''प्लीज सर! मे आई रिक्वेस्ट यू टू प्लीज़ टेक दि स्टेज।''

हिंदी अख़बार के एक फ़िल्मी पत्रकार की आवाज उठी, ''हिंदुस्तान हैय भैय्या, हिंदीयौ में कछु बोल लेयो.....'' बगल वाला पत्रकार हंसा, बोला, ''ये साले डायलॉग तक तो अंग्रेज़ी में लिखकर बोलते हैं.....हिंदी इन्हें आती कहाँ है।'' अंग्रेजी वाला पत्रकार जो अब तक शैम्पेन में भुत हो चुका था ज़ोर से झिड़का, ''कम ऑन?! तुम अभी भी समझते हो कि हिंदुस्तान की भाषा हिंदी है? इंडिआज़ नेशनल लैंग्वेज इज़ इंग्लिश !''

-''ये कौन नेहरू की औलाद बोला?'' हिंदी वाले ने तंज किया।

-''राष्ट्रभाषा विरोधी !'' दूसरा हंसा।

-''अबे !'' अंग्रेजी वाला फिर झिड़का, ''तेरे देश का संविधान तक तो अंग्रेजी में लिखा गया है और तू हिंदी हिंदी करता है। न्यूमेरिकल्स तक तो तुम लोग अंग्रेज़ी के इस्तेमाल करते हो और हिंदी की बात करते हो!''

राज रंजन स्टेज की सीढ़ियां ही चढ़ रहे थे कि टी वी कैमरामैन और तमाम फोटो ग्राफ़रों ने स्टेज के सामने पूरी लाइन से भीड़ लगा दी। कुर्सी पर बैठे लोगों के लिए स्टेज छिप गया। उन्हें खड़े हो जाना पड़ा। राज रंजन स्टेज पर जाकर खड़ा हुआ। माइक पर फिर मादक स्वर गूंजा, ''एंड नाऊ आई इन्वाइट अवर बिलवेड गाईड सुपर एक्ट्रेस ऑफ दी सेंचुरी, अवर सपोर्ट मिस एंजेला डिसूजा! प्लीज गिव हर ए बिग हैंड!'' तालियां फिर गड़गड़ा गयीं और नमस्ते में हाथ जोड़े हुए एंजेला जी अपनी हल्की नीली साड़ी का सिल्किन पल्लू संभालती हुई स्टेज पर प्रकट हुईं। वे पब्लिक की तरफ़ ज़रा मुड़ीं कि उनके गले में हीरों का हार कुछ इस तरह दमका कि लोगों को उनकी अमीरी और उनके सुलझे हुए टेस्ट की दाद देनी पड़ी। फिर शुरू हुई प्रेस कांफ्रेंस जिसमें इस अकैडमी और इससे जुड़े लोगों को सबसे मिलवाया गया। हिंदी फ़िल्मों के पुरुस्कारों का जलसा हिंदुस्तान के बाहर क्यों करवाया जा रहा है इस बाबत बताया गया। फिर जो जो जिस जिस ने सवाल पूछे उसका जो बन पड़ा जवाब दिया गया।

-''क्यों चारी साब ! क्या हाल चाल है? शैंपेन नहीं पी रहे हो?'' एक फ़िल्मी

पत्रिका के संपादक ने अंग्रेज़ी समाचार पत्र के संपादक चारी से पूछा।

-''हमारे छोकरे पी रहे हैं।''

-''तो छोकरों का बाप क्यों नहीं पी रहा है.....हं हं हं हं!''

-''आप पी तो रहे हैं.....हं हं.....''

-''मैं समझा इतने दिन जर्नलिज़्म के धंधे में रहकर पीना तो कम से कम सीख ही गए होंगे।''

-''बहुत से लोग इस प्रफ़ेशन में ज़िंदगियाँ गुज़ार देते हैं और लिखना नहीं सीख पाते तुम पीना सीखने की बात करते हो।''

फ़िल्म पत्रिका का संपादक थोड़ा झेंपा। उसे लगा कि शायद चारी ने कटाक्ष उसी पर किया है। फिर उसने बात बदलते हुए कहा, ''अच्छा ये एंजेला कुछ ज़्यादा ही नहीं उछल रही.....लगता है रंजन से इसका टाँका बैठ गया है।''

-''रंजन का टाँका किस से और कब नहीं रहा।''

-''तो साले ने इसी भैंस को अपने साथ क्यों रखा है तमाम और नई नई छोकरियां भी तो हैं।''

-''इनफार्मेशन मिन्स्टर कौन है.....फर्नान्डेस.....समझे न!''

-''ओह, आई सी!''

-''और फॉरेन मिनस्टरी में चीफ़ सेक्रेटरी कौन है....हैदरअली, जिसका कभी इसके साथ टाँका था।''

-''ओ माई गॉड! व्हाट ए जुगाड़!''

-''नाऊ गो हैव अनेदर शैम्पेन!''

प्रेस कांफ्रेंस में प्रेस वालों को कम और न्यूज कैमरा मैनों और चैनल वालों को ज़्यादा रूचि थी। चैनल के प्रेसेंटर्स अपने अपने कैमरों के सामने खड़े होकर एकेडेमी और इस प्रोग्राम के बारे में लम्बी चौड़ी न्यूज़ बना रहे थे। इन कुछ लोगों को छोड़कर बाक़ी सब नशे में धुत हो चुके थे (ऐसा नहीं कि ये नहीं पिएंगे लेकिन ये कैमेरा-पीस करने के बाद पिएंगे)। प्रोग्राम के बाद कुछ लोगों को तो गोद में उठाकर बाहर टैक्सी में जाकर छोड़कर आना पड़ा। एक साहेब को जब टैक्सी में पिछली सीट पर रखकर लौटाया जाने लगा तो उस दम वे जैसे फ़ौरन होश में आ गए और बोले, ''मेरा लिफ़ाफ़ा?'' ऑर्गनाइज़र्स ने हर एक के लिए लिफ़ाफ़ों में पांच पांच हज़ार रूपए रखे थे। एक लिफ़ाफ़ा इन को भी दिया गया। जो सीनियर एडिटर्स थे उनमे से कुछ तो अपनी ईमानदारी और स्वाभिमान की ख़ातिर ऐसे प्रोग्रामों में आते नहीं थे, जो आते थे उनके लिए लिफ़ाफ़ा नहीं होता था। उनके लिए हॉलिडे पैकेज

या 'क्रेट ऑफ़ स्कॉच' जैसा कुछ इंतज़ाम होता था। प्रोग्राम जब समाप्त हुआ तब रात का दस बज चुका था।

-''व्हाट नेक्स्ट?'' स्पोंसर्स में से एक ने पूछा।

-''अब बस एयर ट्रेवल्स, होटल बुकिंग्स एंड सो ऑन.....''

-''अरे वो तो ठीक है.....शो को डायरेक्ट कौन करेगा, रिकॉर्ड कौन करेगा. ....एंकर्स कौन होंगे.....''

-''यस....यह बहुत इम्पोर्टेन्ट बात है।'' सुपरस्टार ने जोड़ा।

-''देखो अभी से तय करलो.....इंडोनेशिया है, वहां का कोई प्रोफ़ेशनल ढूंढो और बुक करलो। वहां लोग बिज़ी होते हैं, ऐन टाइम पर कोई न मिला तो?''

-''डायरेक्टर और शूटिंग क्रू हम इंडिया से ले जायेंगे।'' मैथ्यू ने कहा।

-''व्हाट नॉनसेंस! इंडिया वाले टी वी जानते ही नहीं हैं। जो टी वी करते भी हैं वो सिनेमा स्टाइल से.....दे डोंट नो मल्टी कैम शूट्स।''

-''वी हैव डन इन दी पास्ट।''

-''किसने किया.....कौन है?''

-''तपन सेन, अच्छा लड़का है।''

-''अच्छा लड़का नहीं....हमें अच्छा प्रोफ़ेशनल चाहिए मैथ्यू।''

-''ही इज़ गुड।'' जैसन ने कहा।

-''व्हाई हिम?'' सुपरस्टार फूटा।

-''इसलिए कि फ़ौरन के मुक़ाबले इंडियन क्रू की कॉस्ट एक चौथाई रह जाएगी।''

-''आई सी.....'' स्पॉंसर ने सर हिला कर कहा।

-''किया क्या है इस तपन सेन ने....कोई शो किया है पहले?''

-''नचले, म्यूजिक टुडे, हैव ए गुड टाईम एंड सो मैनी मोर.....''

-''ठीक है, मिलवाओ ! लेकिन.....जरा सी भी गड़बड़ हुई तो यू आर पर्सनली रेस्पोंसिबल।''

-''हूँ !''

-''और एंकर्स?''

-''वो आप बताओ।'' मैथ्यू ने कहा। जैसन को मज़ाक़ सूझा, बोला,'' है कोई एक्टर एंकर बनने लायक?''

-''व्हाट दू यू मीन? एक्टर एंकर के लायक नहीं है?''

-''दूसरों के डायलॉग बोलने वाले, दूसरों के दिए मूवमेंट्स करने वाले एंकरिंग

कर पाएंगे? एंकरिंग में थोड़ी अपनी भी अक्ल लगती है।'' सुपरस्टार ने घूरकर जैसन को देखा फिर बोला, ''आगे बोलो।''

-''एक करोड़!'' तपन ने बग़ैर चेहरे पर कोई भाव लाये बड़े ठन्डे पन से कहा।

-''एक करोड़!!'' मैथ्यू अपनी कुर्सी से तक़रीबन उचक गया और उसने जैसन की तरफ़ देखा। टिड बिट्स ने तपन को अपने ऑफ़िस में बुलाकर उसे इस प्रोग्राम को डायरेक्ट करने के अनुबंध की बात की थी। सब कुछ समझाया और पूछा कि वह इस का क्या चार्ज करेगा। तब तपन ने दो मिनट सोच कर कहा था, ''एक करोड़!''

-''और इस एक करोड़ में कैमेरा वालों, साउंड वालों इत्यादि का पैसा शामिल नहीं है।''

-''व्हाट आर यू सेइंग! हम लुट जायेंगे।''

-''वेल इन दैट केस— यू रादर देन मी! हं हं हं हं.....'' तपन हंसा।

-''देखो, सोच लो! हमारे पास एक और शख़्स है हम उससे भी करवा सकते हैं। वो तो सस्ते में कर देगा बट तुम्हारा नाम हम स्पोंसर्स से ले चुके हैं एन्ड यू आर ए फ्रेंड।''

-''मल्टी कैम एक्सपर्ट! हिंदुस्तान में कोई दूसरा नहीं है।''

-''क्या बात करते हो यार! यहीं दिल्ली में है....गौरव कपूर।''

तपन को अपने नीचे की ज़मीन हिलती लगी। उसने सोचा गौरव तो काम जानता है, उसी से तो उसने सीखा है। लेकिन अगर ये कॉन्ट्रैक्ट तपन के हाथ से गया तो मोटा माल आता हुआ गया। उसने फ़ौरन अपने चेहरे पर हिक़ारत का भाव ला कर कहा, ''गौरवकपूर! वो जो कभी टी वी चैनल में था! वो थकेला बेकार आदमी! काम आता है उसे? ही इज़ ए ड्रग एडिक्ट! ले लो आप लोग उसे.....जब वो नशा करके रिकॉर्डिंग करेगा और आपकी हीरोइन के साथ अभद्रता करेगा तब आपकी समझ में आएगा।''

-''हम जानते हैं उसे.....वह ड्रग एडिक्ट नहीं है। वो फ़ारेन ट्रेंड डाइरेक्टर है और चैनल में प्रोग्रामिंग चीफ़ रह चुका है।''

-''आप क्या ख़ाक जानते हैं उसे! जनता तो उसे मैं हूँ! मैं उसी चैनल में था।''

बड़े लोग और ख़ास तौर पर पैसा लगाने वाले लोग कान के कच्चे भी होते हैं और अक्ल के अंधे भी होते हैं इसलिए जैसन और मैथ्यू मुनाफ़े के मद्देनजर गौरव के बारे में सोचने से भी डर गए। हालाँकि तपन गौरव का एहसान मंद था लेकिन

इस समय सवाल धंधे का था, जीत हासिल करने का था- किसी भी क़ीमत पर!

टिड बिट्स के साथ तपन की मीटिंग दोपहर चार बजे तक चली और तपन की फ़ीस तमाम हुज्जत के बाद एक करोड़ से अस्सी लाख तक फ़ाइनल की गयी। आधी कीमत रूपए में और आधी डॉलरों में- दुबई में !

15

-''एक्सीलेंट फ़िल्म !'' सुबह से सात फ़िल्में देख चुकी दीपा जोशी ने अपने दोनों हाथ ऊपर करके जम्हाई लेते हुए कहा, ''मैं स्वयं मध्य प्रदेश की हूँ और मैं कह सकती हूँ कि इस फ़िल्म में रानी रूपमती और बाज़बहादुर के बारे में बहुत ईमानदारी से दर्शाया गया है। अंग्रेजी पढ़ों के यहाँ तो मैन-वुमन का सिर्फ़ एक ही रिश्ता होता है इसलिए वे समझ ही नहीं सकते कि कोई और रिश्ता भी हो सकता है और जो हिंदुस्तानी भी अंग्रेज़ी में पला बढ़ा होता है वह भी नहीं समझता। इस फ़िल्म में जो रानी ऐज़ आर्टिस्ट और बाज़बहादुर ऐज़ एडमायरर (प्रशंसक) का रिश्ता दिखाया गया है वह सत्य भी है और फ़िल्माया भी सही तरह से गया है।''

-''इसके अलावा ये फ़िल्म भी बहुत अच्छी और संवेदनशीलता से बनाई गयी है।'' तक़रीबन सभी जूरी मेंबर्स की राय बनी। जूरी डाक्यूमेंट्री फ़िल्मों के नेशनल अवार्ड तय करने के लिए स्क्रीनिंग में बैठी थी पांचों मेंबर्स ने ''मैमोरीज़ ऑफ माण्डू'' वृत्तचित्र को दस में से नौ नम्बर देकर बैस्ट डाक्यूमेंट्री फ़िल्म के अवार्ड के लिए चुन लिया।

-''देखिए'' मिनिस्ट्री का जॉइंट सेक्रेटरी बड़ी शिष्टता से बोला, ''ये तो ठीक है लेकिन आप लोग एक बार अनिकेत रांगणेकर की 'हाय राम' भी देख लीजिये।''

-''देख तो चुके वो हम लोग.....है क्या उस फ़िल्म में?''

-''ऐसा कैसे हो सकता है....अनिकेत इतना बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डाक्यूमेंट्री फ़िल्ममेकर है और आप कह रहे हैं है क्या उस फ़िल्म में।''

-''ख्याति प्राप्त से क्या होता है,'' एक मेंमबर ने कहा, जो ख्याति प्राप्त हैं वो भी तो कभी नए थे।''

-''ये मांडू वाली फ़िल्म किस ने बनाई है?'' सरकारी बाबू ने पूछा।

-''किसी दीपक चोपड़ा ने बनाई है.....एफ़.डी. की फ़िल्म है,'' एक मेंमबर ने कहा।

-''यही न, कौन जानता है दीपक चोपड़ा को?'' बाबू बोला।

-''आप कहना क्या चाहते हैं?'' दीपा ने अपनी साड़ी का पल्लू ठीक करते हुए पूछा।

-''मेरा ख़्याल है,'' आई. ए. एस. बोला, ''बेस्ट अवार्ड अनिकेत को ही मिलना चाहिए।''

-''वो जुगाड़ू है,'' पीछे बैठे एक बुजुर्ग फ़िल्म मेकर /जूरी मेंबर ने कहा, ''उसने ये फ़िल्म चार साल पहले बनाई थी और उस पर फ़िल्म कैटेगरी में बेस्ट अवार्ड लिया था। इस बार उसने उसी फ़िल्म को काट पीट कर वीडियो कैटेगरी में सबमिट किया है।''

-''देखिये.....समझने की कोशिश कीजिये.. उसको अगर अवार्ड नहीं मिला तो वो ऐजीटेशन करेगा, धरना देगा, न्यूज़ बनाएगा और नेशनल अवार्ड की छीछालेदर करेगा। यदि अवार्ड उसको दे दें तो सब कुछ सेफ्ली हो जायगा। वो भी ख़ुश, मिनिस्ट्री भी ख़ुश और आपको तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।''

-''आप ब्युरोक्रेट्स भी न... बस चक्का चलता रहने दो, बंद न हो, कोई कंट्रोवर्सी न हो, मेरी नौकरी बच जाये.....स्टैंडर्ड्स डूब जाएँ, कोई लुट जाये, इससे कोई मतलब नहीं.....हद होती है यार आप लोगों की!''

-''मैं केवल आपसे अपना व्यू कह सकता हूँ। बाक़ी जैसा आप लोग समझें। ''

-''हमारे समझने का रोल कुछ नहीं है.....होना वही है जो आप करना चाहते हैं...हमारी रिपोर्ट तो रद्दी की टोकरी में जाएगी।'' दीपा ने चिढ़कर कहा।

-''तो फिर माण्डू वाली फ़िल्म का क्या करेंगे?'' एक ने पूछा।

-''इसे भी अवार्ड दे देंगे....इसे स्पेशल मेंशन अवार्ड दे देंगे। ''बाबू ने अपनी टाई ठीक करते हुए कहा।

-''वह! क्या बैलेंसिंग एक्ट है।'' पीछे बैठा जूरी मेंबर तंज़ में हंसा।

अख़बारों में छप गया, नेशनल अवार्ड जीतने वालों के राज्य सभा टी.वी. में इंटरव्यू किये गए, डॉक्यूमेंटरी एसोसिएशन ने अनिकेत की शान में प्रोग्राम आयोजित किये। फ़िल्मस डिवीजन अवार्ड्स का आदी था इसलिए उसे इस अवार्ड से भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। हाँ दीपक चोपड़ा हुलस पड़ा। उसकी जिन्दगी का ये पहला अवार्ड था और वह भी नेशनल अवार्ड। उसने एक-दो अख़बार वालों से अपने इंटरव्यू के लिए 'मस्का' मारा लेकिन ये फ़िल्म उस ने साल भर पहले बनाई थी और जब से

वह शहनाज़ की कंपनी में असिस्टेंट लगा था उसे एफ. डी. जाने का या इधर उधर मिलने जुलने का वक्त कम ही मिलता था सो वह अपने लिए कुछ पब्लिसिटी कर नहीं पाया।

बड़े बड़े इंस्टीट्यूट्स में विद्यार्थी वैसे भी पढ़ते कम और एक्स्ट्रा एक्टिविटी में ज़्यादा दिलचस्पी लेते हैं इसलिए उन्होंने यह अवार्ड की ख़बर ध्यान से पढ़ी। कुछ इंस्टीट्यूट्स ने अनिकेत को बुलाकर अपने यहाँ डॉक्यूमेंटरी वर्क शॉप किए और उसे जैसे भगवान् समझकर अपने को उसके सामने समर्पित किया। बहुत से विद्यार्थियों ने उसकी 'हाय राम' की तारीफ़ की लेकिन क्योंकि यह फ़िल्म हिन्दुओं को बदनाम करती थी इसलिए कुछ ने इसके प्रदर्शन पर ऐतराज़ भी किया।

दीपक चोपड़ा को नौकरी में दिन रात की शूटिंग और एडिटिंग से तीन दिन बाद अपना ईमेल खोलने की फुर्सत मिली। उसके पास फ़ोन में इंटरनेट था नहीं और मेल देखने उसे साइबर कैफ़े जाना पड़ता था। मेल अहमदाबाद हाई वे पर राजपथ क्लब से लगे हुए एक काफ़ी नामी मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट के विद्यार्थी द्वारा आया था। वो दीपक को अपने एनुअल प्रोग्राम में गैस्ट की तरह आमंत्रित करना चाहते थे। मेल पढ़ते ही दीपक का चेहरा ऐसे दमका जैसे वर्षों से विरह में बैठे प्रेमी को प्रेमिका का आलिंगन प्राप्त हुआ हो। फिर उसे लगा कि कहीं शहनाज़ की कम्पनी ने उसे छुट्टी देने से इंकार कर दिया तो! बहरहाल, उसने प्रोग्राम में शिरकत की हामी भर दी और अपना कोन नंबर भी दे दिया। शहनाज़ छुट्टी जैसी छोटी छोटी बातों में दख़ल नहीं देती थी। जब उसने सुना तो दीपक को मुबारक बाद दी और कहा कि वह अपने डायरेक्टर के साथ डेट्स की बात कर ले। वैसे भी स्टाफ़ से जुड़ी सारी बातें अब शहनाज़ का भाई देखता था।

इंस्टीट्यूट नामी था वहां एम. बी. ए. की पढ़ाई होती थी और जो विद्यार्थी वहां पढ़ने आते थे वे अक्सर किसी न किसी नौकरी में रह चुके होते थे और उस नौकरी से उकता कर, वहां से इस्तीफ़ा देकर, यहाँ एडवर्टाइजिंग या ब्रैंडिंग जैसे क्रिएटिव मैनेजमेंट सीखने आते थे। हालाँकि यहाँ मार्केटिंग, फाइनैंस. एच. आर. जैसे विषय भी थे लेकिन यहाँ मीडिया सब से लोकप्रिय डिपार्टमेंट था और उसमें भी फ़िल्म मेकिंग का कोर्स- जो हालाँकि ऑप्शनल था-सबसे अधिक पॉपुलर था।

-''मिस्टर चोपड़ा?'' दीपक जैसे ही गाड़ी से सुबह साढ़े छह बजे अहमदाबाद के कालुपुर रेलवे स्टेशन पर उतरा कि उसके फ़ोन पर घंटी बजी।

-''कौन?''

-''मैं इंस्टीट्यूट का ड्राईवर जिगर भाई बोल रहा हूँ। आप गेट से बाहर आएंगे

ंतो मेरी सफ़ेद इन्नोवा खड़ी है 2549.....आप उसमे आ जाइये।''

-''ठीक है।''

सुबह का सुनसान था और सड़कें बहुत साफ़ और अच्छी थीं। इंस्टीट्यूट पहुँचने में ज़्यादा वक्त नहीं लगा। वहां उसके लिए गेस्ट हॉउस में एक कमरा बुक किया गया था। एकदम थ्री स्टार इंतजाम! पंद्रह मिनट बाद उसके कमरे की घंटी बजी। उसने दरवाजा खोला तो देखा एक मामूली सी दिखने वाली सांवली सी लड़की सामने थी।

-''जी?'' दीपक ने सवालिया देखा।

-''मैं शर्मिष्ठा!'' लड़की ने मुस्कुरा कर कहा। उसकी मुस्कराहट इतनी मन मोहक और इन्फेक्शस थी कि उसका सारा मामूलीपन एकदम ख़ास में तब्दील हो गया। ''मेरी आपसे फ़ोन पर बात हुई थी।''

-''हाँ, हाँ.....ऑफ़ कोर्स.....'' दीपक ने दरवाज़ा पूरा खोलकर उसे अंदर आने के लिए इशारा किया, ''आइये!''

-''आप तैयार हो जाइये, मैं आपको घंटे भर बाद ब्रेकफ़ास्ट के लिए लेने आऊँगी। नौ बजे से आपकी फ़िल्म का शो और आपका लेक्चर ऑडिटोरियम में रखा गया है।''

-''ओ के, , मैं बस अभी तैयार होता हूँ। सिट डाउन।''

-''मैं सर घंटे भर में आती हूँ।''

-''ओ के!''

दीपक चोपड़ा इस तरह के वेलकम का न तो आदी था न उसे ऐसी उम्मीद थी इसलिए उसे यह सब बहुत सुखदाइ और मन-भावन लगा।

ब्रेकफ़ास्ट मेस में था। कई प्रकार की चीजें थीं -इडली, डोसा, वड़ा, अंडे टोस्ट, पोहा, उपमा-जिसको जो खाना हो। फिर चाय, कॉफ़ी दूध, जूस! ब्रेकफ़ास्ट के समय कुछ और विद्यार्थी भी- जो हॉस्टल से निकलकर नाश्ता करने आए थे-आकर पास बैठ गए। नौ बजने में पांच मिनट पर ये सब लोग ऑडिटोरियम में दाख़िल हुए। ऐल. सी. डी. प्रोजेक्टर लगा हुआ था। डाक्यूमेंट्री का डीवीडी दीपक से लाने के लिए कहा गया था। हॉल कुछ कुछ भर चुका था लेकिन बहुत से विद्यार्थी अब भी आये जा रहे थे। सामने की कुर्सियों पर स्टाफ़ और कुछ एक फ़ैकल्टी के बैठने की जगह रखी गयी थी।

-''गुड़ मॉर्निंग एवरीवन!'' शर्मिष्ठा ने माईक संभाला, ''फ़िल्मस हमारी

जिन्दगी में कम्युनिकेशन का अहम मीडियम हैं। फ़िल्में कहानी कहती हैं, मोटिवेट करती हैं, लोगों की भावनाओं और भंगिमाओं को उजागर करती हैं, और.....एंटरटेन करती हैं!''

-''क्राईम करने के तरीक़े भी सिखाती हैं!'' विद्यार्थियों में से एक ने चिल्लाया और सारा हॉल हंसी के ठहाकों से गूँज गया।

-''करेक्ट!'' शर्मिष्ठा ने बात सँभालते हुए कहा, ''ऐज़ आई सैड..... मोटिवेट करती हैं, फिर चाहे वो क्राईम करने के लिए हो या नेक काम करने के लिए। लेकिन...मोटिवेट करने के आलावा फ़िल्में हमें इतिहास और ऐतिहासिक पात्रों के सही रूप से अवगत कराने का काम भी करती हैं। हमारे आस पास की सामाजिक सच्चाइयों को सही सन्दर्भ और परिपेक्ष्य में रखने का काम भी करती हैं। एक प्रकार की फ़िल्म यदि कहानी और पात्रों के द्वारा हम तक पहुँचती है तो दूसरी अपने शुद्ध और वास्तविक रूप में हम तक पहुँचाई जाती है। यही फ़र्क़ है फीचर फ़िल्मों और डाक्यूमेंट्री का।'' शर्मिष्ठा ने एक पॉज़ लेते हुए अपने हाथ में रखे काग़ज़ों को खंगाला और उनमें देखते हुए कहना शुरू किया, ''आज हमने एक ऐसी डाक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग रखी है जो हमें इतिहास और ऐतिहासिक पात्रों के सही रूप से अवगत कराती है। वो ऐतिहासिक रियलिटी जो हमारी जनेरेशन शायद भूलने लगी है। डॉक्यूमेंटरी का शीर्षक है 'मेमोरीज़ ऑफ माण्डू'- इसे अभी हाल ही में नैशनल अवार्ड मिला है और हमारा सौभाग्य है कि इस फ़िल्म के लेखक/निर्देशक श्री दीपक चोपड़ा हमारे बीच उपस्थित हैं। लैट्स वैलकम मिस्टर चोपड़ा।'' तालियां गड़गड़ा गयीं।

-''फ़ोक्स! लैट्स सी दी फ़िल्म एंड देन मिस्टर चोपड़ा आपके सब सवालों के जवाब देंगे।'' शर्मिष्ठा ने माईक छोड़ा तो स्टेज पर अँधेरा कर दिया गया और फिर शुरू हुई परदे पर फ़िल्म।

फ़िल्म में ग्राफ़ के ज़रिये भारत में मध्य प्रदेश और मध्य प्रदेश में माण्डू की स्थिति बताते हुए माण्डू की नैसर्गिक सुंदरता का बखान था। रानी रूपमती के क़िले का वर्णन था और वर्णन था माण्डू में मुग़ल काल के बनवाये गए उस किले का जिसमे दूरदराज़ तक आवाज़ पहुँचाने के लिए गुम्बद बनवाये गए थे और गर्मियों में क़िले के अंदर ठंडक रखने के लिए बहते पानी की नालियों से 'एयरकंडीशनिंग' जैसी व्यवस्था की गयी थी। फ़िल्म में रूपमती के सुरीले गले और उनके गाये गीतों का जिक्र था। रानी जो गाने गाती थीं उनमें से एक गाना रिकॉर्ड करके फ़िल्म में डाला गया था। उसके बाद यह बताया गया था कि रानी के संगीत और गीतों को

सुनकर माण्डू का सरदार बाज़ बहादुर उनसे बहुत आकर्षित था लेकिन यह आकर्षण केवल एक आदर और प्रशंसा के जज़्बे तक ही सीमित था। रानी भी बाज़बहादुर को अपने भाई के बराबर मानती थीं और उन दोनों में राखी का रिश्ता था। फ़िल्म ऐतिहासिक पात्रों के साथ पूरी तरह न्याय करती थी। फ़िल्म की फोटोग्राफी और उसका संगीत इतना मनमोहक था की देखने वालों को पता ही नहीं चला कि कब एक घंटा बीत गया और कब फ़िल्म समाप्त हो गयी। जब फ़िल्म समाप्त हुई और फिर से बत्तियां जल उठीं तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूँज उठा। तालियां बड़ी देर तक गूंजती रहीं। शर्मिष्ठा ने माईक पर जा कर पहले हाथ दिखाकर सबको शांत किया फिर बोलना शुरू किया।

-''मिस्टर दीपक चोपड़ा जो इस फ़िल्म के राइटर और डायरेक्टर हैं वे पिछले आठ सालों से डॉक्यूमेंटरी मूवमेंट से जुड़े हैं। उन्होंने अलग अलग विषयों पर अब तक सात फ़िल्में बनाई हैं। आजकल वे शहतूत प्रोडक्शंस मुंबई में अस्सोसिऐट डायरेक्टर हैं और सीरियल और रियलिटी शोज़ में व्यस्त हैं। प्लीज़ वैलकम मिस्टर दीपक चोपड़ा।''

तालियां फिर गड़गड़ा गयीं। दीपक ने जान बूझकर अपने को शहतूत प्रोडक्शंस का एसोसिएट डायरेक्टर बताया था। अपने को असिस्टेंट बताते हुए उसे ठीक नहीं लगा।

स्टेज पर आकर दीपक ने अपने को एक मामूली शहर और परिवार से आया हुआ, ग्रेजुएशन तक पढ़ा हुआ औसत भारतीय नौजवान की तरह इंट्रोड्यूस किया। फिर इस फ़िल्म के सफ़र के बारे में बखान किया। दीपक को आज तक कभी किसी ने इतनी अहमियत नहीं दी थी और न ही उसे मंच पर इस तरह अपनी कोई बात कहने का मौका मिला था इसलिए अपनी बात कहते हुए वह कहीं कहीं थोड़ा भावुक भी हुआ जो हालांकि साफ़ दिखा नहीं। जब उसने अपनी बात समाप्त की तो शुरू हुआ दौर सवाल-जवाब का।

-''हमने तो कहीं पढ़ा था कि रानी रूप मती और बाज़बहादुर लवर्स थे और आपकी फ़िल्म में इनका इतना पवित्र रिश्ता बताया गया है। तो सच किसे माने?'' एक ने पूछा।

-''सच तो वह है जो मैंने दिखाया है। जो आपने पढ़ा है वो शायद विकि-पीडिया या किसी वेस्टर्न स्कॉलर या अंग्रेजी विद्यामें पढ़े आर्किओलॉजी वाले के दिमाग़ की उपज है। उनके यहाँ मैन-वुमन रिश्तों के आलावा कोई और रिश्ता तो औरत-आदमी में होता ही नहीं न!''

-''ये आप कैसे कह सकते हैं?'' दूसरा सवाल आया।

-''क्योंकि जो आपने पढ़ा है वही मैंने भी पढ़ा था। मैं भी यही सोचकर फ़िल्म बनाने चला था लेकिन हमारी शूटिंग थोड़ी डिले हो गयी और मुझे माण्डू में दस दिन और समय बिताने का मौका मिला। उस दौरान मैंने इस विषय पर ग्राउंड रिसर्च की और सौभाग्य से मुझे रानी के एक ख़ास नौकर का नाती मिल गया। उसने मुझे सही स्थिति से अवगत कराया और मेरे लिए वो गाना भी गा कर सुनाया जो रानी गाती थीं। फिर मैंने इस बात की आस पास के पुराने बाशिंदों से पुष्टि की। जब मुझे सत्य का पता चला तो मुझे अपनी स्क्रिप्ट में बदलाव करने पड़े। क्योंकि मेरी रिसर्च लाइब्रेरी में बंद बैठकर की गयी रिसर्च नहीं है , ग्राउंड रिसर्च है, इसलिए मैं कह सकता हूँ कि सत्य यही है।'' दीपक ने समझाया।

-''आप कैसे कह सकते हैं कि जो लिखा है वह ग़लत है?'' तीसरे ने पूछा।

-''आप ये कैसे कह सकते हैं कि जो लिखा है वही सत्य है?'' दीपक ने पूछा।

सवालों-जवाबों का सिलसिला जब समाप्त हुआ और दीपक का आभार व्यक्त कर उसका यहाँ आने के लिए शुक्राना अदा किया गया तब तक लन्च टाइम हो चुका था। सभा समाप्त हो गयी।

-''मिस्टर चोपड़ा, मीट प्रोफेसर समीर सक्सेना।'' शर्मिष्ठा ने अपने फ़िल्म मेकिंग के प्रोफेसर को दीपक से मिलवाते हुए कहा।

-''ग्लैड टू मीट यू सर।'' दीपक ने बड़ी शिष्टता से समीर से हाथ मिलाया।

हॉलसे निकलते साथ दीपक, समीर और शर्मिष्ठा के संग और भी तमाम विद्यार्थी और फ़ैकल्टी जुड़ लिए। मेस में खाना खाते खाते बात करते एक दूसरे को जानने का मौक़ा मिला। दीपक ने अपने बारे में बताया कि वह कैसे स्ट्रगल करके एड हॉक डाइरेक्टर होते हुए आज यहाँ तक पहुंचा है। उसने बताया कि अब उसका इरादा 1857 के स्वतंत्रता संग्राम पर फ़िल्म बनाने का है ।

-''शेम ऑन दोज़ इंग्लिश जर्नलिस्ट्स जो अब भी 1857 को अपने लेखों में म्युटिनी (ग़दर) लिखते हैं.....'' दीपक ने कहा, ''अरे ग़दर तो उसे अँगरेज़ कहता है, हमारे लिए तो वह स्वतंत्रता की लड़ाई थी।''

-''सारे प्रॉब्लम्स की जड़ में हमारा एजुकेशन सिस्टम है.....वह हमें नॅशनलि-स्टिक नहीं बनाता, मॉडर्न के नाम पर ईडीओटिक बनाता है जिसे ज़्यादातर लोग आज कल 'लिबरल' के नाम से पुकारते हैं। अभी भी हम गोरों के आगे हाथ जोड़कर खड़े हैं और उन्हीं से सब कुछ सीख समझ रहे हैं।.....मैं तो इसका भुक्त भोगी हूँ।'' समीर ने खाना समाप्त करते हुए कहा।

-''भुक्त भोगी? कैसे?'' दीपक ने जिज्ञासा ज़ाहिर की।

-''मैं सिनेमा-टी वी का विद्यार्थी था, चैनलों में रहा, फिर एक चैनल दिल्ली में खुला और वहां मैं प्रोग्रामिंग देखता था। चैनल नया था और इंटरनेशनल था सो हमारा कंसल्टैंट भी इंटरनेशनल था-एक अँगरेज! उसे हिंदी समझ में नहीं आती थी लेकिन वह हिंदी प्रोग्रामों का क्रिएटिव हैड था। वहां उसकी बेवकूफियों की वजह से मुझे नौकरी छोड़नी पड़ी।'' समीर ने बताया।

-''आई सी.....! तो आप यहाँ कब से हैं?''

-''बस वहां छोड़ा तो इत्तेफ़ाक़ से यहाँ नौकरी निकली, इंटरव्यू में सेलेक्ट हो गया। तब से यहीं हूँ।''

-''कहाँ ऐक्टिव इंडस्ट्री और कहाँ ये एकेडेमिक वातावरण.....आप एडजस्ट कर गए?''

-''वैरी वेल! यहाँ शांति भी है, पढ़ने पढ़ाने का सुख भी है, दुनिया में क्या नया हो रहा है उसे जानने का अवसर भी है और कुछ इंटेलीजेंट काम करने का आनंद भी है।''

-''आप मेट्रो शहरों में रह चुके हैं, आपको यहाँ और इस इतने शांत वातावरण में ऊब नहीं होती?''

-''बेकार की बातें सोचने का समय ही नहीं होता।''

-''आप कौन से चैनल में थे?''

-''मैं कई में था....लेकिन वो छोड़िये, , मेरे बारे में आपने इतना कुछ तो पूछ लिया अपने बारे में भी कुछ बताइये। ये फ़िल्म आपने फ़िल्मस डिवीजन के लिए डायरेक्ट की है और आप काम करते हैं शहतूत प्रोडक्शंस के लिए.....''

-''ये फ़िल्म मैने प्रोडक्शन ज्वाइन करने से पहले बनाई थी।''

-''मैने कहीं पढ़ा था कि ये शहतूत प्रॉडक्शन किसी एन.आर.आई. का है।''

-''एन. आर. आई. नहीं है, है तो भारतीय ही लेकिन उनका कुछ बिज़नेस लन्दन में भी है। पुराने पैसे वाले और बिज़िनेसमैन हैं। उन्होंने एक तपन सेन नाम का डाइरेक्टर है, उसके साथ ये कंपनी शुरू की थी फिर जैसा कि पार्टनरशिप में होता है ये दोनों अलग हो गए। कंपनी चल रही है।''

-''तपन कौन?'' समीर नेजैसे कुछ सोचते हुए पूछा।

-''तपन सेन।''

-''वो डायरेक्टर है?''

-''जी, वो बहुत बड़ा डायरेक्टर है।''

-''क्या ये वो ही तपन सेन है जो कभी टी वी में होता था?''

--''हाँ! वो ही!.....आप जानते हैं उसे?''

-''हंहंहंहं.....छोड़ो.....वो बड़ा आदमी है सभी उसे जानते होंगे।''

-''आपकी बातों से लगता है आप उसे जानते हैं।''

-''जिस अंतर्राष्ट्रीय चैनल में मैं था तपन सेन उसमे रिसर्च असिस्टेंट हुआ करता था।''

-''बहुत घमंडी आदमी है।'' दीपक का जैसे गुबार बाहर आ गया, ''मुझे टी वी सेण्टर में एक बार मिला था। काम मांग रहा था। फिर उसके लम्बे अरसे के बाद अभी कुछ दिन पहले मिला तो पहचाना ही नहीं।''

-''चोपड़ा साहेब, ऊपर चढ़ते समय नीचे देखने से गिर जाने का अंदेशा रहता है।''

लंच के बाद समीर के ऑफ़िस में दीपक को कॉफ़ी पिलाई गयी और पांच हज़ार रूपए रखकर एक लिफ़ाफ़ा दिया गया। दीपक ने जो ट्रेन के सेकंड एसी का टिकट ख़रीदा था उसके पैसे लौटाए गए और शाम के उसे कालूपुर स्टेशन ले जाकर छोड़ आने के लिए गाड़ी की व्यवस्था की गयी। इंस्टिट्यूट पांच बजे बंद होता था इसलिए यह सब पांच तक ही होना था। हाँ, वापसी की ट्रेन रात के दस बजे थी इसलिए इंस्टिट्यूट से निकलने में नौ बजे तक ओपन एयर कैफे में विद्यार्थी उसे घेरकर बैठे बतियाते रहे।

वीरा देसाई रोड, अँधेरी में नाडियाड वाला के साउंड स्टूडियो का असिस्टेंट रेकॉर्डिस्ट सुशांत सिद्धार्थ के जान पहचान का था। फ़िल्म इंस्टिट्यूट में जब सिद्धार्थ डायरेक्शन पढ़ रहा था तब सुशांत वहीं साउंड पढ़ रहा था। उसे बम्बई आते साथ असिस्टेंट रेकॉर्डिस्ट का काम मिल गया था। सिद्धार्थ असिस्टेंटी करना नहीं चाहता था इसलिए इधर उधर भटकता रहा और बहुत दिन बेकार रहने के बाद दूरदर्शन में कॉन्ट्रैक्ट पर लग गया था और अब उस सरकारी काम से भी बोर हो गया था।

-''डायरेक्शन पढ़ना बेकार हो गया यार!'' सिद्धार्थ ने स्टूडियो में रखी बिसलेरी की पुरानी बोतल से पानी का घूँट भरते हुए कहा।

-''असिस्टेंट लग गए होते तो आज तुम डायरेक्टर हो गए होते!'' सुशांत ने अपनी मशीन में ट्रैक देखते हुए बेमतलब सा कहा, फिर बोला, ''एक मिनट, ऐं. ....मैं ज़रा इस ट्रैक को ठीक कर लूँ.....'' सुशांत का ध्यान मशीन में लग गया।

फिर उसने काम समाप्त करके कुर्सी में सिद्धार्थ की ओर मुड़कर पूरी एकाग्रता से कहा, ''लिसिन, व्हाई डोंट यू गो एंड डॉयरेक्ट सीरियल्स?''

-''है न वो तेरे पीछे वाली बिल्डिंग में एक बहुत बड़ी टेली फ़िल्म बनाने वाली कम्पनी.....वाचमैन साला गेट से अंदर ही नहीं जाने देता.....बात किस से करूँ?''

-''मैं मिलवाता हूँ.....'' सुशांत ने फ़ोन लगाया, ''हाय ब्रेन्डा!.....लिसिन, यू सैड यू नीड ए गुड डायरेक्टर.....हाँ हाँ.....वो ई, मेरा क्लास मेट है सिद्धार्थ.....भेज दूँ?.....अभी?....ओके.....देख लो.....या, बाई !'' फ़ोन काटते हुए सुशांत ने सिद्धार्थ से कहा, ''अभी है ऑफ़िस में, ब्रेन्डा नाम है.....शी इज़ प्रोडक्शन कोऑर्डिनेटर.....जा के मिल ले.....शायद काम बन जाये। लेकिन उस कम्पनी में काम बहुत है और डेडलाइन में काम करना पड़ता है, टेंशन भी बहुत है। सोच ले।''

-''जा के देखता हूँ.....थैंक्स! चल, बाई!''

सिद्धार्थ चलने को हुआ कि स्टूडियो का दरवाज़ा खुला और परेशान हाल माथे का पसीना पोंछती हुई अनघा दाख़िल हुई।

-''सुशांत ! कब करेगा यार तू मेरा ट्रान्सफ़र? सब काम तेरे लिए रुका पड़ा है।''

-''बस आपका ही काम चालू है। कल मिल जायेगा।'' सुशांत ने कहा।

-''कल भी तू ने यही कहा था यार!''

-''नो, कल सीरियसली!'' फिर सुशांत ने सिद्धार्थ को रोककर कहा, ''सिद्धार्थ दिस इज़ अनघा शेट्टी.....शी इज़ ए बिग प्रोड्यूसर...टी वी सीरियल्स और अब फ़ीचर फ़िल्में, टेलीफ़िल्में, व्हाट नॉट। और अनघा जी दिस इज़ माई फ्रेंड फ्रॉम दी इंस्टिट्यूट-सिद्धार्थ।''

अनघा ने सिद्धार्थ की तरफ़ उड़ते से देखा। सिद्धार्थ ने अदब से झुककर अनघा से हाथ मिलाया।

-''ही इज़ ए गुड डायरेक्टर। ''सुशांत ने कहा।

-''आई सी'' अनघा ने सिद्धार्थ की तरफ़ देखकर कहा, ''तो आ जाओ एक दिन ऑफ़िस में....लैट्स डिसकस थिंग्स।''

-''अपना कार्ड इसे दे दीजिये। ''सुशांत ने अनघा से कहा।

अनघा ने बैग में विज़िटिंग कार्ड खखोला, ''हियर! आफ़्टर्नून्स आर बेटर। या तो कल आ जाओ या फिर नेक्स्ट फ्राइडे.....मैं बाहर जा रही हूँ।''

-''थैंक यू मैडम! कल आफ़्टरनून में आता हूँ।'' सिद्धार्थ ने कहा और स्टूडियो

के बाहर चला गया - ब्रेन्डा से मिलने।

साउंड स्टूडियो से पीछे वाली गली में मुश्किल से पांच मिनट पैदल जाकर ही टेली फ़िल्मस वाला ऑफ़िस था। ऑफ़िस क्या था पुरी बिल्डिंग थी जिसमें लोहे का बड़ा सा फाटक था और वो फाटक हर किसी के लिए खुलता भी नहीं था। जो खुलता था वो था तीन फुट चौड़ा चार फुट लम्बा फाटक के किनारे वाला एक हिस्सा जिस में से वाचमैन का चेहरा सिर्फ़ ये कहने के लिए अवतरित होता था कि ''पास है?. ....दिखाओ!'' और अगर पास है तो अंदर जाने देता था, नहीं है तो वहां खड़े भी नहीं होने देता था। लोग बाहर मजमा लगाए खड़े रहते थे और उम्मीद करते रहते थे कि शायद किसी दिन उन्हें इस कंपनी में अंदर जाने और काम करने का मौक़ा मिलेगा।

-''पास है?'' वाचमैन ने सिद्धार्थ से पूछा।

-''मुझे ब्रेन्डा मैडम ने बुलाया है।''

-''ब्रेन्डामैडम ने?.....ठहरो, , फ़ोन पर पूछता है।'' वाचमैन ने दरवाज़ा बंद कर के ब्रेन्डा को फ़ोन लगाया। फिर दरवाज़े का छोटा हिस्सा पूरा खोलकर सिद्धार्थ को अंदर आने दिया।

अंदर बहुत बड़ा आंगन नुमा था जिसमें पांच छह बड़ी बड़ी गाड़ियां खड़ी होने के बाद भी कम से कम सात आठ गाडियों की जगह बाक़ी रहती थी। एक कोने में बड़ा सा मंदिर था जिसके ऊपर लाल कपडे का झंडा फहर रहा था, अंदर तमाम देवी देवताओं की मूर्तियां सजी हुई थीं, अगरबत्तियों की सुगंध फैल रही थी और गर्भ गृह में पीतल की चमचमाती शमई में ज्योत जल रही थी। एक पंडित जी वहां किनारे बैठे कुछ पाठ कर रहे थे। आँगन में बायें जाकर सीढ़ियां थीं जिसके बग़ल में एक लिफ़्ट लगी थी, वहां एक मेज़ रखी थी जिसके पीछे कुर्सी में वर्दी में एक वाचमैन बैठा था।

-''किस से मिलना है?'' वाचमैन ने सिद्धार्थ को घूरकर पूछा।

-''ब्रेन्डा मैडम से।''

-''तीन माला।''

लिफ्ट जब तीन माले पर खुली तब वहां सामने के शीशों से छनकर ज़बरदस्त धूप आ रही थी जो कि एयरकण्डीशनिंग की वजह से बिलकुल गर्म नहीं थी बल्कि बहुत प्लेज़ेंट थी, सामने तमाम लोग व्यस्त नज़र आते हुए आ-जा रहे थे।

-''वेयर कैन आई मीट ब्रेन्डा मैडम?'' सिद्धार्थ ने हैडफ़ोन्स लगाए हुए सामने से गुज़रती एक लड़की से पूछा। लड़की ने हैडफ़ोन्स निकाले, सिद्धार्थ से इशारे से

दो बारा पूछा कि वह क्या पूछ रहा है, फिर उसने बग़ैर बोले दूसरी तरफ़ इशारा कर दिया और अपने हैडफ़ोन्स वापस लगाकर अपने रस्ते लगी।

दूसरी तरफ़ एक बड़ा सा हॉल था जिसमें तमाम वर्कस्टेशनूस बने थे। हर एक डेस्क पर कम्प्यूटर था और हर एक अपने अपने काम में व्यस्त था। सिद्धार्थ पूछते पूछते ब्रेन्डा के वर्कस्टेशन पर पहुंचा।

-''वेट, शी विल कम।'' बग़ल वाली लड़की ने कहा। दस मिनट बाद ब्रेन्डा आयी।

-''यस?''

-''सुशांत सेंट मी।''

-''ओह.....याया.....सिट, सिट। गिव मी ए मिनिट।'' और वह काम में लग गयी।

ब्रेन्डा करीब पांच फुट तीन इंच के आस पास की भरे बदन की गोरी सी गोल गोल आँखों वाली निहायत आकर्षक लड़की थी। उसकी उम्र का अंदाजा लगाना ज़रा मुश्किल था लेकिन वह तीस पैंतीस के बीच की ज़रूर होगी। अपने चेहरे से वह एक नो-नॉनसेंस और ज़िम्मेदार शख़्स लगती थी। उसकी आवाज़ हालाँकि ज़रा कर्कश थी लेकिन जब वह बोलती थी तो तक़रीबन साथ साथ मुस्कुराती भी थी और उसकी मुस्कराहट इतनी मोहक होती थी कि वह उसकी आवाज़ की सारी कर्कशता मिटा देती थी।

-''टेल मी सुशांत.....सॉरी.....वाहट्स योर नेम?''

-''सिद्धार्थ।''

-''टेल मी सिद्धार्थ।''

-''सुशांत ने कहा आप लोगों को डायरेक्टर चाहिए।''

-''याया.....यू आर फ्रॉम दी फ़िल्म इंस्टिट्यूट?''

-''जी।''

''आई सी.....आज हमारी क्रिएटिव डायरेक्टर छुट्टी पे है...आप कल आ सकते हैं?''

-''कल सुबह?''

-''आफ्टरनून में।''

-''कल आफ्टरनून में मुझे काम है ।''

-''ओके....परसों?''

-''ठीक है परसों आफ़्टरनून में आता हूँ।''

फिर ब्रेन्डा ने आराम से कुर्सी में बैठकर सिद्धार्थ की तरफ़ देखकर पूछा, ''आपको हमारी कंपनी के बारे में कितना पता है?''

-''इतना कि आप बहुत इम्पोर्टेन्ट प्रोड्यूसर्स हैं।''

-''कररेक्ट! हम लोगों के इस समय दस सीरियल्स ऑन-एयर हैं, हम तीन फ़ीचर फ़िल्में बना रहे हैं और डिजिटल डोमेन में हम नम्बर वन हैं। हमारे यहाँ अलग अलग डिपार्टमेंट के क्रियेटिव डायरेक्टर्स हैं। उनके जितने प्रोग्राम्स हैं उतने ही उनके नीचे डायरेक्टर्स हैं, राइटर्स हैं। मै प्रोडक्शन इंचार्ज हूँ लेकिन मेरे जैसे यहाँ पांच और हैं। क्रिएटिव डायरेक्टर्स के ऊपर हैं हमारी बॉस खुद जो डेली बेसिस पर प्रोग्रामिंग, टी.आर.पी मॉनिटर करती हैं और चैनलों/डिस्ट्रीब्यूटरों से डील करती हैं। क्योंकि आप डायरेक्शन में इंटरेस्टेड हैं इसलिए मैने कहा कि आपको हमारे जो सीरियल प्लानिंग में हैं उनके क्रियेटिव डायरेक्टर से मिलना पड़ेगा।''

-''नो प्रॉब्लम, लेकिन अंदर आने के लिए यहाँ गेट पास मांगता है।''

-''आई विल कीप ए पास फ़ॉर यू एट दी गेट। ओके!''

-''ठीक है, परसों आफ़्टरनून में आता हूँ। थैंक्स! बाई।''

बाहर दोपहर की धूप तेज़ थी और सिद्धार्थ उन सड़कों पर आवारा सा यों चल रहा था जैसे उसे कहीं जाना नहीं है, कुछ करना नहीं है। टी वी सेंटर में आज उसका ब्रेक था, दूसरा कॉन्ट्रैक्ट कल से शुरू होगा। दुसरे दिन सिद्धार्थ ने टी वी सेंटर से अनघा के दफ़्तर जाना ज़्यादा ठीक समझा। दोपहर में मिलना था, तब तक मीरा रोड से लोकल में कम से कम खड़े रहने की जगह तो मिल ही जाएगी। अंधेरी उतर कर बस से उसे लक्ष्मी इंडसट्रिअल एस्टेट पहुंचना था। अनघा शेट्टी का ऑफ़िस कुबेर कॉम्प्लेक्स में तीसरी मजिल पर था। जब सिद्धार्थ वहां पहुंचा तब ढाई बजे थे और तमाम स्टाफ़ अपनी अपनी प्लेटें लिए लंच पे था।

-''अनघा इज़ एक्सपेक्टेड एनी टाइम नाऊ।''

दफ़्तर खाने की ख़ुशबुओं से भर गया था। सामने दीवार पर लगा एल.सी.डी. टी वी बड़े ज़ोर ज़ोर से टी वी सीरियल दिखा रहा था। ऑफ़िस के लड़के लड़कियां आपस में मज़ाक़ भी कर रहे थे और काम की बातें भी। ज़्यादातर लड़कों ने बरम्यूडा और ढीली ढाली टी शर्ट पहनी हुई थी और ज़्यादातर लड़कियों ने शॉर्ट स्कर्ट या मिनी या एक टाइट बनियान नुमा। हर एक के पास पांच छह इंच वाला सेल फ़ोन था जो वे अपने हाथों से अपनी जिन्दगी की तरह पकड़ कर रखे हुए थे। कुछ ने खाना बाहर से आर्डर किया था इसलिये डिलीवरी बॉयज़ का ताँता

भी लगा हुआ था। जब अनघा आयी तब तक साढ़े तीन हो चुका था। वह बड़ी फुर्ती और तेज़ी से दफ़्तर के अंदर घुसी और बग़ैर इधर उधर देखे सीधे दीवानों की तरह अपनी केबिन में चली गयी। जाते जाते उसने आवाज़ लगाई, ''सुरेखा! कम इन प्लीज।'' एक लड़की जिसका नाम ज़ाहिर है सुरेखा रहा होगा कुर्सी से उठकर अपनी स्कर्ट ठीक करके, अपने सर पर हाथ मारकर 'नॉट अगेन' बड़ बड़ाती हुई मुंह बिचका कर अनघा की केबिन में चली गई। सिद्धार्थ ने थोड़ा इंतज़ार किया कि शायद कोई उसके बारे में अनघा को इत्तेला करेगा लेकिन जब उसने देखा कि यहाँ किसी को किसी की नहीं पड़ी है तो उसने रिसेप्शन पर बैठी लड़की से कहा कि वह अनघा को उसके बारे में बता दे। बीस मिनट के बाद अनघा की केबिन से सुरेखा निकली और रिसेप्शन वाली ने सिद्धार्थ को अंदर जाने दिया। अनघा ने सिद्धार्थ के बारे में जाना, अपनी कंपनी के बारे में बताया कि वे पुराने टी वी सीरियल प्रोडूसर्स रहे हैं और अब तमाम चैनल्स में प्रोग्राम्स कर रहे हैं। उसने कहा कि वह एक नया टी वी सीरियल किसी चैनल को 'पिच' करने वाली है। सिद्धार्थ उसका सारांश और जो जो कुछ सबमिट किया गया है वह पढ़ ले और यदि उसे ठीक लगे तो उस सीरियल के साथ जुड़ जाये। यदि यह सीरियल अप्रूव होता है तो उसे डायरेक्शन करना होगा। शर्त ये है कि सीरियल को किसी भी स्टेज पर वह छोड़कर जा नहीं सकेगा। सिद्धार्थ को मंजूर था। सिद्धार्थ को इसलिए मंजूर था क्योंकि इस सीरियल से वह मेनस्ट्रीम में आ जायेगा और अनघा को सिद्धार्थ में इसलिए दिलचस्पी थी क्योंकि वह फ़िल्म इंस्टिट्यूट से पास डायरेक्टर था। दोनों एक दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करते थे। अनघा के बाहर से वापस आ जाने के बाद चैनल के साथ मीटिंग रखी गयी थी।

-''तो नेक्स्ट फ़्राइडे मीटिंग रखते हैं.....तुम बारह बजे तक यहाँ आ जाओ. ....साथ में चलेंगे।'' अनघा ने कहा।

-''ठीक है।'' सिद्धार्थ और क्या कह सकता था।

-''ओके.....बट.....'' अनघा ने तर्जनी दिखाकर कहा, ''नो प्रॉमिसेस सो फार.....अभी सिर्फ पिचिंग है.....जब अप्प्रूव हो जायेगा तब फ़ाइनल बात करेंगे. ....ओके?''

-''ओके!''

-''नेक्स्ट फ़्राइडे में अभी चार दिन हैं। चैनल को जो पेपर्स सबमिट किये हैं वो यहाँ ऑफ़िस में बैठकर पढ़ लो और सोच लो मीटिंग में क्या बोलना है.....वो कुछ पूछें तो क्या जवाब दोगे एट्सेटरा.....ठीक है?''

-''ठीक है। थेंक यू।''

-''बाई!''

-''बाई!

नेक्स्ट फ़्राइडे मीटिंग सुबह ग्यारह बजे रखी गयी थी। अनघा, उसकी अस्सिटेंट और सिद्धार्थ नियत समय पर चैनल के ऑफ़िस पहुँच गए थे लेकिन ज़ोया शेख़ -जिसके साथ मिलना था-वह किसी और मीटिंग में व्यस्त थी इसलिए मीटिंग दो बजे तक मुल्तवी की गयी। तब तक ये लोग वहीं बैठे रहे। तीन बजे के आस पास ज़ोया बग़ल में तमाम काग़ज़ और फ़ाइलें लिए दीवानों की तरह अवतरित हुई।

-''हाय ज़ोया!'' अनघा ने मुस्कराहट बिखेरते हुए कहा।

-''ओह माई गॉड,'' ज़ोया ने भृकुटियां चढ़ाकर सर परेशानी में हिलाते हुए बग़ैर किसी को देखे जवाब में कहा, ''आई एम्सो हैसेल्ड या!''

-''लन्च किया? हम तुम्हारा वेट कर रहे थे। ''अनघा ने कहा।

-''लन्च?.....वी हेड सम बरगर्स! एनी वे.....वो सब छोड़ो, लैट्स डिसकस व्हाट हैव यू ब्रॉट।''

-''दिस इज़ सिद्धार्थ.....मेरा डायरेक्टर.....फ़िल्म इंस्टिट्यूट का पास आउट. ....ये प्रोपोज़ल का पिच तो तुमने देख ही लिया होगा। और सिद्धार्थ, ये हैं ज़ोया शैख़- प्रोगरामिंग इंचार्ज ऑफ़ दी चैनल।''

ज़ोया ने न सिद्धार्थ की तरफ़ देखा न अनघा की बात सुनी, उसने कुछ काग़ज़ पलटते हुए पूछा, ''अनघा, तेरा प्रोग्राम तो पीरियड ड्रामा है न.....कश्मीर, बर्फ़ीली वादियां, हरियाली एंड आल दैट.....''

-''हाँ लेकिन उसी में तो लव स्टोरी गुथी हुई है न !'

-''तो पीरियड कॉस्ट्यूम्स होंगे...पीरियड सेट्स होंगे और बर्फ़ के पहाड़ एट्सेटरा.....वो सब कैसे करोगे? कश्मीर में शूटिंग तो कर नहीं पाओगे....इट्स डेंजरस।''

-''सैट बनाएंगे।'' सिद्धार्थ ने बीच में बोला।

ज़ोया जो अबतक सिर्फ अनघा की तरफ़ देखकर बात कर रही थी उसने चेहरा मोड़कर दो सेकंडों के लिए सिद्धार्थ को ख़ामोशी से देखा। ऐसे जैसे कह रही हो कि ''तू कौन है बीच में बोलने वाला!'' फिर उसने कुर्सी में आराम से बैठते हुए और सिद्धार्थ का इम्तिहान लेने के स्टाइल में पूछा, ''आई सी! सो इस प्रोग्राम का जॉनर क्या है ?''

-''लव स्टोरी। ''सिद्धार्थ ने कहा।

-''आई एम आस्किंग जॉनर.....जॉनर....''

-''ड्रामा।''

-''अरे यार'' ज़ोया ने सरको झटका दिया, ''ड्रामा है तो कैसा ड्रामा है.... 'फ़ेस-ऑफ़' जैसा है या 'नॉट विदाउट माई डॉटर' जैसा है और अगर लव स्टोरी है तो' हैरी मेट सैली' जैसा है.....और स्टाइल क्या है.....यशराज, महेश भट्ट या अनुराग. ....व्हाट.....बी क्लियर मैन।''

सिद्धार्थ और अनघा ने एक पल एक दूसरे से नजरें मिलाई। मन ही मन वे भले ही हंस लिए हों ऊपर से बहुत गंभीर दिखते हुए अनघा ने सिद्धार्थ से कहा, ''यशराज स्टाइल ही है.....है न!'' सिद्धार्थ ने हाँ में सर हिला दिया।

-''गुड!'' ज़ोया ने इत्मीनान से कहा।

-''एक्चुअली,'' सिद्धार्थ ने कहा, ''वैरी नियर टू'' हैरी मेट सैली ''स्टाइल।''

-''वैरी गुड! ऐसे बताओ न यार.....ये अकेले ड्रामा बोल देने से कैसे चलेगा,, ड्रामा तो सभी चैनल दिखा रहे हैं न.....वी हैव टू बी डिफरेंट।''

-''करेक्ट!'' अनघा ने हाँ में हाँ मिलाई।

-''अच्छा,'' जोया ने अनघा की जमा की गयी फ़ाइल के पन्ने देखते पलटते हुए कहा, ''बर्फ़ का सैट है तो बर्फ़ कैसे बनाओगे?''

-''सैट डेकोरेटर से डिसकस करेंगे।''

-''अरे यार!'' ज़ोया ने सर पर अपने हाथ में पकड़ी हुई पेंसिल से मारा, ''बर्फ़ बनानी है....रुई से बनाओगे, सॉल्ट से बनाओगे, कपड़े से बनाओगे....कैसे बनाओगे?''

-''रुई से!'' सिद्धार्थ ने फ़ौरन जवाब दिया, बग़ैर कुछ सोचे लेकिन इत्तेफ़ाक़ से वह जवाब ज़ोया को ठीक लगा।

-''गुड! और कास्ट?''

-''पायलट देखा है?'' अनघा ने पूछा।

-''व्हेयर इज़ दि टाइम याः!''

-''देखो तो...फिर आगे बढ़ते हैं।''

-''ओके, गिव मी ए वीक.....आज क्या है? फ़्राइडे? नेक्स्ट फ़्राइडे रखें?''

-''परफेक्ट!'' अनघा ने अपना चश्मा सर के बालों पर रखकर कहा।

-''वैसे तेरा प्रोग्राम होप-फुल्स में है।'' ज़ोया ने मुस्कुराकर कहा।

-''हाउ स्वीट ऑफ यू डार्लिंग!.....अच्छा सुन.....वो तुझे मॉरीशस के टिकट

भिजवाए थे मिल गए ना!.....जा के आ यार, , थोड़ा ब्रेक ले ले।''

-''देखती हूँ.....वेयर इज़ दी टाइम याः।''

मीटिंग जब समाप्त हुई और चैनल के ऑफ़िस से जब बाहर निकले तो सिद्धार्थ के मुंह से हंसी फूट पड़ी और अनघा के चिड़चिड़ाहट भरे चेहरे से फूट पड़ा 'बिच!'

16

चारकोप कांदिवली की बैठी चॉल में सुबह चार बजे पानी आता था। पानी भरने के लिए लाईन लगती थी, लड़ाई झगड़े होते थे और कभी कभी मार पीट। उस सुबह जब पानी लेने के लिए पल्लवी अपनी टूटे हैंडल वाली प्लास्टिक की बाल्टी लेकर गयी तो बारिश हो के बस चुकी ही थी, मिटटी गीली भी थी और चिकनी भी, उसका पैर फिसल गया। उसके पैर में तो मोच आ ही गयी, उसकी टूटी बाल्टी भी पुरी तरह टूट गयी। उसे रोना आया लेकिन अब आदत पड़ चुकी थी इसलिए आंसू नहीं निकले।- ''गिर गयी छिनाल.....'' लाईन में लगी एक औरत ने-जिसे पल्लवी कभी नहीं सुहाई-चिल्लाकर और ख़ुश होते हुए कहा।

-''तेरी बला से कुतिया.....'' पल्लवी गिरे गिरे ही बोली।

झगड़ा बढ़ा। इधर से उधर से वाणी के बाण-बस! हाथ पैर आज चल नहीं सकते थे। रघुवीर चॉल की अपनी कोठरी में चद्दर ओढ़े-सब सुनते हुए-ख़ामोश लेटा लखनऊ की शिष्ट सुंदरी को गालियाँ बकते सुनता रहा।

इस चॉल में इन लोगों को चार साल हो गये। अब ये सबको और सब इनको अच्छी तरह जानते हैं।

वो ही रघुवीर जिसे टेलेंट हंट वाले बड़े ठाठ से बम्बई लाये थे और वह स्वयं बड़े अरमानों से स्टार बनाने यहाँ आया था, वही रघुवीर जिसके स्टैंड-अप कॉमेडी के चर्चे तमाम चैनलों में हो गए थे और जो कभी फ़्लैट किराये पर लेकर अँधेरी में पल्लवी और अरविन्द इनामदार के साथ शान से रहता था, वही रघुवीर जो पल्लवी के इश्क़ में जान देने को तैयार था.....अब वही रघुवीर मुर्दा सा पड़ा था, उसे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ रहा था कि उसके घर की पानी भरने वाली बाल्टी टूट चुकी है और पल्लवी को अपनी मोच के कारण चलना मुश्किल हो रहा है ।

चार साल पहले सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था। चैनल का प्रोग्राम था, पैसा आ रहा था, पल्लवी के डांस की बड़ी तारीफ़ थी। पल्लवी के पिता-सक्सैना साहेब-

से जब बर्दाश्त नहीं हुआ तो वे बम्बई आ गए।

-''बेटा.....ये तो कोई रहने का तरीक़ा नहीं हुआ.....'' वाक़ई नही हुआ! पल्लवी भी जानती थी। लखनऊ के मुक़ाबले में यहाँ ये रहने का कोई तरीक़ा नहीं हुआ।

-''यहाँ इस मुर्ग़ी ख़ाने में तीन लोग एक साथ.....'' पिता ने कहा, ''न खाने का ठिकाना, न पीने का, न साफ़ हवा, न शांति, न कोई अपना.....चलो! हम तुम्हें लेने आये हैं.....अब कुछ नहीं सुनेंगे.....चलो, बस!''

लेकिन जब तक सक्सैना साहेब आये तब तक पल्लवी का रघुवीर से दिल ऐसा लग चुका था जैसा कभी बाप से भी नहीं लगा। तो वो जाती कैसे! मना करना मुश्किल था। बहाने बनाये गए। चैनल से कॉन्ट्रेक्ट तोड़ने के मुक़दमे का डर दिखाया गया और फिर एक बार और कहा गया, ''थोड़े दिनों की ही तो बात है।'' लकिन तब तक पल्लवी का पाओं भारी हो गया था और दिन चढ़ आये थे।

-''ये कैसे हो गया!?'' रघुवीर ताज्जुब में पड. गया।

-''तुमसे कितनी बार कहा कंडोम लगाया करो.....तुम सुनते नहीं...'मुझे उससे मज़ा नहीं आता'.....! माई फुट तुम्हारा मजा.....मरी तो मैं न!''

-''डाक्टर के पास चलते हैं।'''

-''यु आर ए बास्टर्ड।.....व्हाई दि फ़क आर यू इन माई लाईफ़!'' और पल्लवी रो पड़ी।

चैनल वालों से और आस पास काम करने वालों से तो कुछ छुपता नहीं इसलिए कुछ ने सहानुभूति ज़ाहिर की लेकिन अधिकतर ने इन पर हंसकर भरपूर मज़ा लिया। कुछ इन लोगों के अपने अंदर की शर्म और कुछ काम देने वालों में ये भाव कि अभी तो इन लोगों के काम पर लौटने में समय लगेगा- दोनों ने मिलकर स्थिति ये पैदा कर दी कि इनके पास दमड़ी नहीं बची। फिर जब एक बार लाईन से आप इधर हो गए तो फिर समझिये कि हो गए! क्योंकि रोज़ नए लोग आ रहे हैं-काम देने वालों में भी और काम लेने वालों में भी-तो फिर नए सिरे से शुरू करना पुराने लोगों के लिए थोड़ा मुश्किल होता है। और खर्चे इस दुनिया में कभी कम होते नहीं। फ़्लैट छोड़ना पड़ा। कुछ दिन पास के आदर्श नगर के बैरेक में निकाले गए। फिर वहीं एक पड़ौसी-जो फ़िल्मों में प्रोडक्शन मैनेजर था- ने लड़की की ख़ूबसूरती और रघुवीर की मजबूरी देखकर पहले तो रघुवीर को अपना असिस्टेंट बनाने की बात कही जो कि रघुवीर को उस स्टेज पर नागवार गुज़री।

-''मैं आर्टिस्ट हूँ.....आज नहीं है...कल काम मिलेगा।''

-“तो बीबी को डांसर में लगवाओ।”

-“ग्रुप डांस में? एक्स्ट्रा की तरह, पीछे खड़े रहने के लिए? नहीं नहीं..... वो डांसर है .....उसे मेन डांस का काम मिलना चाहिए।”

जब दो महीने गुज़र गए और न इनको काम मिला न उनको और सक्सेना साहेब सर मार कर लखनऊ में आंसू बहाते रहगए तो एक शाम प्रोडक्शन वाला जल्दी घर आ गया था, खाना खाकर घर के सामने वाले आहते में लुंगी ऊपर करके ठाठ से सिगरेट का मज़ा ले रहा था कि रघुवीर भी वहां पहुँच गया।

-“अरे रघु ! बीबी का फोटो हैगा?” प्रोडक्शन वाले ने पूछा।

-“ है न! क्यों?”

-“दे तो.....तुझे रास्ता बताता हूँ।”

-“क्या?”

-“दे तो!”

रघुवीर ने पल्लवी का एक क्लोज़-अप दिया।

-“ओये.....ये क्या यार, लोकेशन पे डांस करती पिक्चर नई है?”

-“है न!”

-“तो दे न!”

प्रोडक्शन वाले ने पल्लवी की तस्वीर अपने जान पहचान के एयर लाइन वाले एक पर्सर को दी। पर्सर अक्सर दुबई जाता रहता था और तमाम शैख़ लोग उसके जान पहचान के थे। पर्सर ने वो तस्वीर शैख़ को दिखाई।

-“हीरोइन है?” शैख़ उचक पड़ा।

-“ज़बरदस्त माल है।” पर्सर ने समझाया।

-“तुम उसको इधर लाएगा?”

-“तुम बुलाएगा तो लाएगा।”

पल्लवी और रघुवीर को बताया गया कि दुबई में एक शो है जिसमें पल्लवी का डांस आइटम रखा गया है। तारीख़ मुक़र्रर की गयी।

-“वो अकेली जाएगी?...नहीं नहीं....कोई तो साथ में चाहिए।” रघुवीर ने ऐतराज़ किया।

-“वो बच्च्वी है क्या?” कहकर और और तमाम तरह से रघुवीर को समझा लिया गया।

पल्लवी तीन दिनों के लिए दुबई गयी और इन तीन दिनों में शैख़ के साथ ढाई दिन रही। वो जितनी बिदक सकती थी बिदकी लेकिन उस बिदकने से शैख़

और ख़ुश हो गया। उसने डॉलरों में पैसा दिया और जितना तय किया था उससे दो गुना दिया। पल्लवी जब वापस आयी तो उसकी आँखें और जांघें सूझी हुई थीं और अपनी क़िस्मत और रघुवीर से उसे सख़्त नफ़रत हो गयी थी। रघुवीर ने जब सुना तो वह पहले तो भौंचक्का रह गया फिर उसने प्रोडक्शन वाले को तमाम गालियां दीं लेकिन डॉलर इतने आ गए थे कि शिकायत के साथ साथ लबों पर शुक्रिया भी था। धीरे धीरे दुबई के चक्कर बढ़ते गए, रघुवीर पल्लवी का दलाल बन गया- वहां भी और बम्बई में भी। लेकिन दुबई का सिलसिला ज़्यादा नहीं चला क्योंकि पर्सर नौकरी छोड़कर अमरीका चला गया था और दुबई का और कोई कॉन्टैक्ट उनके पास था नहीं। बम्बई में फ़ाइव स्टार होटलों में लड़की हफ़्ते में दो बार जाने लगी लेकिन धीरे धीरे उसका मन और तबियत ढलने लगी और वो बीमार रहने लगी। शरीर गलने लगा जिसके लिए डाक्टर मल्टीविटामिन देते रहे लेकिन ये रोग तो मन का था। मन शरीर को गला रहा था इसलिए पल्लवी ठीक न हो सकी। रघुवीर और पल्लवी अब एक दूसरे के साथ न रह सकते थे न एक दूसरे को छोड़ सकते थे। आमदनी घटती गयी, आदर्श नगर के भी किराये बढ़ते गए और तब ढूंढना पड़ी ऐसी जगह जो सस्ती हो। तब मिली एक खोली चारकोप कांदिवली में। यहाँ उन्हें रहते चार साल होने आये। अब न इन दोनों में जीने की तमन्ना है न हिम्मत लेकिन किस की उम्र कितनी है यह तो विधाता के सिवा कोई जानता नहीं न!

एक दिन अपने लोखण्ड वाला कॉम्प्लेक्स के बारहवें माले वाले फ़्लैट से निकल कर मर्सेडीजस में हाइवे तक आते तपन ने एक उड़ती सी नज़र बस स्टैंड पर मारी तो उसे एक बूढ़ा सा शख़्स दिखाई दिया-जिसे-उसे लगा की वह जानता है। बहुत देर सोचने के बाद खार तक आते आते उसे ध्यान आया कि वह बूढ़ा कभी एक टी वी एक्टर रघुवीर था। उस ने इस ग़ैर ज़रूरी ख़्याल को ज़हन से हटा दिया और ये सोचने लगा कि कल दिल्ली प्रेस क्लब में जाकर वह अपने भाषण में क्या कहेगा।

कुछ दिनों पहले अख़बारों में एक ख़बर छपी थी कि साबरमती आश्रम अहमदाबाद पर बनी एक डाक्यूमेंट्री को सेंसर वालों ने पास करने से इंकार कर दिया है। दरअसल इस फ़िल्म में गाँधी की आत्मकथा में से एक उद्धरण लिया गया था जिसमे गाँधी ने स्वयं कुबूल किया है कि वह सेक्स का दीवाना था। अब हालांकि ये सत्य और स्वयं लिखने वाले का कुबूला हुआ सत्य है लेकिन भारत के लोग- जो ज़्यादा इमोशनल हैं- और सब वरिष्ठ आदरणीयों की सिर्फ़ अच्छी अच्छी बातें ही बखानना /बताना चाहते हैं- उन्हें ये नागवार गुज़रा। तमाम प्रदर्शन हुए और इस

फ़िल्म को सर्टिफिकेट देने से मना कर दिया गया। बुद्धि जीवियों में तमाम चर्चे हुए। अख़बारों में सम्पादकीय लिखे गए। टी वी में इंटरव्यू हुए। तपन का भी इंटरव्यू हुआ। तपन ने बढ़ चढ़ कर अभिव्यक्ति की आज़ादी की ऐसी ज़बरदस्त वकालत की कि पत्रकारों की नजर में वह हीरो बन गया। दिल्ली और बम्बई के प्रैसक्लब वालों ने उसे आमंत्रित करने और उसके साथ एक शाम गुज़ारने का प्रोग्राम बनाया। बम्बई का प्रोग्राम पिछले सप्ताह हो चुका था, दिल्ली वाला कल था।

दूसरे दिन सुबह के जहाज़ से उसे दिल्ली जाना था। दिन में उसे प्रैस क्लब के चेयर मैन इत्यादि के साथ लन्च करना था और शाम को लेक्चर। शाम को जब वह पहुंचा तो प्रैस क्लब भरा हुआ था। चारों तरफ़ सिगरेटों का धुआं और तक़रीबन हर एक की मेज़ पर बोतल और गिलास। एक तरफ़ एक माईक लगाकर कुर्सियां लगाई गयीं थीं और सामने सुनने वालों के लिए। प्रोग्राम शाम साढ़े छह से था। तपन जब आया तब साढ़े छह बस बजने ही आये थे।

-''हाउ नाईस टू सी यू।'' चश्मा लगाए, दाढ़ी बढ़ाये, लम्बा कुर्ता और अली-गढ़ी पायजामा पहने सांवला सा एक शख़्स तपन के सामने आ गया।

-'' हैलो।'' तपन ने रस्मन कहा।

-''नहीं पहचाना?.....पहचानोगे कैसे, ज़माने हो गए।''

-''मै पहचान रहा हूँ लेकिन.....''

-''मै शब्बीर हूँ.....मै उसी चैनल में दिल्ली में सीरियल देखता था जिसमें तुम बम्बई में पोस्टेड थे।''

-''ओह! हाँ हाँ....शब्बीर साब!'' तपन ने बड़ी गर्म जोशी से हाथ मिलाया, ''हाउ नाईस टू सी यू हियर।''

-''तुम तो बहुत बड़े डायरेक्टर हो गए भाई।''

-''आपसे बड़ा नहीं हूँ।''

-''चलो लेक्चर ले लो फिर आराम से घर चलते हैं....वही बातें करेंगे.....ठीक है!''

माईक पर तब तक तपन के आगमन और उसके इंट्रोडक्शन की बात शुरू हो चुकी थी। उसे अपनी कुर्सी की तरफ़ जाना पड़ा। तपन ने डॉक्यूमेंटरी के बारे में बताया, गाँधी की आत्मकथा के बारे में चर्चा की और फ़िल्म में साबरमती आश्रम के सजीव चित्रण की बात कही। करीब बीस मिनट के बाद शुरू हुआ सवालों-जवाबों का सिलसिला।

-''क्या इस फ़िल्म को रोक कर अभिव्यक्ति की आज़ादी पर प्रहार हुआ है?''

एक पत्रकार ने पूछा।

-''अभिव्यक्ति की आज़ादी की बात नहीं है....सत्य के दिखाए जाने पर पाबन्दी लगी है।'' तपन ने जवाब में कहा।

-''क्या ये ज़रूरी है कि जो सत्य कटु है वह दिखाया ही जाना चाहिए?''

-''यदि सत्य इतना कटु होता तो आत्मकथा लिखने वाला स्वयं ही उसे इस खुलेपन से नहीं लिखता।''

-''क्या ये अभिव्यक्ति की आज़ादी वाली बात हमारे यहाँ केवल किताबों में है?''

-''हमारे यहाँ मतलब?....हमारे देश में?''

-''जी।''

-''हमारे देश में जितनी बोलने की अज़ादी है उतनी तो दुनिया में कहीं नहीं है।''

-''तो फिर आपने क्यों कहा कि अभिव्यक्ति की आज़ादी ख़तरे में है?''

-''मैने कोई जनरल स्टेटमेंट नहीं दिया कि अभिव्यक्ति की आज़ादी खतरे में है.....मैंने कहा कि इस तरह एक फ़िल्म को रोक देना फ़िल्म मेकर की अभिव्यक्ति की आज़ादी पर रोक लगाना है.....और वो भी जब जब उसने फ़िल्म में कोई ग़लत बात नहीं दिखाई हो।''

-''क्या आप हर प्रकार की फ़िल्म के लिए यही रुख़ अपनाते हैं?''

-''बिलकुल!''

-''तो पॉर्न भी अभिव्यक्ति है.....उसके लिए भी आज़ादी होनी चाहिए।''

-''अगर आप समझते हैं कि पॉर्न अभिव्यक्ति है तो ज़रूर...लेकिन अगर ऐसा होता तो सड़क पर खुले में पेशाब करना, थूकना, रेप करना, किसी को मार डालना भी अभिव्यक्ति में ही शामिल होता.....जो कि नहीं है।''

-''तो अभिव्यक्ति क्या है?''

-''हम यहाँ विचारों की बात कर रहे हैं और इसमें जब अभिव्यक्ति की बात आती है तो उसकी आज़ादी के साथ रेस्पॉन्सिबिलिटी-जवाब देही, ज़िम्मेदारी-की बात भी आती है।''

-''आप टी वी के बड़े और बहुत पॉपुलर डायरेक्टर हैं, आपको लगता है कि आप जो टी वी पर दिखाते हैं वह रियलिटी है?''

-''अख़बार हो, टी वी हो, रेडियो हो.....कोई भी मीडियम हो-सिलेक्टेड

रियलिटी पर ही काम करता है। लेकिन मेरे प्रोग्राम अधिकतर भारत के उभरते टेलेंट से ताल्लुक़ रखते हैं इसलिए ये रियलिटी भी हैं, मनोरंजन भी हैं और आम लोगों के लिए हौसला-अफ़ज़ा भी हैं।''

सवालों जवाबों का सिलसिला आठ बजे तक चला फिर शुरू हुआ पीने-खाने का दौर।

-''तो चलें? ''शब्बीर आ गया।

-''ये जाने देंगे.....पकड़ के तो रखा है।''

-''वो मै सम्भाल लूँगा। दिल्ली में सब जुगाड़ है और यहाँ मेरी बड़ी पहुँच है।''

प्रैस क्लब से निकलकर शब्बीर ने एक फ़ोन किया, ''अरे नासिर! गाड़ी गेट पे ले आओ।'' दो मिनट बाद एक काली चमचमाती हुई स्कॉर्पिओ गाड़ी आकर खड़ी हो गयी।

-''चलो।'' शब्बीर ने तपन से कहा और दोनों उसमें बैठ गए। तपन को गाड़ी देखकर थोड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि चैनल में तो शब्बीर फटे हाल था, ज़बरदस्त कम्युनिस्ट विचार धारा का और पैसे वालों का सख़्त विरोधी। तब से अब तक इतनी जल्दी और इतनी तरक्क़ी! ख़ैर! उसने सोचा।

-''तो!?...ग़ज़ब बड़े अदमी हो गए हो तुम तपन'' शब्बीर ने गाड़ी में आराम से बैठते हुए कहा, ''गुड टू नो!''

-''आप बताइये आप क्या कर रहे हैं...चैनल बंद हुए तो क़रीब दस साल होने आये...तब से क्या करते रहे?''

-''पहले तो कुछ समझ में नहीं आया कि क्या करूँ। फिर सोचा सीरियल बनाऊं लेकिन उसमे दिमाग़ की भी और काम की भी दोनों तरह की बेवक़ूफ़ियां शामिल हैं इसलिए वो इरादा छोड़ दिया। उसके बाद पिछले पांच सालों से एक एन. जी. ओ. चलाता हूँ- बच्चों की तालीम के लिए।''

-''आई सी'' तपन ने हाँ में हाँ मिलाई, ''सेवा का काम है।''

-''बिलकुल! अब तो बस ये है कि दस करोड़ रूपया कहीं से आ जाये तो उसके इंटरेस्ट पर काम चलाया जाये। अपना ख़र्चा चल जाये बस!''

-''दस करोड़ का बैंक के हिसाब से भी साल का एक करोड़ बैठेगा।''

-''हाँ तो इससे कम में तो मेरा ख़र्चा कैसे चलेगा.....और मै काम के ख़र्चे की बात नहीं कर रहा हूँ.....आज के ज़माने को, महंगाई को देख रहे हो न!

-''ट्रू!'' तपन ने कहा। उसने मन में सोचा कि यह आदमी पक्का जुगाड़ू है। एन.जी.ओ. से इसका मतलब है पैसा कमाना और अगर इसका सलाना ख़र्च एक

करोड़ के आस पास है तो ये कौन सी सेवा में लगा है! उसने सोचा कि क्या ये वो ही शख़्स है जो कभी ऑफ़िस से घर लौटने के लिए घंटे घंटे भर बस स्टैंड पर खड़ा रहता था!

शब्बीर का फ़्लैट साउथ एक्सटेंशन में था। दूसरी मंजिल पर, बड़ा सा हवादार। घर पर उसकी पत्नी और दो कॉलेज गोइंग लड़कियों से मुलाक़ात हुई।

-''क्या पियोगे? व्हिस्की या रम या कुछ और?''

-''पीना बहुत हो गया.....अब वैसे भी ज़्यादा वक़्त नहीं है।''

-''क्यों फ़्लाइट तो साढ़े ग्यारह की है। साढ़े दस तक निकलना।'' बग़ल की मेज़ पर रखी किताबों में से तपन ने एक किताब उठाकर देखी। किसी फ़िल्मी गीतकार ने अपनी 'शायरी' प्रकाशित की थी।

-''ये कब से शायर हो गए?''तपन ने किताब देखकर कहा, ''ये तो मामूली गाने लिखने वालो में से हैं।''

-''वो दे गए थे किताब.....मैने रख ली। और वैसे भी क़ुरान में लिखा है वतो इज़्ज़ो मंतशाः, वतो ज़िल्लो मंतशाः मतलब ख़ुदा जिसे चाहता है इज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है बेइज़्ज़त करता है। ये जैसे भी हों इन्हें इज़्ज़त मिल रही है। ''

-''यही बात हर धर्म में लिखी है लेकिन देखता हूँ कि हिन्दू न अपनी किताबें पढ़ता है न पढ़ने की ज़रुरत समझता है। मसलन बहुत से लोग तो ये भी नहीं जानते कि शिवलिंग क्या है और हम उसे क्यों पूजते हैं।'' तपन हिन्दुओं की तरफ़ से दुखी होकर बोला।

-''शिवलिंग इज़ मेल-ऑर्गन।'' शब्बीर ने सटाक से कहा। तपन एक मिनट के लिए ख़ामोश शब्बीर को देखता रह गया। उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने उसका मुंह खोलकर उसमे गधे की लीद भर दी हो। याने जिसे हम भगवान की तरह पूजते हैं ये शख़्स उसके बारे में ऐसी बेहूदा बात कह रहा है। हम तो इसकी हर बात का लिहाज़ करें और ये हमारी हर चीज़ /बात का माख़ौल उड़ाए!

-''शब्बीर जी,'' तपन ने उठते हुए कहा, ''अब चलना चाहिए...मैं रास्ते में कुछ मिठाई भी लेते जाना चाहता हूँ। देर हुई तो दुकाने बंद हो जायेंगीं।''

-''खाना तो खालो.....अरे मरियम!'' शब्बीर ने आवाज लगाई, ''खाना लगा दो भाई।''

ग्यारह के आस पास तपन जब दिल्ली हवाई अड्डे पहुंचा तब उसका मूड उखड़ चुका था और उसकी आँखें नशे और नींद से बोझिल हो रही थीं। फ़्लाइट लेट थी।

जहाज में कोई पंछी फँसकर मर गया था। जो साढ़े ग्यारह बजे उड़नी थी वह रात को ढाई बजे उड़ी। बम्बई उतर कर घर पहुँचते पहुँचते साढ़े पांच बज गए। माँ सोकर उठ गयी थीं।

-''तुम लोग तैयार हो गए?'' तपन ने पूंछा।

-''तैयार क्या कुछ कपड़े रखने थे...पैसा तो तूने पिता जी को दे ही दिया है न।''

-''एक कार्ड भी दिया है....और ज़रुरत पड़े तो फ़ोन करना। अच्छी तरह शांति से जाना मेरे लिए भी मंदिर में मत्था टेक देना।''

माँ ने तपन के सर पर हाथ फेरा, ''तूने हमें बहुत अच्छी तरह देखा बेटा!'' माँ रोने लगी।

-''चार धाम जाकर बसने वाले थोड़े ही हो.....ज़्यादा से ज़्यादा महीने भर में वापस आओगे तब रो लेना.....अभी से इमोशनल मत हो। जाओ यहाँ से दिल्ली, दिल्ली से गाड़ी कर दी है। कंजूसी मत करना। अच्छी तरह जाना। हरिद्वार पहुँच कर फ़ोन कर देना। समझे!''

-''हरिद्वार, बद्री, केदार, गंगोत्री, जमनोत्री.....बाबा रे कितना दिन लगेगा... ..'' फिर माँ ने सोच कर कहा, ''देख हम लोग भी नहीं होंगे, भाई को तूने अमरीका पढ़ने भेज दिया है, घर ख़ाली है। मेरी बात मान माधुरी को वापस बुला ले, तेरी देखभाल कौन करेगा?!''

-''मेरी देखभाल?.....मैं क्या बच्चा हूँ?.....टाइम बर्बाद मत करो तुम्हारा साढ़े दस का फ्लाइट है, तुम जाओ, मुझे बहुत नींद आ रही है ।

कोई तीन साल पहले कि बात है ग्यारह बजे के आस पास नरीमन पॉइंट पर एक्सप्रेस टावर्स कि दसवीं मँज़िल पर लिफ़्ट की ओर से भागते भागते नौशेर तक़रीबन गिर ही तो गया। उसके हाथ के सारे काग़ज़ जमीन पर बिखर गए और पैर में मोच आते आते रह गयी। सामने बैठा ऑफ़िस का नीली वर्दी वाला वॉचमन अपनी कुर्सी से उसे बचाने के लिए उठने ही लगा था कि नौशेर अपने आप खड़ा हो गया। फिर उसने लिफ़्ट के दूसरे दरवाज़े की तरफ़ देखा और उस तरफ़ चली आ रही माधुरी को देखकर ज़ोर से आवाज लगाई।

-''माधुरी!''

माधुरी ने सुना लेकिन अनसुना कर दिया। नौशेर ने दोबारा पुकारा, ''माधुरी''!

माधुरी अपनी स्लैक्स और शर्ट में हाथों में फाइलें लिए एक दम खड़ी हो गयी। फिर उसने नौशेर की तरफ़ देखकर कहा, ''नौशेर, कम हियर!''

नौशेर मुस्कुराता हुआ आया, ''यस!''

-''कितनी बार तुम से कहा है कि मै तुम्हारी बॉस हूँ। डू यू अंडरस्टैंड?... ..मै कंपनी में एच आर डायरेक्टर हूँ और तुम क्या हो-एच आर एग्जीक्यूटिव..... अपनी औक़ात में रहा करो, समझे!.....ये माधुरी माधुरी क्या होता है.....कॉल मी बॉस!''

नौशेर लार टपकाता सा मुस्कुराता हुआ सर हिलाता रहा। फिर बोला, ''मै जानता हूँ कि तुम जानती हो।''

-''क्या?''

-'' यही कि आई एम इनफ़ैचुएटेड बाई यू.....मै तुमसे मोहब्बत करता हूँ, लेकिन.....''

-'' लेकिन?''

-'' लेकिन तुम मानने को तैयार नहीं हो।''

-''ओह शटअप, गो !'' नौशेर देखता रह गया। फिर पीछे से बोला, ''आई एम बोर्न फ़ॉर यू।'' माधुरी ने कुछ नहीं कहा तो फिर बोला, ''शाम को लिफ़्ट दोगी?'' तब तक माधुरी ऑफ़िस के दूसरे दरवाज़े से अंदर जा चुकी थी।

माधुरी ने तपन का घर छोड़ने के बाद दो नौकरियां बदली थीं। यह उसकी तीसरी नौकरी थी। यह एक मल्टीनेशनल कंपनी थी जहाँ वह डायरेक्टर एच आर थी और कंपनी में उसकी बड़ी धाक थी। उसका बेटा-तरुण-बड़ा हो रहा था और अब ग्यारहवें क्लास में था। क्योंकि माधुरी के पास समय होता नहीं था और माधुरी के माता पिता की मृत्यु हो चुकी थी इसलिए लड़के को देखने वाला कोई नहीं था। इसलिए तपन ने लड़के को पंचगनी के एक बोर्डिंग स्कूल में दाख़िला दिला दिया था। माधुरी ने कुर्ला से अपना फ़्लैट बेचकर वडाला में घर कर लिया था। नौशेर पारसी कॉलोनी फ़ाइव गार्डन में पुराने पारसी परिवार से था और अक्सर ऑफ़िस आते जाते माधुरी की गाड़ी में लिफ्ट ले लेता था। नौशेर को माधुरी अच्छी लगती थी। माधुरी को भी वह अच्छा लगता था और इतने दिनों बग़ैर मर्द के रहने के बाद उसे यह गोल मटोल, हंस मुख नौजवान बहुत भाता था लेकिन वह यह बात क़ुबूल करने में हिचकिचाती थी।

-''तुम जानती हो कि तुम जवान हो.....ख़ूबसूरत हो.....तुम्हें एक मर्द की सख़्त जरुरत है.....लेकिन यू आर डेनाईग योर सेल्फ़।''

-''तुम से मतलब?''

-''बहुत मतलब है.....बिकॉज़ आई.....हाउ डू यू से इट इन हिंदी.....''

-''बंगाली!''

-''याया.....इन बंगाली.....''

-''डोंट इवन ट्राई, तुम टाटा करके बोलेगा जो मुझे पसंद नहीं आएगा।''

-''तुम इसलिए डरती हो न कि मै तुमसे उम्र में छोटा हूँ?''

-''थैंक यू फॉर नॉट कालिंग मी ओल्ड !''

-''अरे मारो गोली उम्र को यार.....आई डोंट केयर.....''

और अक्सर माधुरी जब घर जाकर शीशे में अपना चेहरा देखती थी और उसे अपने बालों में एक आध डाई से छूट गया सफ़ेद बाल दिखता था तो वह सोचने लगती थी कि क्या उसे तपन के पास लौट जाना चाहिए या कोई और मर्द कर लेना चाहिए। तपन के पास लौटने की उसने कोशिश की लकिन तपन ने मना कर दिया और अब तक़रीबन दस सालों बाद रिश्ता जो बचा था वो इतना औपचारिक था कि ऐसी बात करना मुनासिब नहीं रह गया था। कभी कभी उसके दिल में आया कि नौशेर को वह घर लेकर आएगी। नौशेर तो पहले ही तैयार बैठा था।

-''हाऊ अबाउट डिनर विद मी?'' नौशेर ने एक दिन पूछा, ''नो स्ट्रिंग्स अटैच्ड ऐं.....चाइनीज, इंडियन या इतालियन.....?''

-''हाउ अबाउट बंगाली डिनर?'' माधुरी ने जैसे अपने आपको आज बहाव में झोंक ही दिया।

-''ओ के.....कभी खाया नहीं.....कौन जागा जायेगा?''

शाम को ऑफ़िस से निकलकर माधुरी नौशेर को घर ले आयी और उसने बंगाली भाजा, इरेश-माछ और और भी तमाम कुछ पकाया।

नौशेर बड़ा मजाहिया और चुलबुला क़िस्म का आदमी था। उसके होते हुए वातावरण एकदम रिलैक्स्ड हो जाता था। दोनों की शाम बहुत अच्छी गुज़री। उस दिन रात को नौशेर और माधुरी ने जी भर अपनी मोहब्बतों की प्यास को तृप्त किया। उस दिन के बाद ये सिलसिला अक्सर होने लगा और नौशेर ने एक दिन कह ही दिया, ''हम लोग शादी काय को नई बनाता है?''

-''तुम तो पारसी हो?''

-''तो? पारसी लोग आदमी नई होता क्या?''

-''तुम्हारे यहाँ पारसी लड़की चाहिए न.....''

-''अरे दिस इज़ नॉनसेंस.....वो लोग हम को जात से निकाल देगा.....बस।''

-''जात से निकल दिया तो तुम्हारे फ़्लैट में तो रहना पॉसिबल नहीं है।''

-''सो व्हाट? तुम्हारा फ़्लैट परफ़ेक्ट है.....इसमें तुम्हारे सिवा कोई और है भी नई,'' नौशेर ने माधुरी को प्यार से गले लगाते हुए कहा, ''और मै तो तुम्हारा पति हूँ।''

-''शादी मतलब सिविल मैरिज?'' माधुरी ने सवाल किया।

-''ऑफ कोर्स...पर तुम तो अभी मैरिड हो, तुम डाइवोर्स ले लो तब तो शादी करें।''

माधुरी ने तपन को फ़ोन किया।

-''डाइवोर्स?.....वैसेई तो है।'' तपन ने कहा।

-''नहीं, मतलब लीगली.....'' माधुरी बोली।

-''ओके!.....फ़ाइल फ़ॉर इट। मै कोर्ट में आ जाऊंगा।''

बांद्रा के फॅमिली कोर्ट में जिस दिन तारीख़ थी रस्म के लिहाज़ से माधुरी और तपन दोनों को एक कमरे में बुलाकर काउसेलिंग की गयी- 'क्यों तलाक देते हो, साथ रहो, सब झगड़े मिट जायेंगे' इत्यादि समझाया गया। फिर जब कुछ बनता नहीं दिखाई दिया तब दोनों लाये गए जज के सामने।

-''खाओ भगवान की कसम!'' अदालत के आदमी ने हलफ़ दिलाया। कोर्ट के आर्डर के लिए एक तारीख़ दे दी गयी और फिर दोनों बाहर खुली हवामें आ गए- अपने अपने रास्ते।

माधुरी का लड़का तरुण इन्ही दिनों अपने स्कूल से छुट्टियों में घर आया हुआ था। उसने अपनी माँ और उसके प्रेमी को देखकर पूछा, ''मां, तुम नौशेर से शादी करने वाली हो?''

-''पता नहीं।'' माधुरी ने बात टालने की कोशिश में कहा।

-''तुम डैडी को छोड़ दोगी?''

-''डैडी ने तो हमें छोड़ा ही हुआ है।''

-''उन्होंने छोड़ा है या तुमने उन्हें छोड़ा है!''

माधुरी को लड़के का इस तरह उसके व्यक्तिगत मामलों में दख़ल अंदाजी करना नागवार गुज़रा लेकिन बच्चा था, वह गुस्सा होने की जगह मुस्कुराई। तरुण के गाल पर हाथ फेरते हुए बोली, ''कम ऑन डार्लिंग....लैट्स टॉक समथिंग एल्स।''

-''मैं डैडी के पास जाऊँगा। वो मेरे लिए कल गाड़ी भेजने वाले हैं।''

-''ओके।''

दूसरे दिन नौ बजे के आस पास माधुरी के फ़्लैट के नीचे लड़के को लाने के लिए गाडी खड़ी थी। लड़के को मालूम था डैडी ऑफ़िस में मिलेंगे और जब वह पहुंचेगा तो वो सब काम छोड़कर उसे लेकर सीधे गॉल्फ कोर्स के क्लब चले जायेंगे। वहां दोनों गप्पें मारेंगे और हंसी मज़ाक़ करते दिन गुज़ारेंगे। लड़के के लिए तपन सब काम छोड़ देता था।

-''मैं आपकी तरह डायरेक्टर बनूँगा।'' लड़के का रुझान तय था।

-''नॉनसेंस.....तुम इंटेलीजेंट आदमी हो कुछ इंटेलीजेंट काम करना।'' तपन कहता।

-''क्यों, डायरेक्शन इंटेलीजेंट काम नहीं है ?'' तरुण पूछता। और दोनों हँस पड़ते।

नौशेर इंजीनियर-अपने घर वालों की मर्ज़ी के खिलाफ़-अब माधुरी के फ़्लैट में शिफ्ट कर गया था। शादी की तारीख़ और उसके इंतज़ाम सोचे जा रहे थे। माधुरी ने देखा कि नौशेर के बारे में जो वो अब तक नहीं जानती थी वह था उसका शराब पीना और पीकर बहक जाना। ये सब बातें तो साथ रहकर ही पता चलती हैं। शराब वह अक्सर रात को पीता था और पीने के बाद बेतरह झुंझला जाता था। उस समय वह एकदम उग्र हो जाता था और मारपीट पर उतर आता था। एक दो बार तो माधुरी ने 'सुधर जायेगा' मान कर जाने दिया लेकिन जिस दिन वह कोर्ट से तलाक़ फ़ाईनल करके आई उस दिन रात को शराब पीकर नौशेर ने अपने नशे में माधुरी को बेतरह पीटा। उसका चेहरा और बदन सूझ गया। रात को बिस्तर पर लेटे रोते रोते माधुरी ने प्रण किया कि इस शराबी से शादी तो नहीं ही करेगी.....मगर अब एक दिक्कत और थी और वह थी नौशेर को अपने फ़्लैट से बाहर निकालना।

-''यू हैव टू गो.....'' मधुरी ने दूसरे दिन सुबह नौशेर से कहा।

-''वेयर टू गो.....मैंने तो घर छोड़ दिया तेरे लिए.....''

-''यू हैव टू लीव।''

-''यू फ़किंग बिच.....वेयर डु आई गो?'' नौशेर चिल्लाया।

-''जस्ट लीव।'' माधुरी अपने हाथ में ली हुई प्लेट फेककर ज़ोर से चीखी। नौशेर ने उसे कन्धों से पकड़ लिया।

-''व्हाई डार्लिंग.....क्या हुआ.....''

-''यू आर एन एनिमल....''

-''आई एम्सॉरी.....''

-''जस्ट लीव!''

-''नो वे.....आई एम्नॉट गोइंग एनी वेयर।''

माधुरी का दिन इसी उधेड़ बुन में गया कि वह क्या करे, क्या न करे।

बेटा तरुण तपन के घर पर था और एक नया कम्प्यूटर गेम खेल रहा था। तपन फ़ोन पर अपने असिस्टेंट को एडिटिंग के लिए कुछ समझा रहा था कि उसके फ़्लैट की घंटी बजी। तपन ने दरवाज़ा खोला तो देखा सूटकेस लिये माधुरी खड़ी है।

-''तुम?''

-''मैं सोना चाहती हूँ!'' माधुरी ने जैसे रुंआसे होकर कहा।

-''यहाँ?''

-''आने तो दो।''

तपन ने दरवाज़ा पूरा खोल दिया। तरुण का गेम खेलना रुक गया, वह अपने माँ-बाप दोनों को देखता रह गया-कुछ न समझ पाते हुए! तपन को इस तरह माधुरी का आ जाना क़तई अच्छा नहीं लगा लेकिन शिष्टाचार के नाते वह कुछ कह नहीं पाया। माधुरी जाकर बैडरूम में सामान रखकर पसर गयी। उसे इत्मीनान हो गया कि यह घर आ गयी है और अब उसे कोई ख़तरा नहीं होगा।

दोपहर से शाम हो गयी। शाम से रात होने आई। माहौल असहनीय प्रकार से ख़ामोश रहा। किसी ने किसी से कुछ नहीं कहा। अलबत्ता तरुण के साथ तपन और माधुरी दोनों ही जितनी भी बात करते रहे मुस्कुरा कर प्यार से करते रहे।

नौ के आस पास माधुरी के पास नौशेर का फ़ोन आया, ''वेयर आर यू?''

-''आई हैव टू गेट अवे फ्रॉम यू। यू आर मैड।''

-''यस आई एम्मैडं एण्ड आई एम्मैड अबाउट यू....मैं तुम्हें कहीं से भी ढूंढ निकालूंगा.....आई वांट यू।''

-''लीव माई फ़्लैट।''

-''आई नो तुम अपने उस हस्बैंड के पास गयी होगी। तुम्हारे पास और कोई है ही नहीं।'

-''गेट लॉस्ट।''

-''तुम सीधी तरह मेरे पास वापस आ जाओ नहीं तो मैं तुम दोनो को गोली मार दूंगा।''

माधुरी ने तपन को सारी बात बताई। ''प्लीज़ अब मुझे जाने को मत कहो।'' माधुरी की आवाज रुंधने लगी।

-''पुलिस कंप्लेंट करूँ क्या?'' तपन ने ठन्डे मन से पूछा।

-''ऐसे ही चला तो शायद करना पड़े।''

गर्मी के दिन थे। पास की किसी मस्जिद से ईशा की अज़ान सुनाई देने लगी। वातावरण बोझिल होने लगा। तरुण सो गया। तपन आँख खोले लेटा रहा और बहुत असहज रहा। माधुरी सहमी सहमी करवटें लेती रही।

रात के क़रीब दो बजे होंगे कि तपन के लैंडलाइन पर घंटी बजी।

-"मिस्टर सेन?"

-"यस!"

-"एक बुरी ख़बर है आपके पेरेंट्स रूद्र प्रयाग के पास गाड़ी से जा रहे थे कि एक लैंडस्लाइड हुआ और उनकी गाड़ी स्किड होकर खाई में गिर गयी। बोथ आर डेड। आप कब आ सकते हैं?"

तपन का दिमाग़ कुन्द हो गया, फ़ोन हाथ में जड़ हो गया और उसके मुंह का जायक़ा कसैला पड़ गया।

17

सुबह का नौ बजा था लोखंड वाला कॉम्प्लेक्स कांदिवली की इस हाऊसिंग सोसाइटी का रोजमर्रा प्रबंधन देखने वाला एडमिनिस्ट्रेटर सलमान अफ़रीदी ड्यूटी पर आकर अपना पसीना पोछते बस कुर्सी पर बैठने ही वाला था कि उसका सेलफ़ोन बजा।

-''अफ़रीदी!,.....जी मोकाशे साब!''

समर मोकाशे इस सोसाइटी का मेंबर था। उसका इस हाउसिंग कॉम्प्लेक्स की सी बिल्डिंग में बारहवीं मंज़िल पर फ़्लैट था।

-''कक्का की आज सुबह डेथ हो गयी है...'' समर ने कहा, ''सोसाइटी में जितने महाराष्ट्रियन हैं उन सबको ख़बर कर दो।''

-''डेथ हो गयी है तो सिर्फ महाराष्ट्रियन को ही क्यों.....सबको क्यों नहीं'' सलमान ने पूछा।

-''जो बोला वो करो।''

-''ठीक है सर।''

फिर सलमान अफ़रीदी ने वॉचमैन को इत्तिला की और रहने वालों की लिस्ट में कौन कौन मराठी है वो देखने लगा और अपने आप बड़बड़ाया, ''मय्यत में भी मराठी, भैय्या, मलबरी होगा.....क्या पब्लिक है!''

खबरें मिलने तक या तो लोग काम पर जा चुके थे या जा रहे थे। कुछ ने फ़ोन ही नहीं उठाया, उठाया भी तो कह दिया, 'मैं बाहर हूँ' या 'मैं ड्राइव कर रहा हूँ'। लिफ़्ट संकरी थी इसलिए मुर्दे को लिफ़्ट में खड़ा कर के नीचे लाया गया। तब तक आहाते में मुश्किल से दस लोग जमा हुए होंगे और उनमें भी वे जो या तो मोकाशे काका की उम्र के थे या फिर परिवार के क़रीबी जान पहचान वाले थे। ये लोग बस जमा हुए ही थे कि तपन अपने फ़्लैट से नीचे उतरा। उसने इस मजमे पर एक उड़ती सी नज़र मारी और गाड़ी में बैठकर चला गया। जमा बुज़ुर्गों को- जो

अब तक इधर उधर ख़ाली खड़े थे- बात चीत का मुद्दा मिल गया। ''तेना बघितला तुम्हीं.....(इसे देखा तुमने).....तेच मी मंढतो, (वो ही मैं कहता हूँ)...भैय्ये साले सत्यानाश केले सग्ड़ा (भैय्यों ने सब सत्यानाश कर दिया है)।''

-''अहो काका.....ये भैय्या नई है।'' दूसरे ने कहा।

-''तो क्या हुआ, है तो बाहर का.....हमारे सारे संस्कार यही लोग भ्रष्ट कर रहे हैं।.....तुम्हें मालूम है ये अभी तक अकेला रहता था.....फ़िल्म वाला है न.... .जैसे ही इसके मां-बाप मरे ये किसी औरत को घर ले आया है।'' फिर इन वृद्ध महाशय की आवाज़ धीमी हो गयी और उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, ''और उस औरत के एक लड़का भी है!''

-''औरत का मालूम नई.....लड़का तो इसी का है।''

-''औरत है न,'' काका ने फिर शान से कहा, ''वो भी सुबह टैक्सी मँगा के कहीं काम पे जाती है....मेरी खिड़की से सब दिखता है.....हंहंहंहं.....हाँ!''

कहते हैं बात निकलती है तो लम्बी जाती है। इसलिए सोसाइटी के साभ्रांत इज़्ज़तदार और कल्चर के रक्षकों को तपन के घर किसी और महिला का रहना गवारा न हुआ। कुछ ने दबी ज़बान से पहले मज़ाक़ की टोन में तपन से पूछा, ''क्या जी. ....शादी कर ली.....बताया भी नहीं!'' लेकिन तपन तो माधुरी को बीबी मानने को तैयार नहीं था इसलिए उसने सर हिला कर टाल दिया। फिर सोसाइटी में बढ़ रहे बच्चों पर ग़लत संस्कार पड़ने के डर से इज़्ज़तदार लोगों ने सोसाइटी की ओर से एक नोटिस भेजकर तपन से जवाब माँगा। तपन को लिखना पड़ा कि माधुरी उसकी बीबी है। मामला सोसाइटी में तो रफ़ा दफ़ा हो गया। तपन के मन का बोझ बढ़ गया और उस बोझ को दबाने के लिए तपन ज़्यादा से ज़्यादा समय स्टूडियो और एडिटिंग में गुज़ारने लगा। कभी जब समय होता तो वह लड़के के पास पंचगनी हो आता। मोटर साइकिल पर भ्रमण करने का उसे बचपन से शौक़ था जिसका न तो कभी मौक़ा ही मिला न समय। अब उसने एक हार्ले डैविडसन मोटर साइकिल ख़रीदी और सारा नार्थ ईस्ट सड़कों सड़कों घूम आया। लेकिन शरीर को कहीं भी ले जाओ, मन तो साथ ही रहता है! शरीर का बोझ तो आदमी उतार दे, मन का बोझ कहाँ उतरता है। तपन का शराब पीना बढ. गया। अब वह स्टूडियो भी नशे में जाता था और अक्सर एडिटिंग असिस्टेंट्स पर छोड़कर किसी होटल की बार में बैठा रहता था।

-''व्हाट इज़ रॉन्ग विथ यू माई लव?'' एकता ने एक दिन तपन से गले में बाहें डालकर प्यार से पूछा। ''पहले तो तुम ऐसे नहीं थे।''

-''व्हाट डु यू मीन मैं पहले ऐसा नहीं था?'' तपन ब्लैक डॉग व्हिस्की से आधा भरा अपना गिलास ख़ाली करते हुए बोला।

-''आई मीन जब से तुम्हारी ये सो कॉल्ड बीबी तुम्हारी लाईफ़ में वापस आ गयी है तब से यू आर ए डिफ़रेंट मैन।''

-''लाईफ़ ने बहुत कुछ अच्छा दिखाया है .....अब शायद लाईफ़ स्वाद बदल रही है.....हंहंहंहं.....''

-''तुम्हारे इस हंसने में रोने की बू आती है तपन.....हेल्प योर सेल्फ.....तुम बर्बाद हो रहे हो।''

-''तुम सुनाओ.....तुम्हारी शूटिंग ख़त्म हो गयी?''

-''बात बदलने की कोशिश मत करो।''

-''अरे छोड़ो यार अपना ज्ञान,'' तपन जैसे खीझ गया, ''लीव मी अलोन, मुझे बहुत काम है।''

-''काम तो मुझे भी है.....मगर अब सवाल ये है कि हमारी तुम्हारी ज़िन्दगी का क्या?''

-''क्या?'' तपन ने ताज्जुब से पूछा।

-''वो औरत तुम्हारी बीबी बन कर रहेगी तो मेरी तुम्हारी शादी कैसे होगी?''

तपन का मुंह खुला रह गया ओर वह एक पल के लिए एकता के चेहरे को ताकता रह गया फिर उसने पूछा, ''हम शादी करने वाले थे?'' फिर वह जरा संयत हो गया, बोला, ''ये तुम्हारा इराद है, मेरा नहीं।''

-''तपन!'' एकता ने तर्जनी दिखाते हुए धमकी दी, ''तुमने अगर मुझ से शादी नहीं की तो मैं तुम्हें बर्बाद कर दूँगी।''

-''तू आके मेरे गले पड़े, मेरे साथ बिस्तर में घुसने की कोशिश करे, मुझे सिड्यूस करे और फिर मुझ से शादी की ज़बरदस्ती करे, , क्या यार!.....कम ऑन, बी सेंसिबल.....मेरे एक लड़का है, मैं तुमसे कम से कम बीस साल बड़ा हूँ....कुछ तो सोचो!.....जा, अभी जा! गुड नाईट!''

रात बहुत हो चुकी थी। एकता चली गयी। लेकिन एकता अपना मन पक्का कर चुकी थी। एकता बम्बई से क़रीब सौ मील दूर वांगनी गाँव में रहने वाले एक मामूली महाराष्ट्रियन परिवार की लड़की थी जिसने हायर सेकेंडरी भी किसी तरह पास किया था और फिर घर का ख़र्च चलाने के लिए डाँसर के बतौर ट्रुप्स में काम किया था। तपन ने उसका काम देखकर उसे सोलो डांस का चांस दिया था। हालाँकि तपन

ने यह पूरी तरह प्रोफ़ेशनल लिहाज़ से किया था, एकता को लगा तपन उस पर फ़िदा हो गया है और इसके चलते उसने समझा था कि यह मछली बड़ी भी है और आसानी से फँसने वाली भी है। इसीलिए वह एक बार तपन के घर आकर उसके साथ ज़बरदस्ती रात बिताने की कोशिश भी कर चुकी थी। अब उसका कैरियर समाप्ति पर था। उसकी उम्र तीस के पार थी और अब कहीं घर कर लेना उसकी ज़रुरत थी। तपन कामयाब डायरेक्टर था, पैसे वाला था, रुतबे वाला था—उसकी बीबी बनने में एकता की लाईफ़ बन जाने वाली थी।

रात के बारह बजने आये थे और बार अब बंद होने जा रहा था। तपन के सैलफ़ोन की घंटी बजी। तपन ने फ़ोन करने वाले का नाम देखा। ऑफ़िस से फ़ोन था।

-''बोल सारा!'' तपन ने कहा।

-''सर! चैनल से फ़ोन आया था किये एपिसोड दोबारा एडिट किया जाये।''

-''क्या गड़बड़ है?''

-''उन्हें पसंद नहीं आया।''

-''क्यों?''

-''कुछ बताया नहीं.....आप कल बात कर लेंगे?''

-''ओके.....अब घर जाओ.....रात बहुत हो गयी है, गुड नाईट!''

-''गुड नाईट सर।''

दूसरे दिन तपन चैनल के दफ़्तर में पहुंचा। ऑफ़िस के वरांडे में लाइव प्रोग्रामिंग की इंचार्ज रेशमा सूद ऐसे गले मिली जैसे की वह जन्मों बाद तपन से मिल रही हो।

-''हाय लव!'' तपन ने भी हमेशा की तरह ही हैलो किया।

-''कम इन हनी!'' रेशमा तपन को केबिन के अंदर ले गयी और दरवाजा बंद करके कुर्सी पर बैठते साथ चिल्लाई, ''व्हाट दि फ़क तपन....तू नौकरी लेगा मेरी?''

-''क्या हुआ''

-''क्या हुआ?....प्रोग्राम देखा है? इट्स शिट! साले तू तो आज कल दारु पिए पड़ा रहता है काम तेरे लौंडे करते हैं.....उन्हें कुछ आता नहीं.....अगली बार से नो तपन सेन.....पीरियड!''

-''दिखा क्या गड़बड़ है।''

-''देख!'' रेशमा ने प्रोग्राम की डीवीडी लगाई और ख़राब एडिटिंग, ख़राब शॉट्स, ख़राब साउंड के हिस्से बताये। फिर कहा, ''और ये देख....ये तेरा कलर बार

है....ये कोडिंग है.....ऐसे देते हैं प्रोग्राम चैनल को? ये सब क्या मैं करती फिरूं?''
—''सॉरी अबाउट दिस। आजकल एडिटर छुट्टी पे है.....मै ठीक कर के कल भिजवाता हूँ।''

बड़ी बहस हुई। बहुत तू तू मैं मैं हुई और जब तपन चैनल ऑफ़िस से निकला तब उसका मूड ख़राब हो चुका था। किसी दूसरे चैनल का भी एक प्रोग्राम हाल ही में गड़बड़ हुआ था और अब ये.....तपन की साख गड़बड़ा रही थी, धंधे पर चोट पड़ रही थी। वह सीधा ऑफ़िस आया और उसने खुद एडिटिंग पर बैठकर प्रोग्राम की ख़ामियाँ दूर करने की तैयारी की। इसी में रात के तीन बज गए। ड्राइवर को उसने छुट्टी दे दी थी। ऑफ़िस से गाड़ी लेकर जब वह निकला तब सड़कें सुनसान थीं। उसने कार के ग्लोव बॉक्स में रखा हुआ ब्लैक लेबल का अद्धा निकाला और गटकता हुआ घर की ओर चलने लगा। ख़ाली पेट और जल्दी जल्दी गटकने पर आधी ने अपना कमाल बड़ी तेजी से दिखाया। बिल्डिंग में घुसते साथ तपन ने दरवाज़े पर टक्कर मार दी। गाडी को ज़रा सा डेंट आ गया। बाऊंडरी वाल को कुछ नहीं हुआ। ऊपर अपने फ़्लैट पर आकर दरवाज़े मे चाभी लगाने के लिए भी उसे थोड़ा वक़्त लगा। जब वह अंदर दाख़िल हुआ तब माधुरी सोइ नहीं थी, वह ड्रॉइंग रूम में बैठी किसी पत्रिका के पन्ने पलट रही थी और टी वी ऑन था। तपन चुपचाप अपने कमरे में जाने लगा कि माधुरी ने उसे रोका।

-''ये मैं क्या सुन रही हूँ?''

-''क्या?'' तपन मुड़ा।

-''ये एकता कौन है?''

-''एक डांसर है.....क्यों?''

-''यु आर हैविंग एन अफ़ेयर विद हर,'' माधुरी तक़रीबन चिल्लाई।

-''लुक हू इज़ टेलिंग मी अबाउट एन अफ़ेयर!'' तपन कटाक्ष में हंसा।

-''मुझे तुम से ये उम्मीद नहीं थी कि तुम इतनी घटिया औरत के साथ...''

-''शट अप!'' तपन बात काटकर चिल्लाया। फिर ठंडा हो गया और बोला, ''देखो रात बहुत हो गयी है। आस पास लोग सो रहे हैं। लैट्स नॉट डिस्टर्ब देम, कल बात करना।''

-'क्यों, कल क्यों?....मेरी बात होती तो क्या तुम तब भी यही कहते?''

-''ओह कम ऑन!''

-''टेल मी आर यू हैविंग एन अफ़ेयर विद हर?''

-''तो क्या तुम यहाँ से चली जाओगी?.....अगर चली जाओगी तो यस आई

एम हैविंग एन अफ़ेयर.....किसी तरह तो जाओ मेरे गले से तुम.....''

-''ये दिन देखने के लिए आई थी मै यहाँ.....'' माधुरी रोने लगी।

-''मैने तो तुमसे आने के लिए नहीं कहा।'' फिर तपन को एकाएक जैसे ख़्याल आया। उसने पूछा, ''तुमसे किसने कहा आई एम हैविंग एन अफ़ेयर?''

-''देखो, टी वी देखो.....वो लड़की-एकता-चिल्ला चिल्ला कर दुनिया से कह रही है कि तुम और वो शादी करने वाले हो।''

-''ओह!'' तपन ने होंठ गोल करके जैसे सीटी बजाई। और वह डिस्गस्ट में मुस्कुराता हुआ बैडरूम में चला गया।

दूसरे दिन अख़बार के पहले पेज के मास्ट पर छपी थी एकता और तपन की तस्वीर और तीसरे पेज पर इन दोनों की शादी की ख़िबर। सुबह आठ बजे से ही टी वी चैनलों के रिपोर्टर्स अपनी अपनी गाड़ियों में बिल्डिंग परिसर में जमा होने लगे। कुछ तपन के फ़्लैट पर आकर घंटी बजाने लगे। माधुरी ऑफ़िस जाने के लिए तैयार हो रही थी। तपन ने उसे बाहर जाने से मना कर दिया। नौ बजे के आस पास तपन ने तैयार होकर स्वयं दरवाज़ा खोला। खोला नहीं कि उसके मुंह पर कैमेरा अड़ा दिया गया।

-''आप एकता से शादी करने वाले हैं?''

तपन के पीछे फ़्लैट के अंदर एक रिपोर्टर को माधुरी दिखाई दे गयी। उसने पूछा, ''ये औरत आप की बीबी है?'' तपन के जवाब के इंतज़ार की ज़रुरत न समझते हुए दूसरे रिपोर्टर ने कहा, ''एक के होते हुए आप दूसरी शादी कर रहे हैं?''

तपन किसी को भी बग़ैर कोई जवाब दिए सीढ़ियों से नीचे भाग गया। उसके पीछे पीछे भागे कैमेरा वाले। लेकिन दो मंजिलों के बाद रिपोर्टर्स शायद थक गए और लिफ़्ट के इंतज़ार में रुक गए। तपन ने माधुरी को फ़ोन करके कहा कि जब रिपोर्टर चले जाएँ तब वह उतरे और बग़ैर किसी से कोई बात किये निकल जाये। नीचे तपन की गाड़ी के पास और भी रिपोर्टर खड़े थे। फिर वो ही सवाल, ''आप एकता से शादी करने वाले हैं?''

-''नई.....मै किसी से कोई शादी नहीं करने वाला हूँ !'' तपन ने झल्लाकर जवाब दिया, ''एंड प्लीज़ लीव मी अलोन।''

दोपहर से टी वी में तपन का बयान ''मै किसी से कोई शादी नहीं करने वाला हूँ '' बार बार दिखाया जाने लगा। शाम तक एकता को स्टूडियो में बुलाकर एक न्यूज चैनल ने बाक़ायदा इंटरव्यू किया जिसमे एकता ने तपन के साथ अपनी तस्वीरें

और सेल्फ़ी दिखाए जिनमें कुछ वर्किंग स्टिल्स थे जिनमें तपन और एकता एक साथ सैट पर खड़े थे। दो सेल्फ़ी थीं जिनमे तपन और एकता एक ही बिस्तर में लेटे थे। एक सेल्फी और थी जिसमे एकता और तपन अंतरंग तौर पर गले मिल रहे थे। ये सब दिखा कर उसने कहा, ''आप ख़ुद देख लीजिये इससे क्या साबित होता है। अगर इस सबके बाद भी तपन शादी से इंकार कर रहा है तो यह तो मेरे साथ मज़ाक़ हो रहा है.....''

-''या विश्वास घात हो रहा है!'' एकता की बात काटकर एंकर ने जोड़ा, फिर पूछा, ''तो अब आप क्या करेंगी?''

-''केस करूंगी।''

तपन ने इंटरव्यू देखा तो एकता को फ़ोन किया, ''ये क्या लगाया है तुमने?''

-''सीधी तरह शादी कर लो नहीं तो.....''

-''नहीं तो?''

-''मैने कहा न मै तुम्हें बर्बाद कर के छोड़ूंगी।''

-''क्या मिलगा तुम्हें मुझे बर्बाद करके....तुम्हारा फ़ायदा जब है जब मैं आबाद रहूँ और काम करता रहूँ। हो सकता है तुम्हें काम देने के काम आ सकूं।''

-''अब मुझे काम नहीं चाहिए.....तुम चाहिए। तुम्हारे पास कल तक का समय है, अपना स्टेटमेंट बदल दो।'' एकता ने लाइन काट दी।

तपन बड़ी बेचौनी में रहा। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे। फिर उसने एक समाचार चैनल के एडिटर से मशविरा किया।

-''पहली बात तो ईमानदारी से तुम ये बताओ,'' एडिटर ने पूछा, ''कि क्या तुमने उससे शादी का वादा किया था?''

-''तुम्हारी क़सम मैने कोई वादा कभी नहीं किया।'' तपन ने सफ़ाई दी।

-''तुमने उसे एक्सप्लॉइट किया?''

-''नो!''

-''नाऊ डोंट टेल मी किसी लड़की के साथ तुम्हारे संबंध कभी बने ही नहीं!''

-''सम्बन्ध बने एक दो लेकिन शादी वाली बात किसी के साथ नहीं थी। और इसके साथ तो किसी प्रकार के सम्बन्ध भी नहीं बने। इससे ज़रा सी सहानुभूति कभी दिखाई होगी तो ये उसे मेरा प्यार समझ बैठी है।''

-''वो तुम्हारे साथ बिस्तर में सेल्फ़ी दिखा रही है.....?''

-''सॉलिड मैनीपुलेशन एन्ड ए बैड जोक!''

-''आई सी...ओके, आई बिलीव यू....मै पुलिस कमिश्नर से बात करता हूँ।

अगर पुलिस स्टेज पर मामला निबट जाये तो ठीक है। कोर्ट कचहरी के चक्कर में लाइफ़ बर्बाद हो जाएगी।

-''थैंक यू सो मच''

-''नॉट टू मेंशन।''

हफ़्ते भर के अंदर पुलिस ने एकता और तपन दोनों को बुलाकर मामला सुलझाने का काम किया। एकता थोड़ा डर भी गयी और समझ गयी कि उसने थोड़ा ज़्यादा कर दिया लेकिन दिखाती वह यही रही कि सारी ग़लती तपन की है। फिर उसने कहा कि वह केस वापस लेने को तैयार है लेकिन इसके लिए वह पैसे लेगी। सौदा हुआ, मोल-भाव हुआ और बात एक करोड़ से शुरू होकर पचास लाख पर ठहरी जो कि तपन ने देने का वादा किया। लेकिन अचानक इतना पैसा एक साथ देने के लिए उसे अपनी मर्सिडीज गाड़ी बेचनी पड़ी और बाक़ी के लिए तोड़ने पड़े कुछ इंवेस्टमेंट्स। अब तपन टैक्सी में आने जाने लगा और इस ख़ुश फ़हमी में रहने लगा किये थोड़े दिनों की बात है, जब नया काम मिलेगा तब फिर से वह गाड़ी ख़रीद सकेगा। लेकिन तपन की पुलिस ऑफ़िस में मुजरिम की तरह जाते निकलते तस्वीरें देखकर चैनलों में उसकी छविको धक्का लगा था और नया काम देने वाले उसे काम देने की तो छोड़ो उससे मिलने से भी कतराने लगे। अब ज़्यादातर समय वह घर पर ही रहता था। ऑफ़िस में स्टाफ़ आता था पर काम कहाँ था सो वो दो चार घंटे बैठ कर चला जाता था। माधुरी रोज़ अपने ऑफ़िस जाती थी। एक दिन तपन ने उससे पूछा, ''वो नौशेर का झगड़ा समाप्त हो गया तुम्हारा?''

-''वो नौकरी छोड़ गया।''

-'' और तुम्हारा फ़्लैट?''

-''वो भी।''

-''तो फिर तुम वहां कब शिफ़्ट कर रही हो?''

-''मै वहां नहीं जाऊँगी।''

-''क्यों? तुमने कहा था तुम यहाँ शांति से सोने आयीं थीं। अब शांति भी हो गयी और तुम सो भी चुकीं।''

-''नो!'' माधुरी ने सर नीचे करके हिला दिया।

-''अजीब लाइफ़ है,'' तपन ने सोफ़े में धंसे धंसे जैसे आह सी भरते हुए कहा, ''तुम नहीं थीं तो काम फ़ॉर्म में था.....जब से आयी हो देख ही रही हो क्या क्या हो रहा है!''

-"मेरी वजह से हो रहा है ये सब?"

-"लगता तो यही है।"

-"तुम मुझसे इतनी नफ़रत करते हो?" माधुरी ने एक पल जैसे सोच कर बोला।

-"प्यार तो तुम ही ने ख़त्म कर दिया था।"

-"और तुमने तो कुछ नहीं किया....एक के रहते हुए उस मुल्ली के साथ. ...."

-"एनफ़!" तपन ने शांति में पंजा दिखाते हुए कहा।

दो पल शांति के बाद माधुरी ने फिर पूछा, "तुम मुझसे इतनी नफ़रत करते हो?"

-"मुहब्बत तुमने छोड़ी नहीं, नफरत मैं किसी से करता नहीं.... सो इट्स एक्चुअली नो फीलिंग्स।"

-"तो फिर मेरे यहाँ होने से तुम्हें क्या परेशानी है?"

-"एक अनवांटेड शख़्स मेरे घर में घुसा है , मेरे सामने है तो क्या ये बात प्लेज़ेंट है?"

-"मै अनवान्टेड हूँ?"

-"जो शख़्स ज़रुरत के वक़्त नहीं होता, उसका जब ज़रुरत न हो तब होने का क्या मतलब....."

तपन उठकर खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। फिर दोनों लड़ाई बढ़ने के अंदेशे से चुप हो गए। महीने भर बेकार रहने के बाद तपन ने ख़र्च कम करने के लिहाज़ से अपना ऑफ़िस बंद कर दिया। परमानेंट स्टाफ़ को हटा दिया और एडिटिंग मशीने लाकर घर में रख लीं। एडिटर को जब काम हो तब बुलाने के वादे पर रख लिया। ऑफ़स बेचकर जो पैसा आएगा वो बेकारी में काम आएगा! किसे पता ये बेकारी कितने दिन और कब तक चले! कभी चैनल वाले तपन को फ़ोन करते थे, अब तपन चैनल वालों को फ़ोन करने लगा। शुरू में ये फ़ोन हैल्लो वाले होते थे लेकिन धीरे धीरे ये काम मांगने वाले होने लगे। लेकिन चैनलों में भी जो उसके पुराने जान पहचान के थे वे या तो जा चुके थे और उनकी जगह दूसरे नए लोग आ चुके थे या फिर लोग तपन को काम देने से डर रहे थे। उन्हें लगता था कि यह नशे में भुत रहने वाला पता नहीं ठीक प्रोग्राम कर पायेगा या नहीं। इसलिए इन दिनों तपन के पास शराब पीने और कम्प्यूटर पर गेम्स खेलने के अलावा कोई ख़ास काम था ही नहीं। इस ख़ाली दौर में उसे वे दोस्त भी याद

आने लगे जिन्हें उसे फ़ोन करना चाहिए था लेकिन उसने कभी किया नहीं। दोस्त भी बम्बई के इसी बिज़नेस के व्यस्त लोग थे। कुछ लोग कभी जल्दी में होते थे और लम्बी बात नहीं कर सकते थे। कुछ लोगों के फ़ोन की घंटी बजती रहती थी, वे फ़ोन उठा नहीं पाते थे, बाद में समय मिलने पर कॉल 'रिटर्न' करते थे। बहुत से लोग वह भी नहीं करते थे। तपन को ताज्जुब होता था कि कल तक जो लोग उससे मिलने, उसे खुश रखने की कोशिशों में लगे होते थे अब उनके पास उसके लिए कोई समय नहीं होता था।

-''हाय तपन!'' सीमा का फ़ोन था।

सीमा तपन को रिज़वी कॉलेज के फंक्शन में मिली थी। वहां वह कॉलेज के कल्चर फ़ेस्ट में जज बन कर गया था। सीमा ने एक स्टेज प्रोग्राम किया था जो तपन को बेहद पसंद आया था। तपन से शाबाशी पाकर सीमा का हौसला बढ़ा और उसने कहा, ''सर मैंने कुछ स्क्रिप्ट्स लिखी हैं। मैं आपको दिखाना चाहती हूँ।'' और इसके बाद सीमा उसके दफ़्तर में आने लगी, उसके शूट पर जाने लगी और उसके साथ एडिटिंग पर बैठने लगी। सीमा अपना ग्रेजुएशन पूरा कर चुकी थी और उसे डायरेक्टर बनने कि लत थी। तपन ने उसे सिखाया और उसे एक चैनल में बतौर प्रोड्यूसर नौकरी दिलवाई। अब सीमा चैनल में सीनियर प्रोड्यूसर थी।

-''कहाँ हो? तीन दिन हुए तुम्हें फ़ोन किया था।'' तपन ने जैसे शिकायत सी की।

-''सॉरी.....मैं उस वक्त उठा नहीं पायी। फिर भूल गयी। आज ज़रा टाईम था तो आपका मिस्ड कॉल देखा। कैसे हैं?

-''अच्छा हूं.....याद आर ही थी.....यू आर माई बेस्ट गर्ल फ्रेंड.....सोचा तुमसे बात करूँ।''

-''हाउ स्वीट ऑफ़ यू।'' फिर जैसे उसे कुछ याद आया। सीमा बोली, ''अच्छा शाम को क्या कर रहे हो?''

-''शाम को.....प्राईम मिनिस्टर से मेरी मीटिंग है!''

-''गुड! वो कैंसल कर दो और आठ बजे मैरियट में आ जाओ.....चैनल की एनुअल डे पार्टी है और मैं ऑर्गनाइज़र हूँ।''

-''वैल.....मेरा आना ठीक होगा?''

-''ठीक? यू आर ए बिग गाए इन टेली इंडस्ट्री!....कम ऑन.....मैं वेट करूंगी।''

-''ओके, डन!''

तपन में जैसे नई ऊर्जा आ गयी। इतने दिनों बाद किसी ने इतनी आत्मीयता से बात की थी और किसी पार्टी का न्यौता दिया था। वह सोफ़े से उठा। उसने वार्डरोब से शाम के लिए कपड़े चुनना शुरू किया। फिर उसने गीज़र ऑन किया और नहाने गया। कपड़े बदल कर उसने वो अलमारी खोली जिसमें माधुरी अपने कपड़े रखने लगी थी। तपन ने उसमें परफ़्यूम ढूँढा और अपने ऊपर अच्छी तरह स्प्रे किया। जब वह तैयार हुआ तब शाम के छः बजे थे। बिल्डिंग के नीचे पहुँच कर उसने टैक्सी बुलाई और सड़क पर ट्रैफ़िक बढ़ने से पहले चल दिया जुहू की ओर। फाईव स्टार होटल जे डब्लू मैरियट जुहू तारा रोड पर था और जुहू तारा रोड पर उस समय ट्रैफ़िक बुरी तरह जाम था। तपन ने किनारे पर टैक्सी छोड़ दी और होटल की ओर पैदल चल दिया। अभी आठ भी ठीक से बजे नहीं थे सो उसने सोचा जाकर थोड़ी देर कॉफ़ी शॉप में बैठेगा और फिर नौ तक पार्टी में जायेगा। कॉफ़ी शॉप में माहौल उस समय शांत था। वो जाकर एक कोने वाली टेबल पर बैठ गया। फिर उसे ख़्याल आया कि घर पर माधुरी नौ तक आ जाती है और आजकल कुछ दिनों से दोनों रात का खाना साथ खाते हैं इसलिए कहीं वह उसका इंतज़ार न करे। तपन ने माधुरी को वाहट्स ऐप कर दिया कि वह पार्टी में है और खाने के लिए घर पर नहीं आएगा। इतने दिनों बाद आराम और इत्मीनान से कॉफ़ी पीकर रिलैक्स्ड मन से वह चला पार्टी में।

पार्टी फुल फ़ॉर्म में थी। ज़ोर ज़ोर से पाश्चात्य संगीत, शराब, स्टार्टर्स, चमकती रौशनियां और लोगों का दीवानों की तरह नाचना! तपन ने अंदर आकर देखा कुछ लोग उसे जानने वाले थे और बहुत से नए थे। उसने सीमा की तलाश की। सीमा उसे कहीं दिखी नहीं। फिर उसने सीमा को फ़ोन लगाया। फ़ोन भी नहीं लगा। लेकिन इतने में चैनल का हैड ऑफ प्रोग्रामिंग और सी.ई.ओ दोनों सामने आ गए। तपन ने बड़ी गर्म जोशी से हाथ मिलाया। दोनों लोग हाथ मिलाकर आपस में बात करते हुए तपन के पीछे की तरफ़ चले गए।

-''ये तपन सेन यहाँ क्या कर रहा है?'' प्रोग्रामिंग हैड ने कहा।

-''क्या पता!.....मैं समझा तुम ने बुलाया होगा।''

-''अरे नहीं बाबा.....यूजलैस गाय...ही इज़ डन!''

-''हंहंहंहं.....ये तो कितने दिनों से बेकार है। इसके पास काम कहाँ है.... मैं तो डर रहा था कि कहीं पैसे न मांग बैठे।''

-''करेक्ट!''

यह बातचीत तपन के कानो में पड़ी और उसका सारा रिलैक्स्ड मूड बिगड़ गया। वह मुड़कर वापस जाने लगा कि सामने से सीमा आ गयी, ''हाय तपन!''

-''हाय सीमा!'' तपन ने ठन्डे मन से कहा।

-''आओ आओ....'' सीमा उसे पकड़ कर बार को ओर ले जाने लगी।''

-''नहीं यार.....मैं वापस जाऊँगा।''

-''क्यों.....?'' सीमा ने घोर अचम्भे से पूछा।

-''बस!'' और तपन सीमा का हाथ छुड़ाकर पार्टी से बाहर आ गया। सीमा ताज्जुब से उसे जाते हुए देखती रह गयी।

18

जब लैंड लाइन की घंटी बजी तब तपन बाथ रूम में था। उसने अंदर से ही माधुरी को फ़ोन उठाने के लिए कहा।

-''हेलो!''

-''मिस्टर सेन को फ़ोन दीजिये,'' फ़ोन करने वाले ने कहा।

-''वो बाथरूम में हैं, कहिये.....''

-''मैं देसाई बोल रहा हूँ। उनसे कहिये फ़्लैट का ढाई करोड़ से ऊपर कोई देने को तैयार नहीं है.....सौदा करना हो तो बोलो।''

-''थोड़ी देर बाद फ़ोन करेंगे?''

-''वो बाहर हैं क्या? सेल फ़ोन लग नहीं रहा है।''

-''एक दस मिनट में फ़ोन कीजिये''

-''कोई देसाई था,'' फ़ोन रखकर माधुरी ने तपन की तरफ़ कहा, ''बोलता है ढाई करोड़ के ऊपर प्राइस नहीं आ रही है। ये कौन सा फ़्लैट है जो बेच रहे हो तुम?''

-'' यही फ़्लैट है।''

-''इसे बेच दोगे?''

-''तो क्या करेंगे.....ख़र्चे तो चलना हैं न।''

-''एक काम क्यों नहीं करते.....वो वडाला वाला बेच देते हैं, रहते यहीं हैं।''

-''वो तुम्हारा पैसा है....जैसा तुम चाहो करो।''

-''अब हमारा तुम्हारा मत करो.....समय के हिसाब से काम करो।.....फिर मेरी तनख़्वाह भी है उससे भी ख़र्च चल सकता है।''

-''ढाई करोड़ मिलेगा तो उसके ब्याज पर भी जिया जा सकता है।''

-''देखो.....एक बार इतना बड़ा फ़्लैट बेच दोगे तो दोबारा लेना मुश्किल हो सकता है।''

-''तो?''

-''मेरी बात मानो, थोड़ा ठहर जाओ। वडाला वाला बेच देंगे। वहां भी कीमत कम नहीं हैं। उसका ब्याज आएगा और मेरी सैलिरी आएगी।''

तपन का तौलिये से सर पोंछना रुक गया। उसे लगा कि माधुरी इतने दिनों बाद अपनों की तरह सलाह दे रही है। फिर उसने सर को एक झटका दिया और 'देखते हैं' कहते हुए चाय पीने बैठ गया– यह सोचते हुए कि क्या यह सब भाग्य का बदा हुआ खेल है– माधुरी का ऐसे समय में वापस आ जाना भी एक तरह से उसके बुरे वक़्त में क़ुदरत की मदद है । अगर वह वापस न आयी होती, वडाला का फ़्लैट न होता, यह बेचना ही पड़ता, महीने महीने कहीं से कोई तनख़्वाह न आ रही होती- तो?! तमाम तरह के विचारों में वह डूबता उतराता रहा।

-''क्या सोचते हो?'' माधुरी ने तपन का ध्यान तोड़ते हुए हुए पूछा, ''अभी दस मिनट में देसाई फिर फ़ोन करेगा।''

-''तुम्हारी सैलिरी तुम्हारी सैलिरी है....उसे मैं घर के ख़र्च में नहीं लगाना चाहता।''

-''तो सैलिरी का होगा क्या?''

-''वही जो अब तक हो रहा था।''

-''अब तक हम इस तरह साथ नहीं थे।''

-''तुम अगर अपना पैसा ख़र्च कर दोगी तो मेरा बिज़नेस तो देख ही रही हो. ....पता नहीं मैं पैसा तुम्हें वापस कर पाऊँ या न कर पाऊँ।''

-''वापस क्या करना है? किसे करना है?.....जिन्दगी जीनी है और हम दोनों ही हैं एक दूसरे के लिए।.....जो हुआ जैसा भी हुआ अब भूल जाओ क्योंकि भाग्य को हमारे साथ यही करना था। हमारा या किसी का भी किसी बात पे कोई इख़्तियार नहीं है।''

-''अपने किये को डेस्टिनी पर मत डालो। करते हम हैं और दोष भाग्य को देते हैं।''

-''रामायण में लिखा है कि क़ुदरत को जिससे जैसा करवाना होता है वह उसकी बुद्धि वैसी ही कर देती है।''

--''बस! भाग्य नहीं तो रामायण का सहारा ले लिया!''

इतने में तपन के सेल फ़ोन की घंटी बजी।

-''बोल देसाई।''

-''मैसेज मिला सेन साब?''

-''मिला.....कल बताता हूँ।''

-''इससे अच्छा ऑफ़र नहीं मिलेगा.....मैं फिर कहता हूँ.....''

-''कल बताता हूँ।'' तपन ने लाईन काट दी।''

-''अब मेरा ख़्याल है तरुण को भी बोर्डिंग से निकाल कर यहीं रख लेना चाहिए। वो हमारे साथ भी रहेगा और ख़र्चे भी कम हो जाएंगे।'' माधुरी ने कहा। तपन ने सिर्फ माधुरी की आँखों में ऑखे डालकर उसकी बात सुनी और सोफ़े पर बैठकर बग़ैर कुछ कहे सुबह का आया अख़बार खोलकर देखने लगा।

-''ये कोई स्क्रिप्ट है?.....इसे स्क्रिप्ट कहते हैं?'' डायरेक्टर हेमंत कश्यप ने स्क्रिप्ट की कॉपी मेज़ पर फेकते हुए कहा, ''है क्या इसमें?....न ड्रामा है, न इमोशन है न एक्टिंग का स्कोप है, न म्यूज़िक का कोई रोल है.....ऐसी पिक्चर बनाना तो क्या सोचना ही बेकार है।'' यह बात हेमंत ने इस मीटिंग में तीसरी बार कही थी और हर बार नवीन जैन ने उसे समझाया था, ''देखो जी, आप फिर पढ़ो स्क्रिप्ट.. ...हिट फ़िल्म है.....माना जैसी फ़िल्में आप बनाते हैं वैसी नहीं है। न इसमें गाली है , न हिंसा है, न कोठे के नाच गाने हैं, न खून ख़राबा है.....लेकिन इसमें इमोशन भरपूर है.....''

-''मैं बनाऊंगा तो स्क्रिप्ट में बदलाव करूंगा।''

नवीन जैन ने राज की तरफ़ देखा। राज ने नवीन से नज़र मिलाकर दूसरी तरफ़ देखना शुरू कर दिया। राइटर जो बार बार डायरेक्टर को अपनी स्क्रिप्ट की बारीकियां समझाने की कोशिश कर रहा था ख़ामोश हो गया। वैसे भी उसे राज रंजन का सपोर्ट था इसलिए वह मुतमईन था।

-''ठीक है तो जी फिर.....'' नवीन जैन ने मीटिंग जैसे बर्ख़ास्त करते हुए कहा, ''स्क्रिप्ट चेंज करके फ़ोन करते हैं आपको।''

-''ठीक है.....'' डायरेक्टर साहेब उठकर चले गए।

हेमंत कश्यप उभरता हुआ लोकप्रिय डायरेक्टर था और इसकी फ़िल्में देश और विदेशों के फ़िल्म समारोहों में वाह वाही लूट चुकी थीं। इसी वजह से कश्यप का रुतबा इंडस्ट्री में इंटेलेक्चुअल डायरेक्टर्स का था। नौजवानों में ये बहुत लोकप्रिय डायरेक्टर था और फ़िल्में तो आजकल नौजवानों और वो भी पैसे वाले नौजवानों के लिए ही बनती हैं।

मीटिंग संजीव सिंह जैन के टर्नर रोड वाले बंगले पर पिछले तीन घंटों से चल रही थी। जैन बड़ा डिस्ट्रीब्यूटर था और उसका भाई नवीन सिंह जैन बड़ा प्रोड्यूसर। ये दोनों भाई छोटी फ़िल्मों का धंधा ही नहीं करते थे। सिर्फ बड़े स्टारकास्ट वाली,

बड़े बजेट की फ़िल्में! फ़िल्म चलने वाली है या नहीं इस पहचान की शायद इन पर दैवी कृपा था। यह मीटिंग एक नई फ़िल्म शुरू करने के लिए थी- सुपरस्टार राज रंजन के साथ।

राज रंजन की उम्र हालाँकि पचास पार कर गयी थी लेकिन फ़िल्में इनकी अब भी हिट होती थीं और जब ये परदे पर अपनी से तिहाई उम्र की हीरोइनों के साथ रोमांस करते या गाना गाते, नाचते थे तो लोग छोटे शहरों में अब भी परदे पर पैसे फेका करते थे। हिट ये इसलिए भी थे क्योंकि इन्होने उम्र और समय के अनुसार अपनी इमेज को ढाला था और फ़िल्मों के कथानक भी उसी प्रकार से चुने थे। यह वही राज रंजन हैं जिन्होंने हिंदी फ़िल्मों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इंडियन अकेडमी ऑफ़ फ़िल्म क्रिएटिविटी के अवार्ड वाले दुनिया के कितने ही देशों में प्रोग्राम किये थे और बहुत कामयाब प्रोग्राम किये थे। पिछले कुछ सालों से राज फ़िल्मों में केवल एक्टिंग ही नहीं करता फ़िल्मों के मुनाफ़े में हिस्सेदारी भी लेता है और अगर हिस्सेदारी रखता है तो उसका 'से' जितना एक स्टार की हैसियत से होता था उससे अब कहीं ज़्यादा होता है। इस फ़िल्म से राज पूरी तरह प्रोडक्शन के क्षेत्र में आ रहा था और इसके लिए संजीव जैन और नवीन जैन के साथ उसने कम्पनी बनाकर गठबंधन किया था। लेकिन राज तो स्टार था और फ़िल्मों में स्टार के आगे किसी की क्या बिसात....इसलिए जब नवीन सिंह ने देखा कि राज को स्क्रिप्ट में बदलाव क़तई बर्दाश्त नहीं हैं तो उसने हेमंत कश्यप को बिदाई दे दी।

-''तो अब?'' नवीन ने कहा, ''ये तो था आज के बड़े डायरेक्टरों में से.... .आपके स्टेचर के हिसाब से।'' फिर उसने संजीव सिंह कि ओर मुड़कर कहा, ''भाई राज जी के सामने कोई छोटा मोटा डायरेक्टर तो खड़ा नहीं कर सकते न !''

राज मन ही मन ख़ुश हो गया।

-''मेरे तो ख़्याल से,'' संजीव सिंह बोले, ''राज जी आप ही खुद डायरेक्शन कर लियो.....सब्जेक्ट आपका, आइडिया आपका, स्टार आप स्वयं.....आपसे बढ़िया इस फ़िल्म को कौन डायरेक्ट कर सकता है?''

-''नहीं नहीं.....'' राज ने प्रसन्न मन से गला साफ़ करते हुए कहा, ''ज़्यादा रेस्पॉन्सिबिलिटी हो जाएगी.....मेरी दो फ़िल्में और फ़्लोर पर हैं वो सफ़र करेंगी।''

-''अरे एक सधा हुआ असिस्टेंट रख लियो.....काम वो करेगा नाम आपका होगा।''

-''ऐसा कोई भी ऐरा ग़ैरा थोड़े ही सर की पिक्चर में लगा लेंगे!'' नवीन ने

भाई की बात काटी।

-''नहीं बात तो आपकी ठीक है,'' राज ने कहा, ''एक ऐसा अस्सिटेंट हो जो अपने हिसाब से काम करे।''

-''वोई तो मैं कै रिया हूँ ने!'' संजीव ने सर हिला कर हामी भरी और नवीन की तरफ़ देखा। नवीन अपनी आँखें मिचमिचाता हुआ चुप हो गया।

-''अच्छा आपने आइडिआ दिया है'' राज ने उठते हुए कहा, ''मुझे एक दो दिन का समय दीजिये मैं ही पुरानी जान पहचान वालों में से कुछ निकालता हूँ। आपको भी कोई दिखे तो बताइयेगा।''

दो दिन यूँ ही निकल गए। किसी को कुछ या तो सूझा नहीं या किसी ने कुछ सुझाया नहीं। लेकिन हर बात सोचे समझे हिसाब से या दिमाग़ से तो होती नहीं!

दिल्ली का मौसम उस दिन बेहद ख़ुशगवार था और सुबह के सात बजे इंडिया गेट पर ट्रैफ़िक बहुत कम था। राज रंजन की एक फ़िल्म का शॉट यहाँ लिया जाना था। प्रॉडक्शन वाले तैयारी में थे, कैमेरा वाले लाइटिंग कर रहे थे और कॉस्ट्यूम वाला कॉस्ट्यूम लिए बग़ल में खड़ा था। राज के मेक-अप का आख़िरी टच-अप चल रहा था और वह अपने को व्यस्त रखने के लिए मेक-अप मैन के लाये हुए अख़बार का फ़िल्मी सप्पलीमेंट देख रहा था। ''ये क्या पढ़ते रहते हो। पेपरों में सब कुछ तो सही होता नहीं।'' राज ने कहा।

-''सर! शूटिंग पर कभी कभी टाईम मिल जाता है तो इधर उधर गप्प मारने से तो अच्छा है ये देख लें कि दुनिया में क्या हो रहा है।''

-''ये देखो.....इतनी बड़ी बड़ी तस्वीरें छाप देते हैं....इन लड़कियों को देखा है तुमने?.....ये कहाँ से फ़िल्म स्टार्स हैं?''

-'' कुछ फोटो तो ले दे के भी छपती हैं न!''

राज ने पेज पलटा तो पीछे के पेज पर नीचे दो कॉलम का एक छोटा सा लेख था जो शायद उनका धारावाहिक हफ़्तावार आलेख था और उसमें छपी थीं दो लोगों की छोटी छोटी तस्वीरें। लेख उन लोगों के बारे में था जो कभी इंडस्ट्री के उभरते सितारे थे और अब बेकार हैं। लेख में लिखा था कि इस दौर में टी वी और फ़िल्म इँडस्ट्री के तौर तरीकों में ज़्यादा फर्क नहीं रह गया है। लोग सफल कम होते हैं, बर्बाद ज़्यादा होते हैं। इसमें दो लोगों की तस्वीरें छपी थीं-एक सिद्धार्थ की और दूसरी तपन की। लेखमें लिखा था कि सिद्धार्थ फ़िल्म इंस्टीट्यूट का डायरेक्शन ग्रेजुएट है जिसकी डिप्लोमा फ़िल्म ने तमाम अंतर्राष्ट्रीय पुरुस्कार लिए हैं और अब मजबूरी में

असिस्टैण्टी कर रहा है। तपन के बारे में लिखा था कि एक ज़माने में वह बहुत व्यस्त और बेहतरीन माना जाने वाला डायरेक्टर था, आज बेकार है। इस इँडस्ट्री में कब किसके साथ क्या हो जाये कहना मुश्किल है। फोटो देखने के बाद राज के माथे पर त्यौरयां पड़ गयीं। उसे पूछा, ''मैं जानता हूँ इस लड़के को?....कौन है ये?''

-''सर ये तपन सेन है जो कभी टी वी इंडस्ट्री में बड़ा डायरेक्टर था।''

-''और अब?''

-''बर्बाद हो गया सर!''

-''क्यों?''

-''क्या पता, कुछ तो होगा।''

फिर राज ने अपने सेक्रेटरी से पूछा ''इसको देखा है!....कौन है ये?''

-''ये सर, आप भूल गए.....आपका पहला एकेडेमी ऑफ़ फ़िल्म क्रिए टिविटी एवार्ड फंक्शन इसी ने डायरेक्ट किया था.....सिंगापूर में।''

-''हाँ हाँ.....लड़का तो अच्छा था.....बहुत शिष्ट और सलीके वाला.... प्रोग्राम भी अच्छा बनाया था इसने....फिर ये हालत कैसे हो गयी इसकी?''

-''ये इँडस्ट्री है सर.....हर आदमी आपकी तरह तो हमेशा स्टार नहीं रह सकता।''

राज का माथा ऊँचा हो गया। फिर उसने कहा, ''इस रिपोर्टर को फ़ोन करके इसका और ये दूसरा लड़का.....दोनों का पता करो। कल बुलाओ मेरे ऑफ़िस में।''

राज आज शाम को ही बम्बई लौटने वाला था।

जब फ़ोन आया तब बम्बई में शाम के सात बजे थे और तपन ने अपने गिलास में शराब भर ली थी। अब वो ब्लैक डॉग से सिंगल माल्ट पर उतर आया था। माधुरी आने में अभी डेढ़ घंटा था तब तक पीना और टी वी देखना यही सिलसिला चलने वाला था। तपन ने पहला घूँट भरा ही था कि उसका फ़ोन बजा। तपन ने देखा- नम्बर जाना पहचाना नहीं था, उसने फ़ोन नहीं लिया। दो मिनट बाद उसी नम्बर से फिर फ़ोन आया तब अपने आनन्द में ख़लल डालने वाले पर झल्ला कर उसने फ़ोन में कहा, ''हू इज़ इट?''

-''मिस्टर तपन सेन?'' आवाज में कुछ ऐसा था कि तपन ने अपने को संभाला, ''जी, बोल रहा हूँ।''

-''मिस्टर सेन मै राज रंजन साहेब के यहाँ से भौमिक ठक्कर बोल रहा हूँ। सर ने आपको कल बुलाया है?.....शाम को चार बजे...उनके ऑफ़िस में। आप आ सकते हैं?'' तपन के कान खड़े हो गए। जो भी नशा चढ़ा था उतर गया। राज रंजन

के यहाँ से फ़ोन! फिर उसने पूछा, ''राज रंजन फ़िल्म स्टार? राइट?''

-''जी।''

तपन जैसे बल्लियों उछल गया लेकिन उसने अपनी आदत के अनुसार संयत होकर कहा, ''ठीक है...कल शाम चार बजे.....ओके।''

फ़ोन काटते ही उसे लगा कि शायद अब दिन फिर जायें। किसे पता! लेकिन उसके दिमाग़ में तमाम विचार एक साथ उमड़ने लगे-वो मुझे क्यों बुलाएगा? पिक्चर तो इतना बड़ा स्टार मुझे देगा नहीं! अवॉर्ड फ़ंक्शन अब जो होता है वो जिस देश में होता है वहीं के प्रोड्यूसर्स करते हैं। स्क्रिप्ट मैं लिखता नहीं! फिर और क्या कारण हो सकता है? लेकिन थोड़ी देर बाद जब उसकी समझ में कोई वजह नही ंआयी तो उसने ज़्यादा सोचना बंद कर दिया। जो होगा देखा जायेगा।

दूसरे दिन राज के ऑफ़िस में संजीव सिंह जैन और नवीन सिंह जैन भी मौजूद थे। पहले बुलाया गया सिद्धार्थ को। सिद्धार्थ को लगा कि इस फ़िल्म में वो 'डम्मी' की तरह रखा जा रहा है तो उसे यह बात पसंद नहीं आयी। फिर उसे जब थोड़े में फ़िल्म का आईडिया सुनाया गया तो उसने भी वही कहा जो हेमंत कश्यप ने कहा था कि इस फ़िल्म में चलने वाली कोई बात तो है नहीं और स्क्रिप्ट में बदलाव बेहद ज़रूरी है। सिद्धार्थ क्योंकि फ़िल्मों की अपनी सूझ बुझ और अपनी विद्या के आगे किसी को कुछ समझता नहीं था इसलिए राज को बात चीत में उसके अंदर थोड़ा 'एटीच्यूड' भी लगा। दो घण्टों के अंतर से तपन को बुलाया गया था। तपन जब आया तो उसे भी थोड़े में फ़िल्म का आईडिया सुनाया गया और कहा गया कि उसे प्रोजेक्ट में ज़्यादा दख़लंदाजी नहीं करनी है। तपन जीवन में टूट चुका था-भावनात्मक रूप से, आर्थिक रूप से और सामाजिक रूप से-उसके पास उनकी कोई शर्तन मानने के लिए कोई वजह नहीं थी। पहले उसके मन में आया कि कह दे कि वह 'डम्मी' काम नहीं करेगा लेकिन फिर उसने सोचा कि कुछ भी हो एक तो यह फ़ीचर फ़िल्म है जो कि वह बनाना चाहता था लेकिन कभी बना नहीं पाया दूसरे इतने बड़े स्टार के साथ और तीसरे ये कि यह उसे वापस मार्केट में ले आएगी। उसने हर बात के लिए राज़ी हो कर हामी भर दी। जैन ने तपन को प्रोडक्शन ऑफ़िस में स्क्रिप्ट पढ़ने और पेपर्स साइन करने के लिए दो दिन बाद आने को कहा। तपन जब चला गया तब राज रंजन ने जैन ब्रदर्स से पूछा

''क्यों भाई ठीक हो रहा है?...मेरा नाम ख़राब नहीं होना चाहिए। लड़का ठीक लगता है?''

-''सर आप स्टार नहीं सुपरस्टार हैं। आपके नाम का हम प्रोड्यूसर्स डस्ट्रीब्यूटर्स

लोग खाते हैं.....आपका नाम कैसे ख़राब होने देंगे?'' संजीव जैन ने कहा।

-''मैने बहुत से डायरेक्टर्स देखे हैं....नए भी पुराने भी...लड़का ठीक है.... आप देखना काम भी ठीक करेगा और औक़ात में भी रहेगा।'' नवीन ने बाई बाई में राज से हाथ मिलाते हुए कहा।

वापसी में तपन ने घर जाने से पहले वाईन शॉप से आज बहुत दिनों बाद ब्लैक डॉग की पुरी बोतल ख़रीदी और घर जाकर आज उसने टी वी नहीं खोला, अपने साउंड सिस्टम पर अपनी पसंदीदा विवाल्डी सिम्फ़ोनी लगाकर गुनगुनाते हुए अपने लिए बर्फ और सोडे का इंतजाम करने लगा। माधुरी जब रात के नौ तक पहुंची तो तपन ने जिस गर्मजोशी और मोहब्बत से उसके लिए दरवाज़ा खोला वह माधुरी के लिए निहायत अचम्भे की बात थी।

दो दिन बड़ी बेसब्री से गुजरे। तीसरे दिन तपन जब नवीन जैन के दफ़्तर पहुंचा तब उसे एक कैबिन में बैठा कर स्क्रिप्ट थमा दी गयी। वहीं चाय, पानी भिजवा दिया गया। दो घंटे बाद जब उसने स्क्रिप्ट पूरी पढ़ ली तब उससे एक कॉन्ट्रैक्ट और एक कोरे काग़ज़ पर दस्तख़त करवा कर रख लिए गए। साईनिंग अमाउंट के नाम पर तपन को पांच हजार रुपये रखकर एक लिफ़ाफ़ा थमा दिया गया। उस समय तो उसने लिफाफा खोला नहीं लेकिन वापस आते रास्ते में जब उसने लिफ़ाफ़े में पांच हजार रूपए देखे तो उसे निहायत गुस्सा आया। जिसे कम से कम एक लाख रूपए साईनिंग अमाउंट देना चाहिए थे उसे पांच हजार! तौहीन है!...लेकिन फिर वह इस ख़्याल से चुप रह गया कि आख़िर उसके पास विकल्प भी क्या है!

फ़िल्म की शूटिंग ज़्यादातर लोकेशन पर थी। बम्बई के पास खंडाला और पंचगनी के इलाके में और थोड़ी बहुत रामोजी फ़िल्म सिटी हैदराबाद में। गाने और स्टंट इत्यादि सब लन्दन में। हालाँकि तपन इंजीनियर था, तकनीकी बारीकियां समझता था, नई नई मशीनों-कैमरों से वाक़िफ था लेकिन फिर भी फ़िल्म तो वह पहली बार कर रहा था और इसमें तकनीक से ज़्यादा कैमेरा प्लेसमेंट और शॉट के एंगल पर ध्यान देना बहुत अहम था। तपन ने जी तोड़कर अपनी पूरी समझ लगाकर काम करना शुरू किया और उसने इस भावनात्मक फ़िल्म में भावनाएं उभारने के नए नए तरीके वीएफ़ेक्स भी सोचे। कुछ माने गए, कुछ नहीं माने गए। कुछ साथ वालों की समझ में आये कुछ नहीं आये। लोग आपस में कानाफूसी करते रहे।

-''ये कौन है यार छोकरा?''

-''टी वी का है कोई.....डायरेक्टर था.....बेकार बैठा था...उठा लाये.....''

-''इसे काम वाम आता नहीं।''

-''क्या पता क्या कर रहा है.....लाईटिंग देखो कैसी करवाता है.....चेहरा दिखता नहीं....ऑडियंस क्या पागल है क्या?''

-''ऑडियंस तो बाद में आएगी....हमें ही नहीं दिख रहा है यार! हंहंहंहं...''

-''साउंड देखो....कैसा दबा दबा के डायलॉग बुलवा रहा है।''

-''ये तो राज साहेब को सोचना है।''

-''रह चुके इतने सालों से स्टार, , अब उनका समय ढलने वाला होगा इसलिए ऐसे डायरेक्टर को ले के फ़िल्म बना रहे हैं।''

-''ये फ़िल्म चलने वाली थोड़े ही है।''

-''मरने दो सालों को! फ़िल्म चले न चले.....अपना काम करो, पैसा लो, निकल लो।''

स्टाफ़ और क्रू दोनों फ़िल्म के बनाये जाने के तरीक़े से नाखुश थे।

-''मिस्टर तपन सेन!'' राज रंजन ने एक शाम चाय पीते पीते बहुत औपचारिक होते हुए कहा, ''हालाँकि आपसे कहा गया था कि आपके सुझावों की ज़्यादा ज़रुरत नहीं होगी लेकिन सुन रहा हूँ कि आप अपने तमाम सुझावों/इरादों से काम कर रहे हैं। आप जानते हैं कि आप ये फ़िल्म उन लोगों के साथ कर रहे हैं जो कि फ़िल्म ही करते रहते हैं, टी वी नहीं।'' तपन कटाक्ष समझ गया।

-''सर, इमोशनल सब्जेक्ट है इसलिए सींस में सिर्फ इमोशन जनरेट करने की कोशिश कर रहा हूँ.....दैट्स ऑल!''

-''जब आप कह रहे हैं कि सब्जेक्ट में स्वयं इमोशन है तो फिर ये जेनेरेट करने की ज़रुरत कहाँ से आ गयी?''

तपन सेन कुछ कहते बना न उसने कुछ कहने की ज़रुरत समझी। बस उसकी समझ में यह आ गया कि उसे औक़ात में रहने के लिए बोला जा रहा है और ये भी कि ये लोग उसके काम और काम करने के तरीक़े से संतुष्ट नहीं हैं।

दिन भर काम में व्यस्त रहना और फिर रात में ''क्या होगा'' के तनाव में नींद न आना- इन दोनों बातों ने तपन को एक तो शराब से दूर करवा दिया और दूसरे माधुरी से उसकी बात चीत के मौक़े बढ़ा दिए। और कोई था ही नहीं उसके पास जिससे वह दिल की बात बाँट सकता।

-''कैसी चल रही है फ़िल्म?'' एक दिन बात करते करते माधुरी ने पूछा।

-''पता नहीं।''

-''मतलब?''

-''रोज़ हरपल ऐसा लगता है कि बस अभी ये लोग किसी सीनियर डायरेक्टर को बुला लाएंगे और मुझे विदा कर देंगे।''

-''तुम इतना ख़राब काम तो नहीं करते!''

-''ये फ़िल्म है....इसमें खराब और अच्छा रिलीज़ पर पता चलता है.....बनते में तो सबके इंम्प्रेशन काम करते हैं और यहाँ मेरा इम्प्रैशन ठीक नहीं है।''

-''बी पॉज़िटिव! कुछ नहीं होगा.....कोई और नहीं आएगा पिक्चर तुम ही करोगे।''

-''तुम ज्योतिषी हो मुझे नहीं मालूम था।''

-''आदमी में द्रढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए....फिर कोई बुरी ताकत, बुरी दशा, गलत इम्प्रैशन-विमप्रेशन कुछ नहीं बिगाड़ सकता।''

-''डर तो लगता है।''

-''ये डर ही है जो ले डूबता है।''

-''ठीक है.....एनफ़ ऑफ ज्ञान.....गुड नाईट!''

-''सुनो सुनो.....''

-''हाँ.....''

-''तरुण का एडमिशन ज़ेवियर्स में करवा रही हूँ। सेशन शुरू होने में अभी दो महीने हैं। तब तक तुम फ्री हो जाओगे?''

-''शूटिंग शायद खत्म हो जाएगी लेकिन उसके बाद का काम तो दो तीन महीने और चलेगा। पिक्चर दिवाली पे रिलीज़ होनी है।''

-''तब तक तो अमेरिका से तुम्हारा भाई स्वपन भी छुट्टियों में आ जायेगा।''

-''शायद।''

-''तब सब मिल के नेपाल चलते हैं.....लॉन्ग टाईम वी हेड ए हॉलिडे।''

-''गुड आईडिया।''

पिक्चर की शूटिंग एक महीने और चली और हालाँकि तपन को हमेशा डर लगा रहा कि डायरेक्शन उससे छिना कर किसी और को दे दिया जायेगा लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं। एडिटिंग के दौरान में जब जैन ब्रदर्स और राज रंजन ने पिक्चर देखी तो तपन से तमाम सवाल तलब किये। इन सवालों से और अपने ऊपर लगातार शक से तपन अब तक पक चुका था और उसने सोच लिया था कि कल जब पिक्चर का एक और ट्रायल शो होगा तब उससे अगर किसी ने कुछ ऐसा वैसा कहा तो वह बर्दाश्त नहीं करेगा। लेकिन दूसरे दिन ट्रायल में इंडस्ट्री के कुछ चुनींदा लोग आये, उन्हीने पिक्चर देखी और वे पिक्चर की तारीफ़ करने लगे। इससे जो तपन

की आलोचना करते थे उनको विराम मिल गया और तपन के अंदर फ़िल्म के प्रति एक आत्मविश्वास जागृत हो गया। उस रात उसे अचानक फिर राजन नटराजन याद आ गया। जैसे वह कह रहा हो, ''तेरी किस्मत बहुतों से बहुत अच्छी है! देख! तू बर्बाद हो रहा था लेकिन क़िस्मत ने तुझे बर्बाद नहीं होने दिया!''

दशहरा हो चुका था और पिक्चर फ़ाईनल पर थी। सेंसर में कोई दिक्कत नहीं आने वाली थी क्योंकि फ़िल्म में ऐसा कुछ था ही नहीं जिस पर सेंसर ऐतराज कर सके। दीपावली बुधवार को थी इसलिए फ़िल्म को उससे पहले वाले शुक्रवार को रिलीज़ किया गया। प्रमोशन और म्यूजिक रिलीज़ के वीडियो वायरल कर दिए गए थे। टी वी चैनलों पर फ़िल्म के प्रमोशन वाले इंटरव्यू प्रोग्राम ज़ोरों पर थे। हालाँकि इन इंटरव्यूज़ में अमूमन डायरेक्टर और स्टार के इंटरव्यू होते हैं लेकिन इस फ़िल्म के प्रमोशन से तपन को दूर ही रखा गया था। क्योंकि एक तो इससे तपन की इम्पोर्टेन्स बढ़ जाती और दूसरे अगर फ़िल्म चल गयी तो फ़िल्म का क्रेडिट उसे जाता। गाने पहले ही लोगों को पसंद आ चुके थे।

हालाँकि सारी तैयारियां मुकम्मल थीं रिलीज़ के दिन सबके दिल तेज़ी से

धड़क रहे थे। पिक्चर आमतौर की पिक्चरों से अलग थी, भावनात्मक थी और किसी प्रकार के बॉक्स ऑफ़िस मसालों के बग़ैर थी। बनाने वाले थे तो आश्वस्थ लेकिन फिर भी डर के मारे हुए थे। प्रैस रिव्यू मिले जुले थे। एक अख़बार ने तो ये तक लिख दिया था कि ''इस युग में जहाँ कोई किसी की मौत पर नहीं रोता वहां ये फ़िल्म वाले अगर रिश्तों के जुड़ने, टूटने, बिछड़ने इत्यादि पर लोगों में आँसू ला कर फ़िल्म को हिट करवाने की सोच रहे हैं तो यह उनकी बेवकूफी है।'' लेकिन फ़िल्म बनाने वालों ने भी यही सोचकर तो ऐसा विषय चुना था। कई कई सालों से तक़रीबन सभी फ़िल्मों में हिंसा, बलात्कार, भद्दी गालियों, आईटम सॉन्ग के भरमार वाली फ़िल्में ही आयीं थीं- रिश्तों की गरिमा और भावुकता वाली फ़िल्में मुद्दतों से नहीं आयीं थीं, उनको विश्वास था कि ऐसी फ़िल्म की सख़्त ज़रुरत है और यह फ़िल्म पब्लिक अवश्य पसंद करेगी। रिलीज़ होने वाले दिन शाम तक फ़ैसला हो गया- फ़िल्म पब्लिक को बेतरह पसंद आ गयी, सभी थिएटरों के हॉउस फुल हो गए और दर्शकों ने फ़ौरन फ़ेसबुक पर फ़िल्म की तारीफ़ों के पुल बांध कर पोस्ट डाल दिए।

अब लोगों की प्रतिक्रिया और इंटरव्यू का प्रारूप अचानक बदल गया। राज रंजन और नवीन जैन की इंडस्ट्री वाले और मीडिया वाले दोनों ही तारीफ़ों के पुल बांधने लगे।

-''मान गए सर आपको!'' राज की अगली फ़िल्म के एक डिस्ट्रीब्यूटर ने कहा,

''आप सुपरस्टार ही नहीं सुपर ब्रेन हैं.....एक मामूली लड़का पकड़ के लाये और उससे ऐसी पिक्चर बनवा डाली! वाह!''

यूनिट के जो लोग तपन के डायरेक्शन पर सवाल खड़े कर रहे थे अब तपन की तारीफ़ें करने लगे, उसके साथ अगली फ़िल्म में काम करने की क़समें खाने लगे। एक प्रचलित अंग्रेजी अख़बार वाले ने लिखा ''राज रंजन पारस पत्थर है लोहे पर हाथ लगा दे तो उसे सोना बना दे। एक बेकार टी वी डायरेक्टर को लाकर उससे ऐसी ब्लॉक बस्टर फ़िल्म बनवा लेना हर एक के बस की बात नहीं है।''

इधर पिक्चर हिट हो रही थी, कलेक्शन लाखों से करोड़ों और फिर सैकड़ों करोड़ों में जा रहा था, फ़िल्म कई भाषाओ में डब करके देश और विदेशों में रिलीज़ करने के प्लान बन रहे थे, नए फ़िल्म प्रोड्यूसर्स तपन को डायरेक्टर साइन करने के लिए शिद्दत से ढूंढ रहे थे उधर तपन कहीं मिल नहीं रहा था और उसका फ़ोन ''आउट ऑफ़ रीच'' जा रहा था। वह अपने भाई, पत्नी और बेटे के साथ नेपाल में हिमालय की तराइयों में कैम्पिंग हॉलिडे मना रहा था। आज ये चारों यहाँ का सूर्योदय देखने के लिए सो कर जल्दी उठ गए थे। सुबह बस होने को थी, पौ फट रही थी, आकाश पर सूर्योदय की लालिमा शुरू हुई हुई थी।

-''दादा!'' स्वपन ने भाई से कहा,'' कल रात फ़ेसबुक देख रहा था, बम्बई फ़िल्म इन्डस्ट्री तुम्हें ढूंढ ढूंढ कर परेशान हो रही है और तुम यहाँ छुट्टी मना रहे हो।''

-''वो परदे का सच है.....जो हम लोग हैं वह जीवन है! वो ड्रीम है, ये रियलिटी है!'' तपन ने 'ये' पर ज़ोर देकर कहा।

-''तुम तो सपनों के बड़े हिमायती थे।''

-''मैने सपने देखने के सिवा और किया ही क्या है.....लेकिन ये अब समझ में आया है कि नजरें चाहें कितनी भी आसमान पे रहें, पाओं कहाँ पड़ रहे हैं इसका एहसास हमेशा बना रहना चाहिए।''

-''सो इज़ योर बॉलीवुड ड्रीम ओवर?''

-''हाउ कैन इट बी ओवर? देख तो रहे हो कितने लोग मुझे ढूंढ रहे हैं। पहले मैं ड्रीम को चेज़ करता था अब ड्रीम मुझे चेज़ कर रहा है।''

इतने में तरुण चिल्लाया, ''वो देखो, वो देखो.....सूर्योदय!'' पहाड़ियों के पीछे से सूर्य देवता प्रकट होने लगे। चारों ने उगते सूर्य को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। उसके बाद तपन ने सबकी तरफ़ देखकर मस्ती में पूछा, ''इस लाईट में एक सेल्फ़ी हो जाये?!''

-''हो जाये!'' माधुरी जोश में बोली

तपन ने सेल्फ़ी ली-तपन, तरुण, स्वपन और माधुरी एक फ्रे़म में।

तभी सामने की ओर हाथ दिखाकर तरुण चिल्लाया, ''डैडी!.....वो देखो.... सांप!''

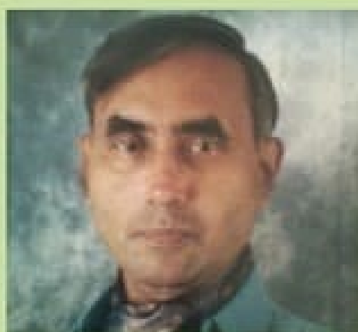
-''तू सांप पकड़ेगा?'' तपन ने पूछा।

-''मुझे डर लगता है।''

-''आओ मैं सिखाता हूँ।''

और तपन तरुण को सांप पकड़ना सिखाने लगा।

***



1951 में जन्मे, झाँसी में पले बढ़े, अशोक कुमार ने बी एस सी के बाद लन्दन जा कर टी वी प्रोडक्शन डायरेक्शन के कोर्स किये और उसी दौरान बी बी सी के लिए भी काम किया। 1974 में ये वापस आ गए और दिल्ली टी वी (तब दूरदर्शन नहीं था) में प्रोड्यूसर हो गए। वहां से ये पूना फि ल्म संस्थान में फ ैकल्टी के बतौर बुला लिए गए। वहां से दो साल बाद 1977 में ये बम्बई आ गए जहाँ ये बी आर एड्स में जनरल मैनेजर हो गए। 1984 में इन्होने अपनी प्रोड्कशन कंपनी- इनकॉम- शुरू की। इस कंपनी में इन्होने पैराशूट, ओनिडा, गुड नाईट, कैडबरीस जैसी जानी मानी कंपनियों के एड्स बनाये और तमाम वृत्त चित्र बनाये। भारत में महारानी लक्ष्मीबाई पर एक घंटे का डॉक्यूड्रामा बनाने वाले अशोक कुमार एकमात्र प्रोड्यूसर/डायरेक्टर हैं।

अशोक कुमार टी.वी. चैनलों में वरिष्ठ पदों पर कार्यरत रहे हैं। 'माईका' अहमदाबाद में मीडिया के प्रोफ ेसर रहे हैं तथा रामोजी यूनिवर्स में एडवरटाइज़िंग क्रिएटिविटी के प्रोफ ेसर रह चुके हैं।

ये टाइम्स ऑफ इंडिया तथा जनसत्ता के मीडिया कॉल्युमनिस्ट रहे हैं तथा दो बार अंतर्राष्ट्रीय फि ल्म फेस्टिवल्स में सिलेक्शन समिति मेंबर रह चुके हैं।

इनके दो उपन्यास -'दुनिया फि ल्मों की' तथा 'इंस्टिट्यूट' प्रकाशित हो चुके हैं तथा हिंदी उर्दू और इंग्लिश में ये सामान रूप से लिख रहे हैं। इनकी कहानियां, कवितायें तमाम पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

सम्पर्कः <Kumar-incomm@yahoo.co.uk>

₹ 595/-

ISBN 81-8129-685-0





नमन प्रकाशन

4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
8750551515, 9350551515